SHANE KHATOONE JANNAT (HINDI)

मुबल्लिग़ात के लिये सीरते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا के मुतअ़ल्लिक़ बयानात का ह़सीन मदनी गुलदस्ता

शाने ख़ातूने जन्नत

رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنۡہا

- ख़ातूने जन्नत के लिये फ़िरिश्ते की बिशारत
- ख़ातूने जन्नत के चलने और गुफ़्त्गू करने का अन्दाज़
- ख़ातूने जन्नत का ज़ौक़े नमाज़
- ख़ातूने जन्नत का निकाह़ व जहेज़
- काशानए फ़ात़िमा में फ़ाक़ा कशी का आ़लम
- ख़ातूने जन्नत की वसिय्यतें
- ख़ातूने जन्नत के कफ़न का भी पर्दा
- ख़ातूने जन्नत को किस ने ग़ुस्ल दिया ?

(دعوتِ اسلامی)

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह* عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : *अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।*

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

*किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।*

www.dawateislami.net

शाने ख़ातूने जन्नत

येह किताब **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)** ने "**उर्दू**" **ज़बान** में पेश की है। **मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)** ने इस किताब को "**हिन्दी**" **रस्मुल ख़त़** में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस में अगर किसी जगह **कमी बेशी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, e-mail या sms) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर षवाब कमाइये।

तराजिम चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا	
ह़ = ح	झ = جھ	ज = ج	ष = ث	ट = ٹ	थ = تھ	
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	
ज़ = ژ	ज़ = زھ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	
ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	
ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ع	अ़ = ع
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	ग = گ
् = ۡ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ِی	ू = ُو	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

सय्यिदा फ़ातिमा ताहिरा رضی اللہ تعالٰی عنہا की सीरते तय्यिबा से मुतअ़ल्लिक़ 12 बयानात पर मुश्तमिल हसीन गुलदस्ता

शाने ख़ातूने जन्नत

-: मुरत्तिबीन :-

मदनी उ़-लमा

शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात, सरदाराबाद

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, मो. +919327168200

www.dawateislami.net

الصلوة والسلام علیک یارسول اللہ وعلی آلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम किताब : शाने ख़ातूने जन्नत

मुरत्तिबीन : मदनी उ-लमा (शो'बए फ़ैज़ाने सहाबिय्यात)

सिने तबाअत : रजबुल मुरज्जब, सि.1434 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1

तस्दीक़ नामा

तारीख़ :.................. हवाला : ....

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلوٰۃ و السلام علی سید المرسلین وعلی الہ و اصحا بہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"शाने ख़ातूने जन्नत" (उर्दू)

(मत्बूआ : मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे षानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे मतालिब व मफ़ाहीम के ए'तिबार से मक्दूर भर मुलाहज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल

(दा'वते इस्लामी)

E-mail : ilmia@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं।

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

ऊ़नवान	सफ़ह़ा	ऊ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

ड़नवान	सफ़ह़ा	ड़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

"शाने ख़ातूने जन्नत" के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "11 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

"نِیَّۃُ الْمُؤْمِنِ خَیْرٌ مِّنْ عَمَلِہٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، الحدیث:۵۹۴۲، ج۶، ص ۱۸۵)

दो मदनी फूल :-

《1》 बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का षवाब नहीं मिलता।

《2》 जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

《1》 हर बार ह़म्द व सलात और 《2》 तअ़व्वुज़ व तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगी (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) 《3》 रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगी। 《4》 ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगी। 《5》 जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और 《6》 जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढूंगी। 《7》 दूसरों को **येह किताब** पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी। 《8》 इस ह़दीषे पाक "تَھَادَوْا تَحَابُّوْا" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالک، الحدیث ۱۷۳۱، ج۲، ص ۴۰۷) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगी। 《9》 अपनी इस्लाह़ के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल की कोशिश करूंगी। 《10》 सीरते फ़ात़िमा पर अ़मल की कोशिश करूंगी 《11》 किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगी।

(मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

www.dawateislami.net

इजमाली फ़ेहरिस्त

नम्बर	मज़ामीन	सफ़हा
1	पहले इसे पढ़िये !	9
2	अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7
3	ख़ातूने जन्नत की शानो अ़ज़मत	13
4	ख़ातूने जन्नत की करामात	47
5	ख़ातूने जन्नत का ज़ौक़े इबादत	75
6	ख़ातूने जन्नत का इश्क़े रसूल	113
7	ख़ातूने जन्नत का ईषार व सख़ावत	157
8	ख़ातूने जन्नत का निकाह़ व जहेज़	217
9	ख़ातूने जन्नत और उमूरे ख़ानादारी	271
10	ख़ातूने जन्नत का पर्दे का एहतिमाम	313
11	ख़ातूने जन्नत के फ़ाक़े	349
12	ख़ातूने जन्नत का ज़ोह्द	379
13	विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की कैफ़िय्यात	401
14	ख़ातूने जन्नत का विसाल	441
15	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	479

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दिद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है । इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

www.dawateislami.net

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम **इस्लामी भाई** और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ "**दा'वते इस्लामी**" की तमाम मजालिस ब शुमूल "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

❁❁❁❁❁❁

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़िये !

इस्लामी बहनों में **नेकी की दा'वत** आ़म करने में सहा़बिय्यात व सालिहा़त का किरदार मशअ़ले राह है। तब्लीग़े इस्लाम और ख़िदमते दीन के मुआ़मले में इन की ख़िदमात से चन्दां इन्कार नहीं किया जा सकता। लेकिन बद क़िस्मती से आज के दौर में इस मौज़ूअ़ पर मुषबत व मुस्तनद मवाद बहुत कम मिलता है और इस्लामी बहनें इस ह़वाले से कमी मह़सूस करती नज़र आती हैं। चुनान्चे इस्लामी बहनों की इस इन्तिहाई अहम ज़रूरत और इन के देरीना मुत़ालबे के पेशे नज़र तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के चैनल "**मदनी चैनल**" पर एक सिलसिला ब नाम "**फ़ैज़ाने सहा़बिय्यात**" शुरूअ़ किया गया, जिस में रुक्ने शूरा, निगराने पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना, **ह़ाजी अबू रजब मुह़म्मद शाहिद अ़त्तारी** مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی अपने ईमान अफ़रोज़ अन्दाज़ में सहा़बिय्यात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡهُنَّ की सीरते त़य्यिबा के दर-ख़्शिन्दा पहलूओं को उजागर फ़रमाते हैं और **मदनी चैनल** के नाज़िरीन के लिये मदनी फूल इरशाद फ़रमाते हैं। मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (सरदाराबाद)**" इस सिलसिले को इस्लामी बहनों के लिये मुफ़ीद जानते हुए ज़रूरी तरमीम, इज़ाफ़े और तख़्रीज के साथ तह़रीरी सूरत में पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रही है। इस की पहली कड़ी ज़ेरे नज़र किताब "**शाने ख़ातूने जन्नत**" है।

www.dawateislami.net

बाहगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ है कि इस सअ़्ये सईद की तक्मील में मुआ़विन तमाम इस्लामी भाइयों की काविशें अपनी आ़ली बारगाह में क़बूल व मन्ज़ूर फ़रमाए।

امین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

किताब ''**शाने ख़ातूने जन्नत**'' को ख़ुद भी मुकम्मल पढ़िये और दीगर मुसलमानों को भी इस के मुत़ालए़ की तरग़ीब दे कर नेकी की दा'वत को आ़म करने का षवाब कमाइये। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि हमें ''अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश'' करने के लिये **मदनी इन्आ़मात** का आ़मिल और **मदनी क़ाफ़िलों** का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। امین بجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए फ़ैज़ाने सहा़बिय्यात (सरदाराबाद)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1434 हि. ब मुत़ाबिक़ 5 जनवरी 2013 ई.

फ़रमाने मुस्त़फ़ा *صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم : ऐ लोगो! मैं ने तुम में दो चीज़ें छोड़ी हैं कि जब तक तुम इन को थामे रहोगे गुमराह न होगे,* ***अल्लाह*** *عزوجل की किताब और मेरी इ़तरत या'नी अहले बैत।* (سنن الترمذی، ص۸۵۸، حدیث ۳۷۹۲)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 1

ख़ातूने जन्नत

की

शानो अ़ज़मत

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

ख़ातूने जन्नत की शानो अ़ज़मत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहनशाहे विलायत, मौलाए काइनात, मौला अ़ली, मुश्किल कुशा, अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡهَهُ الۡکَرِیۡم फ़रमाते हैं : हर शख़्स की दुआ़ पर्दे में होती है यहां तक कि सय्यिदुना मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और आले मुह़म्मद पर दुरूदे पाक पढ़े ।

(المعجم الاوسط، ج ۱، ص ۲۱۱، الحدیث: ۷۲۱)

अ़ल्लामा किफ़ायत अ़ली काफ़ी शहीद عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡمَجِیۡد फ़रमाते हैं :

दुआ़ के साथ न होवे अगर दुरूद शरीफ़ न होवे ह़श्र तक भी बर आवर ह़ाजात
क़बूलिय्यत है दुआ़ को दुरूद के बाइ़ष येह है दुरूद कि षाबिते करामत व बरकात

(काफ़ी की ना'त अज़ अ़ल्लामा किफ़ायत अ़ली काफ़ी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़िरिश्ते की बिशारत बराए ख़ातूने जन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : "मैं ने अपनी वालिदए माजिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से अ़र्ज़ की : आप मुझे इजाज़त अ़ता फ़रमाएं कि मैं नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर

www.dawateislami.net

हो कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े मग़्रिब अदा करूं और अ़र्ज़ करूं कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे और तुम्हारे लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत फ़रमाएं। ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "मैं नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़े मग़्रिब पढ़ी, जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इशा की अदाएगी से भी फ़ारिग़ हो गए और तशरीफ़ ले जाने लगे तो मैं आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे चल पड़ा। नबिय्ये ग़ैब दां, रसूले ज़ीशां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी आवाज़ सुनी तो फ़रमाया : कौन ? क्या हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ? अ़र्ज़ की : जी, हां ! इरशाद फ़रमाया : तुम्हारी क्या ह़ाजत है ? غَفَرَ اللّٰہُ لَکَ وَلِاُمِّکَ या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारी और तुम्हारी मां की मग़्फ़िरत फ़रमाए ! फिर फ़रमाया : येह एक फ़िरिश्ता है जो इस रात से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा, इस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त मांगी कि मुझे सलाम करे और मुझे बिशारत दे कि

بِاَنَّ فَاطِمَةَ سَيِّدَةُ نِسَآءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ وَاَنَّ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ سَيِّدَا شَبَابِ اَهْلِ الْجَنَّةِ

या'नी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **जन्नती औ़रतों की सरदार हैं और ह़सन व हुसैन** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا **जन्नती नौ जवानों के सरदार हैं।**

(سُنَنُ التِّرمِذِی،ابواب المناقب عن رسولِ اللّٰہ، باب مناقب حسن بن علی بن ابی طالب، ص۸۵۷، الحدیث:۳۷۸۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि ताजदारे रिसालत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नूरे नुबुव्वत से ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पहचान भी लिया और उन की दिली ह़ाजत भी मा'लूम कर ली कि येह क्यूं आ रहे है ? और बिग़ैर उन के कहे उन के लिये और उन की वालिदा के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत भी फ़रमा दी ।

हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुछ पोशीदा नहीं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर तो पथ्थरों की ह़ालत भी इयां (ज़ाहिर) है, चुनान्चे "**बुख़ारी शरीफ़**" में है, सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اُحُدٌ جَبَلٌ يُّحِبُّنَا وَنُحِبُّهٗ या'नी **उहु़द पहाड़ हम से मह़ब्बत करता और हम इस से मह़ब्बत करते हैं ।"**

(صَحِيْحُ الْبُخَارِی، کتاب الزکاۃ، باب خرص التمر، ص ۴۱۲، الحدیث:۱۴۸۲)

सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت "**ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़**" में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़ अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

www.dawateislami.net

शर्हे कलामे रज़ा :

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप की शाने अज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती हालत में आप ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप पर ज़ाहिर व आशकार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप से किस त़रह़ निहां या'नी छुपा रह सकता है । आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर करोड़ों बार दुरूदो सलाम का नुज़ूल हो ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी ईमान अफ़रोज़ ह़दीषे पाक से आक़ा صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी की शाने अज़मत निशान के साथ साथ आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे ह़सनैने करीमैन, त़य्यिबैन, त़ाहिरैन, सय्यिदैन, जलीलैन, क़मरैन, शहीदैन की शानो शौकत भी ज़ाहिर हुई कि येह दोनों शहज़ादे ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا जन्नती जवानों के सरदार हैं ।

www.dawateislami.net

क्या बात रज़ा उस चमनिस्ताने करम की
ज़हरा है कली जिस में हुसैन और ह़सन फूल

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ कलामे रज़ा :

ऐ रज़ा ! इस करम व रह़मत के गुलशन की क्या बात व मिषाल है जिस की कली व गुन्चा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا त़य्यिबा त़ाहिरा और जिस के फूल जन्नती जवानों के सरदार ह़ज़रते इमामे ह़सन व हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ाति़मा का मुख़्तसर तआ़रुफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 872 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सीरते मुस्त़फ़ा**" सफ़ह़ा 697 पर शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا शहनशाहे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सब से छोटी मगर सब से ज़ियादा प्यारी और लाडली शहज़ादी हैं[1] आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "**फ़ाति़मा**" और

(1) ... याद रहे कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के 3 शहज़ादे और 4 शहज़ादियां थीं शहज़ादों के नाम ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُم) और शहज़ादियों के नाम ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब, ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُن) ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہَا शहज़ादियों में सब से बड़ी थी।

(اَلْمَوَاھِبُ اللَّدُنِّیَّۃ مع شَرْحُ الزُّرْقَانِی، الفصل الثانی فی ذکر اولاد الکرام، ج٤، ص٣١٣، ٣١٤، ملتقطاً)

www.dawateislami.net

लक़ब "**ज़ाहिरा**" और "**बतूल**" है। इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : ए'लाने नुबुव्वत से 5 साल क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا की पैदाइश हुई। واللہ تعالٰی اعلم ورسولہ اعلم عزوجل وصلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

(المواہب اللدنیۃ مع شرح الزرقانی الفصل الثانی فی ذکر اولاد الکرام ج ٤، ص ٣٣١)

صلوا علی الحبیب! صلی اللہ تعالٰی علٰی محمد

अलक़ाबात

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا के बे शुमार अलक़ाबात हैं जैसे उम्मुस्सादात, मख़्दूमए काइनात, दुख़्तरे मुस्त़फ़ा, बानूए मुर्तज़ा, सरदारे ख़वातीने जहां व जिनां, ह़ज़रते सय्यिदा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, फ़ात़िमा ज़हरा और बतूल, ज़ाकिया, राज़िया, मरज़िया, आ़बिदा, ज़ाहिदा, मोह़द्दिषा, मुबारका, ज़किय्या, अ़ज़रा, सय्यिदतुन्निसा, ख़ैरुन्निसा, ख़ातूने जन्नत, मुअ़ज़्ज़मा, उम्मुल हाद-उम्मुल ह़सनैन वग़ैरा[1] जैसी अ़ज़ीम कुन्यतें और कषीर अलक़ाबात आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की शख़्सिय्यत को ही मौज़ू हो सकते हैं।

आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की एक ख़ास कुन्यत "**उम्मे अबीहा**" भी है। (المعجم الکبیر، ذکر سن فاطمۃ رضی اللہ تعالٰی عنہا، ج ٩، ص ٣٦١، حدیث ١٨٤١٨)

(1).... उम्मुस्सादात या'नी सादात की अस्ल। मख़्दूमए काइनात या'नी तमाम काइनात के लिये क़ाबिले ता'ज़ीम। दुख़्तरे मुस्त़फ़ा या'नी ......

www.dawateislami.net

फ़ातिमा की वजहे तसमिया

ख़ातूने जन्नत के बाबाजान, रह़मते आ़लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اِنَّمَا سُمِّيَتْ فَاطِمَةُ لِاَنَّ اللّٰهَ فَطَمَهَا وَمُحِبِّيْهَا عَنِ النَّار

तर्जमा : *इस (या'नी मेरी बेटी) का नाम फ़ातिमा इस लिये रखा गया क्यूंकि* ***अल्लाह*** *तआ़ला ने इस को और इस के मुह़िब्बीन को दोज़ख़ से आज़ाद किया है।*

(كَنْزُالْعُمَّال،كتاب الفضائل،الفصل الثاني فضل اهل البيت مفصلاً، ج١٢ص٥٠، حديث٣٤٢٢٢)

.... प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बेटी। **बानूए मुर्तज़ा** या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की अहलिया। **सरदारे ख़वातीने जहां व जिनां** या'नी तमाम दुन्या और जन्नत की औ़रतों की सरदार। **सय्यिदा** या'नी सरदार। **त़य्यिबा** या'नी पाकीज़ा। **त़ाहिरा** या'नी त़हारत वाली। **फ़ातिमा ज़हरा** या'नी रौशन। **बतूल** या'नी मुन्क़तेअ़ होना, कट जाना (चूंकि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا दुन्या में रहते हुए भी दुन्या से अलग-थलग थीं। लिहाज़ा आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का लक़ब बतूल हुवा)। **ज़ाकिया** या'नी नेक। **राज़िया** या'नी राज़ी रहने वाली। **मरज़िया** या'नी पसन्दीदा। **आ़बिदा** या'नी इ़बादत गुज़ार। **ज़ाहिदा** या'नी दुन्या से बे रग़बत। **मोह़द्दिषा** या'नी अह़ादीष बयान करने वाली। **मुबारका** या'नी बा बरकत। **ज़किय्या** या'नी पाक। **अ़ज़रा** या'नी पाक दामन दोशीज़ा। **सय्यिदतुन्निसा** या'नी तमाम औ़रतों की सरदार। **ख़ैरुन्निसा** या'नी औ़रतों में सब से बेहतर। **ख़ातूने जन्नत** या'नी जन्नती औ़रत। **मुअ़ज़्ज़मा** या'नी अ़ज़मत वाली। **उम्मुल हाद-उम्मुल ह़सनैन** या'नी हिदायत याफ़्तगान सय्यिदैना ह़सनैने करीमैन رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا की मां।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया :

اِنَّ فَاطِمَةَ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَحَرَّمَ اللّٰهُ ذُرِّيَّتَهَا عَلَى النَّارِ

तर्जमा : *बेशक फ़ाति़मा ने पाक दामनी इख़्तियार की और **अल्लाह** तआ़ला ने इस की अवलाद को दोज़ख़ पर ह़राम फ़रमा दिया है ।*

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم،کتاب معرفة الصحابه، باب فاطمة احصنت فرجها...الخ، ج۴، ص۱۳۵، الحدیث۴۷۷۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदा से ह़ज़रते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया : كَانَتْ كَالْقَمَرِ لَيْلَةِ الْبَدْرِ या'नी सय्यिदा चौदहवीं रात के चांद की त़रह़ ह़सीनो जमील थीं ।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم،کتاب معرفة الصحابه،ذکر ما ثبت عندنا من اعقاب فاطمة...الخ، ج۴، ص۱۴۹، الحدیث:۴۸۱۳)

बतूल व फ़ाति़मा ज़हरा लक़ब इस वासित़े पाया
कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत [1] का

(दीवाने सालिक अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

---

(1) ..... ख़ुश्बू

www.dawateislami.net

2 अलक़ाबात की वजहे तसमिया

﴾1﴿ ज़हरा (या'नी जन्नत की कली)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नाम और लक़ब की वजह बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** तआ़ला ने जनाबे फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ,आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अवलाद, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुहि़ब्बीन को दोज़ख़ की आग से दूर किया है इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम ''**फ़ाति़मा**'' हुवा। चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुन्या में रहते हुए भी दुन्या से अलग थीं लिहाज़ा ''**बतूल**'' लक़ब हुवा, ''**ज़हरा**'' ब मा'ना कली, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जन्नत की कली थीं ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कभी ऐसी कैफ़िय्यत न हुई जिस से ख़वातीन दो चार होती हैं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के जिस्म से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी जिसे हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सूंघा करते थे । इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब ''**ज़हरा**'' हुवा ।''

(مِراۃُ الْمَنَاجِیْح،کتاب المناقب،باب مناقب اھل بیت النبی، ج۸ ص۴۵۲ نعیمی کتب خانہ گجرات)

﴾2﴿...... त़ाहिरा व ज़ाकिया

इस का मत़लब है : ''पाको साफ़'' । चूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बचपन ही से अपने बाबाजान रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नज़रे रह़मत और फ़ैज़ान से ज़ाहिरी और बाति़नी त़हारत व पाकी

www.dawateislami.net

ह़ासिल कर चुकी थीं ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैज़ व निफ़ास से भी मुनज़्ज़ा व मुबर्रा (م۔ ن۔ زہ۔ م۔ ب۔ را या'नी पाक साफ़) थीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन अ़ली मुत्तक़ी हिन्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ख़ातूने जन्नत की शाने अ़ज़मत निशान में ह़दीषे पाक नक़्ल करते हैं कि शाहे हर दो सरा, मक्की मदनी आक़ा, वालिदे माजिदे ज़हरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **"मेरी बेटी फ़ात़िमा इन्सानी शक्ल में हूरों की त़रह़ हैज़ व निफ़ास से पाक है।"**

(کَنْزُ الْعُمّال، کتاب الفضائل، الفصل الثانی فضل اھل البیت مفصّلاً، ج ۶ جز ۱۲، ص ۵۰، الحدیث: ۳۴۲۲۱)

सादिक़ा सालिह़ा साइमा साबिरा — साफ़ दिल नेक ख़ू पारसा शाकिरा

आ़बिदा ज़ाहिदा साजिदा ज़ाकिरा — सय्यिदा ज़ाहिरा त़य्यिबा त़ाहिरा

जाने अह़मद की राह़त पे लाखों सलाम (1)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1).... मज़्कूरा अशआ़र में बयान कर्दा मुश्किल अलफ़ाज़ के मआ़नी : **सादिक़ा** या'नी सच बोलने वाली। **सालिह़ा** या'नी नेक। **साइमा** या'नी रोज़े रखने वाली। **साबिरा** या'नी सब्र करने वाली। **नेक ख़ू** या'नी अच्छी ख़स्लत वाली। **पारसा** या'नी नेक। **शाकिरा** या'नी शुक्र करने वाली। **आ़बिदा** या'नी इ़बादत करने वाली। **ज़ाहिदा** या'नी दुन्या से बे रग़बत। **साजिदा** या'नी सजदे करने वाली। **ज़ाकिरा** या'नी ज़िक्र करने वाली। **त़य्यिबा** या'नी पाको साफ़। **त़ाहिरा** या'नी त़हारत वाली।

शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल ह़सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जन्नती औ़रतों की सरदार, ख़ूब सूरत कली की त़रह़ पाकीज़ा त़हारत वाली हैं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़ात हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये राह़ते जान है।

www.dawateislami.net

फ़ज़ाइले बतूल ब ज़बाने रसूल

﴾1﴿... जो कुछ तेरी ख़ुशी है ख़ुदा को वोही अ़ज़ीज़

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : **''तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही होता है और तुम्हारी रिज़ा से रिज़ाए इलाही ।''**

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحَاكِم، كتاب معرفة الصحابة، باب نداء يوم المحشر......الخ، ج٤، ص١٣٧، حديث٤٧٨٣)

﴾2﴿.... हम को है वोह पसन्द जिसे आए तू पसन्द

दिलबरे आमिना, सरताजे आ़इशा, वालिदे फ़ातिमा (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया : ''फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मेरे जिस्म का ह़िस्सा (टुकड़ा) है **जो इसे ना गवार वोह मुझे ना गवार, जो इसे पसन्द वोह मुझे पसन्द ।** रोज़े क़ियामत सिवाए मेरे नसब, मेरे सबब और मेरे अज़्दवाजी रिश्तों के तमाम नसब मुन्क़त़ेअ़ (या'नी ख़त्म) हो जाएंगे ।''

(اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحَاكِم، كتابُ معرفة الصحابة، باب دعاء دفع الفقر......الخ، ج٤، ص١٤٤، حديث٤٨٠١)

﴾3﴿.... जिगर गोशए रसूल

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़नील उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : ''फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तमाम जहानों की औ़रतों और सब जन्नती औ़रतों की सरदार हैं ।''

www.dawateislami.net

मज़ीद फ़रमाया : ''فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِّنِّى فَمَنْ اَغْضَبَهَا اَغْضَبَنِى''
या'नी **फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) मेरा टुकड़ा है जिस ने इसे नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया ।''** और एक रिवायत में है : يُرِيبُنِى مَا اَرَابَهَا وَيُؤْذِينِى مَا اٰذَاهَا या'नी इन की परेशानी मेरी परेशानी और इन की तक्लीफ़ मेरी तक्लीफ़ है ।''

(مِشْكٰوةُ الْمَصَابِيح،كتاب المناقب،باب مناقب اهل بيت النبى ...الخ، ج ٢، ص٤٣٦، حديث ٦١٣٩)

सय्यिदा, ज़ाहिरा, तय्यिबा, ताहिरा

जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

(हदाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायात से पता चला कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सय्यिदतुन्निसा, वालिदए उम्मे कुलषूम व ज़ैनब व रुक़य्या ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُن की ज़ाते मुक़द्दसा को फ़ज़ाइले हमीदा व कमालाते कषीरा से सरफ़राज़ फ़रमाया ह़त्ता कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नाराज़ी को अपनी नाराज़ी क़रार दिया यहां उन बद नसीबों के लिये मक़ामे ग़ौर है जो सय्यिदए काइनात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا या आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की अवलादे पाक की गुस्ताख़ियां करते और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नाराज़ी मौल ले कर उख़रवी तबाही का सामान करते हैं ।

www.dawateislami.net

बाग़े जन्नत के हैं बहरे मदह़ ख़्वाने अहले बैत

तुम को मुज़्दा नार का ऐ दुश्मनाने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त अज़ : शहनशाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمن)

या'नी अहले बैत की ता'रीफ़ व तौसीफ़ करने वालों के लिये जन्नत के बाग़ात हैं और ऐ अहले बैत के दुश्मनो ! तुम्हारे लिये दोज़ख़ की बिशारत है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى الله!   أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जो अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत करते हैं और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पाते हैं क्यूंकि शाहे हर दो सरा, वालिदे फ़ातिमतुज़्ज़हरा (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को ख़ुश करने वाली चीज़ ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा व आले फ़ातिमा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से मह़ब्बत व अ़क़ीदत है और जिसे ख़ुश क़िस्मती से रसूले पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा ह़ासिल हो गई उसे रब्ब तआ़ला की रिज़ा मिल गई क्यूंकि

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम

ख़ुदा चाहता है रिज़ाए मुह़म्मद

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

www.dawateislami.net

शर्हे़ कलामे रज़ा :

दोनों जहां दुन्या व आख़िरत ख़ुदा की ख़ुश्नूदी के ख़्वाहां हैं और रब्ब तआ़ला हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ख़ुश रखना चाहता है जैसा कि इरशाद फ़रमाता है : ''وَلَسَوْفَ یُعْطِیْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰىؕ (پ۳۰، الضُّحٰی:۵) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब्ब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे ।*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

तस्वीरे मुस्त़फ़ा

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने चाल ढाल, शक्लो शबाहत (रंग-रूप) और बात-चीत में फ़ात़िमा अ़फ़ीफ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) से बढ़ कर किसी को हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबेह नहीं देखा और जब ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होतीं तो हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो जाते, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हाथ थाम कर उन को बोसा देते और अपनी जगह पर बिठाते ।

ज़हरा जदों वी आइयां खड़े हो गए रसूल

एन्हों कहवां शफ़्क़त या प्यार फ़ात़िमा

www.dawateislami.net

और जब हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम फ़रमातीं, आप صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों को थाम कर बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं ।

(سُنَنِ اَبُوداوُد، کتاب الادب ،باب ما جاء فی القیام، ص٨١٢، حدیث٥٢١٧)

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा
किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़सीरे नुबुव्वत (1) का

(दीवाने सालिक अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ातिमा रोईं फिर हंस पड़ीं

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा, आ़बिदा, ज़ाहिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : आक़ा की शहज़ादी, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुईं । उन का चलना हूबहू (या'नी बिल्कुल) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह था, जब मह़बूबे रब्ब, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन को देखा तो फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! मरह़बा ! फिर उन को बिठाया, फिर उन से सरगोशी

(1)..... या'नी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

की (या'नी कान में कोई बात कही) जिस को सुन कर शहज़ादी बहुत रोईं । जब मह़बूबे रब्ब, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की बे क़रारी देखी तो दोबारा सरगोशी की जिस से आप हंस पड़ी (ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती है :) जब हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो गए तो मैं ने ख़ातूने जन्नत से पूछा : आप से रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने क्या सरगोशी की थी ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ इफ़शा (या'नी ज़ाहिर) नहीं करूंगी, (उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं :) जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रफ़ीक़े आ'ला से जा मिले (या'नी मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया) तो मैं ने कहा : मेरा आप पर जो ह़क़ है मैं आप को उस ह़क़ की क़सम दे कर सुवाल करती हूं, मुझे बताइये : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से क्या फ़रमाया था ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : हां ! अब मैं बताती हूं, पहली बार ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सरगोशी की तो मुझे येह ख़बर दी कि हर साल जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلام) मुझ से एक बार क़ुरआने पाक का दौर किया करते थे इस मरतबा उन्हों ने 2 बार दौर किया है, अब मेरा येही गुमान है कि मेरा वक़्त क़रीब आ गया है, तुम **अल्लाह** तआ़ला से डरना और सब्र करना, बेशक मैं तुम्हारा अच्छा पेशवा हूं, ख़ातूने जन्नत ने कहा :

www.dawateislami.net

येह सुन कर मुझ पर गिर्या त़ारी हुवा (या'नी मैं रोने लगी) । जब बाबाजान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरी बे क़रारी देखी तो मुझ से दोबारा सरगोशी की और फ़रमाया :

يَا فَاطِمَةُ اَلَا تَرْضِيْنَ اَنْ تَكُوْنِيْ سَيِّدَةَ نِسَآءِ اَهْلِ الْجَنَّةِ اَوْنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ

तर्जमा : *ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो कि तुम तमाम जन्नतियों की बीवियों या मोमिनों की बीवियों की सरदार हो !*

ख़ातूने जन्नत ने फ़रमाया : फिर मुझे हंसी आ गई ।

(مشکاۃ المصابیح، کتاب المناقب، باب مناقب اھل بیت النبی، الفصل الاوّل، ج ۲، ص ۴۳۵، الحدیث:۶۱۳۸)

10 फ़ज़ाइले फ़ात़िमा

﴾1﴿.... ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सर से पाऊं तक हम शक्ले मुस्त़फ़ा थीं ।

﴾2﴿.... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की चाल-ढाल हर वज़अ़-क़त़अ़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थी ।

﴾3﴿...... अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की जीती जागती तस्वीर बनाया था ।

﴾4﴿.... मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان उम्मुल ह़सनैन शहज़ादिये कौनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शान में अ़र्ज़ करते हैं :

www.dawateislami.net

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा

किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

(दीवाने सालिक अज़् ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنّان)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿....हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم जब ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا को आता देखते तो ख़ुशी से खड़े हो जाते और अपनी जगह बिठा लेते ।

﴾6﴿.... जब ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं तो तमाम उम्महातुल मुअमिनीन मौजूद थीं मगर शाहे बहरो बर, रसूले अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم ने राज़ की बात सिर्फ़ अपनी लाडली शहज़ादी से की ।

﴾7﴿..... माहे रमज़ान में कुरआन का दौर करना सुन्नते रसूली भी है और सुन्नते जिब्रीली भी । (कुरआने पाक का दौर करने का मत़लब येह है कि एक पढ़े और दूसरा सुने, फिर दूसरा पढ़े और पहला सुने, मा'लूम हुवा ह़बीबे ख़ुदा صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم को अपने विसाले मुबारक का पहले से ही इ़ल्म था कि अगले रमज़ान से पहले ही हमारी वफ़ाते ज़ाहिरी हो जाएगी)

﴾8﴿.... ऐ फ़ातिमा (رضی اللہ تعالٰی عنہا) जैसे तुम हमारी ह़यात शरीफ़ में त़य्यिबा, त़ाहिरा, मुत्तक़िया, साबिरा रही हो ऐसे ही हमारी वफ़ात के बा'द भी रहना, तुम्हारे पाए इस्तिक़्लाल (اِس۔تِق۔لال) (या'नी मुस्तक़िल मिज़ाजी) में जुम्बिश (جُم۔بِش) (या'नी ह़रकत)

www.dawateislami.net

न आने पाए, ख़ातूने जन्नत ने इस पर अ़मल कर के दिखा दिया, रोना सब्र के ख़िलाफ़ नहीं, नौह़ा, पीटना वग़ैरा सब्र के ख़िलाफ़ है येह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कभी नहीं किया ।

﴾9﴿.... ताजदारे रिसालत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी को जन्नती लोगों की बीवियों या मोमिनों की बीवियों की सरदार होने की बिशारत दी ।

﴾10﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : त़हारते नफ़्स और शरफ़े नसब में ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बराबर कोई नहीं हो सकता ।

(مراۃالمناجیح شرح مشکاۃ المصابیح،کتاب الفضائل، باب مناقب اھل بیت النبی،ج ۸،ص۴۵۳ تا ۴۵۵)

एक और रिवायत में है : उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बुलाया और कान में कोई बात फ़रमाई वोह बात सुन कर ख़ातूने जन्नत रोने लगीं, आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फिर सरगोशी की (या'नी कान में कोई बात फ़रमाई) तो ख़ातूने जन्नत हंसने लगीं, ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : मैं ने ख़ातूने जन्नत से कहा : आप के बाबाजान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के कान में क्या फ़रमाया जो आप रोईं और दो बारह सरगोशी में क्या

www.dawateislami.net

फ़रमाया जो आप हंसीं ? ख़ातूने जन्नत ने कहा : मेरे बाबाजान रह़मते आ़लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم ने पहली बार सरगोशी में अपनी वफ़ाते ज़ाहिरी की ख़बर दी तो मैं रोई और दूसरी बार सरगोशी में येह ख़बर दी कि आप के अहल में से सब से पहले मैं आप से मिलूंगी, तो मैं हंसने लगी ।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی،کتاب المناقب،باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ص ٩٢٠،حدیث٣٦٢٥،٣٦٢٦ ملتقطاً)

इस ह़दीष में कई ग़ैबी ख़बरें हैं :

﴿1﴾..... ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का वक़्ते वफ़ात ।

﴿2﴾..... नोइय्यते वफ़ात कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ख़ातिमा ईमान, तक़्वा और परहेज़गारी के आ'ला दर्जे पर होगा ।

﴿3﴾..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का क़ब्रो ह़श्र में अव्वल नम्बर काम्याब होना ।

﴿4﴾..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का पुल सिरात़ से बख़ूबी गुज़र जाना ।

﴿5﴾..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जन्नत के आ'ला मक़ाम पर ह़त्ता कि हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم के साथ रहना ।

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح،کتاب الفضائل،باب مناقب اهل بیت النبی، ج٨، ص٤٥٥)

जिन का नामे मुबारक है बी फ़ात़िमा जो ख़वातीने आ़लम में हैं आ़लिया
आ़बिदा, ज़ाहिदा, साजिदा, सालिह़ा सय्यिदा, ज़ाहिरा, त़य्यिबा, त़ाहिरा
जाने अह़मद की राह़त पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत और इस की शर्ह़ फ़ज़ाइले फ़ातिमा और कमालाते मुस्त़फ़ा का ह़सीन इम्तिज़ाज (اِم-تِ-زاج) (या'नी आमेज़िश) है, एक त़रफ़ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शाने अ़ज़मत निशान के फूल खिलते हैं तो दूसरी त़रफ़ उ़लूमो कमालाते मुस्त़फ़ा के गुलशन महकते हैं, एक त़रफ़ लाडली शहज़ादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मिलने वाला क़ुर्बे इलाही, इन की बक़िय्या दुन्यवी ज़िन्दगी और उख़रवी इन्आ़म व इकरामात की ख़बर दी जा रही है तो दूसरी त़रफ़ फ़ज़्लो कमाले मुस्त़फ़ा के बाब भी रोशन तर होते जा रहे हैं जिन को ह़कीमुल उम्मत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت समेत हर साह़िबे बसीरत (या'नी अक़्ल मन्द) ने अपनी बिसात़ (या'नी हिम्मत) के मुत़ाबिक़ समझा और इश्क़े रसूल व अ़क़ीदते बतूल को फ़ुज़ूं (فُ-زُوں या'नी ज़ियादा) करने वाले ख़ुश्नुमा फूलों का मदनी गुलदस्ता हमारी त़रफ़ बढ़ाया ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तस्बीह़े फ़ात़िमा की फ़ज़ीलत

सय्यिदे कौनैन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी लाडली साह़िबज़ादी, ख़ातूने जन्नत, बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद तनूर में रोटियां लगाया करतीं, घर में झाड़ू देतीं और चक्की

www.dawateislami.net

पीसती थीं जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हाथों में छाले पड़ गए थे, रंग मुबारक मुतग़य्यर और कपड़े गर्द आलूद हो गए थे। एक दफ़्आ़ ख़ादिम की त़लब में बारगाहे मुस्त़फ़ा में ह़ाज़िर हुईं तो तस्बीहे़ फ़ात़िमा का तोह़फ़ा मिला चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आक़ाए नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ख़ादिम का सुवाल किया : हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें हमारे पास ख़ादिम तो नहीं मिलेगा, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं **जो ख़ादिम से बेहतर है** ? तुम जब बिस्तर पर जाओ तो 33 बार سُبْحٰنَ اللّٰہ 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 34 बार اَللّٰہُ اَکْبَر पढ़ लिया करो।

(صَحِیْح مُسْلِم،کتاب الذکر والدعاء والتوبۃ والاستغفار،باب التسبیح اول النہار وعند النوم، ص۱۰۴۸، الحدیث:۲۷۲۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने जो शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मज्मूआ़ इस्लामी बहनों के लिये बनाम 63 मदनी इन्आ़मात ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाया है, इस में मदनी

www.dawateislami.net

इन्आ़म नम्बर (3) है कि क्या आज आप ने नमाजे़ पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक एक बार आयतुल कुरसी, सूरतुल इख़्लास और तस्बीहे़ फ़ाति़मा पढ़ी ?

तो आइये ! निय्यत कर लीजिये कि इस मदनी इन्आ़म पर ज़रूर अ़मल करेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों के लिये सीरते सालिहा़ते उम्मत

मख़्दूमए काइनात ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ज़िक्र कर्दा वाक़िए़ से पता चलता है कि ताजदारे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी लाडली शहज़ादी के लिये येही पसन्द फ़रमाते हैं कि वोह घर के काम-काज खु़द ही करें, इस से इस्लामी बहनों के लिये एक राहे अ़मल मुतअ़य्यन होती है, चुनान्चे

सीरते सालिहा़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़्हा़त पर मुश्तमिल किताब **"जन्नती ज़ेवर"** सफ़्हा़ 60 पर शैख़ुल ह़दीष अ़ल्लामा मुफ़्ती अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाते हुए फ़रमाते हैं : औ़रत के फ़राइज़ में येह भी है कि अगर शोहर ग़रीब हो और

www.dawateislami.net

घरेलू काम-काज के लिये नोकरानी रखने की त़ाक़त न हो तो अपने घर का काम-काज ख़ुद कर लिया करे इस में हरगिज़ हरगिज़ न औ़रत की कोई ज़िल्लत है न शर्म। बुख़ारी शरीफ़ की बहुत सी रिवायतों से पता चलता है कि ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मुक़द्दस साहि़बज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का भी येही मा'मूल था कि वोह अपने घर का सारा काम-काज ख़ुद अपने हाथों से किया करती थीं, कुंवें से पानी भर कर और अपनी मुक़द्दस पीठ पर मशक लाद कर पानी लाया करती थी, ख़ुद ही चक्की चला कर आटा भी पीस लेती थीं इसी वजह से इन के मुबारक हाथों में कभी कभी छाले पड़ जाते थे इसी त़रह़ अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ की साहिबज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ भी रिवायत है कि वोह अपने ग़रीब शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के यहां अपने घर का सारा काम-काज अपने हाथों से कर लिया करती थीं यहां तक कि ऊंट को खिलाने केलिये बागों में से खजूरों की गुठलियां चुन चुन कर अपने सर पर लाती थीं और घोड़े के लिये घास-चारा भी लाती थीं और घोड़े की मालिश भी करती थीं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : **हर** बीवी का येह भी फ़र्ज़ है कि वोह अपने शोहर की आमदनी और घर के अख़राजात को हमेशा नज़र के सामने रखे और घर का ख़र्च इस त़रह़ चलाए कि इ़ज़्ज़त

www.dawateislami.net

व आबरू से ज़िन्दगी बसर होती रहे। अगर शोहर की आमदनी कम हो तो हरगिज़ हरगिज़ शोहर पर बे जा फ़रमाइशों का बोझ न डाले इस लिये कि अगर औ़रत ने शोहर को मजबूर किया और शोहर ने बीवी की मह़ब्बत में क़र्ज़ का बोझ अपने सर पर उठा लिया और ख़ुदा عزوجل न करे इस क़र्ज़ का अदा करना दुश्वार हो गया तो घरेलू ज़िन्दगी में परेशानियों का सामना हो जाएगा और मियां-बीवी की ज़िन्दगी तंग हो जाएगी इस लिये हर औ़रत को लाज़िम है कि सब्रो क़नाअ़त के साथ जो कुछ भी मिले ख़ुदा का शुक्र अदा करे और शोहर की जितनी आमदनी हो उसी के मुत़ाबिक़ ख़र्च करे और घर के अख़राजात को हरगिज़ हरगिज़ आमदनी से बढ़ने न दे। (जन्नती ज़ेवर, स. 60)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घरेलू काम-काज करने के 11 फ़वाइद

घरेलू काम-काज करने के बहुत फ़वाइद हैं, यहां इन में से चन्द बयान किये जाते हैं :

(1).... 26 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1432 हि. को इजतिमाए रिदापोशी के सिलसिले में होने वाले मदनी मुज़ाकरे में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ ने इरशाद फ़रमाया : अपना काम अपने हाथ से करना सुन्नते मुस्त़फ़ा है। इस्लामी बहनों को इस प्यारी प्यारी सुन्नत पर अ़मल करना चाहिये। घर के काम-काज वग़ैरा करने से हाथों की रगें मुतह़र्रिक रहेंगी और नसें सख़्त नहीं होंगी।

www.dawateislami.net

(2)..... अपने घर के काम-काज खुद करना और ब वक़्ते नमाज़ दीगर तमाम मसरूफ़िय्यात ख़त्म कर देना सुन्नते मुस्त़फ़ा है।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب النفقات، باب خدمۃ الرجل فی اھلہ ، ص۱۳۷۵، حدیث۵۳۶۳)

(3).... घर में रहते हुए इस्लामी बहनों का दस्तकारी करना और कस्बे ह़लाल के ज़राएअ़ अपनाना सुन्नते उम्मुल मोअमिनीन व सुन्नते सह़ाबियात है।

(سُنَن نَسَائِی،کتاب الزینۃ،لبس البرود، ص۸۴۳، حدیث۵۳۳۱)

(4).... घर के काम-काज करना सुन्नते सय्यिदा फ़ात़िमा है। इस की तफ़्सील मक्तबतुल मदीना की जारी कर्दा ऑडियो केसिट "**शहज़ादिये कौनैन की सादगी**" में मिल जाएगी।

(5)..... घरेलू काम-काज करने वाली इस्लामी बहन की घर में अहम्मिय्यत होती है यूं उसे घर में मदनी माह़ोल बनाने में आसानी होती है।

(6).... घर के काम-काज पर तवज्जोह देने से सुसराली झगड़े खुसूसन सास बहू की चपक़लिशें ख़त्म होने की उम्मीदे वासिक़ है। फिर भी अगर येह झगड़े ख़त्म न हों तो मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला ब नाम "**सास बहू में सुल्ह़ का राज़**" ह़ासिल कीजिये और इस में दिये हुए नुस्ख़े पर अ़मल कीजिये।

(7)...... बेकार शख़्स शैत़ान का आलए कार बनता और तफ़क्कुरात के हुजूम में घिर जाता है जब कि घर के काम-काज करना बे कारी, सुस्ती और काहिली को दूर करता और शैत़ानी ख़यालात व हुजूमे तफ़क्कुरात से मह़फ़ूज़ रखता है।

www.dawateislami.net

(8)..... ख़ुद को जिस्मानी त़ौर पर स्मार्ट और ज़ेह्नी त़ौर पर चाक़ व चोबन्द रखने की ख़्वाहिश होती है और येह चीज़ घरेलू काम-काज करने से ह़ासिल होती है।

(9)..... घरेलू काम-काज में वरज़िश है और वरज़िश बीमारियों से बचाती और सिह़्ह़त की बहारें लाती है।

(10)..... अगर घरेलू काम-काज थका दें तो सीरते फ़ाति़मा के मुत़ालआ़ और तस्बीह़े फ़ाति़मा के विर्द से इस का इ़लाज कीजिये।

(11)..... आज कल डिप्रेशन और टेन्शन की शिकायत आ़म है, इस से बचने का बेहतरीन नुस्ख़ा मसरूफ़िय्यत है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इ़बादत हो तो ऐसी ...... !

नूरे नज़रे मुस्त़फ़ा, दिलबरे अ़लिय्युल मुर्तज़ा, राह़ते फ़ाति़मतुज़्ज़हरा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा कि रात को मस्जिदे बैत की मेह़राब (या'नी घर में नमाज़ पढ़ने की मख़्सूस जगह) **में नमाज़ पढ़ती रहतीं यहां तक कि नमाज़े फ़ज्र का वक़्त हो जाता,** मैं ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये बहुत ज़ियादा दुआ़एं करते सुना, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपनी ज़ात के लिये कोई दुआ़ न करतीं, मैं ने अ़र्ज़ की : प्यारी

www.dawateislami.net

अम्मी जान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) क्या वजह है कि आप अपने लिये कोई दुआ़ नहीं करतीं, फ़रमाया : "**पहले पड़ोस है फिर घर ।**"
(مَدَارِجُ النُّبُوَّت (مترجم)، ج۲، قسم پنجم باب اوّل در ذکر اولاد کرام ص۶۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िए़ में उन इस्लामी बहनों के लिये कई **नसीह़त आमोज़ मदनी फूल** हैं जो नवाफ़िल तो दर कनार फ़राइज़ से भी ग़फ़्लत बरतती हैं, दो जहां के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की साहिबज़ादी, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने तो रातें इ़बादते इलाही में गुज़ारीं मगर इन की रातें ग़फ़्लत में गुज़रती हैं, कभी "**गुनाहों भरे चेनल्ज़**" के सामने "**फ़िल्मे ड्रामे**" देखते, कभी **मेहंदी की तक़रीब में बे ह़याई** करते और कभी शादी के मौक़अ़ पर ख़ूब **ढोल पीटते, बाजे बजाते और डान्स** करते गुज़रती हैं । बे ह़याई को आ़र समझती हैं न बे पर्दगी से ख़ार खाती हैं, ह़ालांकि नूरे निगाहे रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का पर्दे का इस क़दर मदनी ज़ेह्न कि जीते जी ही नहीं बल्कि सफ़रे आख़िरत पर गामज़न होते वक़्त भी इस के बारे में मुतफ़क्किर थीं और इस की पाबन्दी की ताकीद फ़रमाई, चुनान्चे

www.dawateislami.net

बीबी फ़ात़िमा के जनाज़े का भी पर्दा

अमीरुल मोअमिनीन, मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मौत के वक़्त वसिय्यत फ़रमाई थी कि जब मैं दुन्या से रुख़्सत हो जाउं तो रात में दफ़्न करना ताकि किसी ग़ैर मर्द की नज़र मेरे जनाज़े पर न पड़े।"

(مَدَارِجُ النُّبُوَّت(مترجم)، ج۲، قسم پنجم باب اول در ذکر اولاد کرام ص۶۲۴)

तमाम इस्लामी बहनें दुन्या व आख़िरत में काम्याबी पाने, बा पर्दा व बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने और शर्मो ह़या के साथ जीने का ढंग सीखने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहें, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत का मा'मूल बनाएं اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता मह़सूस करेंगी, आइये ! अपना ईमान ताज़ा करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकत की अ़ज़ीमुश्शान मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" (जिल्द अव्वल) सफ़ह़ा 561 पर है :

70 दिन पुरानी लाश

3 रमज़ानुल मुबारक 1426 हि. बरोज़ हफ़्ता पाकिस्तान के मशरिक़ी ह़िस्से में ख़ौफ़नाक ज़लज़ला आया जिस में लाखों

www.dawateislami.net

अफ़राद फ़ौत हुए इन्हीं में मुज़फ़्फ़राबाद (कश्मीर) के अ़लाक़े ''मीरा तसूलियां'' की मुक़ीम 19 साला **नसरीन अ़त्तारिया** बिन्ते गुलाम मुर्सलीन जो कि **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती थीं, **शहीद** हो गईं। मर्हूमा के वालिद और दीगर घर वालों ने 8 ज़ुल क़ा'दतुल ह़राम 1426 हि. **शबे पीर रात तक़रीबन 10 बजे किसी वजह से क़ब्र को खोल दिया, यकबारगी आने वाली ख़ुश्बूओं की लपटों से मशामे दिमाग़ मुअ़त्तर हो गए ! शहादत को 70 अय्याम गुज़र जाने के बा वुजूद नसरीन अ़त्तारिया का कफ़न सलामत और बदन बिल्कुल तरो ताज़ा था !**

अल्लाह *रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

है फ़ैज़ाने ग़ोसो रज़ा मदनी माह़ोल | *अ़ताए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल*[(1)]
बचे बद नज़र से सदा मदनी माह़ोल | *सलामत रहे या ख़ुदा मदनी माह़ोल*
सुनो है बहुत काम का मदनी माह़ोल | *ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी*
येह ता'लीम फ़रमाएगा मदनी माह़ोल | *तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम*
*रहे तेरे **अ़त्तार** का मदनी माह़ोल* | *क़ियामत तलक या इलाही सलामत*

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 602 ता 604)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1)..... दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे और नेकियों से लबरेज़ माह़ोल को ''**मदनी माह़ोल**'' कहा जाता है।

www.dawateislami.net

ख़ातूने जन्नत का विसाले बा कमाल

विसाले नबवी के 6 माह बा'द 3 रमज़ानुल मुबारक सिने 11 हिजरी मंगल की रात सय्यिदा, त़य्यिबा, त़ाहिरा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दाइए अजल को लबैक कहा । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा या ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुई ।

(مَدَارِجُ النُّبُوَّت(مترجم) قسم پنجم باب اوّل در ذکر اولاد کرام، ج۲، ص۶۲۴)

मन्क़बते ख़ातूने जन्नत

है रुत्बा इस लिये कौनैन (1) में इस्मत (2) का इ़फ़्फ़त का
शरफ़ ह़ासिल है उन को दामने ज़हरा से निस्बत का

जो जाना ख़ुल्द (3) में हो पाए ज़हरा से लिपट जाओ
जिसे कहते हैं जन्नत मुल्क है ख़ातूने जन्नत का

नबी के दिल की राह़त और अ़ली के घर की ज़ीनत हैं
बयां किस से हो इन की पाक त़ीनत पाक तलअ़त (4) का

इन्हीं के माह पारे दो जहां के लाज वाले हैं
येह ही हैं मजमए़ बह़रैन (5) सर चश्मा हिदायत का

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा
किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत का

बतूल व फ़ाति़मा ज़हरा लक़ब इस वासिते़ पाया
कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत (6) का

---

(1)..... दो जहां (2)..... पारसाई (3)..... जन्नत (4).... रुख़े पाक (5).... दो समुन्दर, इशारा है ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन या'नी ह़सन व ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا की त़रफ़ (6).... ख़ुश्बू ।

www.dawateislami.net

नबी की लाडली, बीवी वली की, मां शहीदों की
यहां जल्वा नुबुव्वत का विलायत का शहादत का
तआ़लल्लाह इस सअ्दैन (1) के जोड़े का क्या कहना
कि रह़मत की दुल्हन ज़हरा, अ़ली दुल्हा विलायत का
वोह इ़तरत (2) जो कि उम्मत के लिये क़ुरआने षानी है
नबी का है चमन या'नी शजर इस पाक मन्बत (3) का
वोह चादर जिस का आंचल चांद सूरज ने नहीं देखा
बनेगी ह़श्र में पर्दा गुनहगाराने उम्मत का
अगर **सालिक** भी या रब्ब दा'वए जन्नत करे, ह़क़ है
जो वोह ज़हरा की है येह भी तो है ख़ातूने जन्नत का

(दीवाने सालिक अज़् ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عليه رحمة الحنّان)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आवाज़ बैठ जाए तो तीन इ़लाज

﴾1﴿ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठन्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर इस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इ़लाज करने से إن شاء الله عزوجل फ़ाइदा हो जाएगा।

﴾2﴿ एक चमच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये।

﴾3﴿ ख़शख़ाश के छिलके और अजवाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये। (नेकी की दा'वत, स. 601)

---

(1)... दो मुबारक सय्यारे, यहां मुराद मौला मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالی عنہ और ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا हैं
(2).... नस्ले पाक (3).... जाए पैदाइश।

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 2

ख़ातूने जन्नत की करामात

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत की करामात

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 419 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मदनी पन्ज सूरह**" सफ़्ह़ा 164 पर है : शहनशाहे कौनो मकां, ग़मख़्वारे बे कसां, शफ़ीए मुजरिमां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़फ़िय्यत निशां है : ऐ लोगो ! बेशक तुम में से बरोज़े क़ियामत उस की दहशतों और ह़िसाब किताब से जल्द नजात पाने वाला वोह शख़्स होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर कषरत से दुरूद पढ़ा होगा।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الیاء، ج۹، ص۱۲۹، الحدیث ۲۷۶۸۶)

दुन्या व आख़िरत में जब में रहूं सलामत
प्यारे पढ़ूं न क्यूं कर तुम पर सलाम हर दम

क्या ख़ौफ़ मुझ को प्यारे ! नारे जह़ीम से हो
तुम हो शफ़ीए मेह़शर तुम पर सलाम हर दम

(ज़ौक़े ना'त अज़ शहनशाहे सुख़न मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

शाही दा'वत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 346 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**करामाते सह़ाबा**" सफ़्ह़ा 330 ता 333 पर शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा

www.dawateislami.net

अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی नक़्ल फ़रमाते हैं : रिवायत है कि एक रोज़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم की दा'वत की। जब दोनों आ़लम के मेज़बान ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान बिन अ़फ़्फ़ान رضی اللہ تعالٰی عنہ के मकान पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो ह़ज़रते उ़षमाने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ आप के पीछे चलते हुए आप के क़दमों को गिनने लगे और अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم मेरे मां बाप आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم पर कुरबान ! मेरी तमन्ना है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم के एक एक क़दम के इ़वज़ मैं आप की ता'ज़ीम व तकरीम के लिये एक एक ग़ुलाम आज़ाद करूं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ के मकान तक जिस क़दर हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام के क़दम पड़े थे ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رضی اللہ تعالٰی عنہ ने इतनी ही ता'दाद में ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद कर दिया।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم ने इस दा'वत से मुतअ़ष्षिर हो कर ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमा رضی اللہ تعالٰی عنہا से कहा : ऐ फ़ात़िमा رضی اللہ تعالٰی عنہا आज मेरे दीनी भाई ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान رضی اللہ تعالٰی عنہ ने हुज़ूरे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم की बड़ी ही शानदार दा'वत की है और हुज़ूरे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم के हर हर क़दम के बदले एक ग़ुलाम आज़ाद किया है, मेरी भी तमन्ना है कि काश ! हम भी हुज़ूर علیہ الصلوۃ والسلام

www.dawateislami.net

की इसी त़रह़ शानदार दा'वत कर सकते । ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने शोहरे नामदार ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के इस जोशे तअष्षुर से मुतअष्षिर हो कर कहा : बहुत अच्छा । जाइये, आप भी हु़ज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को इसी क़िस्म की दा'वत देते आइये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ हमारे घर में भी इसी क़िस्म का सारा इन्तिज़ाम हो जाएगा ।

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर दा'वत दे दी और शहनशाहे दो आ़लम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की एक कषीर जमाअ़त को साथ ले कर अपनी प्यारी बेटी के घर में तशरीफ़ फ़रमा हो गए । ह़ज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) में तशरीफ़ ले जा कर ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस عَزَّوَجَلَّ की बाहगाह में सर ब सुजूद हो गईं और येह दुआ़ मांगी : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी बन्दी फ़ाति़मा ने तेरे मह़बूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और अस्ह़ाबे मह़बूब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की दा'वत की है, तेरी बन्दी का सिर्फ़ तुझ ही पर भरोसा है लिहाज़ा ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ तू आज मेरी लाज रख ले और इस दा'वत के खानों का तू आ़लमे ग़ैब (या'नी दूसरा जहां जो छुपा हुवा है) से इन्तिज़ाम फ़रमा ।''

येह दुआ़ मांग कर ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हांडियों को चुल्हों पर चढ़ा दिया । ख़ुदावन्दे तआ़ला का दरयाए करम एक दम जोश में आ गया और उस

www.dawateislami.net

रज़्ज़ाक़े मुत़लक़ (बिग़ैर किसी क़ैद के रिज़्क़ अ़ता फ़रमाने वाले) ने दम ज़दन में (या'नी फ़ौरन) उन हांडियों को जन्नत के खानों से भर दिया।

ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इन हांडियों में से खाना निकालना शुरूअ़ कर दिया और ह़ुज़ूर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام अपने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के साथ खाना खाने से फ़ारिग़ हो गए लेकिन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि हांडियों में से खाना कुछ भी कम नहीं हुवा और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इन खानों की ख़ुश्बू और लज़्ज़त से ह़ैरान रह गए। ह़ुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को मुतह़य्यर (مُ-تَ-حَ-یِّر या'नी ह़ैरान) देख कर फ़रमाया : क्या तुम लोग जानते हो कि येह खाना कहां से आया है? सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ किया : नहीं, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : येह खाना **अल्लाह** तआ़ला ने हम लोगों के लिये जन्नत से भेज दिया है।

फिर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا गोशए तन्हाई में जा कर सजदा रेज़ हो गईं और येह दुआ़ मांगने लगीं : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने तेरे मह़बूब के एक एक क़दम के इ़वज़ एक एक ग़ुलाम आज़ाद किया है लेकिन तेरी बन्दी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को इतनी इस्तित़ाअ़त नहीं है। लिहाज़ा ऐ ख़ुदावन्दे आ़लम عَزَّوَجَلَّ जहां तुने मेरी ख़ात़िर जन्नत से खाना भेज कर मेरी लाज रख ली है वहां तू मेरी ख़ात़िर

www.dawateislami.net

अपने मह़बूब صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم के उन क़दमों के बराबर जितने क़दम चल कर मेरे घर तशरीफ़ लाए हैं, अपने मह़बूब صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم की उम्मत के गुनाहगार बन्दों को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दे।

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जूंही इस दुआ़ से फ़ारिग़ हुईं एक दम ना गहां (या'नी अचानक) ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام येह बिशारत ले कर बारगाहे रिसालत में उतर पड़े कि या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुआ़ बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गई, **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया है कि हम ने आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم के हर क़दम के बदले में एक एक हज़ार गुनाहगारों को जहन्नम से आज़ाद कर दिया। (جامعُ المُعْجِزات(مصری)، ص٦٥، بحوالہ سچّی حکایات)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم की शाने इ़ल्मिय्यत, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जज़्बए सख़ावत और मल्कए जन्नत की अ़ज़मत व करामत की बय्यिन (या'नी वाज़ेह़) दलील है। नबिय्ये ग़ैब दां صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ने पहचान लिया कि येह आज की दा'वत का खाना कहां से आया, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने दौलत कदा (या'नी मकाने

www.dawateislami.net

आलीशान) की तरफ़ बढ़ने वाले हर क़दमे नबी पर ग़ुलाम आज़ाद किये, और **अल्लाह** मोअ्त़ी عَزَّوَجَلَّ ने बिन्ते रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को अपने मेहमानों की मेज़बानी के लिये जन्नत का खाना भेज कर और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुआ को शरफ़े क़बूलिय्यत अ़ता फ़रमा कर इस दा'वत की तरफ़ उठने वाले हर क़दमे नबी के सदक़े हज़ार हज़ार गुनाहगारों की शफ़ाअ़त का वा'दा फ़रमा कर ख़ातूने जन्नत को ताजे करामत से नवाज़ दिया।

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

करामत ह़क़ है

अहले सुन्नत का मुत्तफ़िक़ा अ़क़ीदा है कि सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलियाए उ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام की करामतें ह़क़ हैं और हर ज़माने में **अल्लाह** वालों की करामात का सुदूर व ज़ुहूर होता रहा और اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक कभी भी इस का सिलसिला मुन्क़तेअ़ (مُن۔ق۔طِع या'नी ख़त्म) नहीं होगा, बल्कि हमेशा औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہ से करामात सादिर व ज़ाहिर होती रहेंगी।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

करामत की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 58 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی **करामत की ता'रीफ़** कुछ इस त़रह़ बयान फ़रमाते हैं : "**वली से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उस को करामत कहते हैं ।**"

क़ुरआन से करामात का षुबूत

क़ुरआनो सुन्नत में कई मक़ामात पर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की करामात का षुबूत मिलता है इस सिलसिले में दो क़ुरआनी वाक़िआ़त पेश किये जाते हैं :

﴾1﴿ ......وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ یَّقِیْنٍ ﴿۲۲﴾ اِنِّیْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَ اُوْتِیَتْ مِنْ كُلِّ
شَیْءٍ وَّ لَهَا عَرْشٌ عَظِیْمٌ ﴿۲۳﴾ وَجَدْتُّهَا وَ قَوْمَهَا یَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَ زَیَّنَ
لَهُمُ الشَّیْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِیْلِ فَهُمْ لَا یَهْتَدُوْنَ ﴿۲۴﴾ اَلَّا یَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ
یُخْرِجُ الْخَبْءَ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ یَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَ مَا تُعْلِنُوْنَ ﴿۲۵﴾ اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ﴿۲۶﴾ قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِیْنَ ﴿۲۷﴾ اِذْهَبْ
بِّكِتٰبِیْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَیْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا یَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾ قَالَتْ یٰۤاَیُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّیْۤ
اُلْقِیَ اِلَیَّ كِتٰبٌ كَرِیْمٌ ﴿۲۹﴾ اِنَّهٗ مِنْ سُلَیْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ﴿۳۰﴾ اَلَّا

www.dawateislami.net

تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً
اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾ قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّ اُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ۬ وَّ الْاَمْرُ اِلَيْكِ
فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ
اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَ اِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ
الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ٞ فَمَاۤ اٰتٰىنَِۧ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّاۤ اٰتٰىكُمْ ۚ
بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾ اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا
وَ لَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَاۤ اَذِلَّةً وَّ هُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قَالَ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا
قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾ قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ
مَّقَامِكَ ۚ وَ اِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾ قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۫ۖ
لِيَبْلُوَنِيْۤ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَ مَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ
كَرِيْمٌ ﴿٤٠﴾ (پ١٩، النمل:٢٢تا٤٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *(हुद हुद ने कहा) और मैं शहरे सबा से हुज़ूर के पास एक यक़ीनी ख़बर लाया हूं मैं ने एक औ़रत देखी कि उन पर बादशाही कर रही है और उसे हर चीज़ में से मिला है और उस का बड़ा तख़्त है मैं ने उसे और उस की क़ौम को पाया कि* **अल्लाह** *को छोड़ कर सूरज को सजदा करते हैं और शैत़ान ने उन के आ'माल उन की निगाह में संवार कर उन को सीधी राह से रोक*

www.dawateislami.net

दिया तो वोह राह नहीं पाते। क्यूं नहीं सजदा करते **अल्लाह** को जो निकालता है आस्मानों और ज़मीन की छुपी चीज़ें और जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और ज़ाहिर करते हो, **अल्लाह** है कि उस के सिवा कोई सच्चा मा'बूद नहीं, वोह बड़े अ़र्श का मालिक है सुलैमान ने फ़रमाया : अब हम देखेंगे कि तू ने सच कहा या तू झूटों में है, मेरा येह फ़रमान ले जा कर उन पर डाल फिर उन से अलग हट कर देख कि वोह क्या जवाब देते हैं। वोह औ़रत बोली ऐ सरदारो ! बेशक मेरी त़रफ़ एक इ़ज़्ज़त वाला ख़त़ डाला गया, बेशक वोह सुलैमान की त़रफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रह़म वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो और गर्दन रखते मेरे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हो। बोली : ऐ सरदारो ! मेरे इस मुआ़मले में मुझे राय दो मैं किसी मुआ़मले में कोई क़त़ई फ़ैसला नहीं करती जब तक तुम मेरे पास ह़ाज़िर न हो। वोह बोले हम ज़ोर वाले और बड़ी सख़्त लड़ाई वाले हैं और इख़्तियार तेरा है तू नज़र कर कि क्या हुक्म देती है। बोली : बेशक जब बादशाह किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं उसे तबाह कर देते हैं और उस के इ़ज़्ज़त वालों को ज़लील और ऐसा ही करते हैं और मैं इन की त़रफ़ एक तोह़फ़ा भेजने वाली हूं फिर देखूंगी कि एलची क्या जवाब ले कर पलटे फिर जब वोह सुलैमान के पास आया। सुलैमान ने फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया वोह बेहतर है इस से जो तुम्हें दिया बल्कि तुम अपने तोह़फ़े पर ख़ुश होते हो पलट जा उन की त़रफ़ तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें त़ाक़त न होगी और ज़रूर हम उन को इस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह पस्त होंगे। सुलैमान ने फ़रमाया : ऐ दरबारियों ! तुम में

www.dawateislami.net

कौन है कि वोह उस का तख़्त मेरे पास ले आए क़ब्ल इस के कि वोह मेरे हुज़ूर मुतीअ़ हो कर ह़ाज़िर हों। एक बड़ा ख़बीष जिन्न बोला : मैं वोह तख़्त हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा क़ब्ल इस के कि हुज़ूर इजलास बरख़ास्त करें और मैं बेशक इस पर कुव्वत वाला, अमानतदार हूं। उस ने अ़र्ज़ की जिस के पास किताब का इ़ल्म था कि मैं उसे हुज़ूर में ह़ाज़िर कर दूंगा एक पल मारने से पहले फिर जब सुलैमान ने उस तख़्त को अपने पास रखा देखा कहा येह मेरे रब्ब के फ़ज़्ल से है ता कि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या ना शुक्री और जो शुक्र करे वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो ना शुक्री करे तो मेरा रब्ब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला।

﴾2﴿...... اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّیْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِیْ بَطْنِیْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ
مِنِّیْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۳۵﴾ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ وَضَعْتُهَاۤ اُنْثٰىؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْؕ وَلَیْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰىۚ وَاِنِّیْ سَمَّیْتُهَا مَرْیَمَ وَاِنِّیْۤ
اُعِیْذُهَا بِكَ وَذُرِّیَّتَهَا مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ﴿۳۶﴾ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّاَنْۢبَتَهَا
نَبَاتًا حَسَنًاۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِیَّاؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَیْهَا زَكَرِیَّا الْمِحْرَابَۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًاۚ
قَالَ یٰمَرْیَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَاؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِؕ اِنَّ اللّٰهَ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ
حِسَابٍ ﴿۳۷﴾ (پ۳، اٰل عمرٰن: ۳۵ تا ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब इ़मरान की बीबी ने अ़र्ज़ की : ऐ रब्ब मेरे ! मैं तेरे लिये मन्नत मानती हूं जो मेरे पेट में है कि ख़ालिस तेरी ही ख़िदमत में रहे तो तू मुझ से क़बूल कर ले बेशक तू ही है सुनता जानता फिर जब उसे जना बोली : ऐ रब्ब मेरे ! येह तो मैं ने लड़की

www.dawateislami.net

जनी और **अल्लाह** को ख़ूब मा'लूम है जो कुछ वोह जनी और वोह लड़का जो उस ने मांगा इस लड़की सा नहीं और मैं ने उस का नाम मरयम रखा और मैं उसे और उस की अवलाद को तेरी पनाह में देती हूं रांदे हुए शैत़ान से तो उसे उस के रब्ब ने अच्छी त़रह़ क़बूल किया और उसे अच्छा परवान चढ़ाया और उसे ज़करिया की निगहबानी में दिया जब ज़करिया उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़्क़ पाते कहा : ऐ मरयम ! येह तेरे पास कहां से आया ? बोलीं : वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अफ़्ज़लुल औलिया

उ़-लमाए किराम व अकाबिरीने इस्लाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि तमाम सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن "**अफ़्ज़लुल औलिया**" हैं क़ियामत तक के तमाम औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه अगर्चे दर्जए विलायत की बुलन्द तरीन मंज़िल पर फ़ाइज़ हो जाएं मगर हरगिज़ हरगिज़ वोह किसी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के कमालाते विलायत तक नहीं पहुंच सकते । **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे रिसालत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के गुलामों को विलायत का वोह बुलन्दो बाला मक़ाम अ़त़ा फ़रमाया और इन मुक़द्दस हस्तियों رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن को ऐसी ऐसी अ़ज़ीमुश्शान करामतों या'नी बुज़ुर्गियों से सरफ़राज़ फ़रमाया कि दूसरे तमाम औलियाए किराम

www.dawateislami.net

رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के लिये इस मे'राजे कमाल का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, इस में शक नहीं कि ह़ज़राते सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से इस क़दर ज़ियादा करामतों का तज़किरा नहीं मिलता जिस क़दर कि दूसरे औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से करामतें मन्क़ूल हैं। येह वाज़ेह़ रहे कि येह कषरते करामत, अफ़्ज़लिय्यते विलायत की दलील नहीं क्यूंकि **विलायत दर ह़क़ीक़त क़ुर्बे बारगाहे अह़दिय्यत का नाम है** और येह क़ुर्बे इलाही जिस को जिस क़दर ज़ियादा ह़ासिल होगा उसी क़दर उस का दर्जए विलायत बुलन्द से बुलन्द तर होगा। सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن चूंकि निगाहे नुबुव्वत के अन्वार और फ़ैज़ाने रिसालत के फ़ुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ हुए, इस लिये बारगाहे रब्बे लम यज़ल में इन बुज़ुर्गों को जो क़ुर्बो तक़र्रुब ह़ासिल है वोह दूसरे औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللّٰه को ह़ासिल नहीं। इस लिये अगर्चे सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से बहुत कम करामतें मन्क़ूल हुईं लेकिन फिर भी इन का दर्जए विलायत दीगर औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से ह़द दर्जा अफ़्ज़ल व आ'ला और बुलन्दो बाला है।

सरकारे दो आ़लम से मुलाक़ात का आ़लम आ़लम में है मे'राजे कमालात का आ़लम
येह राज़ी ख़ुदा से हैं ख़ुदा इन से है राज़ी क्या कहिये सह़ाबा की करामात का आ़लम

(बयानाते अ़त्तारिय्या, ह़िस्सा. 3, स. 342)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِيْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की करामत पर मुश्तमिल ज़िक्र कर्दा रिवायत मेज़बानी व मेहमानी की त़रफ़ भी तवज्जोह दिलाती है कि हमारे अस्लाफ़े किराम मेहमान नवाज़ थे वोह अपनी बिसात़ भर मेज़बानी करते और मेहमान को इ़ज़्ज़त देते, इन नुफ़ूसे कु़दसिय्या के नक़्शे क़दम को राहे मंज़िल बनाते हुए मेहमान नवाज़ी का ज़ेह्न रखना चाहिये और इस के लिये ह़त्तल वस्अ़ कोशिश करनी चाहिये। अह़ादीषे मुबारका में खाना खिलाने के बहुत से फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, जैसा कि

"फ़ात़िमा" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से खाना खिलाने के फ़ज़ाइल पर मब्नी 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 519 पर है :

﴿1﴾.....तुम में से बेहतर वोह है जो खाना खिलाता है और जो सलाम का जवाब देता है।

(مُسْنَدِ اَحْمَد، مسند الانصار، حدیث صھیب رضی اللہ عنہ، ج۹، ص۲۰۷،حدیث۲۳۹۸۱)

﴿2﴾..... मग़फ़िरत को वाजिब करने वाले उमूर में से खाना खिलाना और सलाम को आ़म करना है।

(مَکَارِمُ الْاَخْلَاق لابن ابی الدنیا، باب فضل اطعام الطعام، ص۳۷۰، حدیث۱۵۸)

www.dawateislami.net

《3》...... जब तक बन्दे का दस्तरख़्वान बिछा रहता है, फ़िरिश्ते उस पर रह़मतें नाज़िल करते रहते हैं।

(شُعَبُ الْاِیْمَان، باب فی اکرام الضیف، فصل فی التکلف للضیف، ج۷، ص۹۹، حدیث ۹۶۲۶)

《4》..... जो अपने मुसलमान भाई की भूक मिटाने का एहतिमाम करे और उसे खाना खिलाए यहां तक कि वोह शिकम सैर हो जाए और उसे (पानी) पिलाए ह़त्ता कि वोह (पानी पी कर) सैराब हो जाए तो **अल्लाह** तआ़ला उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।

(مسند ابی یعلٰی، ثابت البنانی عن انس، ج۳، ص۱۳۸، الحدیث ۳۴۲۰)

《5》......जिस ने भूके को खाना खिलाया **अल्लाह** तआ़ला उसे सायए अ़र्श तले जगह अ़ता फ़रमाएगा।

(مَکَارِمُ الْاَخْلَاق لابن ابی الدنیا، باب فضل اطعام الطعام، ص۳۷۳، حدیث ۱۶۴)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा अह़ादीषे मुबारका से पता चलता है कि मग़फ़िरत, दुआ़ए मलाएका और सायए अ़र्श पाने और बारगाहे इलाही में बेहतर आदमी क़रार पाने का एक ज़रीआ़ दूसरों को खाना खिलाना भी है। इन अ़ज़ीमुश्शान इन्आ़मात के हु़सूल के लिये इस अ़मल पर ज़रूर कारबन्द रहिये।

अल्लाह तआ़ला हमें इस्तिक़ामत के साथ नेकियां करने और नेकी की दा'वत आ़म करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم

www.dawateislami.net

सायए अ़र्श

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अज़ रूए ह़दीष खाना खिलाने वाले को अ़र्श का साया नसीब होगा, इस के इ़लावा भी कई ऐसे आ'माल है जिस के सिले में रोज़े क़ियामत सायए अ़र्श नसीब होगा इस को बित्तफ़्सील जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 88 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ..... ?**" का मुत़ालआ़ फ़रमाए اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ नेक आ'माल कषरत से बजा लाने का मदनी ज़ेह्न नसीब होगा ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शिक्मे मादर से निदा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 532 पर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब ह़रीफ़ीश عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : जब कुफ़्फ़ारे बद अत़वार ने आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा : हमें चांद के दो टुकड़े कर के दिखाइयें । उन दिनों ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا के बत़ने अत़्हर में ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْهَا का ह़मले मुबारक ठहर चुका था । ह़ज़रते सय्यिदतुना

www.dawateislami.net

ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : **"वोह कितना ज़लीलो रुस्वा है जिस ने हमारे आक़ा मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **को झुटलाया ।"** आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सब से बेहतर नबी और रसूल हैं। तो ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन के शिकमे मुबारक से निदा दी : "ऐ अम्मी जान رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप ग़मज़दा न हों और न ही डरें, बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरे वालिदे मोह़्तरम (صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) का मददगार है।"

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والعشرون فی ازواج علی بن ابی طالب ...الخ ص۲۷٤)

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐ़ने नूर, तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ कलामे रज़ा :

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की पाकीज़ा अवलाद में बच्चा बच्चा नूर है, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ात भी सरापा नूर है और आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का सारा घराना नूरानी है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़ातूने जन्नत की करामात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िए में सरवरे ज़ीशान, साहिबे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہٖ و اٰلہٖ وسلّم और ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عنہا की अ़ज़मतो शान के साथ साथ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عنہا की फ़ज़ीलत व अ़ज़मत का भी पता चलता है, बेशक येह उस पैकरे इफ़्फ़त व रिफ़्अ़त की अ़ज़ीमुश्शान करामत है कि मां के पेट में ही गुफ़्त्गू को सुन कर समझ लिया और आने वाले ह़ालात के मुत़ाबिक़ उस का जवाब भी दे दिया। **अल्लाह** क़ादिरे मुत़लक़ عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से कुछ बईद नहीं कि वोह मां के पेट में पलने वाले को फ़हम व गोयाई की क़ुव्वत दे कर बा करामत बना दे। ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عنہا की अवलादे अत़हार में से एक अ़ज़ीमुश्शान शख़्सिय्यत ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورَانِی को भी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मादर ज़ाद बा करामत वली बना कर शिकमे मादर में बोलने समझने की क़ुव्वत अ़त़ा फ़रमा दी, चुनान्चे

ग़ौषे जली मादरज़ाद बा करामत वली

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"रसाइले अ़त्तारिया"** हिस्सए दुवुम सफ़ह़ा 273-274 पर है **:** हमारे

www.dawateislami.net

ग़ौषुल आ'ज़म علیہ رحمۃ اللہ الاکرم मादर ज़ाद वली थे। (1) आप رحمۃ اللہ تعالی علیہ अभी अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और उस पर वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहतीं तो आप رحمۃ اللہ تعالی علیہ पेट ही में जवाबन یَرْحَمُکَ اللّٰہ कहते। (2) पांच बरस की उ़म्र में जब पहली बार بِسْمِ اللّٰہ पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो اَعُوْذُ और بِسْمِ اللّٰہ पढ़ कर सूरए फ़ातिह़ा और الٓمّٓ से ले कर अठ्ठारह पारे पढ़ कर सुना दिये। उस बुज़ुर्ग ने कहा, बेटे और पढ़िये ! फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को भी इतना ही याद था। जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं। मैं ने सुन कर याद कर लिया था।

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالی علیہ واٰلہٖ وسلم

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौष है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचों के सरों से क़दम आ'ला तेरा

इब्ने ज़हरा को मुबारक हो उ़रूसे कु़दरत
क़ादिरी पाएं तसद्दुक़ मेरे दुल्हा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ब वक़्ते विलादत फ़ज़ा मुनव्वर

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब ह़रीफ़ीश رحمۃ اللہ تعالی علیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : जब ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا

www.dawateislami.net

की विलादते बा सआ़दत हुई तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के रुख़े अन्वर के नूर से सारी फ़ज़ा मुनव्वर हो गई ।

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والعشرون فی ازواج علی بن ابی طالب ...الخ ص۲۷۴ ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

निस्वानी अ़वारिज़ से मुबर्रा (1)

नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''मेरी बेटी फ़ाति़मा इन्सानी शक्ल में हूरों की त़रह़ **हैज़ व निफ़ास** से पाक है ।''

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الفضائل، فضل اهل البیت، ج۱۲، ص۵۰، حدیث۳۴۲۲۱)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی محمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को पुरनूर बनाया, हैज़ व निफ़ास जैसे निस्वानी अ़वारिज़ से दूर रखा और इस के इ़लावा आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़ाते सितूदा सिफ़ात को मम्बए़ बरकात (या'नी बरकतों का सर चश्मा) बनाया जैसा कि

(1) ..... या'नी औ़रतों को पेश आने वाले मुआ़मलात से पाक।

www.dawateislami.net

बरकत वाली सीनी [1]

ज़मानए क़ह़त़ में रह़मते आ़लम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने भूक मह़सूस की तो बिन्ते रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बतूल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने (सीनी में) एक बोटी और दो रोटियां ईषार करते हुए बारगाहे रिसालत में भेज दीं। हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم इस तोह़्फ़े के साथ ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! इधर आओ। ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जब इस सीनी को खोला तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا येह देख कर हैरान रह गईं कि वोह सीनी रोटियों और बोटियों से भरी हुई थी और आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जान लिया कि येह खाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से नाज़िल हुवा है। हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ''اَنّٰی لَكِ هٰذَا؟'' या'नी येह सब तुम्हारे लिये कहां से आया ? तो ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ किया : ''هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ'' या'नी वोह **अल्लाह** के पास से है, बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे। सरकार صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने तुझे बनी इस्राईल की सरदार (या'नी ह़ज़रते मरयम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के मुशाबेह बनाया।

---

(1) ..... या'नी धात का बना हुवा रोटी सालन रखने वाला ख़्वान।

www.dawateislami.net

फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली, ह़ज़राते ह़सन व हुसैन और दूसरे अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم को जम्अ़ फ़रमा कर सब के साथ (सीनी में से) खाना तनावुल फ़रमाया और सब सैर हो गए फिर भी खाना इसी क़दर बाक़ी था और उस को ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अपने पड़ोसियों को खिलाया।

(تَفْسِیرِ رُوْحُ الْبَیَان، پ۳، اٰلِ عِمْرٰن، تحت الاٰیۃ۳۷، ج۲، ص۳۱)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की प्यारी बन्दी, आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की अ़ज़ीमुश्शान करामतें कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की दिलजूई के लिये कभी जन्नती खाने ह़ाज़िर हों और कभी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا की बरकत से थोड़ा सा खाना अहले बैत और पड़ोस के कई अफ़राद को किफ़ायत करे और जब पूछा जाए कि येह सब कैसे हो गया तो **सय्यिदा आ़बिदा ज़ाहिदा** का जवाब कि येह सब कुछ **अल्लाहु** रज़्ज़ाक़ عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है, इस में हमारे लिये ता'लीम है कि जब भी कोई फ़ज़्लो कमाल ह़ासिल हो, दीनी व दुन्यवी इ़ज़्ज़त व अ़ज़मत नसीब हो तो इस को मिन जानिबिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से) ही तसव्वुर करना चाहिये, अपनी ज़ात की त़रफ़ इस की निस्बत नहीं करनी चाहिये और ह़क़ीक़त भी येही है कि बन्दे को जो भी दीनो दुन्या की ने'मत व करामत मिलती है मशिय्यते

www.dawateislami.net

ईज़दी (اِیْ ـ زَ ـ دی مَ ـ شی ـ یَت ـ या'नी **अल्लाह** की मरज़ी, तक़दीरे इलाही) और जनाबे इलाही से मिलती है, अब बन्दे की मरज़ी कि वोह इस ह़क़ीक़त का मुक़िर्र है या नफ़्स की चालों और शैत़ान के जालों में उलझ कर अपनी मेह़नत व कोशिश का नतीजा तसव्वुर करे। बहर कैफ़ क़ौलो फ़े'ल और ज़बान व दिल हर लिह़ाज़ से अपने आप को आ़जिज़ तसव्वुर करना और हर कमाल की निस्बत ज़ाते इलाही की त़रफ़ करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बर्गुज़ीदा बन्दों और बन्दियों का शिआ़र है। वोह बुलन्द से बुलन्द तर मक़ाम तक रसाई पा कर भी ख़ुद को आ़जिज़ व मुतवाज़ेअ़ (مُ ـ تَ ـ وَا ـ ضِع या'नी इन्किसारी करने वाले) रखते हैं और ब तक़ाज़ए बशरिय्यत (या'नी इन्सान होने के नाते) अगर दिल में अपने बुलन्द मक़ाम का तसव्वुर भी आ जाए तो इस तसव्वुर को भी तकब्बुर जानते और इस से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं, जैसा कि

अपने दिल की निगरानी करते रहो !

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 97 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"तकब्बुर"** सफ़्ह़ा 50 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बुस्तामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی को एक मरतबा येह तसव्वुर हो गया कि मैं बहुत बड़ा बुज़ुर्ग और शैख़े वक़्त हो गया हूं, लेकिन इस के साथ येह ख़याल भी आया कि मेरा येह सोचना फ़ख़्र व तकब्बुर का आईनादार है। चुनान्चे फ़ौरन ख़ुरासान का रुख़ किया और एक मंज़िल पर पहुंच कर दुआ़ की : "ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तक ऐसे कामिल बन्दे को

www.dawateislami.net

नहीं भेजेगा जो मुझ को मेरी ह़क़ीक़त से रू शनास (या'नी आगाह) करा सके उस वक़्त तक यहीं पड़ा रहूंगा।" तीन दिन इसी त़रह़ गुज़र गए तो चौथे दिन एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ऊंट पर आए और आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه को क़रीब आने का इशारा किया लेकिन इस इशारे के साथ ऊंट के पाऊं ज़मीन में धंसते चले गए। उन्हों ने चुभते हुए लहजे में कहा : "क्या तुम येह चाहते हो कि मैं अपनी खुली हुई आंखों को बन्द कर लूं और बन्द आंख खोल दूं और बायज़ीद समेत पूरे बिसत़ाम को ग़र्क़ कर दूं?" येह सुन कर आप घबरा गए और पूछा : "आप कौन हैं और कहां से आए हैं?" जवाब दिया कि "जिस वक़्त तुम ने **अल्लाह** तआ़ला से अ़हद किया था उस वक़्त मैं यहां से 3000 मील (तक़रीबन 4828 किलो मीटर) दूर था और इस वक़्त मैं सीधा वहीं से आ रहा हूं, मैं तुम्हें बा ख़बर करता हूं कि अपने क़ल्ब की निगरानी करते रहो।" येह कह कर वोह बुज़ुर्ग ग़ाइब हो गए।

(تَذْكِرَةُ الْأَوْلِيَاء (مترجم)، حضرت بایزید کے حالات ومناقب، ص۱۰۳)

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जब दरियाए दिजला इस्तिक़्बाल के लिये बढ़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं दरियाए दिजला पर पहुंचा तो पानी जोश

www.dawateislami.net

मारता हुवा मेरे इस्तिक़्बाल को बढ़ा लेकिन मैं ने कहा : "मुझे तेरे इस्तिक़्बाल से (اِنْ شَآءَاللہ عزوجل) शम्मा बराबर (या'नी थोड़ा सा) भी ग़ुरूर न होगा क्यूंकि मैं अपनी 30 साला रियाज़त को तकब्बुर कर के हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं कर सकता । (ایضاً ص۱۱۲)

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो ।*

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم

फ़ख़्रो ग़ुरूर से तू मौला मुझे बचाना
या रब्ब ! मुझे बना दे पैकर तू आ़जिज़ी का

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 195)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा दो ह़िकायतों से येह दर्स मिलता है कि बन्दा ख़्वाह कैसा ही बुलन्द मक़ाम पा ले और कितने ही इन्आ़मात ह़ासिल कर ले अपने नफ़्स को क़ाबू से बाहर न होने दे । अगर दिल में कोई ऐसा ख़याल उभरता मह़सूस हो तो फ़ौरन बारगाहे इलाही में आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ ह़ाज़िर हो कर ताइब हो ताकि वसाविसे शैत़ानी से दिल पाक हो और अ़मल शफ़्फ़ाफ़ हो और इसी त़रह़ शैत़ानी व नफ़्सानी शुरूर से मह़फ़ूज़ रहते हुए बा ईमान मौत से हम किनार हों कि बा ईमान मौत दुन्यवी ज़िन्दगी की इन्तिहाई काम्याबी है और इस काम्याबी तक रसाई नेकी और नेक माह़ोल से मुमकिन है, इस पुर

www.dawateislami.net

आशोब दौर में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** बेहतरीन माह़ोल फ़राहम कर रही है। दुन्या व आख़िरत की बेहतरी पाने के लिये इस मदनी माह़ोल से वाबस्तगी बहुत मुफ़ीद है। दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में अनोखी अनोखी मदनी बहारों का ज़ुहूर भी होता रहता है। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 35 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**सींगों वाली दुल्हन**" सफ़ह़ा 10 पर है :

दिल का सूराख़

सूबए पंजाब के एक इस्लामी भाई की दादी अम्मां दिल की मरीज़ा थीं जिस की वजह से सीने में शदीद दर्द उठता था, टेस्ट करवाने पर पता चला कि दिल में सूराख़ है लिहाज़ा ऑपरेशन के बा'द भी बचने के Chances (या'नी इम्कानात) कम हैं, ब ज़ाहिर येह चन्द दिन की मेहमान हैं, दुआ़ करें और बेहतर येह है कि घर जा कर इन की ख़िदमत करें। बहर ह़ाल वोह इस्लामी भाई दादी अम्मां को घर ले आए तो किसी ने मश्वरा दिया कि शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के ता'वीज़ात इस्ति'माल करवाएं। येह इस्लामी भाई जामिअ़तुल मदीना (सरदाराबाद) में ज़ेरे ता'लीम थे लिहाज़ा इन्हों ने वहीं से

www.dawateislami.net

ता'वीजाते अ़त्तारिया ह़ासिल कर लिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ चन्द दिन के अन्दर अन्दर दर्द बिल्कुल ख़त्म हो गया, जब दोबारा टेस्ट वग़ैरा करवाया तो डॉक्टर है़रत ज़दा रह गए कि दिल का सूराख़ बन्द हो चुका था, उन्हों ने पूछा कि पिछले दिनों कौन सी दवा इस्ति'माल की है ? जवाब दिया कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ता'वीज़ात इस्ति'माल करवाए हैं। येह सुन कर डॉक्टरों का कहना था कि येह हमारी ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ़ है कि इस क़िस्म की मरीज़ा को इस त़रह़ शिफ़ा मिली हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हमारी दादीजान (येह बयान देने तक) ह़यात हैं और उन्हें दिल की कोई तक्लीफ़ नहीं। (सींगो वाली दुल्हन, स. 10)

खिला मेरे दिल की कली ग़ौषे आ'ज़म

मिटा क़ल्ब की बे कली ग़ौषे आ'ज़म

(सामाने बख़्शिश अज़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मौत की याद में भूकी रहने वाली औ़रत

ह़ज़रते सय्यिदतुना मुआ़ज़ अ़दविय्या رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त फ़रमातीं : (शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है। फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : (शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है। फिर सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ती रहतीं।

(احیاء العلوم، ج۵، ص۱۵۱)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 3

ख़ातूने जन्नत का ज़ौक़े इ़बादत

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का ज़ौक़े इबादत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ़ 616 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द दुवुम के एक बाब "**नेकी की दा'वत** हिस्सए अव्वल" सफ़हा 147 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू मुज़फ़्फ़र मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ख़य्याम समरक़न्दी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : मैं एक रोज़ रास्ता भूल गया, अचानक एक साहि़ब नज़र आए और उन्हों ने कहा : "मेरे साथ आओ ।" मैं उन के साथ हो लिया । मुझे गुमान हुवा कि येह ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं । मेरे इस्तिफ़्सार (या'नी पूछने) पर उन्हों ने अपना नाम **ख़िज़र** बताया : उन के साथ एक और बुज़ुर्ग भी थे, मैं ने उन का नाम दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : **येह इल्यास** (عَلَیْہِ السَّلَام) हैं । मैं ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रह़मत फ़रमाए, क्या आप दोनों ह़ज़रात ने सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अ़र्दे वस्समावात, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की है ? उन्हों ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना हुवा इरशादे पाक बताइये ताकि मैं आप से रिवायत कर सकूं। उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना : **"जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े उस का दिल निफ़ाक़ से इस त़रह़ पाक किया जाता है जिस त़रह़ पानी से कपड़ा पाक किया जाता है। नीज़ जो शख़्स "صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد" पढ़ता है तो वोह अपने ऊपर रह़मत के 70 दरवाज़े खोल लेता है।"**

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة علی رسول اللہ، ص۱۳۷)

साक़िये कौषर पे लाखों सलाम दोनों आ़लम के सरवर पे लाखों सलाम
जिस का अब्रे करम सब पे साया फ़िगन ऐसे प्यारे पयम्बर पे लाखों सलाम
जिस की ख़ुश्बु से त़यबा की गलियां बसें
ऐसे जिस्मे मुअ़त़्त़र पे लाखों सलाम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप भी "صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد" पढ़ने की आ़दत बनाए और अपने ऊपर रह़मतों के ख़ूब ख़ूब दरवाज़े खुलवाए।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ात़िमा का ज़ौक़े नमाज़

ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिषे देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی **"मदारिजुन्नुबुव्वह"** में नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को

www.dawateislami.net

देखा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (बसा अवक़ात) घर की मस्जिद के मेह़राब में रात भर नमाज़ में मशग़ूल रहतीं यहां तक कि सुब्ह़ तुलूअ़ हो जाती।

(مدارج النبوۃ(مترجم)، قسم پنجم، در ذکرِ اولادِ کرام، سیدہ فاطمۃ الزہرا، ج۲، ص۶۲۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को किस क़दर इबादत का ज़ौक़ था कि पूरी पूरी रात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में गुज़ार देती थीं लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से ह़क़ीक़ी उल्फ़त व मह़ब्बत का तक़ाज़ा है कि हम न सिर्फ़ फ़राइज़ बल्कि सुननो नवाफ़िल की अदाएगी को भी अपना मा'मूल बनाएं। नमाज़ की उल्फ़त व मह़ब्बत को उजागर करने की निय्यत से फ़ज़ाइलो बरकाते नमाज़ पर मुश्तमिल **3 अह़ादीषे मुबारका** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

नमाज़ की बरकतें

﴾1﴿..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि एक मरतबा सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मौसिमे सर्मा में बाहर तशरीफ़ लाए जब कि दरख़्तों के पत्ते झड़ रहे थे, आप ने एक दरख़्त की दो टहनियों को पकड़ा तो उन के पत्ते झड़ने लगे, आप ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़र ! मैं ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ह़ाज़िर हूं। तो इरशाद फ़रमाया : बेशक जब कोई मुसलमान बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये नमाज़ पढ़ता है तो उस के गुनाह ऐसे झड़ते हैं जैसे इस दरख़्त के येह पत्ते झड़ रहे हैं।

(مسند احمد، مسند الانصار، حدیث ابی ذر الغفاری، ج۸، ص۵۷۳، حدیث۲۲۱۷۷)

www.dawateislami.net

﴾2﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : नमाज़ एक बेहतरीन अ़मल है जो इस में इज़ाफ़ा कर सके तो वोह ज़रूर करे।

(الترغیب والترھیب،کتاب الصلاۃ،الترغیب فی الصلاۃ مطلقاً، ص۱۳۰، الحدیث ۹)

﴾3﴿..... नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सफ़ाई निस्फ़ ईमान है और "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" मीज़ान को भर देती है और "سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہ" ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देते हैं और नमाज़ नूर है और सदक़ा दलील या'नी रहनुमा है, सब्र रोशनी है और क़ुरआन तेरे ह़क़ में या तेरे ख़िलाफ़ हुज्जत है।

(صحیح مُسلِم، کتاب الطھارۃ،باب فضل الوضوء، ص۱۰۶، حدیث۲۲۳)

शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इस्लामी बहनों के लिये नमाज़ की तरग़ीब पर मुश्तमिल मन्ज़ूम कलाम लिखा है, फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

दीदारे ह़क़ दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़
जन्नत तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

दरबारे मुस्त़फ़ा में तुम्हें ले के जाएगी
ख़ालिक़ से बख़्शवाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

इ़ज़्ज़त के साथ नूरी लिबास अच्छे ज़ेवरात
सब कुछ तुम्हें पहनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

जन्नत में नर्म नर्म बिछौनों के तख़्त पर
आराम से सुलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

ख़िदमत तुम्हारी करेंगी हूरें अदब के साथ
रुतबा बहुत बढ़ाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

कौषर के सल्सबील के शरबत पिलाएगी
मेवे तुम्हें खिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

सब इ़त्रो फूल होंगे निछावर पसीने पर
ख़ुश्बू में जब बसाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

रह़मत के शामियानों में ख़ुश्बू के साथ साथ
ठन्डी हवा चलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

बाग़े बहिश्त रौज़ए रिज़्वां बहारे ख़ुल्द
सब कुछ तुम्हें दिखाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

हूरे तराने गाएगी और झूम झूम कर
नग़मे तुम्हें सुनाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

पढ़ती रहो नमाज़ कि दोनों जहान में
सब कुछ तुम्हें दिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

फ़ाक़े से मुफ़्लिसी से जहन्नम की आग से
सब से तुम्हें बचाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

पढ़ कर नमाज़ साथ लो सामाने आख़िरत
मेह़शर में काम आएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

बात **आ'ज़मी** की मानो न छोड़ो कभी नमाज़
अल्लाह से मिलाएगी ऐ बीबियो ! नमाज़

(जन्नती ज़ेवर, स. 658-659)

बे नमाज़ी का दर्दनाक अन्जाम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अह़ादीषे मुबारका में जहां नमाज़ पढ़ने के इस क़दर फ़ज़ाइल वारिद हैं वहीं नमाज़ न पढ़ने के बे शुमार दुन्यवी व उख़रवी नुक़्सानात व अ़ज़ाबात भी बयान किये गए हैं चुनान्चे इस ज़िम्न में 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा ज़िक्र किये जाते हैं :

www.dawateislami.net

“मुस्तफ़ा” के पांच हुरूफ़ की निस्बत से तर्के नमाज़ की वईदों पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴾1﴿..... जिस ने नमाज़ छोड़ी तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा।

(المعجم الكبير،عكرمه عن ابن عباس،ج٥، ص ٣٨١، الحديث ١١٦١٧)

﴾2﴿..... जो जान बूझ कर नमाज़ छोड़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख देगा जिस से वोह उस में दाख़िल होगा।

(كَنزُالعُمَّال، كتاب الصلاة، الترغيب عن ترك الصلاة، ج٤، الجزء السابع، ص١٣٢، حديث١٩٠٨٦)

﴾3﴿..... जिस ने नमाज़ छोड़ी गोया उस के अहलो इ़याल और मालो दौलत छिन गए। (ايضاً، حديث١٩٠٨٥)

﴾4﴿..... जान बूझ कर नमाज़ न छोड़ो क्यूंकि जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللّٰه تعالٰى عَلَيْهِ و اٰلِه وَسَلَّم का ज़िम्मा उस से उठ जाएगा।

(مسند احمد، مسند القبائل، حديث ام ايمن، ج ١١، ص ٢٧١، الحديث٢٨١٢٦)

﴾5﴿..... जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ दी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के अ़मल बरबाद कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िम्मा उस से उठ जाएगा जब तक कि वोह तौबा के ज़रीए़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ न करे।

(الترغيب والترهيب، كتاب الصلاة، الترهيب من ترك الصلاة تعمُّداً...الخ، ص١٨٥، الحديث١٨)

www.dawateislami.net

हो गया तुझ से ख़ुदा नाराज़ गर क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर
बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी क़ब्र की दीवार बस मिल जाएगी
तोड़ देगी क़ब्र तेरी पस्लियां दोनों हाथों की मिलें जूं उंगलियां
उ़म्र में छूटी है गर कोई नमाज़ जल्द अदा कर ले तू आ ग़फ़्लत से बाज़
कर ले तौबा रब्ब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 667 - 668)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

(پ۲۸، المنافقون:۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इमान वालों ! तुम्हारे माल न तुम्हारी अवलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।*

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"नमाज़ के अह़काम"** सफ़ह़ा 173 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत,

www.dawateislami.net

बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र से पांच नमाज़ें मुराद हैं, पस जो शख़्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त, मइ़षत व रोज़गार, साज़ो सामान और अवलाद में मसरूफ़ रहे और वक़्त पर नमाज़ न पढ़े वोह नुक़्सान उठाने वालों में से है।

(الزواجر عن اقتراف الكبائر،الكبيرة السابعة والسبعون تعمد تاخير الصلاة...الخ، ج ۱، ص ۲۴۹)

शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो अ़र्ज़ की गई : ऐ अमीरल मोअमिनीन ! नमाज़ (का वक़्त है)। फ़रमाया : जी हां, सुनिये ! जो शख़्स नमाज़ को ज़ाएअ़ करता है, उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं। और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई। (المرجع السابق، ج ۱، ص ۲۵۵)

बीमारी व कुल्फ़त के बा वुजूद मशग़ूले इबादत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत, सय्यिदा फ़ाति़मा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की त़बीअ़ते आ़लिया हमा वक़्त इबादते इलाही की त़रफ़ मुतवज्जेह रहती थी, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अपने

www.dawateislami.net

घरेलू काम-काज की अन्जाम देही के साथ साथ अपने आप को इबादते इलाही में भी मशग़ूल रखा करती थीं ख़्वाह आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا किसी भी काम में हों आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हर वक़्त यादे इलाही में मगन रहतीं और एक लम्हे के लिये भी यादे इलाही से ग़ाफ़िल न होतीं और बीमारी और तकलीफ़ की ह़ालत में भी **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत तर्क न करतीं । आप ने ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के जज़्बए इबादत के मुतअ़ल्लिक़ मुलाहज़ा फ़रमाया अब ज़ौक़े तिलावत मुलाहज़ा कीजिये ।

मसरूफ़िय्यत में भी ज़िक्रे रबूबिय्यत

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं एक मरतबा हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म से सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा । मैं ने देखा कि ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सो रहे थे और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इन को पंखा झल रही थीं और ज़बान से कलामे इलाही की तिलावत जारी थी येह देख कर मुझ पर एक ख़ास ह़ालते रिक़्क़त त़ारी हुई ।

(سفینۂ نوح، حصّہ دُوُم، ص۳۵)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ख़ातूने जन्नत सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को तिलावत करने का किस क़दर ज़ौक़ था कि अपनी घरेलू मसरूफ़िय्यत के दौरान ज़बान से तिलावते कुरआन का विर्द भी जारी रखतीं जब कि हमारी मसरूफ़िय्यत के दौरान गानों बाजों और मूसीक़ी का

www.dawateislami.net

शोरो गुल जारी रहता है जिस की नुहूसत से गुनाहों का मीटर चलता रहता है। ऐ काश ! सब इस्लामी बहनों का येह मदनी जेहून बन जाए कि घरेलू काम-काज में मशग़ूलिय्यत के साथ साथ अपनी ज़बान को ज़िक्रो अज़्कार से तर रखें इस से न सिर्फ़ अपनी नेकियों में इज़ाफ़ा होगा बल्कि अवलाद भी इस से मुस्तफ़ीज़ होगी, जैसा कि

शिक्मे मादर में ही 18 पारे याद कर लिये

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 26 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**मुन्ने की लाश**" सफ़ह़ा 5 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तह़रीर फ़रमाते हैं : (हुज़ूर ग़ौषे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهُ) पांच बरस की उ़म्र में जब पहली बार بِسْمِ الله पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो اَعُوْذُ और بِسْمِ الله पढ़ कर सूरए फ़ातिह़ा और الٓمّٓ से ले कर 18 पारे पढ़ कर सुना दिये। उस बुज़ुर्ग ने कहा, बेटे और पढ़िये ! फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को भी इतना ही याद था। जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं। मैं ने सुन कर याद कर लिया था।

क़ुरआने पाक पढ़ने का षवाब

क़ुरआने मजीद, फ़ुरक़ाने ह़मीद **अल्लाह** रब्बुल अनाम عَزَّوَجَلَّ का मुबारक कलाम है, इस का पढ़ना-पढ़ाना और

www.dawateislami.net

सुनना–सुनाना सब षवाब का काम है। कुरआने पाक का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियां मिलती हैं, चुनान्चे **ख़ातमुल मुरसलीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "जो शख़्स किताबुल्लाह का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा, उस को एक नेकी मिलेगी जो दस (10) के बराबर होगी। मैं येह नहीं कहता الٓمّٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि اَلِف एक ह़र्फ़, لام एक ह़र्फ़ और مِیم एक ह़र्फ़ है।" (سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب فضائل القران، باب ما جاء فی من قرأ حرفاً من القراٰن، ص٦٧٤، الحدیث: ٢٩١٠)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 868 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लाहे़ आ'माल**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 277 पर आ़रिफ़ बिल्लाह, नासिहु़ल उम्मा ह़ज़रते अ़ल्लामा अब्दुल ग़नी बिन इस्माईल नाबुलुसी ह़नफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीषे पाक को नक़्ल कर के फ़रमाते हैं : अगर हम इस الٓمّٓ के हर ह़र्फ़ या'नी "اَلِف, لام और مِیم" को मज़ीद फैलाने का ए'तिबार करें तो इन तीनों के अपने हु़रूफ़ 9 बनेंगे तो यूं तमाम के मज्मूए़ के बराबर 90 नेकियां होंगी।"

तिलावत की तौफ़ीक़ दे दे इलाही !

गुनाहों की हो दूर दिल से सियाही

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बेहतरीन शख़्स

नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : خَیْرُکُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَہٗ या'नी तुम में बेहतरीन शख़्स वोह है जिस ने कुरआन सीखा और दूसरों को सिखाया।

(صَحِیْحُ البُخارِی،کتاب فضائل القران، باب خیرکم من تعلم القران وعلمہ، ص۱۲۹۹، الحدیث:۵۰۲۷)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुलमी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **कुरआने पाक** पढ़ाया करते और फ़रमाते : इसी ह़दीषे मुबारक ने मुझे यहां बिठा रखा है। (فیض القدیر،حرف الخاء،ج۳،ص۶۱۸،تحت الحدیث:۳۹۸۳)

अल्लाह मुझे ह़ाफ़िज़े कुरआन बना दे
कुरआन के अह़काम पे भी मुझ को चला दे

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 101)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, रसूले मोह़्तशम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : जिस शख़्स ने कुरआने पाक सीखा और सिखाया और जो कुछ **कुरआने पाक** में है उस पर अ़मल किया, कुरआन शरीफ़ उस की **शफ़ाअ़त** करेगा और जन्नत में ले जाएगा। (تاریخ دمشق، باب العین، عقیل بن احمد، ج۴۱، ص۳، المکتبۃ الشاملۃ)

www.dawateislami.net

इलाही ! ख़ूब दे दे शौक़ क़ुरआं की तिलावत का

शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक अज्र बढ़ाता रहेगा

एक ह़दीष शरीफ़ में है : जिस शख़्स ने किताबुल्लाह की एक आयत या इ़ल्म का एक बाब सिखाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत तक उस का अज्र बढ़ाता रहेगा ।

(الجامع الصغیر مع فیض القدیر،حرف المیم، ج۶، ص ۲۳۶، الحدیث: ۸۸۶۴)

अ़ता हो शौक़ मौला मद्रसे में आने जाने का

ख़ुदाया ज़ौक़ दे क़ुरआन पढ़ने का पढ़ाने का

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल" सफ़्ह़ा 545 ता 546 पर सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं : एक आयत का ह़िफ़्ज़ करना हर मुसलमान मुकल्लफ़ (या'नी आ़क़िल व बालिग़) पर फ़र्ज़े ऐ़न है और पूरे क़ुरआने मजीद का ह़िफ़्ज़ करना फ़र्ज़े किफ़ाया और सूरए फ़ातिह़ा और एक दूसरी छोटी सूरत या इस के मिष्ल मषलन तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का ह़िफ़्ज़, वाजिबे ऐ़न है ।

(الدُّرُّالْمُخْتَار، کتاب الصلاۃ، باب فی صفۃ الصلاۃ، ویجھر الامام، ج۲، ص۳۱۵)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के जामिआत व मदारिस की ता'दाद

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने कुरआने पाक की ता'लीम व तअ़ल्लुम के मुतअ़ल्लिक़ मुलाह़ज़ा फ़रमाया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** से वाबस्तगान इस सआ़दत से किस क़दर फ़ैज़याब हो रहे हैं, येह भी मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 616 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द दुवुम के एक बाब "**नेकी की दा'वत** ह़िस्सए अव्वल" सफ़ह़ा 564 पर है : 14 रमज़ानुल मुबारक सि. 1432 हि. 15 ऑगष्ट सि. 2011 ई. तक सिर्फ़ पाकिस्तान में बराए ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा मदनी मुन्नों के तक़रीबन 766 और मदनी मुन्नियों के तक़रीबन 316 मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों की मिला कर कुल ता'दाद तक़रीबन बहत्तर हज़ार (72,000) है । नीज़ इस्लामी भाइयों के **मद्रसतुल मदीना** बालिग़ान (उ़मूमन वक़्त : बा'दे इ़शा, दौरानिया : तक़रीबन 40 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन **तीन हज़ार तीन सो सोलह** (3, 316) है और इस्लामी बहनों के मद्रसतुल मदीना बालिग़ात (उ़मूमन वक़्त सुब्ह 8:00 से ले कर अ़स्र तक मुख़्तलिफ़ अवक़ात में, दौरानिया : 1 घन्टा 12 मिनट) की ता'दाद तक़रीबन उन्तालीस

www.dawateislami.net

हज़ार नव सो अड़तीस (39, 938) है। नीज़ (10 रजबुल मुरज्जब सि. 1432 हि. 12-6-2011 तक) इस्लामी भाइयों के दर्से निज़ामी के जामिअ़तुल मदीना की ता'दाद तक़्रीबन नव्वे (90) और इस्लामी बहनों के जामिअ़तुल मदीना की ता'दाद तक़्रीबन बहत्तर (72) है, त़लबा की ता'दाद तक़्रीबन **छे हज़ार छे सो इकहत्तर** (6671) और त़ालिबात की ता'दाद तक़्रीबन दो हज़ार आठ सो इकतालीस (2841) है। इन तमाम जामिअ़तुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) और मदारिसुल मदीना (लिल बनीन व लिल बनात) में मुफ़्त ता'लीम दी जाती है और इन के अख़राजात मुख़य्यिर (م-خ-یر) इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के अ़त़िय्यात से पूरे किये जाते हैं। बराए करम ! आप भी अपनी ज़कात व उ़श्र और सदक़ात व ख़ैरात दा'वते इस्लामी को देने के साथ साथ अपने रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों पर भी इनफ़िरादी कोशिश फ़रमा कर दा'वते इस्लामी को देने का ज़ेह्न बनाइये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नई दुल्हन इबादत में मगन

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 541 पर मुबल्लिगे़ इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शोएब ह़रीफ़ीश عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَدِیْر नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की जब रुख़्सती हुई और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा

www.dawateislami.net

كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के घर तशरीफ़ ले गईं तो ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मह़ब्बत भरी गुफ़्त्गू करने लगे यहां तक कि जब रात का अन्धेरा छा गया तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا रोने लगीं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने पूछा : ''ऐ तमाम औ़रतों की सरदार ! क्या आप ख़ुश नहीं कि मैं आप का शोहर हूं और आप मेरी बीवी हैं ?'' कहने लगीं : ''मैं क्यूंकर राज़ी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं, मैं तो अपनी उस ह़ालत व मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उ़म्र पूरी हो जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा। आज मेरा इ़ज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है। आज रात हम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े हो कर इ़बादत करेंगे कि वोही इ़बादत का ज़ियादा ह़क़ रखता है।'' इस के बा'द वोह दोनों इ़बादत की जगह खड़े हो कर रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करने लगे।

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون فی ازواج علی بفاطمة...الخ، ص٢٧٨، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मज़्कूरा बाला अल्फ़ाज़ **''आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं''** बहुत अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं। इस पर इस्लामी बहनों को ग़ौर करना चाहिये कि उन के दिल में अपने ''बच्चों के अब्बू'' का कितना एह़तिराम है और वोह अपने ''बच्चों के अब्बू'' के कितने ह़ुक़ूक़

www.dawateislami.net

अदा करती और उन की रिज़ा के लिये क्या क्या कोशिशें करती हैं। "**फ़तावा रज़विय्या**" में सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के बयान कर्दा हुक़ूक़ का मफ़्हूम पेशे ख़िदमत है : शोहर व बीबी के मुतअ़ल्लिक़ा उमूर में मुत़लक़न शोहर की इत़ाअ़त यहां तक कि इन उमूर में शोहर की इत़ाअ़त वालिदैन की इत़ाअ़त पर भी मुक़द्दम है, शोहर की इ़ज़्ज़त और माल की ह़िफ़ाज़त, हर बात में उस की ख़ैरख़्वाही, हर वक़्त जाइज़ कामों में उस की रिज़ा का त़ालिब रहना, उसे अपना मौला जानना और नाम ले कर न पुकारना, किसी से उस की बे जा शिकायत न करना और ख़ुदा तौफ़ीक़ दे तो दुरुस्त शिकायत से भी बचना, उस की इजाज़त के बिग़ैर आठवें दिन से पहले वालिदैन या साल भर से पहले और मह़ारिम के यहां न जाना (या'नी शोहर की इजाज़त के बिग़ैर जाना पड़ जाए तो सिर्फ़ मह़ारिम या'नी मां बाप के यहां हर आठवें दिन और वोह भी सुब्ह़ से शाम तक के लिये और बहन, भाई, चचा, मामूं, ख़ाला, फूफी के यहां साल भर बा'द जा सकती है और बिला इजाज़ते शोहर रात को कहीं भी नहीं जा सकती। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 380 मुलख़्ख़सन)

और अगर वोह नाराज़ हो तो उस की इन्तिहाई ख़ुशामद कर के उसे मनाना, अपना हाथ उस के हाथ में रख कर कहना कि येह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है यहां तक कि तुम राज़ी हो, या'नी मैं तुम्हारी ममलूका हूं जो चाहो करो मगर राज़ी हो जाओ।

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 24, स. 371 मुलख़्ख़सन)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत्बूआ़ 86 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "**सुन्नते निकाह़**" में से भी एक ह़दीषे मुबारक मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये ! चुनान्चे हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़ए कु़दरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच लहू बहता हो फिर औ़रत उसे चाटे तब भी ह़क़्क़े शोहर अदा न किया ।" (مُسندِ احمد ، مسند انس بن مالک، ج۵ ص۳۴۵، الحدیث:۱۲۹۴۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ाना पकाते वक़्त भी तिलावत

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि सय्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ाना पकाने की ह़ालत में भी कुरआने पाक की तिलावत जारी रखतीं, नबिय्ये करीम عَلَیْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِیْم जब नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाते और रास्ते में सय्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मकान पर से गुज़रते और घर से चक्की के चलने की आवाज़ सुनते तो निहायत दर्दो मह़ब्बत के साथ बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में दुआ़ करते : या अर-ह़मर्राह़िमीन ! फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) को रियाज़त व क़नाअ़त की जज़ाए ख़ैर अ़ता फ़रमा और इसे ह़ालते फ़क्र में षाबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा । (سفینۂ نوح، حصہ دُوُم، ص۳۵)

www.dawateislami.net

ख़ातूने जन्नत की दुआएं

हज़रते सय्यिदुना इमामे हसन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं ने बा'ज़ मरतबा अपनी वालिदए माजिदा हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को शाम से सुब्ह तक इबादत व रियाज़त और **अल्लाह** तआला के आगे गिर्या व ज़ारी और निहायत आजिज़ी से इल्तिजा व दुआ करते देखा है मगर मैं ने कभी येह नहीं देखा कि दुआ में अपने वासिते कोई दरख़्वास्त की हो बल्कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की तमाम दुआएं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत की बख़्शिश और भलाई के लिये होतीं। (المرجع السّابق)

शैख़ मुहक़्क़िक़ हज़रते अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिषे देहलवी عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی **"मदारिजुन्नुबुव्वह"** में फ़रमाते हैं : इमामे हसने मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने अपनी वालिदए माजिदा सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को मुसलमान मर्दों और औरतों के हक़ में बहुत ज़ियादा दुआएं करते देखा, उन्हों ने अपनी ज़ात के लिये कोई दुआ न मांगी। मैं ने अर्ज़ किया : "ऐ मादरे मेहरबान ! क्या सबब है कि आप अपने लिये कोई दुआ नहीं मांगती ? फ़रमाया : ऐ फ़रज़न्द ! اَلۡجَوَارُ ثُمَّ الدَّار या'नी पहले हमसाया हैं फिर घर।

(مَدَارِجُ النُّبُوَّة(مترجم)، قسم پنجم ، باب اول در ذکر اولاد کرام ، ج ۲، ص ۱۲۴)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सीरते फ़ातिमा पर हमारे दिलो जान कुरबान ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को उम्मते मुस्लिमा का किस क़दर दर्द था कि हम नातुवानों के लिये बा'ज़ अवक़ात सारी सारी रात दुआ़एं मांगती रहतीं और अपनी सहूलत व आसाइश के लिये रब्बे काइनात की बारगाह में कभी मुल्तजी न होतीं हालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर में अकषर व बेशतर फ़ाक़ा रहता, मुकम्मल तन ढांपने के लिये कपड़ा तक न होता लेकिन ख़ुदा तआ़ला की बारगाह में तवक्कुल इस दर्जे का था कि कभी भी दुन्या की फ़ानी ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल तक न किया।"

हमें भी अपने रब्बे करीम की बारगाह में मुसलमान भाइयों और बहनों के लिये ज़ियादा से ज़ियादा दुआ़ करनी चाहिये कि मुसलमान की दुआ़ मुसलमान के लिये उस की ग़ैर मौजूदगी में बहुत जल्द क़बूल होती है नीज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत के सिलसिले में किसी के ह़क़ में दूसरों का दुआ़ करना ख़ुद उस के अपने ह़क़ में दुआ़ करने से बेहतर है चुनान्चे मन्क़ूल है कि "ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को ख़ित़ाब हुवा : ऐ मूसा ! मुझ से उस मुंह के साथ दुआ़ मांग जिस से तू ने गुनाह न किया। अ़र्ज़ की : इलाही ! वोह मुंह कहां से लाऊं ? (येह अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की तवाजोअ़ है वरना वोह यक़ीनन हर गुनाह से मा'सूम हैं) फ़रमाया : औरों से दुआ़ करवा, कि उन के मुंह से तूने गुनाह न किया।" (مثنوی مولانا روم (مترجم)، دفتر سوم، ص۲۴۵)

www.dawateislami.net

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मदीनए मुनव्वरा के बच्चों से अपने लिये दुआ़ कराते कि दुआ़ करो उ़मर बख़्शा जाए। (فضائلِ دُعا،ص ۱۱۲)

दुआ़ के 3 फ़वाइद

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : बन्दे की दुआ़ तीन बातों से ख़ाली नहीं होती :

﴾1﴿..... उसे दुन्या में फ़ाइदा ह़ासिल होता है।

﴾2﴿..... या उस के लिये आख़िरत में जम्अ़ की जाती है।

﴾3﴿..... या ब क़दरे दुआ़ उस के गुनाह मिटाए जाते हैं।

(سنن ترمذی ،احادیث شتی ، باب فی الاستعاذۃ، ص۸۲۳، الحدیث:۳۶۰۷)

एक रिवायत में है मोमिन (कि जब आख़िरत में अपनी दुआ़ओं का षवाब देखेगा जो दुन्या में मुस्तजाब [या'नी मक़्बूल] न हुई थीं) तमन्ना करेगा, काश ! दुन्या में मेरी कोई दुआ़ क़बूल न होती (और सब यहीं [या'नी आख़िरत] के वासिते़ जम्अ़ हो जातीं)

(المستدرک علی الصحیحین للحاکم ، کتاب الدعاء والتکبیر والتھلیل ...الخ، باب یدعو اللّٰہ بالمؤمن یوم القیامۃ، ج۲،ص ۱۶۴ ، الحدیث: ۱۸۶۲)

दुआ़ में 4 सआ़दतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दुआ़ राइगां तो जाती ही नहीं। इस का दुन्या में अगर अषर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो षवाब मिल ही जाएगा। लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं।

www.dawateislami.net

“या रब्ब”

के चार हुरूफ़ की निस्बत से 4 मदनी फूल

मदीना 1 : पहला फ़ाइदा येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की पैरवी होती है कि उस का हुक्म है मुझ से दुआ़ मांगा करो जैसा कि क़ुरआने पाक में इरशादे ख़ुदाए पाक है :

اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ ؕ (پ۲۴، مؤمن:۶۰) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *मुझ से दुआ़ करो मैं क़बूल करूंगा।*

मदीना 2 : दुआ़ मांगना सुन्नत है कि हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم अकषर अवक़ात दुआ़ मांगते। लिहाज़ा दुआ़ मांगने में इत्तिबाए़ सुन्नत का भी शरफ़ ह़ासिल होगा।

मदीना 3 : दुआ़ मांगने में इत़ाअ़ते रसूल भी है कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلّم अपने ग़ुलामों को दुआ़ की ताकीद फ़रमाते रहते।

मदीना 4 : दुआ़ मांगने से या तो बन्दे के गुनाह मुआ़फ़ किये जाते हैं या दुन्या ही में उस के मसाइल ह़ल होते हैं या फिर वोह दुआ़ उस के लिये आख़िरत का ज़ख़ीरा बन जाती है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

न जाने कौन सा गुनाह हो गया है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दुआ़ मांगने में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे ह़बीब, महरे रिसालत, माहे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त भी है, दुआ़ मांगना सुन्नत भी है, दुआ़ मांगने से इ़बादत का षवाब भी मिलता है, नीज़ दुन्या व आख़िरत के मुतअ़द्दद फ़वाइद ह़ासिल होते हैं । बा'ज़ इस्लामी बहनों को देखा गया है कि वोह दुआ़ की क़बूलिय्यत के लिये बहुत जल्दी मचाती बल्कि مَعَاذَالله बातें बनाती हैं कि मैं तो इतने अ़र्से से दुआ़एं मांग रही हूं, बुज़ुर्गों से भी दुआ़एं करवाती रही हूं, कोई पीर फ़क़ीर नहीं छोड़ा, येह वज़ाइफ़ पढ़ती हूं, वोह अवराद पढ़ती हूं मगर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ मेरी ह़ाजत पूरी करता ही नहीं बल्कि बा'ज़ येह भी कहती सुनी जाती हैं :

"न जाने ऐसा कौन सा गुनाह हो गया है जिस की मुझे सज़ा मिल रही है ।"

नमाज़ न पढ़ना तो गोया कोई ख़त़ा ही नहीं !!!

इस त़रह़ की "भड़ास" निकालने वालियों से अगर दरयाफ़्त किया जाए कि बहन ! आप नमाज़ तो पढ़ती ही होंगी ? तो शायद जवाब मिले, जी नहीं । देखा आप ने ! ज़बान पर तो

www.dawateislami.net

बे साख़्ता जारी हो रहा है, न जाने क्या ख़ता हम से ऐसी हुई है ? जिस की हम को सज़ा मिल रही है ! और नमाज़ के मुआमले में इन की ग़फ़्लत तो इन्हें नज़र ही नहीं आ रही ! गोया नमाज़ न पढ़ना तो (مَعَاذَاللّٰہ) कोई गुनाह ही नहीं !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़बूलिय्यते दुआ में जल्दी न करे !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी नहीं मचानी चाहिये चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ 318 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ज़ाइले दुआ**" सफ़्ह़ा 97 पर रईसुल मुतकल्लिमीन ह़ज़रते **अ़ल्लामा मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْحَنَّان दुआ के आदाब और क़बूलिय्यत के अस्बाब ज़िक्र करते हुए 48 वां अदब येह बयान फ़रमाते हैं : "**दुआ की क़बूलिय्यत में जल्दी न करे**" इस अदब के तह़त सय्यिदी **आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَنَّان फ़रमाते हैं : सगाने दुन्या के उम्मीदवारों को देखा जाता है कि तीन तीन बरस तक उम्मीदवारी में गुज़ारते हैं, सुब्ह़ो शाम उन के दरवाज़ों पर दौड़ते हैं और वोह है कि रुख़ नहीं मिलाते, दिल तंग होते हैं, नाक भौं चढ़ाते हैं, मगर येह न उम्मीद

www.dawateislami.net

तोड़ें न पीछा छोड़ें और अह़कमुल ह़ाकिमीन, अकरमुल अक-रमीन عَزَّوَجَلَّ के दरवाज़े पर अव्वल तो आता ही कौन है और आए भी तो उकताते, घबराते, कल का होता आज हो जाए, एक हफ़्ता कुछ पढ़ते गुज़रा और शिकायत होने लगी : साह़िब ! पढ़ा तो था कुछ अषर न हुवा, येह अह़मक़ अपने लिये इजाबत (क़बूलिय्यत) का दरवाज़ा ख़ुद बन्द कर लेते हैं । रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''तुम्हारी दुआ़ क़बूल होती है जब तक जल्दी न करो कि मैं ने दुआ़ की थी, क़बूल न हुई ।''

(سنن الترمذی ، احادیث شتیٰ،با ب فی الاستعاذۃ، ص۸۲۳، الحدیث:۳۶۰۸)

और फिर बा'ज़ तो इस पर ऐसे जामे से बाहर हो जाते हैं कि आ'माल व अदइय्या (या'नी वज़ाइफ़ व दुआ़ओं) के अषर से बे ए'तिक़ाद बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वा'दा व करम से बे ए'तिमाद । والعياذ بالله الكريم الجواد

ऐसों से कहा जाए कि ऐ बे ह़या ! बे शर्मो ! ज़रा अपने गिरेबान में मुंह डालो, अगर कोई तुम्हारा बराबर वाला दोस्त तुम से हज़ार बार कुछ काम अपने कहे और तुम उस का एक काम न करो, तो अपना काम उस से कहते हुए अव्वल तो आप लजाओगे (या'नी शर्माओगे) कि हम ने तो उस का कहना किया ही नहीं अब किस मुंह से उस से काम को कहें और अगर ''ग़र्ज़ दीवानी होती है'' कह भी दिया और उस ने न किया तो अस्लन (या'नी बिल्कुल भी) मह़ल्ले शिकायत न जानोगे कि हम ने कब किया था जो वोह करता ।

www.dawateislami.net

अब जांचो कि तुम मालिके अ़लल इत़लाक़ عزوجل के कितने अह़काम बजा लाते हो। उस का हुक्म बजा न लाना और अपनी दरख़्वास्त का ख़्वाही न ख़्वाही (या'नी ज़बरदस्ती–नाचार) क़बूल चाहना कैसी बे ह़याई है, ओ अह़मक़ ! फिर फ़र्क़ देख अपने सर से पाउं तक, नज़रे ग़ौर कर, एक एक रुए में हर वक़्त हर आन कितनी कितनी हज़ार दर हज़ार सद हज़ार बे शुमार ने'मतें हैं, तू सोता है और उस के मा'सूम बन्दे (या'नी फ़िरिश्ते) तेरी ह़िफ़ाज़त को पहरा दे रहे हैं, तू गुनाह कर रहा है और सर से पाऊं तक सिह़्ह़त व आ़फ़िय्यत, बलाओं से ह़िफ़ाज़त, खाने का हज़्म, फ़ुज़लात का दफ़्अ़, ख़ून की रवानी, आ'ज़ा में त़ाक़त, आंखों में रोशनी, बे ह़िसाब करम बे मांगे बे चाहे तुझ पर उतर रहे हैं, फिर अगर तेरी बा'ज़ ख़्वाहिशें अ़त़ा न हों किस मुंह से शिकायत करता है, तू क्या जाने कि तेरे लिये भलाई काहे में है, तू क्या जाने कि कैसी सख़्त बला आने वाली थी कि इस दुआ़ ने दफ़्अ़ की, तू क्या जाने कि इस दुआ़ के इ़वज़ कैसा षवाब तेरे लिये ज़ख़ीरा हो रहा है, उस का वा'दा सच्चा है, और क़बूल की येह तीनों सूरतें हैं (जो पीछे गुज़र चुकीं) जिन में हर पहली पिछली से आ'ला है। हां ! बे ए'तिक़ादी आई तो यक़ीन जान कि मारा गया और इब्लीसे लईन ने तुझे अपना सा कर लिया। والعياذ بالله سبحنه وتعالىٰ

(फ़ज़ाइले दुआ़, स. 100)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पड़ोसियों की ख़ैरख़्वाही

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत से हमें येह मदनी फूल भी चुनने को मिला कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हमसायों के लिये ज़ियादा दुआ़ फ़रमाया करतीं और फ़रमातीं : **पहले हमसाया है फिर घर ।** एक हम नादान हैं कि हमसायों का हमें ख़याल तक नहीं । हम अपने घर में त़रह़ त़रह़ के खाने खाते हैं, उ़म्दा उ़म्दा मलबूसात पहनते हैं और हम में से बा'ज़ों के हमसायों को येह चीज़ें मुय्यसर नहीं होतीं और हमें इन का ख़याल तक नहीं आता और अगर वोह किसी चीज़ का सुवाल करें तो हम फिर भी नहीं देते ।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی पारह 30 **सूरतुल माऊ़न** आयत नम्बर 7 "وَیَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और बरतने की चीज़ मांगे नहीं देते ।" के तह़त "**तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान**" में जो कुछ फ़रमाते हैं उस का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है । मा'मूली बरतने की चीज़ों को **माऊ़न** कहा जाता है, जैसे सूई, नमक, आग, पानी वग़ैरा या'नी मुनाफ़िक़ीन की इ़बादतें भी ख़राब हैं और मुआ़मलात भी गन्दे कि अपने पड़ोसियों को मा'मूली बरतने की चीज़ें आ़रिय्यतन भी नहीं देते, आग, पानी, नमक पर इन की जान निकलती है, या येह लोग अपनी ज़रूरत से बची चीज़ें जो

www.dawateislami.net

इन के लिये बेकार हैं, किसी को नहीं देते, अगर्चे ख़राब ही हो जावें, इस आयत से वोह ज़मीनदार इब्रत पकड़ें जो अपना फ़ालतू गल्ला बाज़ार में नहीं लाते।

पड़ोसियों के हुक़ूक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि आ़रिय्यतन किसी को कोई चीज़ न देना मुनाफ़िक़ीन के काम हैं। मुसलमानों को तो अपने पड़ोसियों का ख़याल रखना चाहिये, पड़ोसियों के हुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہ تعالٰی عَنہُما से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ह़ज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلام मुझे पड़ोसी के बारे में वसिय्यत करते रहे यहां तक कि मुझे गुमान होने लगा कि वोह पड़ोसी को विराषत का ह़क़दार बना देंगे। (صحیح البخاری، کتاب الادب ،باب الوصاۃ بالجار، ص۱۵۰۰، الحدیث:۶۰۱۵)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم फ़ुलां औ़रत नमाज़ व रोज़ा, सदक़ा कषरत से करती है मगर अपने पड़ोसियों को ज़बान से तक्लीफ़ भी पहुंचाती है। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह जहन्नम में है।

(مسندِ احمد، ج ۳، مسند ابی ھریرہ، ص ۴۴۱، الحدیث:۹۹۲۶)

www.dawateislami.net

10 चीज़ें ज़ुल्म से हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : 10 चीज़ें ज़ुल्म में से हैं।

(1).... कोई मर्द या औ़रत अपने लिये तो दुआ़ मांगे मगर अपने वालिदैन और आ़म मोअमिनीन के लिये न मांगे।

(2).... जो रोज़ाना क़ुरआने पाक पढ़े और 100 आयात की तिलावत न करे।

(3)....जो शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो और दो रक्अ़त (तहि़य्यतुल मस्जिद) पढ़े बिग़ैर ही बाहर निकल आए (जब कि वोह वक़्त मकरूह न हो)।

(4).... जो आदमी क़ब्रिस्तान से गुज़रे मगर न उन पर सलाम करे और न ही उन के लिये दुआ़ मांगे।

(5)..... जो शख़्स जुमुआ़ के दिन शहर आए फिर जुमुआ़ पढ़े बिग़ैर ही चला जाए।

(6)..... जिन लोगों के मह़ल्ले में कोई आ़लिम आए और उस के पास इ़ल्म सीखने कोई भी न पहुंचे।

(7)..... ऐसे दो आदमी जो एक दूसरे के रफ़ीक़ बने मगर कोई भी अपने दोस्त का नाम न पूछे।

(8)..... ऐसा आदमी जिसे कोई दा'वत पर बुलाए मगर वोह न पहुंचे (कोई मजबूरी हो तो मुज़ायक़ा नहीं)।

www.dawateislami.net

(9).... वोह नौजवान जिस ने अपनी जवानी बेकार ज़ाएअ़ कर दी, इ़ल्मो अदब कुछ न सीखा।
(10).... ऐसा आदमी जो ख़ुद शिकम सैर है और इस का हमसाया भूका है और येह उसे खाने को कुछ भी नहीं देता।
(تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْن، باب حق الجار، ص ۷۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पड़ोसी का ह़क़ क्या है ?

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने अपने माल और अहल पर ख़ौफ़ करते हुए पड़ोसी पर दरवाज़े को बन्द किया तो वोह मोमिन नहीं और वोह शख़्स भी मोमिन नहीं जिस के फ़ितने से उस का पड़ोसी अम्न में न हो, जानते हो हमसाये का क्या ह़क़ है ? अगर वोह तुझ से मदद त़लब करे तो उस की मदद करो, अगर वोह तुझ से क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दो, अगर वोह मुफ़्लिस हो जाए तो उस की ह़ाजत रवाई करो, अगर वोह बीमार हो जाए तो उस की इ़यादत करो, अगर कोई ख़ुशी ह़ासिल हो तो उसे मुबारक बाद दो, अगर मुसीबत पहुंचे तो ता'ज़िय्यत करो, अगर मर जाए तो जनाज़े के साथ जाओ, उस के मकान से अपना मकान ऊंचा न बनाओ कि उस की हवा रोक दो मगर येह कि वोह इजाज़त दे दे तो कोई ह़रज नहीं, हांड़ी की ख़ुश्बू से अपने हमसाये को ईज़ा न दो मगर येह कि एक चुल्लू उसे भी भेज दो, जब फल ख़रीद कर लाओ तो उस के घर तोह़फ़ा भेजो वरना ख़ुफ़िया ले कर आओ और तुम्हारी

www.dawateislami.net

अवलाद फल ले कर बाहर न निकले ताकि उन के बच्चे नाराज़ न हों। फिर फ़रमाया : क्या तुम जानते हो हमसाये का क्या ह़क़ है ? उस ज़ात की क़सम, जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! हमसाये के ह़क़ को बहुत थोड़े लोग पूरा करते हैं जिन पर **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ रह़मत फ़रमाता है।

रावी फ़रमाते हैं : रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम को हमसाये के ह़क़ की वसिय्यत फ़रमाते रहे ह़त्ता कि उन्हों ने ख़याल किया कि अ़न क़रीब हमसाये को वारिष बना दिया जाएगा।

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی اکرام الجار، ج ۷، ص ۸۳، الحدیث: ۹۵۶۰)

कितने घर पड़ोस में दाख़िल हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से मरवी है कि एक शख़्स ने हुज़ूर सरापा रह़मत व शफ़क़त صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हमसाये की शिकायत की तो नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म फ़रमाया कि मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े हो कर ए'लान कर दो कि साथ के 40 घर हमसायगी में दाखिल हैं। इमाम ज़ोहरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि 40 इधर, 40 उधर, 40 इधर, 40 उधर और चारों तरफ़ इशारा फ़रमाया।

(احیاء العلوم ،کتاب آداب الالفۃ والاخوۃ، حقوق الجوار، ج ۲، ص ۲۶۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सय्यिदतुन्निसा, बतूले ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़ौक़े इबादत, नमाज़ में ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़, खाना पकाते हुए भी तिलावते कुरआन और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की दुआ़ओं के मुतअ़ल्लिक़ पढ़ा । आइये ! आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़िन्दगी से एक दर्स ह़ासिल करें और अपने ऊपर ग़ौर करें कि क्या हमारे अन्दर भी इ़बादत व रियाज़त का जज़्बा पाया जाता है या नहीं ? क्या हमारे दिल में भी कभी ख़ौफ़े ख़ुदा से रिक़्क़त पैदा हुई या नहीं ? अगर आप इ़बादत व रियाज़त और ख़ौफ़े ख़ुदा का जज़्बा पाना चाहती हैं तो तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप को ख़ौफ़े ख़ुदा की दौलत मिलेगी, जब दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा हो जाएगा तो नमाज़ों की पाबन्दी करने, सुन्नतों का पैकर बनने और बा पर्दा रहने का जज़्बा मिलेगा ।

और اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में बेड़ा पार हो जाएगा । दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों के क्या कहने ! यक़ीनन अच्छी सोह़बत रंग ला कर रहती है । ज़िन्दगी अपनी जगह पर मगर बा'ज़ अम्वात भी क़ाबिले रश्क हुवा करती हैं, ऐसी ही एक क़ाबिले रश्क मौत का तज़किरा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और रश्क कीजिये, चुनान्चे अ़त्ताराबाद (जेकोबाबाद, बाबुल इस्लाम सिन्ध) के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी

www.dawateislami.net

अम्मी जान ग़ालिबन सि. 2004 ई. में क़ादिरिया रज़विया अ़त्तारिया सिलसिले में बैअ़त हो कर अ़त्तारिया बनीं। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ पंज वक़्ता नमाज़ की पाबन्दी के साथ साथ **नवाफ़िल** की अदाएगी का भी मा'मूल बन गया। 17 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1430 हि. 13 फ़रवरी सि. 2009 ई. की सुब्ह़ अम्मी जान ने मुझे नमाज़े फ़ज्र के लिये बेदार किया और ख़ुद नमाज़े फ़ज्र पढ़ने में मश्ग़ूल हो गईं। मैं नमाज़ पढ़ कर लौटा तो वोह अभी मुसल्ले ही पर थीं। कुछ देर बा'द उन्हों ने दोबारा वुज़ू किया और नमाज़े **इश्राक़** की निय्यत बांध ली। जब पहली रक्अ़त में **सजदा किया तो सर न उठाया**। घर वाले समझे कि शायद अम्मी जान को दौराने नमाज़ **नींद** आ गई है, जब बेदार करने की ग़रज़ से उन्हें हिलाया-जुलाया तो वोह एक त़रफ़ लुढ़क गईं, घबरा कर देखा तो उन की रूह़ क़फ़से उ़न्सूरी से परवाज़ कर चुकी थी اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیۡہِ رٰجِعُوۡنَ यूं लगता है कि मेरी अम्मी जान को शहनशाहे बग़दाद **हु़ज़ूरे ग़ौषे आ'ज़म** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की निस्बत और **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी काम आ गई। ख़ुश क़िस्मती कि ऐन सजदे की ह़ालत में उन्हों ने दाइये अजल को "लबैक" कहा। मज़ीद करम बालाए करम येह हुवा कि इन्तिक़ाल के बा'द उन का चेहरा भी बहुत **नूरानी** हो गया था। इन्तिक़ाल के तक़रीबन 15 रोज़ के बा'द या'नी 2 रबीउ़न्नूर शरीफ़ सि. 1430 हि.

www.dawateislami.net

(28 फ़रवरी सि. 2009 ई.) बरोज़ हफ़्ता उन की क़ब्र की सिल गिर गई और क़ब्र में मिट्टी भर गई। दुरुस्ती के लिये जूं ही क़ब्र खोली गई तो हर त़रफ़ गुलाब के फूलों की ख़ुश्बू फैल गई ! नीज़ येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देख कर हम ख़ुशी के मारे झूम उठे कि **अम्मी जान का कफ़न व बदन सलामत था**। जब क़ब्र से मिट्टी निकाल ली गई तो मेरे भाई ने अम्मी जान के क़दमों को छुवा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उन का जिस्म ज़िन्दा इन्सानों की त़रह़ नर्म था, मेरे अब्बू जान का बयान है कि जब मैं ने चेहरे की त़रफ़ से कपड़ा हटा कर देखा तो चेहरा मज़ीद **नूरानी** हो चुका था।

इस्लामी भाई का मज़ीद बयान है : ह़ैरत अंगेज़ बात येह थी कि जो सिलें क़ब्र में गिरी थीं, अम्मी जान का जिस्म उन की चोट से मह़फ़ूज़ रहा था वोह यूं कि उन का मुबारक व तरो ताज़ा लाशा क़ब्र की दीवार की सम्त खिसका हुवा था जैसे वोह ख़ुद उस त़रफ़ हुई हों या किसी ने कर दिया हो ह़ालांकि तदफ़ीन के वक़्त उन को क़ब्र के बीच में लिटाया गया था !

दहन मैला नहीं होता, बदन मैला नहीं होता
ख़ुदा के पाक बन्दों का कफ़न मैला नहीं होता

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़रबूज़े को देख कर ख़रबूज़ा रंग पकड़ता है, तिल को गुलाब के फूल में रख दीजिये तो उस की सोह़बत में रह कर गुलाबी हो जाएगा। इसी त़रह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने वाला बे वक़्अ़त पथ्थर भी **अनमोल हीरा** बन जाता, ख़ूब जगमगाता

www.dawateislami.net

और बसा अवक़ात ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला इस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। इस आ़शिक़ए रसूल की दुन्या से **ईमान अफ़रोज़ रुख़्सती** और बा'दे दफ़्न जब मजबूरन क़ब्र खोली गई तो क़ब्र से गुलाब के फूलों की ख़ुश्बू का आना, कफ़न व बदन का **सलामत** मिलना मस्लके ह़क़ अहले सुन्नत की सदाक़त की ग़ैबी ताइद है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस ख़ुश नसीब इस्लामी बहन को पुल सिरात़, ह़श्र और मीज़ान हर जगह **सुर्ख़रू** फ़रमा कर जन्नतुल फ़िरदौस में सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का पड़ोस अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़ात आप की तो रह़मत व शफ़्क़त है सर बसर
मैं गर्चे हूं तुम्हारा ख़त़ावार या रसूल !

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 107)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह पढ़ कर आप का भी ज़ेह्न बन रहा होगा कि बे पर्दगी, नमाज़ों में सुस्ती, फ़िल्मों ड्रामों, गाने बाजों वग़ैरा वग़ैरा तमाम गुनाहों से तौबा कर लेनी चाहिये और राहे सुन्नत पर आ कर नमाज़ों की पाबन्दी, तहज्जुद, तिलावत और ज़िक्रो दुरूद में अपने शबो रोज़ सर्फ़ करने चाहिये। लेकिन जैसे ही येह किताब रखेंगी तो शैत़ान आप को येह सब कुछ भुलाने की कोशिश करेगा और (مَعَاذَاللہ) बा'ज़ नादान इस्लामी बहनें फिर गुनाहों में मुब्तला हो जाएंगी। अगर आप वाक़ेई नेक

www.dawateislami.net

बनना चाहती हैं तो दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये। हफ़्तावार इजतिमाअ़ में हर हफ़्ते शिर्कत का जेह्न बनाइये और मक्तबतुल मदीना से मदनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल फ़रमाइये और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए अपनी यहां की ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का जेह्न बनेगा। हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाना है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो!

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 193)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा : *अच्छी निय्यत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी।* (الجامع الصغیر، ص۵۵۷، الحدیث۹۳۲۶)

उ़-लमाए किराम رَحِمَھُمُ اللہُ السَّلَام *फ़रमाते हैं : मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां ऐसे छुपाए जैसे अपनी बुराइयां छुपाता है।* (الزواجر عن اقتراف الکبائر، ج۱، ص۱۰۲)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 4

ख़ातूने जन्नत का इश्क़े रसूल

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का इ़श्के़ रसूल

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी बहनों की नमाज़**" सफ़ह़ा 11 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुश्कबार है : "जिस ने मुझ पर 100 मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۱۰، ص۲۵۳، الحدیث:۱۷۲۹۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़वातीने जन्नत की सरदार, जिगर गोशए सरकार ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से और ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बहुत मह़ब्बत

www.dawateislami.net

थी और मह़ब्बत की अ़लामात में से एक येह है कि जिस से मह़ब्बत हो उस की हर अदा अपनाने की कोशिश की जाती है चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ख़ुद को हर ए'तिबार से सुन्नते रसूल के सांचे में ढाल रखा था। आ़दात व अत़वार, सीरत व किरदार, निशस्त व बरख़ास्त, चलने के अन्दाज़, गुफ़्त्गू और सदाक़ते कलाम में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सीरते मुस्त़फ़ा का अ़क्स और नमूना थीं।

हम शक्ले मुस्त़फ़ा

ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सर से पाउं तक हम शक्ले मुस्त़फ़ा थीं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की चाल ढाल, वज़अ़ क़त़अ़ ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जीती जागती तस्वीर बनाया था। **उम्मुल मोअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदतुना **आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की साह़िबज़ादी ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से बढ़ कर किसी को आ़दात व अत़वार, सीरत व किरदार और निशस्त व बरख़ास्त में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा।

रसूलुल्लाह की जीती जागती तस्वीर को देखा !
किया नज़ारा जिन आंखों ने तफ़्सीरे नुबुव्वत [1] का

(1).... या'नी सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

www.dawateislami.net

سُبْحٰنَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ख़ातूने जन्नत, उम्मुल ह़सनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की आ़दात अपने बाबा जान صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आ़दात जैसी थीं । ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत, आक़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सीरत जैसी थी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का किरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का आईनादार था । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की गुफ़्तार रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की गुफ़्तार जैसी थी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की निशस्त व बरख़ास्त या'नी उठना-बैठना रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जैसा था ।

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان **"मिरआत"** में फ़रमाते हैं : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के जिस्म से जन्नत की ख़ुश्बू आती थी जिसे हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सूंघा करते थे । इस लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का लक़ब **ज़हरा** हुवा ।

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیح، ج۸، ص۴۵۳)

बतूल व फ़ातिमा ज़हरा लक़ब इस वासित़े पाया
कि दुन्या में रहें और दें पता जन्नत की निगहत का

(दीवाने सालिक अज़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْمَنَّان)

ख़याल रहे कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा अज़ सर ता क़दम बिल्कुल हम शक्ले मुस्त़फ़ा थीं और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साहिबज़ादगान में येह मुशाबहत तक़्सीम कर दी गई थी । ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ सीने और सर के दरमियान रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत मुशाबेह

www.dawateislami.net

थे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस से नीचे के हिस्से में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बहुत मुशाबेह थे। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पिन्डली, क़दम शरीफ़ और एड़ी बिल्कुल हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह थी।

(مراٰۃ المناجیح، ج۸،ص ۴۸۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुदरती मुशाबहत

हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़ुदरती मुशाबहत भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत है जो अपने किसी अ़मल को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुशाबेह कर दे तो उस की बख़्शिश हो जाती है जैसा कि ह़दीषे पाक में इरशाद हुवा : مَنْ تَشَبَّہَ بِقَوْمٍ فَہُوَ مِنْہُمْ जो किसी क़ौम से मुशाबहत करेगा तो वोह उन ही में से होगा। तो जिसे ख़ुदा तआ़ला अपने मह़बूब के मुशाबेह करे उस की मह़बूबिय्यत का क्या ह़ाल होगा। (المرجع السابق)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा ह़दीषे पाक के तह़्त शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स दुन्या में कुफ़्फ़ार, फ़ासिक़ व बदकार के से लिबास पहने, उन की सी शक्ल बनाए कल क़ियामत में उन के साथ उठेगा। और जो मुत्तक़ी मुसलमानों की सी शक्ल बनाए, उन का लिबास पहने वोह कल क़ियामत में اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुत्तक़ियों के जुमरे में

www.dawateislami.net

उठेगा। ख़याल रहे कि किसी की सी सूरत बनाना तशब्बोह है और किसी की सी सीरत इख़्तियार करना तख़ल्लुक़ है यहां तशब्बोह फ़रमाया गया है। (المرجع السابق، ج ٦، ص ١٠٩)

बहरूपिया बच गया !

गर्क़े फ़िरऔ़न के दिन सारे फ़िरऔ़नी डूब गए। मगर फ़िरऔ़नियों का एक बहरूपिया (بہ۔رُو۔پ۔یا या'नी नक़्क़ाल) बच गया। ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : मौला عَزَّوَجَلَّ येह क्यूं बच गया ? फ़रमाया : इस ने तुम्हारा रूप भरा हुवा था। हम मह़बूब की सूरत वाले को भी अ़ज़ाब नहीं देते। मुसलमान को चाहिये कि नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा इ़बादात में भी अच्छों ख़ुसूसन अच्छों से अच्छे या'नी मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की नक़्ल करने की निय्यत करे। दिल लगे या न लगे शक्ल तो हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सी बन जाती है। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अस्ल की बरकत से ख़ुदा हम नक़्क़ालों को भी बख़्श देगा। (المرجع السابق، ج ٦، ص ١١٠)

औ़रतों को मर्दानी वज़्अ़ बनाना ह़राम है

याद रखिये ! औ़रतों को मर्दानी वज़्अ़ बनाना या'नी मर्दों जैसा लिबास व जूते वग़ैरा पहनना इसी त़रह़ बाल कटवा कर मर्दों की त़रह़ छोटे छोटे कर देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 65 पर शैख़े

www.dawateislami.net

त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه नक़्ल फ़रमाते हैं : रह़मते आ़लमिय्यान, सुल्त़ाने दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तीन शख़्स कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे दय्यूष और मर्दानी वज़अ़ बनाने वाली औ़रत और शराब नोशी का आ़दी।

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج۴، ص۵۹۹، الحدیث:۷۷۲۲)

मज़ीद फ़रमाते हैं : मर्दों की त़रह़ बाल कटवाने और मर्दाना लिबास पहनने वालियां इस ह़दीषे पाक से इ़ब्रत ह़ासिल करें, छोटी बच्चियों के लड़कों जैसे बाल बनवाने और इन्हें लड़कों जैसे कपड़े और हेट वग़ैरा पहनाने वाले भी एह़तियात़ करें ताकि बच्ची इसी उ़म्र से अपने आप को मर्दों से मुम्ताज़ समझे और होश संभालने और बालिग़ा होने के बा'द इस को अपनी आ़दात व अत़वार शरीअ़त के मुत़ाबिक़ बनाने में मुश्किलात दरपेश न आएं। ह़दीषे पाक में येह जो फ़रमाया गया कि "कभी जन्नत में दाख़िल न होंगे।" यहां इस से त़वील अ़र्से तक जन्नत में दाख़िले से मह़रूमी मुराद है। क्यूंकि जो भी मुसलमान अपने गुनाहों की पादाश में مَعَاذَ الله दोज़ख़ में जाएंगे वोह बिल आख़िर जन्नत में ज़रूर दाख़िल होंगे। मगर येह याद रहे कि एक लम्ह़े का करोड़वां ह़िस्सा भी जहन्नम का अ़ज़ाब कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता लिहाज़ा हमें हर गुनाह से बचने की हर दम कोशिश और जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िले की दुआ़ करते रहना चाहिये। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65-66)

www.dawateislami.net

कफ़न फाड़ कर उठ बैठी !

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक बे पर्दा औ़रत का इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ग़ालिबन शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1414 हि. का आख़िरी जुमुआ़ था । रात को कोरंगी (बाबुल मदीना कराची) में मुनअ़क़िद होने वाले एक अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में एक नौजवान से सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की मुलाक़ात हुई, उस ने कुछ इस त़रह़ ह़लफ़िया (या'नी क़सम खा कर) बयान दिया कि मेरे एक अ़ज़ीज़ की जवान बेटी अचानक फ़ौत हो गई । जब हम तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो मर्ह़ूमा के वालिद को याद आया कि उस का एक हेन्ड बेग जिस में अह़म काग़ज़ात थे वोह ग़लत़ी से मय्यित के साथ क़ब्र में दफ़्न हो गया है। चुनान्चे ब अम्रे मजबूरी दोबारा क़ब्र खोदनी पड़ी, जूं हि क़ब्र से सिल हटाई ख़ौफ़ के मारे हमारी चीख़ें निकल गईं क्यूंकि जिस जवान लड़की की कफ़न पोश लाश को अभी अभी हम ने ज़मीन पर लिटाया था वोह कफ़न फाड़ कर उठ बैठी थी और वोह भी कमान की त़रह़ टेढ़ी ! आह ! उस के सर के बालों से उस की टांगें बंधी हुई थीं और कई ना मा'लूम छोटे छोटे ख़ौफ़नाक जानवर उस से चिमटे हुए थे। येह दहशत नाक मन्ज़र देख कर ख़ौफ़ के मारे हमारी घिग्गी बन्ध गई। और हेन्ड बेग निकाले बिग़ैर जूं तूं मिट्टी फैंक कर हम भाग खड़े हुए। घर आ कर मैं ने अ़ज़ीज़ों से उस लड़की का जुर्म दरयाफ़्त

www.dawateislami.net

किया तो बताया गया कि इस में फ़ी ज़माना मा'यूब समझा जाने वाला कोई जुर्म तो नहीं था, अलबत्ता आज कल की आ़म लड़कियों की त़रह़ येह भी फ़ैशनेबल थी और पर्दा नहीं करती थी, अभी इन्तिक़ाल से चन्द रोज़ पहले रिश्तेदारों में शादी थी तो इस ने फ़ेन्सी बाल कटवा कर बन संवर कर आ़म औ़रतों की त़रह़ शादी की तक़रीब में बे पर्दा शिर्कत की थी।

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 280)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि फ़िरऔ़नी बहरूपिया (بہ۔رُو۔پ۔یا या'नी नक़्क़ाल) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस वजह से ग़र्क़ नहीं किया कि उस का ज़ाहिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام जैसा था। हम भी अपने ऊपर ग़ौर कर लें कि हमारा ज़ाहिर किस त़रह़ का है ? खुश क़िस्मत हैं वोह इस्लामी बहनें जिन को दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल मुयस्सर आ गया कि दा'वते इस्लामी ने उन्हें नमाज़ें पढ़ने का ज़ेह्न दिया, ह़या का दर्स दिया, मदनी बुर्क़अ़ पहनाया, इसी माह़ोल की

www.dawateislami.net

बरकत से उन्हें तिलावते कुरआन का ज़ेह्न मिला, दुरूदो सलाम की तरग़ीब मिली, घर दर्स की सआ़दत नसीब हुई, मिट्टी के बरतन में खाना खाने का ज़ेह्न मिला और इस के इ़लावा अच्छी अच्छी निय्यतें करने, अज़ान का जवाब देने, तौबा के नवाफ़िल अदा करने, सुन्नत के मुत़ाबिक़ सोने, फ़ुज़ूल सुवालात से बचने, गुस्से का इ़लाज करने, आंख, कान, ज़बान की ह़िफ़ाज़त करने, बा वुज़ू रहने, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, ह़सद, तकब्बुर, वा'दा ख़िलाफ़ी, मज़ाक़ मस्ख़री, त़न्ज़, दिल आज़ारी, निफ़ाक़ से बचने का ज़ेह्न इसी मदनी माह़ोल से मिला। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इसी मदनी माह़ोल की बरकत से ज़ाहिरो बात़िन दुरुस्त हुवा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ात़िमा के चलने का अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मस्रूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जम्अ़ थीं और हम में से कोई एक भी ग़ैर ह़ाज़िर न थी, इतने में ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا वहां तशरीफ़ लाईं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का चलना हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चलने से ज़र्रा भर मुख़्तलिफ़ न था।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر، ما رَوَتْ عائشةُ اُمُّ المؤمنين عن فاطمة، ج۹، ص۳۷۳، الحديث: ۱۸۴۶۲)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से कैसी मह़ब्बत थी कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की हर हर अदा सुन्नते मुस्त़फ़ा के सांचे में ढली हुई थी। अभी आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चलने का अन्दाज़ हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चलने के अन्दाज़ की त़रह़ था। हम भी अपने ऊपर ग़ौर कर लेती हैं कि हम जब घर से निकलती हैं तो हमारा क्या अन्दाज़ होता है ? जाज़िबे नज़र बनने के लिये हम किस किस त़रह़ के फ़ैशन अपनाती हैं ? हमारे चलने का अन्दाज़ क्या होता है और चलने में हम किस की नक़्ल करती हैं ? इस्लामी बहनों को घर से निकलते वक़्त किन किन एह़तियात़ों की ज़रूरत है मुलाह़ज़ा फ़रमाइये। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 268 ता 270 पर शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं :

औ़रत का मेक-अप करना कैसा ?

सुवाल : औ़रत का बनाव सिंघार करना, चुस्त या बारीक लिबास पहनना कैसा ?

जवाब : घर की चार दीवारी में सिर्फ़ अपने शोहर की ख़ात़िर जाइज़ त़रीक़े पर मेक-अप कर सकती है। बे इजाज़ते शरई मषलन महा़रिम रिश्तेदारों के यहां जाने के मौक़अ़ पर घर से

www.dawateislami.net

बाहर निकलने के लिये लाली पावडर और ख़ुश्बू वग़ैरा लगाना और फ़ैशन के कपड़े पहन कर معاذاللہ ग़ैर मर्दों के लिये जाज़िबे नज़र बनना जैसा कि आज कल आ़म रवाज है येह सख़्त ना जाइज़ व गुनाह है। बारीक दूपट्टा जिस से बालों की रंगत झलके या बारीक कपड़े की जुराबें जिस से पाऊं की पिन्डलियां चमकें या ऐसे चुस्त लिबास में मल्बूस जिस में जिस्म के किसी उ़ज़्व मषलन सीने वग़ैरा का उभार नुमायां हो ग़ैर मह़रमों के सामने आना जाना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

लिबास के बा वुजूद नंगी

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक ह़दीषे पाक में येह भी फ़रमाया : दोज़ख़ियों में दो क़िस्में ऐसी होंगी जिन्हें मैं ने (अपने इस अ़हदे मुबारक में) नहीं देखा (या'नी आयन्दा पैदा होने वाली हैं) इन में एक क़िस्म उन औ़रतों की है जो पहन कर नंगी होंगी, दूसरों को (अपनी ह़रकतों के ज़रीए़) बहकाने वालियां और ख़ुद भी बहकी हुईं, उन के सर बुख़्ती ऊंटों की एक त़रफ़ झुकी हुई कोहानों की त़रह़ होंगे, वोह जन्नत में दाख़िल न होंगी और न उस की ख़ुश्बू पाएंगी और उस की ख़ुश्बू इतनी इतनी दूरी से पाई जाती है।

(صحیح مسلم، کتاب اللباس والزینۃ، بابُ النساءِ الکاسیات......الخ، ص۸۴۶، الحدیث:۲۱۲۸، مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ज़िक्र कर्दा ह़दीषे पाक के इन अल्फ़ाज़ "**जो पहन कर नंगी होंगी**" के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी जिस्म का कुछ ह़िस्सा लिबास से ढकेंगी और कुछ ह़िस्सा नंगा रखेंगी या इतना बारीक कपड़ा पहनेंगी जिस से जिस्म वैसे ही नज़र आएगा येह दोनों उ़यूब आज देखे जा रहे हैं। या, **अल्लाह** की ने'मतों से ढकी होंगी शुक्र से नंगीं या'नी ख़ाली होंगी या ज़ेवरों से आरास्ता, तक़्वा से नंगी होंगी। और "**कोहानों की त़रह़ होंगे**" के तह़त फ़रमाते हैं : इस जुम्लए मुबारका की बहुत तफ़्सीरें हैं, बेहतर तफ़्सीर येह है कि वोह औ़रतें राह चलते शर्म से सर नीचा न करेंगी बल्कि बे ह़याई से ऊंची गर्दन किये सर उठाए हर त़रफ़ देखती, लोगों को घूरती चलेंगी जैसे ऊंट के तमाम जिस्म में कोहान ऊंची होती है ऐसे ही उन के सर ऊंचे रहा करेंगे। (مراٰۃ المناجیح، ج۵، ص۲۵۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ात़िमा का अन्दाज़े गुफ़्त्गू

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अन्दाज़े गुफ़्त्गू और बैठने में ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से बढ़ कर किसी और को हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से इस क़दर मुशाबहत रखने वाला नहीं देखा।

(اَلْاَدَبُ الْمُفْرَد، باب قیام الرجل لاخیه، ص۲۷۸، الحدیث:۹۴۷)

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अन्दाज़े गुफ़्त्गू बयान करते हुए उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (निहायत ही वक़ार के साथ) इस त़रह़ (ठहर ठहर कर) गुफ़्त्गू फ़रमाते थे कि अगर कोई शख़्स आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जुम्लों को गिनना चाहता तो वोह गिन सकता था । (صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب المناقب، بابُ صِفَةِ النَّبِيِّ، ص٩٠٨، الحدیث:٣٥٦٧)

आवाज़ का पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का अन्दाज़े गुफ़्त्गू भी सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशाबहत रखने वाला था इस्लामी बहनों में से बा'ज़ तो चिल्ला चिल्ला कर बातें करती होंगी । बा'ज़ों की आवाज़ से तो घर वाले क्या हमसाये भी परेशान होते होंगे । आइये ! इस बारे में भी मा'लूमात ह़ासिल कीजिये कि इस्लामी बहनों की गुफ़्त्गू का अन्दाज़ क्या हो । चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 90 ता 92 और 254 ता 260 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

औरत पीर से बातचीत करे या न ?

सुवाल : क्या इस्लामी बहन ना महरम पीर या दीगर लोगों से बात कर सकती है ?

जवाब : सिर्फ़ ज़रूरत के वक़्त कर सकती है। इस की सूरतें बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान علیہ رحمۃ الرحمن फ़रमाते हैं : तमाम महारिम (से गुफ़्त्गू कर सकती है) और (अगर) ह़ाजत हो और अन्देशए फ़ितना न हो, न ख़ल्वत (या'नी तन्हाई) हो तो पर्दे के अन्दर से बा'ज़ ना महरम से भी (बात कर सकती है)।

(फ़तावा रज़विया, जि. 22, स. 243)

पीर साह़िब से उन की इजाज़त के बिग़ैर बात चीत न की जाए नीज़ उन को गुफ़्त्गू के लिये मजबूर भी न किया जाए, हो सकता है कि उन के नज़दीक गुफ़्त्गू न करने ही में बेहतरी हो।

पीर और मुरीदनी की फ़ोन पर बात चीत

सुवाल : क्या इस्लामी बहन पीर से ब ज़रीअ़ए फ़ोन अपनी परेशानी के ह़ल के लिये दुआ़ की दरख़्वास्त कर सकती है ?

जवाब : कर तो सकती है। मगर ना महरम पीर साह़िब (या किसी भी ग़ैर मर्द से ज़रूरतन भी बात करनी पड़ जाए तो उस) से लबो लहजा क़दरे रूखा सा हो। आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो।

(رَدُّ الْمُحتَار، کتاب الصلٰوۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ج ۲، ص ۹۷، مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

चूंकि इस की रिआयत बहुत मुश्किल है लिहाज़ा बेहतर येह है कि इन मसाइल को अपने महारिम के ज़रीए पीर साहिब तक पहुंचाए। नीज़ बिला हाजत ना महरम पीर साहिब से भी गुफ़्तगू नहीं कर सकती। मषलन महज़ सलाम दुआ और मिज़ाज पुरसी वग़ैरा के लिये फ़ोन पर भी बात न करे कि येह हाजत में दाख़िल नहीं।

इस्लामी बहनें ना'तें पढ़े या नहीं ?

सुवाल : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में ना'तें पढ़ सकती हैं या नहीं ?

जवाब : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में बिग़ैर माईक के इस तरह ना'त शरीफ़ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी ग़ैर मर्द तक न पहुंचे। माईक का इस लिये मन्अ किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से ग़ैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब ना मुमकिन है। कोई लाख दिल को मना ले कि आवाज़ सामियाने या मकान से बाहर नहीं जाती मगर तजरिबा येही है कि लाउड स्पीकर के ज़रीए औरत की आवाज़ उमूमन ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाती है बल्कि बड़ी महाफ़िल में माईक का निज़ाम भी तो अकषर मर्द ही चलाते हैं ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ को एक बार किसी ने बताया कि फ़ुलां जगह महफ़िल में एक साहिबा माईक पर

www.dawateislami.net

बयान फ़रमा रही थीं, बा'ज़ मर्दों के कानों में जब उस निस्वानी आवाज़ ने रस घोला तो उन में से एक बे ह़या बोला : **आहा ! कितनी प्यारी आवाज़ है ! जब आवाज़ इतनी पुर कशिश है तो ख़ुद कैसी होगी !!!** وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें

याद रहे ! दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में इस्लामी बहनों के लिये लाउड स्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है। लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेह्न बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाउड स्पीकर में बयान करना है और न ही इस में ना'त शरीफ़ पढ़नी है। **याद रखिये ! ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बे बाकी के साथ बयान फ़रमाने और ना'तें सुनाने वाली गुनाहगार और षवाब के बजाए अ़ज़ाबे नार की ह़क़दार है।**

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की ख़िदमत में **अ़र्ज़** की गई : चन्द औ़रतें एक साथ मिल कर घर में **मीलाद शरीफ़** पढ़ती हैं और आवाज़ बाहर तक सुनाई देती है, यूंही मुह़र्रम के महीने में किताबे शहादत वग़ैरा भी एक साथ आवाज़ मिला कर (या'नी कोरस में) पढ़ती हैं, येह जाइज़ है या नहीं ? मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : ना जाइज़ है कि औ़रत की आवाज़ भी औ़रत (या'नी छुपाने की चीज़) है और औ़रत की ख़ुश इल्ह़ानी कि अजनबी से मह़ल्ले फ़ितना है। (फ़तावा रज़विया, जि. 22, स. 240)

www.dawateislami.net

औ़रत के राग की आवाज़

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت एक और सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : **औ़रत का** (ना'त वग़ैरा) **ख़ुश इल्ह़ानी से बा आवाज़ ऐसा पढ़ना कि ना महरमों को उस के नग़्मे** (या'नी राग व तरन्नुम) **की आवाज़ जाए ह़राम है ।** फ़तावा नवाज़िल अज़ फ़क़ीह अबुल्लैष समर क़न्दी (رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) में है, औ़रत का ख़ुश आवाज़ कर के कुछ पढ़ना "औ़रत" या'नी मह़ल्ले सित्र (छुपाने की चीज़) है। "**काफ़ी**" (अज़ इमाम अबुल बरकात नसफ़ी) में है, औ़रत बुलन्द आवाज़ से तलबिया (या'नी لَبَّیْکَ اَللّٰھُمَّ لَبَّیْکَ) न पढ़े इस लिये कि उस की आवाज़ क़ाबिले सित्र (छुपाने के क़ाबिल चीज़) है। (फ़तावा रज़विया, जि. 22, स. 242)

अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : औ़रतों को अपनी आवाज़ बुलन्द करना, इन्हें लम्बा और दराज़ (या'नी इन में उतार चढ़ाव) करना, इन में नर्म लहजे इख़्तियार करना और इन में तक़्त़ीअ़ करना (काट काट कर तह़लीली अ़रूज़ या'नी नज़्म के क़वाइद के मुत़ाबिक़) अशआ़र की त़रह़ आवाज़ें निकालना, हम इन सब कामों की औ़रतों को इजाज़त नहीं देते, इस लिये कि इन सब बातों में मर्दों का इन की त़रफ़ माइल होना पाया जाएगा और उन मर्दों में जज़्बाते शहवानी की तह़रीक पैदा होगी इसी वजह से औ़रत को येह इजाज़त नहीं कि वोह अज़ान दे। وَاللّٰہُ تَعَالٰی اَعْلَم

(رَدُّ الْمُحْتَار، کتاب الصلٰوۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ج ۲، ص ۹۷، مُلَخَّصاً)

www.dawateislami.net

बरामदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?

सुवाल : बरामदे में से इस्लामी बहन का पड़ोसनों के साथ बुलन्द आवाज़ से बातें करना, कैसा है ? इसी त़रह़ इमारत में ऊपर नीचे रहने वालियां एक दूसरे को पुकारें, आपस में ज़ोर ज़ोर से गुफ़्त्गू करें तो क्या येह मुनासिब है ?

जवाब : येह इन्तिहाई ग़ैर मुनासिब है क्यूंकि इस त़रह़ गुफ़्त्गू करने से ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचने का क़वी इमकान है। अगर आस पास की इस्लामी बहनों से कोई ज़रूरी काम है तो इस के लिये एक दूसरे के घर टेलीफ़ोन या इन्टरकोम के ज़रीए़ बात चीत कर ले।

बच्चों को डांटने की आवाज़

सुवाल : अच्छा येह बताइये कि बच्चों को डांटते वक़्त इस्लामी बहन का आवाज़ बुलन्द करना कैसा ?

जवाब : इस्लामी बहन का इस त़रह़ डांटना कि आवाज़ घर से बाहर निकले, इन्तिहाई ना मुनासिब और मुज़्ह़िका ख़ैज़ है। बच्चों पर बात बात पर चिल्लाते रहना ह़माक़त भी है कि इस त़रह़ बच्चे मज़ीद "आज़ाद" हो जाते हैं। लिहाज़ा बार बार डांटने के बजाए ज़ियादा तर प्यार से काम लिया जाए। सब के सामने बच्चों को रुसवा करते रहने से रफ़्ता रफ़्ता उस का नन्हा सा दिल "बाग़ी" हो जाता है। बच्चे की मौजूदगी में किसी

www.dawateislami.net

मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स से उसी बच्चे के बारे में इस त़रह़ की शिकायात करना मषलन "इस को समझाओ, येह तंग बहुत करता है, बहुत शरारती है, मां बाप का कहना नहीं मानता वग़ैरा" अ़क्लमन्दी नहीं, क्यूंकि इस से बच्चे की इस्लाह़ होना दर कनार उलटा ज़ेह्न येह बनता होगा कि मुझे मां बाप ने फ़ुलां के सामने ज़लील कर दिया ! आज कल अवलाद की ना फ़रमानियों की शिकायात आ़म हैं। इस की वुजूहात में बचपन में मां-बाप का बात बात पर बेजा चीख़ो पुकार करना और बच्चे को दूसरों के सामने वक़्तन फ़ वक़्तन ज़लीलो ख़्वार करना भी शामिल हो तो बई़द अज़ क़यास नहीं।

है फ़लाह़ो कामरानी नर्मी व आसानी में

हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सदाक़ते सय्यिदा ज़हरा

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदा आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने ह़ज़रते फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से सच्चा उन के वालिद के इ़लावा किसी और को नहीं देखा।

(مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلٰی، مسندِ عائشه ج۴، ص۲۵، الحدیث:۴۶۹۸)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ुद सच्ची और सच्चे नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी हैं। सच की बहुत ज़ियादा बरकात हैं, आइये ! आप की ख़िदमत में इस की चन्द बरकात पेश की जाती हैं चुनान्चे

सच की बरकतें

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन ह़ारिष बिन अबू कुराद सुलमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि हम नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बे कस पनाह में ह़ाज़िर थे। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया। फिर उस में अपना हाथ डाला और वुज़ू फ़रमाया। हम ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ग़ुसाला मुबारका की जुस्त्जू की और उसे थोड़ा थोड़ा पी लिया तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि तुम्हें इस काम पर किस चीज़ ने आमदा किया ? हम ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ने। इरशाद फ़रमाया : अगर तुम चाहते हो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी तुम से मह़ब्बत करें तो जब अमानतें तुम्हारे सिपुर्द की जाएं तो उन्हें अदा कर दिया करो और जब तुम बोलने लगो तो सच बोला करो और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक किया करो। (مجمع الزوائد، ج۸، ص۳۸۴، الحدیث: ۱۴۰۱۴)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है कि हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "चार ख़स्लतें ऐसी हैं कि अगर वोह तुम में हों तो तुम्हें दुन्या की किसी मह़रूमी का एह़सास नहीं होगा :

(1).... अमानत की ह़िफ़ाज़त करना (2).... सच बोलना (3)..... हु़स्ने अख़्लाक़ और (4)..... ह़लाल कमाई खाना ।"

(مُسْنَدِ اَحْمَد، مُسْنَدِ عَبْدِ اللہ بن عمرو، ج۳، ص۵۸۴، الحدیث:۲۱۸۱۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो ह़क़ पर होते हुए झगड़ा ख़त्म करे मैं उस के लिये जन्नत के कनारे पर एक घर की ज़मानत देता (या'नी ज़िम्मेदारी लेता) हूं, **झूट अगर्चे मिज़ाह़ के त़ौर पर ही हो,** तर्क करने वाले को जन्नत के वस्त़ (या'नी दरमियान) में एक घर की ज़मानत देता हूं और अच्छे अख़्लाक़ वाले को जन्नत के आ'ला दर्जे में एक घर की ज़मानत देता हूं ।"

(سُنَنُ اَبِیْ داوٗد، کتابُ الادَب، باب فی حُسْنِ الْخُلُق، ص۷۵۵، الحدیث:۴۸۰۰)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना मन्सूर बिन मो'तमिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सच बोला करो अगर्चे तुम्हें इस में हलाकत नज़र आए क्यूंकि इसी में नजात है। (مَکارم الاخلاق لابنِ اَبِی الدُّنیا، ص ۱۱۱)

ख़ुदा हम को सच बोलने की दे तौफ़ीक़

तू मुंह सोच कर खोलने की दे तौफ़ीक़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

झूट की नुहूसतें

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! झूट ऐसी बुरी चीज़ है जो तमाम अदयान में ह़राम है और हर मज़हब वाले इस की बुराई करते हैं, इस्लाम ने इस से बचने की बहुत ताकीद फ़रमाई, क़ुरआने मजीद में कई मक़ामात पर इस की मज़म्मत फ़रमाई और झूट बोलने वालों पर ख़ुदा की ला'नत आई। ह़दीषों में भी इस की बुराई ज़िक्र की गई, चुनान्चे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "सिद्क़ को लाज़िम कर लो, क्यूंकि सच्चाई नेकी की त़रफ़ ले जाती है और नेकी जन्नत का रास्ता दिखाती है। आदमी

www.dawateislami.net

बराबर सच बोलता रहता और सच बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि वोह अल्लाह عزوجل के नज़्दीक सिद्दीक़ लिख दिया जाता है और झूट से बचो, क्यूंकि झूट फ़ुजूर की त़रफ़ ले जाता है और फ़ुजूर जहन्नम का रास्ता दिखाता है और आदमी बराबर झूट बोलता रहता और झूट बोलने की कोशिश करता रहता है, यहां तक कि अल्लाह عزوجل के नज़्दीक कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है।''

(صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب قبح الکذب......الخ، ص١٤٠٨، الحدیث:٢٦٠٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رضی اللہ تعالٰی عنہ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم का इरशादे अ़ज़ीम है : जो शख़्स झूट बोलना छोड़ दे और वोह बात़िल है (या'नी झूट छोड़ने की ही चीज़ है) उस के लिये जन्नत के कनारे में मकान बनाया जाएगा और जिस ने झगड़ा करना छोड़ा और वोह ह़क़ पर है (या'नी ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा नहीं करता) उस के लिये वस्त़े जन्नत में मकान बनाया जाएगा और जिस ने अपने अख़्लाक़ अच्छे किये, उस के लिये जन्नत के आ'ला दर्जे में मकान बनाया जाएगा।

(جامع الترمذی، کتاب البر والصلۃ، باب ما جاء فی المراء، ص٣٨٤، الحدیث:١٩٩٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ تعالٰی عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلم ने फ़रमाया : ''जब बन्दा झूट बोलता है, इस की बदबू से फ़िरिश्ता एक मील दूर हो जाता है।''(جامع الترمذی، ما جاء فی الصدق والکذب، ص٤٨١، الحدیث:١٩٧٢)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उसैद ह़ज़रमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि बड़ी ख़ियानत की बात येह है कि तू अपने भाई से कोई बात कहे और वोह तुझे इस बात में सच्चा जान रहा है और तू उस से झूट बोल रहा हो।

(سُنَنُ اَبِیْ دَاوٗد، کتابُ الادب، بابٌ فِی الْمَعَارِیْض، ص۷۷۸، الحدیث:۴۹۷۱)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है : "मोमिन की त़ब्अ़ में ख़ियानत और झूट के इ़लावा तमाम ख़स्लतें हो सकती हैं।" (مُسْنَدِ اَحْمَد، ج۹، ص۲۷۱، الحدیث:۲۲۸۰۶)

या'नी येह दोनों चीज़ें ईमान के ख़िलाफ़ हैं, मोमिन को इन से दूर रहने की बहुत ज़ियादा ज़रूरत है।

अल्लाह ! हमें झूट से, ग़ीबत से बचाना   मौला ! हमें क़ैदी न जहन्नम का बनाना
ऐ प्यारे ख़ुदा ! अज़ पए सुल्ताने ज़माना   जन्नत के मह़ल्लात में तू हम को बसाना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ!   اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बहुत ज़ियादा लगाव था, सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किसी मशक़्क़त में देख कर बर्दाश्त न कर सकती थीं, चुनान्चे

www.dawateislami.net

बाबाजान की मशक़्क़त को देख कर रोना

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू षा'लबा ख़ुशनी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब कभी सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो पहले मस्जिद में दो रक्अ़त नमाज़ अदा फ़रमाते । इस के बा'द पहले ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर और फिर अज़्वाजे मुतह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُن के घर तशरीफ़ ले जाते, रावी फ़रमाते हैं : एक मरतबा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने अपना हाथ सरकार के रुख़सारे पुर अन्वार पर रख दिया और अ़र्ज़ गुज़ार हुई : मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के कपड़े फटे पुराने हो चुके हैं । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तेरे बाप को **अल्लाह** तआ़ला ने एक ऐसे काम के लिये भेजा है कि रूए ज़मीं पर कोई शहरी और देहाती घर न बचेगा मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे बाप के ज़रीए येह काम (या'नी दीने इस्लाम) इ़ज़्ज़त के साथ पहुंचा देगा, येह दीन वहां तक पहुंच कर रहेगा जहां तक रात की पहुंच है ।

(المعجم الکبیر، عروہ بن رویم لخمی، ج۹، ص۲۶۴، الحدیث:۱۸۰۴۲)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आइये ! ज़िम्नन कुछ सफ़र की सुन्नतें और आदाब मुलाहज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 696 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **"नेक बनने और बनाने के त़रीक़े"** सफ़ह़ा 568 ता 576 पर है : मुमकिन हो तो जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा की जाए कि जुमा'रात को सफ़र की इब्तिदा करना सुन्नत है। (اَشِعَّةُ اللَّمْعَات، ج۵، ص۱۶۱)

चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना का'ब बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़वए तबूक के लिये जुमा'रात के दिन रवाना हुए और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जुमा'रात को रवाना होना पसन्द फ़रमाते थे।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب الجھاد والسیر، بَابُ مَنْ اَرَادَ غَزْوَۃً......الخ، ص۲۴۰، الحدیث:۲۹۵۰)

चलते वक़्त अ़ज़ीज़ों, दोस्तों से मिले और अपने क़ुसूर मुआ़फ़ करवाए और जिन से मुआ़फ़ी त़लब की जाए उन पर लाज़िम है कि दिल से मुआ़फ़ कर दें।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, ह़िस्सा 6, स. 1052, मफ़हूमन)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत ले कर आए

www.dawateislami.net

तो वोह उस का उ़ज़्र क़बूल करे, ख़्वाह ह़क़ पर हो या बाति़ल पर, जो ऐसा न करे वोह मेरे ह़ौज़ पर नहीं आएगा।

(اَلْمُسْتَدْرَکُ لِلْحَاکِم کتاب البر والصلۃ، بروا آباءکم تبرکم ابناؤکم، ج۵، ص۲۱۳، الحدیث:۷۳۴۰ مُلْتَقَطًا)

लिबासे सफ़र पहन कर अगर वक़्ते मकरूह न हो तो घर में चार रक्अ़त नफ़्ल "اَلْحَمْد" और "قُلْ" से पढ़ कर बाहर निकलें, वोह रक्अ़तें वापसी तक अहलो माल की निगहबानी करेंगी। **सफ़र** पर जाने वाले को चाहिये कि येह **5** सूरतें पढ़ लिया करे। (1).... اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ आख़िर तक (2).... قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ आख़िर तक (3)..... قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ आख़िर तक (4).... قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक (5)..... قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुत़्अ़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "ऐ जुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! क्या तुम चाहते हो कि जब तुम सफ़र में जाओ तो अपने साथियों में बेहतर और तोशए सफ़र में बढ़ कर रहो (या'नी सफ़र में खुशह़ाली और फ़ारिग़ुल बाली नसीब हो) ?" इरशाद फ़रमाया : येह **5** सूरतें पढ़ लिया करो : (1).... اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ आख़िर तक (2).... قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ आख़िर तक (3)..... قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ आख़िर तक (4).... قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ आख़िर तक (5)..... قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ आख़िर तक

हर सूरत को بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ से शुरूअ़ करो और उसी पर ख़त्म करो (इस त़रह़ इन पांच सूरतों में بِسْمِ اللّٰه 6 बार पढ़ी जाएगी)

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ने इन को पढ़ना शुरूअ़ किया तो मैं पूरे सफ़र में वापसी तक अपने रुफ़क़ा में सब से ज़ियादा ख़ुशह़ाल और तौशए सफ़र में फ़ारिग़ुल बाल रहने लगा ।

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب السفر، من قسم الافعال، ج ۳ الجزء السادس، ص ۳۱۴، الحدیث: ۱۷۶۳۵)

नोट !!!

इस्लामी बहनें नापाकी के अय्याम में सूरए नस्र व सूरए काफ़िरून नहीं पढ़ सकतीं बाक़ी तीनों सूरतें लफ़्ज़े क़ुल के बिग़ैर क़ुरआन की निय्यत के बिग़ैर ब निय्यते दुआ़ व षना पढ़ सकती हैं ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को अपने मह़ारिम को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । राहे ख़ुदा में सफ़र करने का षवाब सुनिये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ‘‘जिस शख़्स का चेहरा राहे ख़ुदा में गर्द आलूद हो जाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे क़ियामत के दिन जहन्नम के धूएं से अमान अ़ता फ़रमाएगा और जिस शख़्स के क़दम राहे ख़ुदा में गर्द आलूद हो जाएं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के क़दमों को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ फ़रमा देगा ।’’ (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر، ج ۸، ص ۲۵۰، الحدیث: ۷۳۵۵)

www.dawateislami.net

मुसाफ़िर को चाहिये कि वोह दुआ़ से ग़फ़्लत न करे कि येह जब तक सफ़र में है इस की दुआ़ क़बूल होती है बल्कि जब तक घर नहीं पहुंचता उस वक़्त तक दुआ़ मक़्बूल है इसी त़रह़ मज़्लूम की दुआ़ और मां बाप की अपनी अवलाद के ह़क़ में दुआ़ भी क़बूल होती है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तीन क़िस्म की दुआ़एं मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) हैं इन की क़बूलियत में कोई शक नहीं : (1).... मज़्लूम की दुआ़ (2)... मुसाफ़िर की दुआ़ (3)..... बाप की अपने बेटे के लिये दुआ़। (جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب الدعوات، باب ما ذکر فی دعوۃ المسافر، ص۷۹۳، الحدیث:۳۴۴۸)

जब किसी मुश्किल में मदद की ज़रूरत पड़े तो ह़दीषे पाक में है इस त़रह़ तीन बार पुकारें : "اَعِیْنُوْنِیْ یَا عِبَادَ اللہ" या'नी ऐ **अल्लाह** के बन्दो ! मेरी मदद करो।

(اَلْحِصْنُ الْحَصِیْن، کتاب ادعیۃ السفر، ص ۸۲، مُلَخَّصاً)

सफ़र से वापसी पर घर वालों के लिये कोई तोह़फ़ा ले आएं कि येह सुन्नते मुबारका है। रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब सफ़र से कोई वापस आए तो (घर वालों के लिये) कुछ न कुछ हदिय्या लाए, अगर्चे अपनी झोली में पथ्थर ही डाल लाए।"

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب السفر، قسم الاقوال، ج۳، الجزء السادس، ص ۳۰۱، الحدیث:۱۷۵۰۲)

www.dawateislami.net

औ़रत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! औ़रत का शोहर या मह़रम के बिग़ैर तन्हा तीन दिन की मसाफ़त पर वाके़अ़ किसी जगह जाना ह़राम है, यहां तक के अगर औ़रत के पास सफ़रे ह़ज के अस्बाब हैं मगर शोहर या कोई क़ाबिले इत़मीनान मह़रम साथ नहीं तो ह़ज के लिये भी नहीं जा सकती अगर गई तो गुनाहगार होगी अगर्चे फ़र्ज़ ह़ज अदा हो जाएगा । अलबत्ता फ़ुक़हाए मुतअख़्ख़िरीन (رحمہم اللہ تعالیٰ) ने एक दिन की मसाफ़त पर औ़रत के बे मह़रम जाने को भी ममनूअ़ क़रार दिया है ।

(مأخوذ از رَدُّ الْمُحْتَار، کتاب الحج، مطلب فی قولھم یُقَدَّمُ حَقُّ الْعَبْدِ......الخ ج۳، ص۵۳۳)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 752 पर है **:** औ़रत को बिग़ैर मह़रम के तीन दिन या ज़ियादा की राह जाना, ना ज़ाइज़ है बल्कि एक दिन की राह जाना भी । ना बालिग़ बच्चा या मअ़तूह के साथ भी सफ़र नहीं कर सकती, हमराही में बालिग़ मह़रम या शोहर का होना ज़रूरी है ।

(فَتَاوٰی عَالَمْگِیْرِی، کتاب الصلٰوۃ، الباب الخامس عشر فی صلٰوۃ المسافر، ج۱، ص۱۵۲، ۱۵۷)

बयान कर्दा मस्अले में "**तीन दिन की मसाफ़त**" का ज़िक्र है, ख़ुश्की के सफ़र में तीन दिन की मसाफ़त से मुराद साढ़े

www.dawateislami.net

57 मील का फ़ासिला है । (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विया, (मुख़र्रजा) जि. 8, स. 270) किलो मीटर के हिसाब से येह मिक़दार तक़रीबन 92 किलो मीटर बनती है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 163-164 बित्तसर्रुफ़िन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत की नबिय्ये रह़मत से मह़ब्बत

सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا बचपन ही से बेहद साबिरो शाकिर, मुतवक्किल, मतीन, सन्जीदा और इताअ़त शिआ़र थीं। हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत व उल्फ़त और ख़िदमत व रफ़ाक़त का आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने ख़ूब ख़ूब ह़क़ अदा किया और रसूले करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़रा सी तक्लीफ़ से बेचैन हो जाया करती थीं। एक रोज़ एक ना बकार ने राह में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सरे मुबारक पर ख़ाक डाल दी। आप इसी ह़ालत में घर तशरीफ़ ले गए। आप की साह़िबज़ादी ने देखा तो पानी ले कर सरे मुबारक को धोने लगीं और रोती जाती थीं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जाने पिदर ! **अल्लाह** तआ़ला तेरे बाप को बचा लेगा।"

(سیرتِ رسولِ عربی، ص ۶۳)

ऊंटनी का बच्चादान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**बुड्ढा पुजारी**"

www.dawateislami.net

सफ़ह़ा 28 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : एक दिन हु़ज़ूर सरापा नूर صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का'बए मुअ़ज़्ज़मा زادھا اللہ شرفا و تعظیما के क़रीब नमाज़ पढ़ रहे थे और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश एक जगह बैठे हुए थे। इन में से एक ने कहा कि तुम इन को देख रहे हो ? फिर बोला : तुम में कौन ऐसा है जो फ़ुलां क़बीले से ज़ब्ह़ कर्दा ऊंटनी का बच्चादान उठा लाए और जब येह सजदे में जाएं तो इन के कन्धों पर रख दे ? इस पर बद बख़्त उ़क़बा बिन अबी मुई़त़ उठ कर चल दिया और बच्चादान (या'नी वोह खाल जिस में ऊंटनी का बच्चा लिपटा हुवा होता है) ला कर **रह़मते आ़लमिय्यान** صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के दोनों मुबारक शानों के दरमियान रख दी। **अल्लाह** عزوجل के मह़बूब صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم इसी ह़ाल में रहे और सरे मुबारक सजदे से न उठाया और वोह सब के सब क़ह्क़हे मार कर हंसते रहे, यहां तक कि **ख़ातूने जन्नत** सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا (जिन की उ़म्र उस वक़्त ब मुश्किल आठ साल थी) आईं और उन्हों ने ह़बीबे अक्बर صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم की पुश्ते अत़हर से उस गन्दगी को उठा कर फैंका। तब **सरकारे नामदार** صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने अपना सरे अक़्दस उठाया और अपने परवर दगार عزوجل के दरबार में अ़र्ज़ गुज़ार हुए : या **अल्लाह** عزوجل इन क़ुरैशियों को

www.dawateislami.net

पकड़ । या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू अबू जह्ल बिन हिश्शाम, उ़तबा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़, वलीद बिन उ़तबा, उमय्या बिन ख़लफ़ और उ़क़बा बिन अबी मुईत़ को पकड़ । इस ह़दीषे पाक के रावी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने इन को बद्र के रोज़ मक़्तूल (या'नी क़त्ल शुदा) देखा । वोह बद्र के कुवें में औंधे मुंह गिरे हुए थे ।

(صحیح البخاری، کتاب الصلوۃ، باب المرأۃ تطرح عن المصلی شیئا من الاذی، ص۹۸، الحدیث:۵۲۰)

न उठ सकेगा क़ियामत तलक ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम
जिस को तुम ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बारगाहे मुस्त़फ़ा में मह़बूबिय्यत

एक मरतबा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को एक फ़र्श पर बिठा कर उन की दिलजोई फ़रमाई । ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आप को वोह मुझ से ज़ियादा प्यारी हैं या मैं ? हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह मुझे तुम से ज़ियादा और तुम उस से ज़ियादा प्यारे हो ।

www.dawateislami.net

एक और ईमान अफ़रोज़ रिवायत सुनिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना जमीअ़ बिन उमैर तमीमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं, मैं अपनी फूफी के साथ उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो उन से अ़र्ज़ की गई : हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कौन ज़ियादा मह़बूब था ? फ़रमाया : फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا), फिर अ़र्ज़ की गई : मर्दों में से ? फ़रमाया : उन के शोहर, जहां तक मुझे मा'लूम है वोह बहुत रोज़े रखने वाले और कषरत से क़ियाम करने वाले हैं।

(سُنَنُ التِّرمِذِی، اَبوابُ المَنَاقِب۔۔۔۔الخ، باب فضل فاطمة، ص ۸۷۲، الحدیث:۳۸۷۷)

शारेहे़ मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : येह है ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़क़ गोई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने येह न फ़रमाया कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को सब से ज़ियादा प्यारी "**मैं**" थी और मेरे बा'द मेरे वालिद बल्कि जो आप के इ़ल्म में ह़क़ था वोह साफ़ साफ़ कह दिया अगर येह ही सुवाल ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से होता तो आप फ़रमातीं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़ियादा प्यारी जनाबे आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं फिर इन के वालिद। मा'लूम हुवा कि इन के दिल बिल्कुल पाक व साफ़ थे। अफ़सोस उन पर जो इन ह़ज़रात को एक दूसरे का दुश्मन कहते हैं। ख़याल रहे कि मह़ब्बत बहुत क़िस्म की है और मह़बूबिय्यत की नोइय्यतें मुख़्तलिफ़ हैं

www.dawateislami.net

अवलाद में सब से ज़ियादा प्यारी जनाबे फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं, भाइयों में सब से ज़ियादा प्यारे अ़लिय्युल मर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हैं । अज़्वाजे पाक में बहुत प्यारी जनाबे आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हैं, ग़रज़ कि एक मह़ब्बत के सिलसिले में जनाबे फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत प्यारी, दूसरे सिलसिले में ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत प्यारी । मुक़ाबला एक सिलसिले के अफ़राद में होता है ।

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح، اهل بیت کے فضائل ج۸، ص۴۲۹)

जिगर गोशए रसूल

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशाद है : ''फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तमाम अहले जन्नत या मोअमिनीन की औ़रतों की सरदार है ।'' मज़ीद फ़रमाया : ''**फ़ातिमा मेरे बदन का एक टुकड़ा है** जिस ने फ़ातिमा को नाराज़ किया उस ने मुझे नाराज़ किया ।''

(مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح، کتاب المناقب، باب مناقب اهل بیت النبی ﷺ، ج۲، ص۴۳۵۔۴۳۶، الحدیث:۶۱۳۸۔۶۱۳۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सफ़रे मुस्तफ़ा की इब्तिदा व इन्तिहा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ و اٰلِہٖ وَسَلَّم जब सफ़र का इरादा फ़रमाते तो सब से आख़िर में ह़ज़रते सय्यिदतुना

www.dawateislami.net

फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मुलाक़ात फ़रमाते और जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो सब से पहले आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मुलाक़ात फ़रमाते ।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم، کتاب معرفۃ الصحابۃ، اذا سافر النبی...... الخ، ج ۴، ص ۱۴۱، الحدیث: ۴۷۹۲)

आमदे मुस्त़फ़ा पर अन्दाज़े इस्तिक्बाल

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि जब हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले जाते तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम के लिये क़ियाम फ़रमातीं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक हाथों को थाम कर बोसा देतीं और अपनी जगह बिठातीं ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، ص ۸۷۱، الحدیث: ۳۸۷۱ ملتقطاً)

अमीरे अहले सुन्नत और इत्तिबाए सुन्नत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का अन्दाज़े सफ़र भी कुछ इस त़रह़ से है कि जब आप सफ़र के लिये बैरूने मुल्क तशरीफ़ ले जाते हैं तो अपनी शहज़ादी से मुलाक़ात कर के जाते हैं और जब वापस तशरीफ़ लाते हैं तो अकषर सब से पहले अपनी शहज़ादी के घर तशरीफ़ ले जाते हैं। अह़ादीषे मुबारका में बेटी के बहुत ज़ियादा फ़ज़ाइल वारिद हैं, चुनान्चे

www.dawateislami.net

“बेटी”
के चार हु़रूफ़ की निस्बत से 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा

(1).... जब लड़की पैदा होती है तो रब्बे ज़ुल जलाल लड़की की त़रफ़ एक फ़िरिश्ते को भेजता है जो इसे ख़ूब बरकत पहुंचाता है और कहता है : कमज़ोर सी मख़्लूक़ कमज़ोर से पैदा हुई, इस की निगहदाश्त करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाएगी।

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط، باب الباء، من اسمه بکر، ج۲، ص۲۲۹، الحدیث:۳۱۰۱)

(2)..... जिस ने अपनी तीन बेटियों की परवरिश की वोह जन्नत में जाएगा और उसे राहे ख़ुदा में उस जिहाद करने वाले की मिष्ल अज्र मिलेगा जिस ने दौराने जिहाद रोज़े रखे और नमाज़ क़ाइम की। (اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْهِیْب، کتاب البر والصلة، الترغیب فی کفالة الیتیم...... الخ ص۸۱۷، الحدیث:۳)

(3).... जिस की तीन बेटियां या तीन बहनें हों और उन के साथ अच्छा सुलूक करे तो दाख़िले जन्नत होगा।

(جَامِعُ التِّرْمِذِی، کتاب البر والصلة، باب ما جآء فی النفقة......الخ، ص۴۷۰، الحدیث:۱۹۱۳)

(4)..... **जो** शख़्स तीन बेटियों या बहनों की इस त़रह़ परवरिश करे कि उन को अदब सिखाए और उन पर मेहरबानी का बरताव करे यहां तक कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें बे नियाज़ कर दे (या'नी वोह बालिग़ हो जाएं या उन का निकाह़ हो जाए या वोह साह़िबे माल हो जाएं। (اَشِعَّةُ اللَّمْعَات، ج۴، ص۱۳۲) तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत वाजिब फ़रमा देता है। येह इरशादे नबवी सुन कर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : अगर कोई शख़्स दो

www.dawateislami.net

लड़कियों की परवरिश करे ? तो इरशाद फ़रमाया कि उस के लिये भी येही अज्रो षवाब है यहां तक कि अगर लोग एक का ज़िक्र करते तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बारे में भी येही फ़रमाते ।

(شَرۡحُ السُّنَّۃِ لِلۡبَغۡوِی، ج۶، ص۴۵۲، الحدیث:۳۳۵۱ مُلَخَّصاً)

आक़ा शहज़ादी को नमाज़ के लिये बेदार करते

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : छे महीने तक नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का येह मा'मूल रहा कि नमाज़े फ़ज्र के लिये जाते हुए ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर के पास से गुज़रते तो फ़रमाते : "ऐ अहले बैत ! नमाज़ ! ! ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो ! कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे ।"

(سُنَنُ التِّرۡمِذِی، کتاب تفسیر القراٰن، باب ومن سورۃ الاحزاب، ص۷۴۱، الحدیث:۳۲۰۶)

पारह 16, सूरए त़ाहा, आयत नम्बर 132 में इरशादे रब्बुल उ़ला है :

وَأْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَ اصْطَبِرْ عَلَيْهَا ؕ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दे और ख़ुद इस पर षाबित रह ।

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی "**तफ़सीरे नूरुल इरफ़ान**" में इस

www.dawateislami.net

आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : इस से तीन मस्अले मा'लूम हुए : एक येह कि घर में रहने वाले तमाम लोग इन्सान के अहल कहलाते हैं। बीवियां, अवलाद, भाई, बरादर वग़ैरा। दूसरे येह कि नमाज़ी कामिल वोह नहीं जो सिर्फ़ ख़ुद नमाज़ पढ़ लिया करे बल्कि वोह है जो ख़ुद भी नमाज़ी हो और अपने सारे घर वालों को नमाज़ी बना दे। तीसरे येह कि हुक्मे नमाज़ की नोइय्यतें जुदागाना हैं। छोटे बच्चों और बीवी को मार कर नमाज़ पढ़ाए। भाई-बरादर को ज़बानी हुक्म दे।

(تفسیر نور العرفان، پ۱۶، طٰہٰ، تحت الآیۃ:۱۳۲، ص۳۸۶)

सदाए मदीना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रोज़ाना ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के घर जाते और उन्हें नमाज़ के लिये उठाते। अस्लाफ़े उम्मत का भी येही मा'मूल था। आप भी कोशिश कीजिये कि नमाज़े फ़ज्र में ख़ुद बेदार हो कर अपने महारिम को भी बेदार फ़रमाया करें, अगर आप से छोटे नमाज़ में सुस्ती करते मा'लूम हों तो उन्हें ह़स्बे मौक़अ़ डांट कर नमाज़ पढ़ाएं और बड़ों को अदब के दाइरे में रह कर अ़र्ज़ करें।

मैं नमाज़ नहीं पढ़ती थी

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी की बरकतों के क्या कहने ! इस सुन्नतों भरे मदनी माहोल ने लाखों बे नमाज़ियों को नमाज़ी बना दिया, फ़ैशन के मतवालों को

www.dawateislami.net

सुन्नतों पर अ़मल का ज़ेह्न दिया, लन्दन–पेरीस के सपने देखने वालों को मदीने का दीवाना बनाया और न जाने कैसे कैसे बिगड़ों को राहे रास्त पर लाया, ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) में मुक़ीम इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मेरे घर का माह़ोल यूं तो मज़हबी था कि मेरे अब्बूजान मस्जिद में मुअज़्ज़िन और बड़ी बहन और भाईजान दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे, मगर मेरा ज़ेह्न दुन्यावी लज़्ज़तों में बदमस्त और नफ़्स गुनाहों पर दिलेर था। नमाज़ें क़ज़ा कर डालना मेरी आ़दत थी। एक दिन चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत देने के लिये तशरीफ़ लाईं। उन के मह़ब्बत भरे अन्दाज़ से मेरा दिल पसीज गया और मैं ने इजतिमाअ़ में शिर्कत की निय्यत कर ली। जब वहां गई तो एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी ने "**बे नमाज़ी की सज़ाएं**" के मौज़ूअ़ पर दिल हिला देने वाला बयान किया जिसे सुन कर मैं थर्रा उठी और मैं ने पक्की निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आज के बा'द मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी। फिर माहे रबीउ़न्नूर शरीफ़ का मौसिमे बहार आया तो मैं इस्लामी बहनों के इजतिमाए़ मीलाद में शरीक हुई जहां एक इस्लामी बहन ने "**TV की तबाह कारियां**" बयान कीं। इस बयान को सुन कर मेरे रौंगटे खड़े हो गए और मेरी आंखों से आंसूओं की झड़ी लग गई। वोह दिन और आज का

www.dawateislami.net

दिन मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर अपनी इस्लाह़ की कोशिशों में मसरूफ़ हूं।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 17)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! फ़ैशन की मतवाली का हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई और उन इस्लामी बहनों के लिये षवाबे जारिया का ज़रीआ़ बन गई जिन्हों ने उसे इजतिमाअ़ की दा'वत दी थी कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''اِنَّ الدَّالَ عَلَی الْخَیْرِ کَفَاعِلِہٖ'' या'नी नेकी पर रहनुमाई करने वाला नेकी करने वाले ही की त़रह़ है।

(سُنَنُ التِّرمِذِی، ابواب العلم، ما جاء الدال علی الخیر کفاعله، ص۲۲۸، الحدیث:۲۶۷۰)

आप भी इस फ़रमाने आ़ली पर अ़मल की निय्यत फ़रमा लीजिये कि अगर आप के दा'वत देने से किसी इस्लामी बहन का दिल चोट खा गया और वोह कुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई तो आप का भी सीना मदीना होगा और इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा। हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि **''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।''** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **''मदनी इन्आ़मात''** पर अ़मल और सारी दुन्या

www.dawateislami.net

के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को, जिन की उ़म्र 22 साल या इस से ज़ियादा है, "**मदनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करवाना है। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में

ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो!

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 107)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आप भी मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने की बरकत से **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की मेहरबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जग–मगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लबैक कहता है कि देखने सुनने वाला इस पर रश्क करता और जीने के बजाए ऐसी मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत कीजिये और शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के अ़त़ा कर्दा मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 5

ख़ातूने जन्नत का ईषार व सख़ावत

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का ईषार व सख़ावत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

साहिबे मरवियाते कषीरा हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे बा क़रीना है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ सय्याह़ (या'नी सैर करने वाले) फ़िरिश्ते हैं, जो ज़िक्र की महाफ़िल तलाश करते हैं जब वोह महाफ़िले ज़िक्र के पास से गुज़रते हैं तो एक दूसरे से कहते हैं : (यहां) बैठो। जब ज़ाकिरीन (या'नी ज़िक्र करने वाले) दुआ मांगते हैं तो फ़िरिश्ते उन की दुआ पर आमीन (या'नी "ऐसा ही हो") कहते हैं। जब वोह नबी पर दुरूद भेजते हैं तो वोह फ़िरिश्ते भी उन के साथ मिल कर दुरूद भेजते हैं ह़त्ता कि वोह फ़ारिग़ हो जाते हैं, फिर फ़िरिश्ते एक दूसरे को कहते हैं कि इन ख़ुश नसीबों के लिये ख़ुश ख़बरी है कि येह मग़फ़िरत के साथ वापस जा रहे हैं।

(جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی، قسم الاقوال، تتمۃ حرف الھمزہ مع النون ج۳، ص۱۲۵، الحدیث:۷۷۵۰)

पढ़ लिये जिस ने दिल से चार सलाम वोह सलामत रहा क़ियामत में
मेरी जानिब से लाख बार सलाम मेरे प्यारे पे मेरे आक़ा पर

www.dawateislami.net

मेरी बिगड़ी बनाने वाले पर

भेज ऐ मेरे किरदगार सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कौन नहीं जानता कि सय्यिदा फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इस फ़क़ीदुल मिषाल (बे मिषाल) अ़ज़मत के मालिक बाप की लख़्ते जिगर हैं जिन के क़दमों में दुन्या भर के ख़ज़ाने बिछे रहते थे और इस्लाम के उस माया नाज़ फ़रज़न्द की अहलिया थीं जिन की शमशीरे जोहर दार ने सफ़ह़ए हस्ती पर अनमिट (न मिटने वाले) नुक़ूश षब्त कर के दुन्या को वर्त़ए ह़ैरत (وَرْطَۂ حَیْرَت या'नी इन्तिहाई ह़ैरानी) में डाल दिया था, दुन्या उस घराने के तक़द्दुस की क़सम खाती थी, लेकिन इस के बा वुजूद दुख़्तरे खै़रुल अनाम की ज़िन्दगी इस ह़ालत में गुज़री कि कभी पेट भर कर दो वक़्त की रोटी नसीब न हुई, जो मिलता उस को दूसरों पर निछावर कर देतीं और ख़ुद फ़क़्रो फ़ाक़ा से ज़िन्दगी बसर करतीं और जिस मकान में रहतीं वहां आराइश व ज़ैबाइश का नामो निशान तक न था क़ीमती और ख़ूब सूरत बिस्तर वग़ैरा का ज़िक्र ही क्या वहां तो बा'ज़ अवक़ात मा'मूली सा बिस्तर भी ब मुश्किल मुयस्सर आता। एक दफ़्आ़ रसूले अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी मह़बूब नूरे नज़र से मिलने तशरीफ़ लाए तो देखा कि इस क़दर छोटी चादर ओढ़ रखी है कि सर ढांपती हैं तो पाऊं खुल जाते हैं और पाऊं छुपाती हैं तो सर खुल जाता है।

(ماخوذ از مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوب، باب فی فضل الفقرا ص۱۸۰)

www.dawateislami.net

इस नादारी और अफ़लास की वजह येह न थी कि दुन्या की दौलत इन्हें मिल न सकती थी बल्कि येह ख़ानदाने नुबुव्वत का वोह इम्तियाज़ है जिस ने फ़क्रो इस्तिग़ना का आख़िरी तसव्वुर क़ाइम कर के येह षाबित कर दिया कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जीते और मरते हैं दुन्या की ज़ैबाइश व आराम और अषाषा व दौलत इन के लिये ख़ाके पा से भी कमतर हैषिय्यत रखती है वोह दुन्या को देने के आ़दी होते हैं, लेने के नहीं और नामवरी इस वक़्त मज़ीद उ़रूज व दवाम पा लेती है जब बन्दा अफ़आ़ले मह़मूद पर कारबन्द और अख़्लाक़े ह़सना से मुत्तसिफ़ हो जाता है। बिन्ते रसूल फ़ाति़मा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नामवरी और नेक नामी से कौन मुसलमान ना वाक़िफ़ है ? ह़सबो नसब की बरतरी और मज़हबो मिल्लत की त़रफ़ से मिलने वाली बड़ाई तो है ही मज़ीद नेक अफ़आ़ल व हुस्ने अख़्लाक़ ने सोने पर सुहागे का काम किया और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम हमेशा के लिये अवराक़े तारीख़ में सुन्हरी हुरूफ़ से मक्तूब और अज़हाने मोअमिनीन में मन्क़ूश हो गया।

साइलीन की ह़ाजत रवाई

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1442 पर "**तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" के ह़वाले से नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم व ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ाति़मा और ख़ादिमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने इन शहज़ादों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की सिह़्ह़त याबी के लिये **तीन रोज़ों** की मन्नत मानी। **अल्लाह** तआ़ला ने सिह़्ह़त दी, नज़्र की वफ़ा का वक़्त आया। सब साह़िबों ने रोज़े रखे, **ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली** كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم एक यहूदी से तीन साअ़ जव लाए, ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत ने एक एक साअ़ (या'नी चार किलो में 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्त़ार का वक़्त आया और रोटियां सामने रखीं तो एक दिन **मिस्कीन**, एक दिन **यतीम** और एक दिन **क़ैदी** दरवाज़े पर ह़ाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया।

(خَزَائِنُ الْعِرْفَان، پ۲۹، الدّھر تحت الایۃ:۸ ص۱۰۷۳، ملخصاً)

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"ह़ुसैन" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से ज़िक्र कर्दा ह़िकायत के 4 मदनी फूल

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदतुन्निसा, फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ज़िक्र कर्दा ह़िकायत से हमें

www.dawateislami.net

नज़्र, सख़ावत, ईषार और खाना खिलाने के मुतअ़ल्लिक़ चन्द मदनी फूल चुनने को मिले। आइये ! कुछ इन मदनी फूलों के बारे में मुलाहज़ा फ़रमा लीजिये :

पहला मदनी फूल..... नज़्र :

नज़्र किसे कहते हैं ?

शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : नज़्र व मन्नत शरीअ़त में **उस इबादत के काम को कहते हैं जो बन्दा ख़ुद अपने ऊपर लाज़िम कर ले** मषलन येह कहा कि अगर मेरा फ़ुलां मक़सद पूरा हो गया तो मैं इतनी रक्अ़तें नफ़्ल पढ़ूंगा या इतने रोज़े रखूंगा या इतने मिस्कीनों को ख़ुदा की रिज़ा के लिये खाना खिलाऊंगा या कोई भी नेक काम करूंगा। (मसाइलुल क़ुरआन, मन्नत मानने का बयान, स. 197)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नज़्र के बारे में अहम मा'लूमात

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़"** जिल्द 5 सफ़्ह़ा 202 पर फ़रमाते हैं : ग़ैरे वाजिब इबादत को अपने पर वाजिब कर लेना नज़्र है, नज़्रे शरई में येह शर्त़ है कि ऐसी चीज़ की नज़्र मानी जाए जो कहीं न कहीं वाजिब हो, जो चीज़ कहीं वाजिब न हो उस की नज़्रे शरई दुरुस्त न होगी, दूसरे येह कि वोह काम इबादत हो, तीसरे येह कि ख़ालिस **अल्लाह** तआ़ला के

www.dawateislami.net

लिये हो किसी बन्दे के लिये न हो क्यूंकि नज़्रे शरई इबादत है और इबादत सिर्फ़ रब्ब तआला की ही हो सकती है, हां ! नज़्रे लुग़वी ब मा'ने नज़राना बन्दों की हो सकती है मगर इस का पूरा करना शरअ़न वाजिब नहीं फ़ातिहए बुज़ुर्गान, ग्यारहवीं शरीफ़ की नज़्र मानना शरई नज़्र नहीं । लुग़वी नज़्र है ।

(مرآۃ المناجیح، باب فی النذور الفصل الاول، ج۵، ص ۲۰۲)

सदरुश्शरीआ, बदरुत्तरीक़ा, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی इस की मज़ीद वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : मस्जिद में चराग़ जलाने या **ताक़ भरने**(1) या फ़ुलां बुज़ुर्ग के मज़ार पर चादर चढ़ाने या ग्यारहवीं की नियाज़ दिलाने या ग़ौषे आ'ज़म رضی اللہ تعالٰی عنہ का **तौशा**(2) या शाह अ़ब्दुल ह़क़ رضی اللہ تعالٰی عنہ का तौशा करने या ह़ज़रते जलाल बुख़ारी का कूंडा करने या मुह़र्रम की नियाज़ या शरबत या सबील लगाने या मीलाद शरीफ़ करने की मन्नत मानी तो येह शरई मन्नत नहीं मगर येह काम मन्अ़ नहीं हैं, करे तो अच्छा है । हां ! अलबत्ता इस का ख़याल रहे कि कोई बात ख़िलाफ़े शरअ़ इस के साथ न मिलाए । मषलन ताक़ भरने में रत-जगा होता है (या'नी रात भर जागते हैं) जिस में कुम्बा (या'नी ख़ानदान) और रिश्ते की औ़रतें इकठ्ठा हो कर गाती बजाती है कि येह ह़राम

---

(1) ..... मस्जिद या मज़ार के ताक़ में चराग़ जला कर फूल वग़ैरा चढ़ाना ।
(2) ..... या'नी किसी वली या बुज़ुर्ग की फ़ातिहा का खाना जो उ़र्स वग़ैरा के दिन तक़्सीम किया जाता है ।

www.dawateislami.net

है या चादर चढ़ाने के लिये बा'ज़ लोग ताशे[1] बाजे के साथ जाते हैं येह ना जाइज़ है या मस्जिद में चराग़ जलाने में बा'ज़ लोग आटे का चराग़ जलाते हैं येह ख़्वाह मख़्वाह माल ज़ाएअ़ करना है और ना जाइज़ है। मिट्टी का चराग़ काफ़ी है और घी की भी ज़रूरत नहीं मक्सूद रोशनी है वोह तेल से ह़ासिल है। रहा येह कि मीलाद शरीफ़ में फ़र्श व रोशनी का अच्छा इन्तिज़ाम करना और मिठाई तक़्सीम करना या लोगों को बुलावा देना और इस के लिये तारीख़ मुक़र्रर करना और पढ़ने वालों का खुश इल्ह़ानी से पढ़ना येह सब बातें जाइज़ हैं अलबत्ता ग़लत़ और झूटी रिवायतों का पढ़ना मन्अ़ है। पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों गुनहगार होंगे।

(बहारे शरीअ़त, मन्नत का बयान जि. **2**, हि़स्सा नहुम, स. **317**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मन्नत के बारे में फ़रमाने रब्बुल इ़ज़्ज़त

पारह 3 सूरतुल बक़रह की आयत नम्बर 270 में मन्नत के बारे में इरशादे रब्बुल इ़ज़्ज़त है :

وَمَاۤ اَنۡفَقۡتُمۡ مِّنۡ نَّفَقَةٍ اَوۡ نَذَرۡتُمۡ مِّنۡ نَّذۡرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ یَعۡلَمُهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِیۡنَ مِنۡ اَنۡصَارٍ ۝

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और तुम जो ख़र्च करो या मन्नत मानो* ***अल्लाह*** *को इस की ख़बर है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।*

---

(1)...... एक क़िस्म के **दफ़** का नाम जिसे गले में डाल कर बजाते हैं।

www.dawateislami.net

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی **''तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** में इस आयते मुबारका के तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : शरअ़ में नज़्र इबादत और क़ुर्बते मक़सूदा है इसी लिये अगर किसी ने गुनाह करने की नज़्र की तो वोह सह़ीह़ नहीं हुई । नज़्र ख़ास **अल्लाह** तआ़ला के लिये होती है और येह जाइज़ है कि **अल्लाह** के लिये नज़्र करे और किसी वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को नज़्र के सर्फ़ का मह़ल मुक़र्रर करे मषलन किसी ने येह कहा : या रब्ब ! मैं ने नज़्र मानी कि अगर तू मेरा फ़ुलां मक़सद पूरा कर दे कि फ़ुला बीमार को तंदुरुस्त कर दे तो मैं फ़ुलां वली के आस्ताने के फ़ुक़रा को खाना खिलाऊं या वहां के ख़ुद्दाम को रूपिया पैसा दूं या उन की मस्जिद के लिये तेल या बोरिया ह़ाज़िर करूं तो येह नज़्र जाइज़ है ।

(تفسیر خزائن العرفان، پ۳، البقرۃ، تحت الآیۃ:۲۷۰، ص۹۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मन्नत पूरी करने वालों की मदह़ सराई

अपनी मन्नत को पूरा करना क़ाबिले ता'रीफ़ और षवाब का काम है **जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन** ह़ज़रते मौलाए काइनात, **अ़लिय्युल मुर्तज़ा**, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم, ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा और ख़ादिमा ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) ने ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की शिफ़ायाबी पर रोज़ों की मन्नत को पूरा किया तो इन की मदह़ में **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने पारह 29 सूरतुद्दह्‌र की आयत नम्बर 7 में इरशाद फ़रमाया :

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَ يَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ۝ (پ۲۹، الدھر:۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अपनी मन्नतें पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली हुई है।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सह़ाबए किराम का मन्नत मानना

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی "**तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुसअ़ब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم) वग़ैरहुम ने नज़्र मानी थी कि वोह जब रसूले करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم के साथ जिहाद का मौक़अ़ पाएंगे तो षाबित रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं, इन की निस्बत इस आयत में इरशाद हुवा कि इन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिया।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह. 21, तह़्तुल आयत : 23 स. 777)

और ह़ज़रते सय्यिदुना ह़म्ज़ा व मुसअ़ब (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) शहीद हो गए, चुनान्चे

www.dawateislami.net

पारह 21, सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 23 में इरशाद होता है :

مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَیْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَ مِنْهُمْ مَّنْ یَّنْتَظِرُ ۖ٘ وَ مَا بَدَّلُوْا تَبْدِیْلًا ﴿۲۳﴾

(پارہ ۲۱، الأحزاب:۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *मुसलमानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़हद* ***अल्लाह*** *से किया था तो इन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले ।*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कौन सी मन्नत मानी जाए ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'मूल हुवा कि मन्नत मानना जाइज़ है और जाइज़ मन्नत पूरी करने पर मदह़ से भी नवाज़ा गया है जैसा कि आप ने ज़िक्र कर्दा आयते मुबारका में मुलाह़ज़ा फ़रमाया । येह भी याद रहे कि अगर किसी गुनाह की मन्नत मानी हो तो उसे हरगिज़ हरगिज़ पूरा न किया जाए, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1182 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द दुवुम सफ़ह़ा 318 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی मन्नत के मुतअ़ल्लिक़ बहुत ही अहम मस्अला बयान करते हुए फ़रमाते हैं : बा'ज़ जाहिल औ़रतें लड़कों के कान नाक छिदवाने और बच्चों की चोटिया रखने की मन्नत मानती हैं या और त़रह़ त़रह़ की ऐसी मन्नतें मानती हैं जिन का जवाज़ किसी त़रह़

www.dawateislami.net

षाबित नहीं अव्वलन ऐसी वाहियात मन्नतों से बचें और मानी हो तो पूरी न करें और शरीअ़त के मुआ़मले में अपने लग्व (या'नी फ़ुज़ूल) ख़यालात को दख़्ल न दें न येह की हमारे बड़े बुढ्ढे यूहीं करते चले आए हैं और येह कि पूरी न करेंगे तो बच्चा मर जाएगा, बच्चा मरने वाला होगा तो येह ना जाइज़ मन्नतें बचा न लेंगी। मन्नत माना करो तो नेक काम नमाज़, रोज़ा, ख़ैरात, दुरूद शरीफ़, कलिमा शरीफ़, क़ुरआने मजीद पढ़ने, फ़क़ीरों को खाना देने, कपड़ा पहनाने वग़ैरा की मन्नत मानो और अपने यहां के किसी सुन्नी आ़लिम से दरियाफ़्त भी कर लो कि येह मन्नत ठीक है या नहीं।

मज़ीद फ़रमाते हैं : "अ़लम और ता'ज़िया बनाने और पैक बनने और मुहर्रम में बच्चों को फ़क़ीर बनाने और (मन्नत की) बध्धी (या'नी पटका या फूलों का हार या गले में पहनने का एक ज़ेवर) पहनाने और मरषिया की मजलिस(1) करने और ता'ज़ियों पर नियाज़ दिलवाने वग़ैरा ख़ुराफ़ात (या'नी बेहूदा रस्मों) की मन्नत सख़्त जहालत है ऐसी मन्नत माननी न चाहिये और मानी हो तो पूरी न करे।"

(बहारे शरीअ़त, मन्नत का बयान, जि. 2, हिस्सा. 9, स. 318)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़्श की नज़्र

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 59 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल उम्महातुल मोअमिनीन

(1)…. वोह मजलिस जिस में शुहदाए करबला के मसाइब व शहादत का नोहा ख़्वानी के साथ ज़िक्र होता है।

www.dawateislami.net

के फ़ज़ाइल व मनाक़िब पर मुश्तमिल ईमान अफ़रोज़ किताब "उम्महातुल मोअमिनीन" सफ़हा 43-44 में ज़िक्र कर्दा कलाम का ख़ुलासा है : जब उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के सरकारे अबदे क़रार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निकाह के मुतअ़ल्लिक़ कुरआने पाक की येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا (پ۲۲، الأحزاب:۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *फिर जब ज़ैद की ग़रज़ इस से निकल गई तो हम ने वोह तुम्हारे निकाह में दे दी।*

तो हुज़ूरे पुरनूर शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुस्कुराते हुए फ़रमाया कि कौन है जो ज़ैनब के पास जाए और उस को येह ख़ुश ख़बरी सुनाए कि **अल्लाह** तआला ने मेरा निकाह उस के साथ फ़रमा दिया है। येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ादिमा हज़रते सय्यिदतुना सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا दौड़ती हुई हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के पास पहुंचीं और येह आयत सुना कर ख़ुश ख़बरी दी। हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا इस बिशारत से इस क़दर ख़ुश हुईं कि अपना ज़ेवर उतार कर उस ख़ादिमा को इन्आम में दे दिया, सज्दए शुक्र बजा लाईं और नज़्र मानी कि 2 माह रोज़ादार रहूंगी।

(مَدَارِجُ النُّبُوّت (مترجم)، باب دوم ذکر امہات المؤمنین...الخ، ج۲، ص۶۴۵)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"नज़्र" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से नज़्र के मुतअ़ल्लिक़ 3 अहादीषे मुबारका

﴾1﴿.... उम्मुल मोअमिनीन ज़ौजए सय्यिदुल मुरसलीन, सय्यिदा आ़लिमा ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا से मरवी है कि नूर के पैकर, अम्बिया के सरवर, दो आ़लम के दिलबर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे रूह़ परवर है : ''مَنْ نَذَرَ اَنْ یُّطِیْعَ اللّٰہَ فَلْیُطِعْهُ وَمَنْ نَذَرَ اَنْ یَّعْصِیَهٗ فَلَا یَعْصِہٖ'' या'नी जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इत़ाअ़त की नज़्र माने वोह उस की इत़ाअ़त करे और जो उस की ना फ़रमानी की नज़्र माने, वोह ना फ़रमानी न करे।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی،کتاب الایمان والنذور،باب النذر فی الطاعة،ص۱۶۳۵، الحدیث:۶۶۹۶)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ''मिरआतुल मनाजीह़'' जिल्द 5, सफ़ह़ा 203 पर इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला की इ़बादत तो वैसे भी करनी चाहिये और जब नज़्र मान ली तो ब दरजए औला करनी चाहिये। ख़याल रहे कि जो काम ब ज़ाते ख़ुद गुनाह हो, उस की नज़्र दुरुस्त ही नहीं जैसे शराब पीने, जूआ खेलने, किसी मुसलमान को नाह़क़ क़त्ल करने की नज़्र कि ऐसी नज़्रें बात़िल हैं इन का पूरा करना ह़राम,

www.dawateislami.net

मगर इन पर कफ़्फ़ारा वाजिब है कि येह काम हरगिज़ न करे और कफ़्फ़ारा अदा करे(1) इस का कफ़्फ़ारा क़सम का कफ़्फ़ारा है(2) कि उस ने रब्ब तआ़ला के नाम की बे हुरमती की, मगर जो काम किसी आ़रिज़े की वजह से मम्नूअ़ हों उन की नज़्र दुरुस्त है, या उन की क़ज़ा करे या कफ़्फ़ारा दे जैसे ईद के दिन के रोज़े या तुलूए़ आफ़्ताब के वक़्त नफ़्ल पढ़ने की मन्नत कि येह मन्नत दुरुस्त है।

(مرآۃ المناجیح،کتاب الایمان والنذور،باب فی النذور،الفصل الاول ،ج۵،ص۲۰۳)

﴿2﴾.... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ख़ुत़्बा पढ़ रहे थे कि एक शख़्स खड़ा हुवा देखा, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उस के मुतअ़ल्लिक़ पूछा। लोगों ने बताया कि येह अबू इसराईल है इस ने नज़्र मानी है कि खड़ा रहेगा, न बैठेगा, न साया लेगा, न

---

(1).... चुनान्चे ''दुर्रेमुख़्तार'' में है ''जिस ने कोई गुनाह करने की क़सम खाई मषलन वालिदैन से कलाम नहीं करेगा या आज फ़ुलां को क़त्ल करेगा तो इस पर वाजिब है कि क़सम तोड़ दे और इस का कफ़्फ़ारा अदा करे।''

(الدُّرُّ المُخْتَار،کتاب الأیمان ، ص۲۸۳)

(2).... जैसा कि ह़दीषे पाक में है, كَفَّارَةُ النَّذْرِ كَفَّارَةُ الْيَمِيْنِ या'नी नज़्र का कफ़्फ़ारा क़सम का ही कफ़्फ़ारा है। (صَحِیْحُ مُسْلِم، کتاب النذر، باب کفارۃ النذر، ص۸۹۳، الحدیث:۱۶۴۵)

और क़सम का कफ़्फ़ार तीन त़रह़ का है। ग़ुलाम आज़ाद करना..... या 10 मिस्कीनों को खाना खिलाना ..... या फिर 10 मिस्कीनों को कपड़े पहनाना। या'नी येह इख़्तियार है कि इन तीन बातों में से जो चाहे करे। (تَبْیِیْنُ الْحَقَائِق،کتاب الایمان، ج۳، ص۴۳۰) और अगर ग़ुलाम आज़ाद करने या दस मिस्कीन को खाना या कपड़े देने पर क़ादिर न हो तो पे दर पे तीन रोज़े रखे।

(الفتاوی الھندیۃ، کتاب الایمان، الباب الثانی.....الخ، الفصل الثانی فی الکفارۃ، ج۲، ص۶۱)

www.dawateislami.net

कलाम करेगा और रोज़े रखेगा, तो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इसे हुक्म दो कि कलाम करे, साया ले ले और बैठ जाए और अपना रोज़ा पूरा करे ।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی،کتاب الایمان والنذور، باب النذرفیما لا یملک وفی معصیۃ، ص۱۶۳۲، الحدیث:۶۷۰۴)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "मिरआतुल मनाजीह" जिल्द 5 सफ़्हा 204 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : सब लोग बैठ कर ख़ुत्बा सुन रहे थे मगर येह साहिब हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो कर सुन रहे थे, इस से मा'लूम हुवा कि ख़ुत्बा पढ़ना खड़े हो कर सुन्नत है और सुनना बैठ कर सुन्नत, इसी लिये तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन के खड़े होने पर तअज्जुब फ़रमाया ।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़ामोश रहना, साये में न बैठना कोई इबादत नहीं बल्कि हराम है क्यूंकि नमाज़ में क़िराअत फ़र्ज़ है और अत्तहिय्यात में बैठना वाजिब भी है फ़र्ज़ भी, इस तरह हमेशा खड़ा रहना ताक़ते इन्सानी से बाहर है येह नज़्र तोड़ दे मगर रोज़ा चूंकि इबादत है इस लिये इसे पूरा करे । ख़याल रहे कि अबू इसराईल ने हमेशा खड़े रहने, हमेशा ख़ामोश रहने, साये में न बैठने हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र मानी थी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली नज़्रें तोड़ने का हुक्म दिया

www.dawateislami.net

मगर रोज़े की नज़्र पूरी करने की ताकीद फ़रमाई जो कोई हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र माने वोह साल में पांच (5) ह़राम रोज़ों या'नी ईदुल फ़ित्र और 4 ईदुल अज़्ह़ा (या'नी 10, 11, 12, 13 ज़िल ह़िज्जा) के सिवा तमाम दिन रोज़े रखे और इन पांच दिन रोज़े न रखने की वजह से कफ़्फ़ारा दे।

(مرأۃ المناجیح،کتاب الایمان و النذور، باب فی النذور،الفصل الاول، ج۵،ص۲۰۳)

﴾3﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि एक शख़्स ने (फ़त्ह़े मक्का के दिन) ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने मन्नत मानी थी कि अगर **अल्लाह** तआ़ला आप के लिये मक्का फ़त्ह़ करेगा तो मैं बैतुल मुक़द्दस में दो रक्अ़त नमाज़ पढूंगा। मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''यहीं पढ़ लो।'' दोबारा फिर उस ने वोही सुवाल किया, फ़रमाया : यहीं पढ़ लो। फिर सुवाल का इआ़दा किया तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : ''अब तुम जो चाहो करो।''

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان والنذور، باب فی النذور، الفصل الثانی، ج ۱، ص ۶۳۰، الحدیث: ۳۴۴۰)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि मक्कए मुअ़ज़्ज़मा की मस्जिद का षवाब बैतुल मुक़द्दस से दो गुना है कि वहां एक का षवाब पचास हज़ार है और ह़रम शरीफ़ में एक लाख

www.dawateislami.net

और मस्जिदे नबवी का षवाब बैतुल मुक़द्दस के बराबर, मगर मस्जिदे नबवी में नमाज़ का दर्जा ज़ियादा है कि यहां हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कुर्ब है और चूंकि नज़्र थी बैतुल मुक़द्दस की और येह साहिब अदा करते मस्जिदे ह़राम या मस्जिदे नबवी में जो वहां से आ'ला है लिहाज़ा बहर ह़ाल नज़्र पूरी हो जाती। मसाजिद में आ'ला मस्जिदे ह़राम है फिर मस्जिदे नबवी फिर मस्जिदे कुदसी फिर अपने शहर की जामेअ़ मस्जिद फिर मह़ल्ले की मस्जिद फिर घर की मस्जिद (जाए नमाज़)।

(مراٰۃ المناجیح،کتاب الایمان و النذور،باب فی النذور،الفصل الثانی، ج۵،ص۲۱۰، ملتقطاً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बहारेशरीअ़त का मुत़ालआ़ कीजिये !

नज़्र के बारे में फ़िक़ही मसाइल जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 2 सफ़ह़ा 311 ता 318 का मुत़ालआ़ कीजिये।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरा मदनी फूल : सख़ावत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! माल कम हो या ज़ियादा हर सूरत में सख़ावत करनी चाहिये और बुख़्ल नहीं करना चाहिये कि सच्चे मुसलमान सख़ी और पैकरे ईषार होते हैं और मुसलमानों की तकालीफ़ दूर करने की ख़ात़िर अपनी मुश्किलात

www.dawateislami.net

की ज़र्रा बराबर परवाह नहीं करते जैसा कि आप ने ह़दीषे फ़ाति़मा में मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि वक़्ते इफ़्त़ार के लिये जो तीन साअ़ जव लाए वोह बजाए इस में कुछ रखने के सब के सब साइलीन पर यके बा'द दीगरे ख़ैरात कर दिये और अपने लिये कुछ भी न रखा येह आ'ला क़िस्म की सख़ावत थी और फिर इन को जिस इन्आ़म से नवाज़ा गया वोह भी कम नहीं कि ता क़ियामत पढ़ी जाने वाली किताब में **अल्लाह** रब्बुल उ़ला عَزَّوَجَلَّ ने इन का तज़किरा फ़रमा दिया जो कि आप इब्तिदाई सफ़ह़ात में मुलाह़ज़ा फ़रमा चुकी हैं। अब यहां सख़ावत के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मदनी फूल और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के इरशादात व वाक़िआ़त नक़्ल किये जाएंगे ताकि इन की सख़ावत से हमें भी कुछ ह़िस्सा मिल जाए। येह बात हमेशा पेशे नज़र रखनी चाहिये कि सख़ावत करने से हमेशा फ़ाइदा ही होता है और माल भी घटता नहीं बल्कि बढ़ता है। दीने इस्लाम की तब्लीग़ भी सख़ावत व ह़ुस्ने अख़्लाक़ पर मुन्ह़सिर है, जैसा कि

दीने इस्लाम की इस्लाह़ किस पर मुन्ह़सिर है

रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "येह वोह दीन है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने लिये चुन लिया और **तुम्हारे दीन की इस्लाह़ सख़ावत और ह़ुस्ने अख़्लाक़ ही पर मुन्ह़सिर है,** पस इन दोनों के साथ अपने दीन को आरास्ता करो।"

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، ج۲، ص ۲۳۲، الحدیث:۵۳۵۳)

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 417 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **इह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा** सफ़ह़ा 265 पर हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : **فَاَکْرِمُوْہُ بِھِمَا مَا صَحِبْتُمُوْہُ** **तर्जमा :** जब तक इस दीन पर रहो इन दोनों चीज़ों के ज़रीए़ इस का एह़तिराम करो। (المعجم الاوسط، من اسمہ مقدام، ج ٦، ص ٣٢٣، الحدیث: ٨٩٢٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़ावत किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی से पूछा गया कि सख़ावत क्या है ? आप ने फ़रमाया : सख़ावत येह है कि तू अपना माल **अल्लाह** तआ़ला के रास्ते में ख़र्च कर दे। (اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن، کتاب ذم البخل وذم حب المال، بیان فضیلۃ السخاء، ج ٣، ص ٣٠٤)

थेलियां भर भर कर तक़्सीम फ़रमा दीं

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उ़यैना رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पूछा गया कि सख़ावत किसे कहते हैं ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : (मुसलमान) **भाइयों से नेकी का सुलूक करना और माल अ़ता करना सख़ावत है।** फ़रमाया : मेरे वालिदे माजिद को विराषत में 50,000 दिरहम मिले तो उन्हों ने थेलीयां भर भर कर अपने भाइयों को तक़्सीम कर दीं और फ़रमाया कि मैं नमाज़ में

www.dawateislami.net

अल्लाह तआ़ला से अपने भाइयों के लिये जन्नत का सुवाल किया करता था तो माल में इन से बुख़्ल क्यूं करूं ?

(المرجع السابق، ص ۳۰۵)

सख़ावत की ख़स्लत इनायत हो या रब्ब !

दे जज़्बा भी ईषार का या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बेहतरीन सख़ावत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 324 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**152 रह़मत भरी ह़िकायात**" सफ़ह़ा 163 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अ़ब्दुर्रह़मान बिन अह़मद बिन अ़त़िय्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : बेहतरीन सख़ावत वोह है जो ह़ाजत के मुत़ाबिक़ व मुवाफ़िक़ हो (कि सामने वाले को जिस चीज़ की ह़ाजत हो वोह दी जाए) ।

(شعب الایمان ،الرابع والسبعون من شعب الایمان ، باب فی الجود والسخاء، ج۷،ص۴۴۷،الحدیث:۱۰۹۳۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जूदो करम ईमान का ह़िस्सा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 415 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ज़ियाए सदक़ात**" सफ़ह़ा 219 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र

www.dawateislami.net

सादिक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : अ़क़्ल से ज़ियादा मददगार कोई माल नहीं, जहालत से बढ़ कर कोई गुनाह नहीं, मश्वरे से बढ़ कर कोई पुश्त पनाह नहीं । सुनो ! **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : मैं जव्वादो करीम हूं किसी बख़ील के लिये मुझ से राहे फ़रार नहीं और बुख़्ल कुफ़्र (ना शुक्री) से है और कुफ़्फ़ार (ना फ़रमान) जहन्नम में जाएंगे जब कि **जूदो करम ईमान का हिस्सा है** और अहले ईमान जन्नत में जाएंगे ।

(احیاءُ عُلُوم الدِّین، کتاب ذم البخل وذم حُبِّ المال، بیان فضیلۃ السخاء، ج۳، ص۳۰۴)

ईमान पे दे मौत मदीने की गली में   मदफ़न मेरा महबूब के क़दमों में बना दे

हो बहरे ज़िया नज़रे करम सूए गुनहगार   जन्नत में पड़ोसी मेरे आक़ा का बना दे

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 100)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अनोखा अन्दाज़े सख़ावत

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़रवा बिन ज़ुबैर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ के जूदो सख़ावत का येह आ़लम था कि जब बाग़ में फल पक कर तय्यार हो जाते तो इहाते की दीवार में शिगाफ़ फ़रमा देते फिर लोगों को इजाज़त देते कि वोह आ कर खाएं और उठा कर भी ले जाएं । देहाती लोग बाग़ के गिर्द आते, पस वोह इस में दाख़िल हो कर

www.dawateislami.net

फल खाते और उठा कर भी ले जाते। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जब अपने बाग़ में तशरीफ़ ले जाते तो पारह 15 सूरतुल कह्फ़ की आयत नम्बर 39 की तकरार करते ह़त्ता कि बाग़ से बाहर तशरीफ़ ले जाते।

وَلَوۡلَاۤ اِذۡ دَخَلۡتَ جَنَّتَکَ قُلۡتَ مَا شَآءَ اللّٰہُ ۙ لَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ ۚ

(پ۱۵، الکھف:۳۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और क्यूं न हुवा कि जब तू अपने बाग़ में गया तो कहा होता जो चाहे **अल्लाह** हमें कुछ ज़ोर नहीं मगर **अल्लाह** की मदद का।*

(حلیۃ الاولیاء، عُروَہ بن زبیر، ج۲،ص۲۰۵ الرقم ۱۹۵۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सख़ावत ईमान के लिये बाइषे तक़विय्यत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 680 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**मुक़ाशफ़तुल कुलूब**" सफ़ह़ा 571 पर हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते सुना कि **सब से पहले मीज़ाने अ़मल में हुस्ने ख़ुल्क़ और सख़ावत रखी जाएगी**, जब **अल्लाह** तआ़ला ने ईमान को पैदा फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे कुव्वत अ़ता फ़रमा तो **अल्लाह** तआ़ला ने उसे हुस्ने ख़ुल्क़

www.dawateislami.net

और सख़ावत से तक़विय्यत बख़्शी और जब **अल्लाह** तआ़ला ने कुफ़्र को पैदा फ़रमाया तो उस ने अ़र्ज़ किया : ऐ **अल्लाह** ! मुझे कुव्वत बख़्श, तो **अल्लाह** तआ़ला ने उसे बुख़्ल और बद ख़ुल्क़ी से तक़विय्यत बख़्शी । **(مکاشفة القلوب،باب فی فضل حسن الخلق، ص۸۰٤،کوئٹه)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इब्राहीम बिन अदहम की सख़ावत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 412 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए अव्वल सफ़ह़ा 110 पर ज़िक्र कर्दा ह़िकायत का ख़ुलासा है : ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन असवद किलाबी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : "मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم को अपने बाग़ की देख-भाल के लिये अजीर (या'नी ग़ुलाम) रखा, तक़रीबन एक साल बा'द मैं अपने कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में गया। एक शख़्स उ़म्दा ऊंट पर सुवार हो कर हमारे पास आया और उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم के बारे में पूछा। मैं ने उसे बताया कि "आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़ुलां जगह मौजूद हैं।" वोह शख़्स आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के पास आया, दस्तबोसी की और निहायत मोअद्दिबाना अन्दाज़ में खड़ा हो गया। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने आने की वजह पूछी तो कहने लगा : "मैं **बल्ख़** शहर से आया हूं, आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ के चन्द ग़ुलामों का इन्तिक़ाल हो गया है, मैं इन का माल ले कर आप की

www.dawateislami.net

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा हूं। येह तीस हज़ार (30,000) दिरहम आप के हैं इन्हें क़बूल फ़रमा लें।"

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم ने उस माल के तीन ह़िस्से करते हुए फ़रमाया : एक तुम्हारे लिये क्यूंकि तुम सफ़र की सऊ़बतें और मुश्किलात बर्दाश्त कर के यहां पहुंचे हो, दूसरा ह़िस्सा ले जाओ और इसे बल्ख़ के ग़ुरबा व मसाकीन में तक़्सीम कर देना।

फिर आप رحمۃ اللہ تعالی علیہ ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या رحمۃ اللہ تعالی علیہ की त़रफ़ मुतवज्जेह हुए जिन के बाग़ में आप बत़ौरे अजीर (मुलाज़िम) काम करते थे, उन से फ़रमाया : "येह एक ह़िस्सा तुम ले लो और इसे "**अ़स्क़लान**" के ग़ुरबा व फ़ुक़रा में तक़्सीम कर देना।" इतना कहने के बा'द आप رحمۃ اللہ تعالی علیہ वहां से तशरीफ़ ले गए और उन **तीस हज़ार (30,000) दराहिम में से एक दिरहम भी ख़ुद न लिया**

(उ़यूनुल ह़िकायात, स. 71 मुलख़्ख़सन)

صلوا علی الحبیب! صلی اللہ تعالی علی محمد

सख़ी का खाना दवा है !

शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : **"सख़ी का खाना दवा और बख़ील का खाना बीमारी है।"**

(جمع الجوامع، حرف الطاء، الطاء مع العین، ج۵، ص۱۱۸، الحدیث: ۱۴۳۸۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मेरे आक़ा की सख़ावत

एक मुसलमान बीबी के सामने एक यहूदिया ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा علیہ السلام की सख़ावत का बयान किया और इस में इस ह़द तक मुबालग़ा किया कि हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم पर तरजीह़ दे दी और कहा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा علیہ الصلوۃ والسلام की सख़ावत तो इस इन्तिहा पर पहुंची हुई थी कि अपनी ज़रूरियात के इ़लावा जो कुछ भी उन के पास होता साइल को दे देने से दरेग़ न फ़रमाते, येह बात मुसलमान बीबी को ना गवार गुज़री और उन्हों ने कहा कि अम्बिया علیہم الصلوۃ والسلام सब साहि़बे फ़ज़्लो कमाल हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा علیہ الصلوۃ والسلام के जूदो नवाल में कुछ शुबा नहीं लेकिन सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم का मर्तबा सब से आ'ला है और येह कह कर उन्हों ने चाहा कि यहूदिया को ह़ज़रते सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم के जूदो करम की आज़माइश करा दी जाए, चुनान्चे उन्हों ने अपनी छोटी बच्ची को हुज़ूर علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم की ख़ि़दमत में भेजा कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم से क़मीस मांग लाए, उस वक़्त हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم के पास एक ही क़मीस थी जो ज़ैबेतन थी वोही उतार कर अ़ता फ़रमा दी।

(تَفْسِیْرِ خَزَائِنُ الْعِرْفَان،پ۱۵،بنی اسرائیل،تحت الایہ:۲۹، ص۱ ۵۳)

www.dawateislami.net

सख़ावत तेरे घर की है इनायत तेरे घर की है

तेरे दर का सुवाली झोलियां भर भर के लाता है

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 312)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सख़ावत के बारे में अह़ादीषे मुबारका और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के वाक़िआत और आख़िर में प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सख़ावत के मुतअ़ल्लिक़ भी मुलाह़ज़ा फ़रमाया । सख़ावत करते वक़्त येह बात ज़ेह्न नशीन रहे कि इतना माल ख़र्च न करे कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे और लोगों से सुवाल करना पड़े । लिहाज़ा ख़र्च करने और माल रोकने दोनों में ए'तिदाल और मियाना-रवी से काम लेना चाहिये ।

पारा 15 सूरए बनी इसराईल आयत नम्बर 29 में इरशादे रब्बे जलील है :

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝ (پ۱۵، بنی اسرائیل:۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुवा न रख और न पूरा खोल दे कि तू बैठ रहे मलामत किया हुवा थका हुवा ।*

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल सय्यिद ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى "**तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" में इस आयते मुबारका के

www.dawateislami.net

तह़्त तह़रीर फ़रमाते हैं : येह तमषील है जिस से इनफ़ाक़ या'नी ख़र्च करने में ए'तिदाल मलहूज़ रखने की हिदायत मन्ज़ूर है और येह बताया जाता है कि न तो इस त़रह़ हाथ रोको कि बिल्कुल ख़र्च ही न करो और येह मा'लूम हो गोया कि हाथ गले से बांध दिया गया है, देने के लिये हिल ही नहीं सकता। ऐसा करना तो सबबे मलामत होता है कि बख़ील कन्जूस को सब बुरा कहते हैं और न ऐसा हाथ खोलो कि अपनी ज़रूरियात के लिये भी कुछ बाक़ी न रहे। (تفسیر خزائن العرفان، پ۱۵، بنی اسرائیل، تحت الآیہ:۲۹)

एक और जगह इरशादे बारी तआ़ला है :

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ﴿۶۷﴾

(پ۱۹، الفرقان:۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह कि जब ख़र्च करते हैं न ह़द से बढ़ें और न तंगी करें और इन दोनों के बीच ए'तिदाल पर रहें।*

ह़दीषे पाक में भी ए'तिदाल में रहने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई गई, चुनान्चे फ़क़ीहे उम्मते मह़बूब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले करीम, साह़िबे ख़ुल्क़े अ़ज़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَا عَالَ مَنِ اقْتَصَدَ या'नी जो शख़्स ए'तिदाल इख़्तियार करेगा तंगदस्त नहीं होगा। (شُعَبُ الْاِیمان، باب الاقتصاد فی النفقہ۔۔۔الخ، ج۵، ص۲۵۵، الحدیث:۶۵۶۹)

www.dawateislami.net

एक और रिवायत में रसूलों के सालार, नबियों के ताजदार صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : مَنِ اقْتَصَدَ اَغْنَاہُ اللّٰہُ، وَمَنْ بَذَّرَ اَفْقَرَہُ اللّٰہُ या'नी जो शख़्स (अख़राजात में) ए'तिदाल क़ाइम रखता है, **अल्लाह** तआ़ला उसे मालदार बना देता है और जो आदमी ज़रूरत से ज़ाइद ख़र्च करता है **अल्लाह** तआ़ला उसे फ़क़ीर कर देता है।

(کَنْزُ الْعُمَّال،کتاب الاخلاق،الاقتصاد والرفق فی المعیشۃ، ج ۲ الجزء الثالث، ص۲۴، الحدیث ۵۴۳۴)

ज़रूरत से ज़ियादा मालो दौलत का नहीं ताालिब

रहे बस आप की नज़रे इनायत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 186)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हां ! जो शख़्स तवक्कुल के आ'ला दर्जे पर फ़ाइज़ हो वोह राहे ख़ुदा में सारा माल ख़र्च कर सकता है, जैसा कि

यारे ग़ार का माली ईषार

(ग़ज़्वए तबूक के मौक़अ़ पर) नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم ने राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करने की तरग़ीब इरशाद फ़रमाई। (महबूबे रहमान, शाहे कौनो मकान صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم के इस फ़रमाने रग़बत निशान की ता'मील करते हुए) सहाबए किराम علیہم الرضوان अपना कषीर माल राहे ख़ुदा में लाए। सब से पहले सहाबी इब्ने सहाबी, आ़शिक़े अक्बर हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رضی اللہ تعالٰی عنہ अपना

www.dawateislami.net

सारा माल (चार हज़ार दिरहम) ले कर ह़ाज़िरे बारगाह हो गए, नबिय्ये मुख़्तार, दो आ़लम के ताजदार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (इस ईषार को देख कर) इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या अपने घरबार के लिये भी कुछ छोड़ा ? अ़र्ज़ गुज़ार हुए : **“उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड़ आया हूं ।”** (मत़लब येह कि मेरे और मेरे अहलो इ़याल के लिये **अल्लाह** व रसूल काफ़ी हैं) ।

(سُبُلُ الْھُدٰی وَالرَّشَاد فِیْ سِیْرَۃِ خَیْرِ الْعِبَاد،الباب الثلاثون فی غزوۃ التبوک۔الخ، ج۵، ص۴۳۵)

शाइ़र ने इस जज़्बए जां निषारी को यूं नज़्म किया है :

इतने में वोह रफ़ीक़े नुबुव्वत भी आ गया — जिस से बिनाए इ़श्को मुह़ब्बत है उस्तुवार

ले आया अपने साथ वोह मर्दे वफ़ा सरिश्त — हर चीज़ जिस से चश्मे जहां में हो ए'तिबार

बोले हुज़ूर, चाहिये फ़िक्रे इ़याल भी — कहने लगा वोह इ़श्को मह़ब्बत का राज़दार

है तुझ से दीदए मह व अन्जुम फ़रोग़ गीर(1) — है तेरी ज़ात बाइ़षे तकवीने रोज़गार

परवाने को चराग़ है बुलबुल को फूल बस

सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) .... ऐ वोह ज़ात कि जिस से चांद और तारों की आंखें रोशनी ह़ासिल करती हैं ।

www.dawateislami.net

कन्जूसी बातिन का रोग

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह बात पेशे नज़र रहे कि दुन्यवी मालो मताअ़ उस वक़्त तक आख़िरत का सामान नहीं बनता जब तक इसे आख़िरत के इरादे से ख़र्च न किया जाए और कन्जूस आदमी न बन्दों में नेक नाम और न ही **अल्लाह** तआ़ला के हां मक़्बूल व अज़ीज़ होता है, **कन्जूसी बातिन का रोग है जो लग जाने के बा'द कभी नहीं जाता** और **कन्जूस** माल को किसी नेक काम के लिये भी ख़र्च नहीं करता हालांकि **अल्लाह** तआ़ला की दी हुई ने'मतों से ख़ुद भी फ़ाइदा उठाना चाहिये और दूसरों को भी फ़ाइदा देना चाहिये या'नी ख़ुद भी खाना चाहिये और फ़ुक़रा व ग़ुरबा पर ख़र्च कर के आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा करना चाहिये ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सख़ावत पर मुश्तमिल रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि अल्लाह वालों को मालो दौलत की लालच नहीं होती जब कि दुन्या वालों को मालो दौलत की ह़िर्स होती है। जो ज़ाहिद मालो दौलत को पसन्द करे वोह ह़क़ीक़त में ज़ाहिद नहीं। **अल्लाह** तआ़ला के नेक बन्दे खाने पीने और मालो मताअ़ के शैदाई नहीं होते, सख़ावत की आ़दत बुलन्द अख़्लाक़ की सनद है, सख़ावत करने से दुश्मन भी सर झुका कर ग़ुलाम बन जाते है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीसरा और चौथा मदनी फूल :

ईषार और खाना खिलाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने इब्तिदा में ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के ईषार व सख़ावत को मुलाहज़ा किया और इस ज़िम्न में इख़्लास व रियाकारी, नज़्रो मन्नत और सख़ावत के बारे में अहादीषे तय्यिबा और अक़्वाल व अफ़्आले सहाबा व ताबेईन से मदनी फूल चुनने की ख़ूब कोशिश भी की । आइये ! अब ईषार और खाना खिलाने के मुतअ़ल्लिक़ कुछ मदनी फूल पेश किये जाते हैं, चुनान्चे

ईषार की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ 44 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**मदीने की मछली**" सफ़्ह़ा 3 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ ईषार की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ईषार का मा'ना है : **दूसरों की ख़्वाहिश और ह़ाजत को अपनी ख़्वाहिश व ह़ाजत पर तरजीह़ देना ।**

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईषार का षवाब बे ह़िसाब जन्नत

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی "**इह़याउल उ़लूम**" में नक़्ल

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : ऐ मूसा (عَلَیْہِ السَّلَام) ! कोई शख़्स ऐसा नहीं कि वोह उ़म्र भर में चाहे एक ही मरतबा ईषार करे और मैं बरोज़े क़ियामत उस से ह़िसाब त़लब करते हुए ह़या न फ़रमाऊं, मैं उस को अपनी जन्नत में ठिकाना अ़त़ा फ़रमाऊंगा जहां वोह चाहेगा। (احیاء العلوم،کتاب ذم البخل وذم حب المال ،بیان الایثار وفضلہ، ج۳، ص۳۱۸)।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिगर गोशए रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़याते मुबारका और सीरते त़य्यिबा का हर पहलू बेश बहा कमालात और अनमिट खुसूसियात का मज़हर है। दीने इस्लाम की बेलौष ख़िदमत, नसबी व अज़्दवाजी व दीनी रिश्तों से बे पनाह मह़ब्बत और अवलाद की बेहतरीन तरबिय्यत आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बेहतरीन अख़्लाक़ का एक ह़िस्सा है। आ'ला अक़्दारे इन्सानी का तह़फ़्फ़ुज़, ख़ल्क़े खुदा की ख़ैर ख़्वाही, बे कसों और बेचारों की चारागरी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नुमायां अवसाफ़ में से है। इस ख़ैर ख़्वाही, चारा-गरी और फ़रियाद-रसी की एक झलक बयान के इब्तिदाई वाक़िए में आप मुलाह़ज़ा फ़रमा चुकी हैं।

ईषार व सख़ावत दो वस्फ़ हैं : **अपनी ज़रूरत के सिवा को ख़ैरात करना ''सख़ावत''** और **ज़रूरत का भी ख़ैरात कर देना ''ईषार''** कहलाता है। दीगर अवसाफ़े ह़मीदा के साथ

www.dawateislami.net

साथ ईषार व सख़ावत जैसी ख़ूबियों में भी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने एक इम्तियाज़ी शानो मक़ाम पाया और जब भी इन दो ख़ूबियों के इज़्हार का मौक़अ़ आया आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बसात़ भर इस में ह़िस्सा लिया ह़त्ता कि अपनी ज़रूरत का सामान साइलों को अ़त़ा किया, मंगतों का दामन भरा और भूकों को खाना खिलाया, जैसा कि

ईषार व सख़ावते फ़ात़िमा

ख़त़ीबे पाकिस्तान, वाइज़े शिरीं बयान ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद शफ़ीअ़ ओकाड़वी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ "**सफ़ीनए नूह़**" ह़िस्सए दुवुम, सफ़्ह़ा 33 पर नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : बनी सुलैम में से एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत मआब में आ कर यूं गुस्ताख़ी की : ऐ मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) क्या तू वोही जादूगर है जिस के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर है कि उस का साया ज़मीन पर नहीं पड़ता, ख़ुदा की क़सम ! अगर येह ख़याल न होता कि मेरी क़ौम मुझ से नाराज़ हो जाएगी तो मैं इस तलवार से तेरा सर उड़ा देता। येह गुस्ताख़ाना कलाम सुन कर अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आगे बढ़ कर उस गुस्ताख़ को सबक़ सिखाना चाहा मगर ह़ुज़ूर रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने रोक दिया और उस शख़्स से फ़रमाया : तू आख़िरत के अ़ज़ाब से डर और दोज़ख़

www.dawateislami.net

से ख़ौफ़ खा, बुतों की पूजा छोड़ दे और ख़ुदाए वह्-दहू ला-शरी-क की इबादत कर, मैं जादूगर नहीं हूं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बन्दा और उस का रसूल हूं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ और मोअष्षर कलाम से मुतअष्षिर हो कर वोह बुत परस्त उसी वक़्त मुसलमान हो गया, अब सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तेरे पास कितना माल है ? उस ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुदा की क़सम ! बनू सुलैम में 4000 आदमी हैं लेकिन इस क़बीले में मुझ से ज़ियादा ग़रीबो मिस्कीन कोई नहीं । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की त़रफ़ देख कर फ़रमाया : तुम में से कोई ऐसा है जो इसे एक ऊंट ख़रीद कर दे दे ? ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अ़र्ज़ की : मेरे पास एक ऊंटनी है वोह मैं इसे दे देता हूं। फिर फ़रमाया : कौन है जो इस का सर ढांप दे ? अमीरुल मोअमिनीन मौला मुश्किल कुशा, ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपना मुबारक इमामा उतार कर उस के सर पर रख दिया। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : कौन है जो इस के खाने का इस वक़्त इन्तिज़ाम कर दे ? ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ उठे और चन्द मकानों पर गए लेकिन इत्तिफ़ाक़ से कुछ न मिला। फिर नूरे मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मकान पर ह़ाज़िर हो कर दरवाज़ा खट-खटाया। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا

www.dawateislami.net

ने पूछा : कौन है ? अ़र्ज़ की : सलमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) हूं। फ़रमाया : कैसे आए हो ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने सारा माजिरा सुना दिया। येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आबदीदा हो गई और फ़रमाया : ऐ सलमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! उस ख़ुदा की क़सम जिस ने मेरे बाप को रसूल बना कर भेजा ! आज तीसरा दिन है, घर में सब फ़ाक़े से हैं मगर तुम दरवाज़े पर आ गए हो, ख़ाली कैसे वापस करूं ? येह चादर ले जाओ और शमऊ़न यहूदी के पास जा कर कहो : फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की चादर रख लो और थोड़े से जव क़र्ज़ दे दो।

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस चादर को ले कर उस के पास गए और सारा माजिरा बयान किया। शमऊ़न कुछ देर इस रिदाए मुबारका को देखता रहा उसी वक़्त उस पर एक कैफ़िय्यत त़ारी हो गई और कहने लगा :

ऐ सलमान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ! वल्लाह येह वोही मुक़द्दस लोग हैं जिन की ख़बर **अल्लाह** तआ़ला ने अपने पैग़म्बर मूसा عَلَیْہِ السَّلَام को तौरैत में दी है, **मैं सिद्क़े दिल से ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **के बाप मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **पर ईमान लाता हूं।**

येह कह कर उस ने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया। इस के बा'द उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जव दिये और निहायत अदबो एह़तिराम से रिदाए मुबारका वापस कर दी। ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने शमऊ़न को दुआ़ए ख़ैर दी और जव पीस कर खाना तय्यार कर के ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को दे दिया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अ़र्ज़ की : इस में से कुछ घर के लिये रख लीजिये। फ़रमाया : **बस राहे ख़ुदा में देने की निय्यत से मंगवाया और पकाया है अब इस में से लेना दुरुस्त नहीं।** ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ खाना ले कर बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो गए और तमाम क़िस्सा भी अ़र्ज़ कर दिया। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने वोह रोटी नौ मुस्लिम को अ़त़ा फ़रमाई और अपनी नूरे नज़र ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास तशरीफ़ ले गए तो देखा कि भूक से इन का चेहरा ज़र्द हो रहा है और ज़ो'फ़ के आषार नुमायां हैं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को बिठा कर तसल्ली दी और दुआ़ फ़रमाई : ऐ **अल्लाह** (عَزَّ وَجَلَّ) फ़ात़िमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) तेरी बन्दी है, तू इस से राज़ी रहना।

हमें भूका रहने का औरों की ख़ात़िर

अ़त़ा कर दे जज़्बा अ़त़ा या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

साइल की अ़र्ज़ और सय्यिदतुना फ़ात़िमा का सख़ावत भरा जवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का ईषार व सख़ावत आप ने

www.dawateislami.net

मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ख़ुद फ़ाक़े से हैं, घर में भी खाने को कुछ नहीं मगर सख़ावत व ईषार का ऐसा ज़बरदस्त जज़्बा कि ग़रीब नौ मुस्लिम की ह़ाजत रवाई की ख़ातिर क़र्ज़ लेने के लिये अपनी मुबारक चादर गिरवी रखवा रही हैं और जब ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने खाने में से कुछ घर के लिये रखने की अ़र्ज़ की तो फ़रमाने लगीं : **मैं ने येह खाना राहे ख़ुदा में ख़ैरात करने की निय्यत से पकाया है ।** एक त़रफ़ ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का पाकीज़ा अ़मल और दूसरी त़रफ़ हमारी ह़ालत । **अल्लाह** अक्बर ! वोह ख़ुद फ़क्रो फ़ाक़े में रह कर ग़रीबों की ह़ाजतों को पूरा करतीं और हम अपने ही पेट भरने और जो बाक़ी बच जाए उसे बजाए ग़रीबो फ़क़ीरो पर ख़र्च करने के आने वाले वक़्त के लिये रख लेती हैं । ऐ काश ! हमें भी ग़रीबों फ़क़ीरों की ह़ाजत रवाई करने का जज़्बा नसीब हो जाए । सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अगर्चे ख़ुद फ़ाक़े से रहती थीं, लेकिन इस तंगी व उ़सरत के आ़लम में भी अपने पड़ोसियों से ग़ाफ़िल न रहती थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का मा'मूल था कि हमसायों की ख़बर गीरी करतीं कि कोई भूका तो नहीं ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपनी ज़रूरत को भी ख़ल्क़े ख़ुदा पर ख़र्च कर देना बल्कि ख़ुद फ़ाक़े से रह कर भी

www.dawateislami.net

भूकों को सैर करना **बतूली ईषार** की वोह शानदार मिषाल है जिस की हम–सरी तो दर कनार पैरवी करना भी हम जैसों के लिये मुश्किल है, मख़्लूक़ में ईषार व सख़ावत के ह़वाले से बुलन्द तरीन नाम सय्यिदुल असफ़िया, मह़बूबे ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा (صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم), इन के बा'द नबी की सोह़बत में रहने वालों और नबी के घर वालों का है।

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उ़मर बिन ख़त्ताब का ईषार

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रसूले अ़ज़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم मुझे अ़तिय्या देना चाहते तो मैं अ़र्ज़ करता कि येह मुझ से ज़ियादा ह़ाजत मन्द को अ़ता फ़रमाइये। तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते : येह ख़ुद ले कर ग़नी हो जाओ और फिर सदक़ा कर दो, तुम्हें जो माल बिग़ैर त़म्अ़ और बिग़ैर मांगे मिले उसे ले लिया करो और जो न मिले उस के पीछे ख़ुद को न लगाओ।

(مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح،کتاب الزکاۃ،باب من لا تحل لہ المسألۃ...الخ، ج۱، ص۳۵۱، الحدیث:۱۸۴۵)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی "मिरआतुल मनाजीह़" जिल्द 3 सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

60 पर इस ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : सोह़बते पाके मुस्त़फ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم की येह ताषीर थी कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رضی اللہ تعالیٰ عنہ सिर्फ़ ग़नी नहीं बल्कि ग़नी तर, ग़नी गर हो गए। मांगना तो क्या बिग़ैर मांगे आती हुई चीज़ में भी ईषार ही करते हैं और दूसरों को अपने पर तरजीह़ देते हैं। अपने दौरे ख़िलाफ़त में जब फ़ारस और रूम के ख़ज़ाने मदीना में लाते हैं, तो उस वक़्त भी खुद **एक क़मीस ही धो धो कर पहनते हैं।**

मुफ़्ती साह़िब رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ मज़ीद फ़रमाते हैं : سبحٰن اللہ عزوجل क्या बे मिषाल ता'लीम है। मक़्सद येह है कि जो **बिग़ैर मांगे और बिग़ैर त़म्अ़ के मिले वोह रब्ब तआ़ला का अ़त़िय्या है** इसे न लेना गोया इस अ़त़िय्ये की बे क़दरी है। दुन्या वालों से इस्तिग़्ना अच्छा और **अल्लाह व रसूल** عزوجل وصلی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلم **का हमेशा मोह़ताज रहना अच्छा।** मशाइख़े किराम (رحمہم اللہ السلام) मा'मूली नज़राने भी क़बूल कर लेते हैं, इन का माख़ज़ येह ह़दीष है फिर क्या ख़ूब फ़रमाया कि तुम खुद ले कर सदक़ा कर दो ताकि तुम्हें लेने का भी षवाब मिले और देने का भी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलमान फ़ारसी का ईषार

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رضی اللہ تعالیٰ عنہ का (मदाइन की गवर्नरी में) वज़ीफ़ा 5000 दिरहम था और आप

www.dawateislami.net

तक़रीबन 30,000 मुसलमानों के अमीर (गर्वनर) थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों को ख़ुत्बा देते वक़्त एक चोग़ा पहनते (जो कपड़ों पर पहना जाता है) इस का कुछ हि़स्सा नीचे बिछाते और कुछ ऊपर ओढ़ लेते थे । **जब आप** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **को वज़ीफ़ा मिलता उसे सदक़ा कर देते** और ख़ुद ज़म्बील (या'नी टोकरियां) बना कर गुज़ारा करते । (حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاء،ذکر الصحابۃ من المھاجرین ،سلمان الفارسی، ج ۱، ص۲۵۵، رقم:۲۲۳)

हमें अपने फ़ज़्लो करम से तू कर दे

सख़ावत की ने'मत अ़ता या इलाही !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अबू अ़ली दक़्क़ाक़ का जज़्बए ईषार

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली दक़्क़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق को किसी ने "मर्व" में दा'वत पर बुलाया, रास्ते में जाते हुए एक बुढ़िया की आवाज़ को सुना जो अपने मकान में कह रही थी कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने मुझे कषीर अवलाद होने के बा वुजूद फ़क्रो फ़ाक़ा में मुब्तला रखा है आख़िर इस में तेरी क्या मस्लिह़त है ? आप उस के येह जुम्ले सुनने के बा'द ख़ामोशी से चले गए और जब "मर्व" में अपने मेज़बान के हां पहुंचे, तो आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया कि एक त़बाक़ में बहुत सा खाना भर के ले आओ, येह सुन कर वोह शख़्स बहुत ख़ुश हुवा और येह ख़याल किया कि शायद आप घर पर ले जा कर खाना चाहते हैं क्यूंकि **आप के घर पर कुछ भी न था** और जब वोह मेज़बान त़बाक़ भर कर

www.dawateislami.net

ले आया तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उस को सर पर रखे हुए बुढ़िया के मकान की त़रफ़ चल दिये और **तमाम खाना उस को दे आए ।**

(تَذْکِرَۃُ الْاَوْلِیَاء(مترجم)،ابو علی دقاق کے حالات ،ص ۳۹۱)

हो मेहमान नवाज़ी का जज़्बा इ़नायत

हो पासे शरीअ़त अ़त़ा या इलाही !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईषार की आ'ला मिषाल

सह़ाबिये सरकार ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक ख़ातून हुज़ूरे अन्वर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बाहगाहे अक़्दस में एक बुर्दा ले कर ह़ाज़िर हुई । ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द ने (अबू ह़ाज़िम से) कहा : क्या तुम जानते हो, येह बुर्दा क्या है ? उन्हों ने कहा : जी हां ! येह एक चादर है जिस में ह़ाशिये बने हुए हैं । उस औ़रत ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने इस को अपने हाथ से बुना है ताकि मैं आप को पहनाऊं । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे क़बूल फ़रमाया कि आप को उस की ह़ाजत थी । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो वोह चादर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तहबन्द थी एक शख़्स ने उस को टटोला और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم येह चादर मुझे

www.dawateislami.net

पहना दीजिये । आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : हां ! (तुझे पहनाऊंगा) आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم जितनी देर **अल्लाह** ने चाहा मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा रहे फिर वापस तशरीफ़ लाए, उस चादर को लपेटा और उस (त़लब करने वाले) की त़रफ़ भेज दी । लोगों ने उस को कहा : जब तुम जानते हो कि आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم किसी साइल को वापस नहीं लौटाते तो तुम ने चादर का सुवाल कर के अच्छा नहीं किया । उस ने जवाब दिया : وَاللّٰہِ مَا سَاَلْتُہٗ اِلَّا لِتَکُوْنَ کَفَنِیْ یَوْمَ اَمُوْتُ या'नी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मैं ने येह मुबारक चादर फ़क़त़ इस लिये मांगी है ताकि येह मेरा कफ़न बने । ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द رَضِیَ اللہُ تعالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : **येही मुबारक चादर बा'द में उस शख़्स का कफ़न बनी ।**

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب اللباس، باب البرود والحبرۃ والشملۃ، ص۱۴۶۵، الحدیث:۵۸۱۰)

मुझ पर करम हो दावर, इतना बरोज़े मह़शर
साया फ़िगन हो सर पर, मीठे नबी की चादर

क्या ख़ौफ़ आ़सियों को, मह़शर की अब तपश का
साया करेगी सर पर, मीठे नबी की चादर

मुज़्दा हो आ़सियों को, बुशरा हो आ़सियों को
आई शफ़ीअ़ बन कर, मीठे नबी की चादर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अ़त़ाए मुस्त़फ़ा पर भी कुरबान कि खुद को ज़रूरत होने के बा वुजूद ईषार की आ'ला मिषाल क़ाइम करते हुए सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को चादर अ़त़ा फ़रमा दी और येह भी मा'लूम हुवा की सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का कितना प्यारा अ़क़ीदा था कि वोह नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली चीज़ को अपने साथ क़ब्र में ले जाने को ऐ़न सआ़दत समझते थे। यक़ीनन अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ईषार का षवाब बे शुमार है, ईषार की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ सरवरे ज़ीशान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **''जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे बख़्श देता है।''**

(کنز العمال،کتاب المواعظ والرقائق والخطب والحکم، الباب الاول فی المواعظ والرغیبات،ج۹،ص۳۳۲،الحدیث:۲۵۱۰۵)

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़ह़ा तेरा
''नहीं'' सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईषार की मदनी बहार

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हर नेकी की त़रह़ ईषार का षवाब भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ चाहे तो आख़िरत में अ़त़ा फ़रमाएगा मगर बा'ज़ अवक़ात दुन्या के अन्दर भी इन्आ़म मिल जाता है,

www.dawateislami.net

मषलन कोई मुश्किल आसान हो गई, अच्छा ख़्वाब नज़र आ गया, मदीने शरीफ़ का विज़ा मिल गया। एक इस्लामी बहन के साथ पेश आने वाली इसी त़रह़ की एक मदनी बहार मुख़्तसरन पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 28 सफ़ह़ात पर मुशतमिल रिसाले "**पुर अस्रार भिकारी**" सफ़ह़ा 28 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : बम्बई के एक अ़लाक़े में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से इस्लामी बहनों के होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ (पीर शरीफ़ 22 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1428 हि. ब मुत़ाबिक़ 12-3-2007) के इख़्तिताम पर एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के पास किसी नई इस्लामी बहन ने अपने चप्पल की गुमशुदगी की शिकायत की। ज़िम्मेदार इस्लामी बहन ने **इनफ़िरादी कोशिश** करते हुए उसे अपनी चप्पल की पेशकश की। वहां मौजूद एक दूसरी इस्लामी बहन जिन को **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हुए अभी तक़रीबन सात ही माह हुए थे, उस ने आगे बढ़ कर येह कहते हुए कि "**क्या दा'वते इस्लामी की ख़ात़िर मैं इतनी क़ुरबानी भी नहीं दे सकती !**" ब इस्रार अपनी चप्पलें पेश कर के उस नई इस्लामी बहन को क़बूल करने पर मजबूर कर दिया और ख़ुद पा बरह्ना (या'नी नंगे पाऊं) घर चली गई। रात जब सोई तो उस की क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी !

www.dawateislami.net

क्या देखती है कि **सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते हुए जलवा फ़रमा हैं, नीज़ एक मुअ़म्मर **मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी** सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ सजाए क़दमों में ह़ाज़िर हैं। **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका को जुम्बिश हुई रह़मत के फूल झड़ने लगे और अल्फ़ाज़ कुछ यूं तरतीब पाए : चप्पल ईषार करते वक़्त तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अल्फ़ाज़ "**क्या दा'वते इस्लामी की ख़ात़िर मैं इतनी कुरबानी भी नहीं दे सकती !**" हमें बहुत पसन्द आए। (इलावा अज़ीं भी ह़ौसला अफ़ज़ाई फ़रमाई)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह भी याद रहे ऐसी चीज़ ईषार करना ज़ियादा अफ़्ज़ल है कि जो हमें ख़ुद पसन्द हो। जैसा कि पारह 4 सूरए आले इमरान की आयत नम्बर 92 में इरशादे ख़ुदाए रह़मान है :

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۚ (پ۴، اٰل عمرٰن: ۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो।*

आयते मुबारका की तफ़्सीर

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़त नक़्ल फ़रमाते हैं : (ह़ज़रते सय्यिदुना) ह़सन (बसरी) عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی का क़ौल

www.dawateislami.net

है : जो माल मुसलमानों को महबूब हो और उसे रिज़ाए इलाही के लिये ख़र्च करे वोह इस आयत में दाख़िल है ख़्वाह एक खजूर ही हो । (تَفْسِیْرِ کبیر، پ۴، اٰلِ عمران، تحت الاٰیۃ:۹۲، ج۳، ص۲۸۹)

दे जज़्बा तू ऐसा तेरे नाम पर दूं

पसन्दीदा चीज़ें लुटा या इलाही !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अस्लाफ़े उम्मत आईनए कु़रआनो सुन्नत थे

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلام कु़रआनो सुन्नत पर किस क़दर अ़मल पैरा थे कि एक चीज़ की ख़ुद को त़लब होने और तलाशे बिस्यार (या'नी काफ़ी ढूंडने) के बा'द मिलने के बा वुजूद दूसरे को ईषार कर देने की आ'ला मिषाल क़ाइम फ़रमाते । अपने अन्दर ईषार का जज़्बा बेदार करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का 44 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**मदीने की मछली**" का मुत़ालआ़ कीजिये । तरग़ीब के लिये इसी रिसाले से एक रिवायत पेशे ख़िदमत है : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बीमार थे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को भुनी हुई **मछली** खाने की ख़्वाहिश हुई । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ख़ादिम ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : तलाशे बिस्यार (या'नी बहुत ज़ियादा तलाश करने) के बा'द मुझे

www.dawateislami.net

डेढ़ दिरहम की एक मछली मदीनए मुनव्वरा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में मिल गई, मैं ने उसे भून कर ख़िदमते सरापा सख़ावत में पेश कर दी, इतने में एक साइल आ गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : नाफ़ेअ़ ! येह मछली साइल को दे दो । मैं ने अ़र्ज़ की : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को इस की बड़ी ख़्वाहिश थी इस लिये कोशिश कर के येह **मदीने की मछली** मैं ने ख़रीदी है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इसे तनावुल फ़रमा लीजिये, मैं इस मछली की क़ीमत साइल को दे देता हूं। फ़रमाया : नहीं, तुम येह मछली ही उस को दे दो। चुनान्चे मैं ने वोह **मदीने की मछली** साइल को दे दी और फिर पीछे जा कर उस से ख़रीद ली और आ कर ह़ाज़िर कर दी, इरशाद फ़रमाया : येह मछली उसी साइल को दे दो और जो क़ीमत उस को अदा की है वोह भी उसी के पास रहने दो। मैं ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुना है : **जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है ।**

(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم، کتاب کسر الشھوتین،بیان طریق الریاضۃ فی کسر شھوات البطن، ج۳، ص۱۱۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

राबिआ़ अ़दविय्या का ईसार

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ह़िकायतें और नसीह़तें**" सफ़ह़ा 119 पर मुबल्लिगे़ इस्लाम ह़ज़रते

www.dawateislami.net

सय्यिदुना शैख़ शोऐब ह़रीफ़ीश رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ अ़दविय्या رحمۃ اللہ تعالٰی علیہا ने **नंगे पाऊं पैदल बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज किया । अल्लाह عزوجل उन को जो भी खाना अ़ता फ़रमाता उस को ईषार कर देतीं ।** का'बए मुशर्रफ़ा पहुंचते ही बेहोश हो कर गिर पड़ीं । होश में आने के बा'द अपने रुख़सार को बैतुल्लाह शरीफ़ पर रख कर अ़र्ज़ की : "येह तेरे बन्दों की पनाह गाह है और तू इन से मह़ब्बत करता है अब तो आंखों में आंसू ख़त्म हो गए हैं ।"

(الروض الفائق، المجلس الثامن فی ذکر حجاج بیت اللہ الحرام، ص۶۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईषार करने वाली मां

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 188 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तरबिय्यते अवलाद** सफ़्ह़ा 61 पर है : उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رضی اللہ تعالٰی عنہا फ़रमाती हैं कि मेरे पास एक मिस्कीन औ़रत आई जिस के साथ उस की दो बेटियां भी थी । मैं ने उसे तीन खजूरें दीं । उस ने हर एक को एक खजूर दी और एक खजूर ख़ुद खाने के लिये अपने मुंह की त़रफ़ उठाई तो उस की दोनों बेटियां उस की भी ख़्वाहिश करने लगीं तो उस ने वोह खजूर भी दो टुकड़े कर के अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक़्सीम कर दी ।

www.dawateislami.net

मुझे इस वाक़िए से बहुत तअ़ज्जुब हुवा, मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم की बारगाह में उस औ़रत के ईषार का बयान किया तो आप صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ने फ़रमाया : **"अल्लाह तआ़ला ने इस (ईषार) की वजह से उस औ़रत के लिये जन्नत को वाजिब कर दिया ।"**

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلۃ باب فضل الاحسان الی البنات، ص۱۴۱۰، الحدیث:۲۶۳۰)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपना खाना कुत्ते पर ईषार कर दिया !

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू क़ासिम अ़ब्दुल करीम बिन हवाज़ुन कुशैरी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الاکبر अपनी किसी ज़मीन को देखने निकले और अषनाए राह (या'नी रास्ते में) किसी बाग़ में उतरे, वहां एक ग़ुलाम को काम करते देखा, जब उस के पास खाना आया तो कहीं से एक कुत्ता भी आ पहुंचा, ग़ुलाम ने एक एक कर के 3 रोटियां उस के आगे डालीं, वोह खा गया । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الاکبر ने ग़ुलाम से पूछा : आप को दिन में कितना खाना मिलता है ? अ़र्ज़ की : वोही जो आप ने देखा : पूछा : तो आप ने कुत्ते पर क्यूं ईषार कर दिया ? अ़र्ज़ की : इस अ़लाक़े में कुत्ते नहीं होते, येह कहीं दूर से आ निकला है, ग़रीब भूका था, मुझे येह गवारा न हुवा कि मैं सैर हो कर खाऊं और येह बेचारा बे ज़बान जानवर भूका रहे । फ़रमाया : आप आज क्या खाएंगे ? अ़र्ज़ की : फ़ाक़ा करूंगा ।

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र علیہ رحمۃ اللہ الاکبر उस ग़ुलाम के ईषार से बे ह़द मुतअ़ष्षिर हुए, चुनान्चे बाग़ के मालिक से वोह बाग़, ग़ुलाम और बक़िय्या सामान वग़ैरा ख़रीद लिया, ग़ुलाम को आज़ाद कर के वोह बाग़ वग़ैरा सब कुछ उसी को बख़्श दिया। (اَلرِّسَالَۃُ الْقُشَیْرِیَّۃ، باب الجود والسخاء، ص۲۸۳، مُلَخَّصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ईषार का षवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े

काश ! हमें भी ईषार का जज़्बा नसीब हो जाए, अगर ख़र्च करने को जी नहीं चाहता तो बिग़ैर ख़र्च के भी ईषार के कई मवाक़ेअ़ मिल सकते हैं। मषलन कहीं दा'वत पर जाना हुवा, सब के लिये खाना लगाया गया तो हम उ़म्दा बोटियां वग़ैरा इस निय्यत से न उठाएं कि हमारी दूसरी इस्लामी बहनें उन को खा लें। गर्मी में कमरे के अन्दर कई इस्लामी बहनें सोना चाहती हैं, ख़ुद पंखे के नीचे क़ब्ज़ा जमाने के बजाए दूसरी इस्लामी बहनों को मौक़अ़ दे कर ईषार का षवाब कमा सकती हैं। इसी त़रह़ बस या रेल गाड़ी के अन्दर भीड़ की सूरत में दूसरी इस्लामी बहन को ब इस्रार अपनी निशस्त पर बिठा कर और ख़ुद खड़े रह कर, कार में सफ़र का मौक़अ़ मुयस्सर होने के बा वुजूद दूसरी इस्लामी बहन के लिये क़ुरबानी दे कर उसे कार में बिठा कर और ख़ुद पैदल या बस वग़ैरा में सफ़र कर के, सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ वग़ैरा में आराम देह जगह मिल जाए तो दूसरी इस्लामी बहन के लिये जगह कुशादा कर के या उसे वोह जगह पेश कर के, खाना

www.dawateislami.net

कम हो और खाने वाले ज़ियादा हों तो ख़ुद कम खा कर या बिल्कुल न खा कर नीज़ इसी त़रह़ के बे शुमार मवाक़ेअ़ पर अपने नफ़्स को थोड़ी सी तक्लीफ़ दे कर मुफ़्त में **ईषार** का षवाब कमाया जा सकता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खिलाने पिलाने का अ़ज़ीमुश्शान षवाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا फ़ाक़ों के बा वुजूद अपना खाना ईषार फ़रमा देती थीं ! मगर अफ़्सोस ! अहले बैते नुबुव्वत की मह़ब्बत का दम भरने के बा वुजूद हम अपनी ज़रूरत का कुजा, बचा खुचा खाना भी किसी को पेश करने के बजाए आयन्दा के लिये फ़्रीज़ में रख छोड़ते हैं। यक़ीन मानिये ! भूकों को खाना खिलाना और प्यासों को पानी पिलाना बड़े षवाब का काम है। इस ज़िम्न में दो फ़रामैने मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मुलाह़ज़ा हों :

﴾1﴿.... जो मुसलमान किसी मुसलमान को भूक में खाना खिलाए, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत जन्नत के फल खिलाएगा और जो किसी मुसलमान को प्यास में पानी पिलाए, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बरोज़े क़ियामत मोहर वाली पाक व साफ़ शराब पिलाएगा और जो मुसलमान किसी बे लिबास मुसलमान को कपड़ा पहनाए, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत के सब्ज़ कपड़े पहनाएगा।

(جَامِعُ التِّرْمِذِی،کتاب صفۃالقیامۃ والرقائق والورع، ص ۵۸۱، الحدیث:۲۴۴۹)

www.dawateislami.net

﴾2﴿.... जो किसी मुसलमान को भूक में खाना खिला कर सैर कर दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जन्नत में उस दरवाज़े से दाख़िल फ़रमाएगा जिस में से उस जैसे लोग ही दाख़िल होंगे।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی، باب المیم، معاذ بن جبل الانصاری ...... الخ، ج۸،ص۲۱۸،الحدیث:۱۶۵۸۹،)

खिलाने पिलाने की तौफ़ीक़ दे दे

पए शाहे कर्बो बला या इलाही !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रह़मते इलाही को वाजिब करने वाला अ़मल

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुअ़ज़्ज़म है : مِنْ مُوْجِبَاتِ الرَّحْمَةِ اِطْعَامُ الْمُسْلِمِ الْمِسْکِیْن या'नी रह़मते इलाही को वाजिब कर देने वाली चीज़ों में से मिस्कीन मुसलमान को खाना खिलाना है।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر لِلطَّبَرَانِی،کتاب الصدقات، الترغیب فی اطعام الطعام وسقی الماء... الخ، ص۳۲۰، الحدیث:۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़रा ग़ौर कीजिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस वाक़िआ़त के तनाज़ुर में अगर हम अपनी ह़ालत पर ग़ौर करें तो अगर्चे अश्याए ज़रूरत को भी ख़ैरात कर देना और बारे क़र्ज़ तले दब कर ह़ाजत मन्दों

www.dawateislami.net

की ह़ाजत रवाई करना हम पर लाज़िम नहीं लेकिन क्या हम ज़रूरत से ज़ाइद अश्या को सदक़ा व ख़ैरात करने का ज़ेह्न रखते हैं या मज़ीद के ही चक्कर में रहते हैं, बच जाने वाला खाना फ़्रीज़ करते हैं या ख़ैरात ? मुस्तह़िक़ को माल से नवाज़ते हैं या झिड़कियों से ?

सह़ाबा व अहले बैते अत़हार बिल ख़ुसूस ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के ईषार व सख़ावत की त़रफ़ नज़र कीजिये और अपनी ह़ालते ज़ार को भी देखिये। ख़ुद ही वाज़ेह़ हो जाएगा कि अस्लाफ़े उम्मत से मह़ब्बत के हमारे दा'वे में कितनी जान है ? सिर्फ़ ख़ैरात न करने की ही बात नहीं, **अफ़्सोस बालाए अफ़्सोस** तो येह है कि हमारे मुआ़शरे में अफ़राद की एक ऐसी ता'दाद मौजूद है जो दूसरों के सामने दस्ते सुवाल दराज़ करने में थकते हैं न शरमाते हैं। बे मुरुव्वती इस ह़द तक बढ़ी हुई है कि मा'मूली सी चीज़ भी मांग मांग कर इस्ति'माल करते और सुवाल कर कर के गुज़ारा करते हैं।

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस पुर फ़ितन दौर में आसानी से नेकियां करने और गुनाहों से बचने के त़रीक़ों पर मुश्तमिल शरीअ़त व त़रीक़त का जामेअ़ मजमूआ़ (इस्लामी बहनों के लिये) ब नाम "63 मदनी इन्आ़मात" ब सूरते सुवालात अ़त़ा फ़रमाया है,

www.dawateislami.net

चुनान्चे मदनी इन्आ़म नम्बर 22 में है : क्या आज आप ने घर के अफ़राद के इ़लावा (कपड़े, फ़ोन, ज़ेवरात वग़ैरा) चीज़ें दूसरों से मांग कर तो इस्ति'माल नहीं कीं ?" यक़ीनन दूसरों से सुवाल करने से बचने वाले लोग हर एक की निगाह में क़ाबिले क़द्र ठहरते हैं जैसा कि शैख़ मुसलिहुद्दीन सा'दी शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی ने एक हिकायत नक़्ल की है कि अ़रब के मशहूर और बहुत बड़े सख़ी ह़ातिम त़ाई से किसी ने पूछा : क्या तूने अपने से ज़ियादा किसी को हिम्मत व ह़ौसले वाला देखा है ? जवाब दिया : हां ! एक दिन मैं ने 40 ऊंट ज़ब्ह़ कर के अ़रब के मालदारों को मदऊ़ किया। इस दौरान मेरा गुज़र एक जंगल की त़रफ़ से हुवा तो देखा कि एक ग़रीब व मुफ़्लिस शख़्स जो मुझे नहीं जानता था लकड़ियां जम्अ़ करने में मशग़ूल था, मैं ने उसे मुख़ात़ब करते हुए कहा : ऐ भले इन्सान ! ह़ातिम त़ाई के घर शहर भर के लोग जम्अ़ हैं और दा'वत खा रहे हैं, तुम अपनी रोटी के लिये यहां मेह़नत व मज़दूरी कर रहे हो ? उस ग़रीब लेकिन क़ानेअ़ व मुअ़ज़्ज़ज़ शख़्स ने जवाब दिया : जो अपनी मेह़नत से रोटी कमाता है उसे ह़ातिम त़ाई जैसे उमरा की मिन्नत नहीं करनी पड़ती। ह़ातिम त़ाई ने कहा : "**ह़क़ येह है कि मैं ने इसे अपने से ज़ियादा बा हिम्मत व जवां मर्द देखा।**"

(حکایاتِ سَعْدِی (مُتَرجَم)، ص۱۵۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल हमारे सामने खुली किताब की त़रह़ है कि इस मदनी माह़ोल के पैग़ाम को लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दल दल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ात़िमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ) की दीवानियां बन गईं और अपनी साबिक़ा गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर न सिर्फ़ ख़ुद नेकियां करने वाली बल्कि दूसरों को भी नेकियों की तरगीब देने में मश्ग़ूल हो गईं । तरग़ीब के लिये एक ऐसी ही मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये, चुनान्चे

बेटी की इस्लाह़ का राज़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी बहनों की नमाज़**" सफ़ह़ा 281 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक मदनी बहार तह़रीर फ़रमाते हैं : पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब (ख़ुलासा) है कि मेरी बेटी फ़िल्मों-ड्रामों और बे पर्दगियों वग़ैरा गुनाहों की आलूदगियों

www.dawateislami.net

में अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्हों को बरबाद कर रही थी, मैं उस की ह़रकतों से बेह़द **परेशान** थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देती। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करती थी और इजतिमाअ़ में मांगी जाने वाली दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के वाक़िआ़त भी सुना करती थी। चुनान्चे एक मरतबा मैं ने दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाले ग्यारहवीं शरीफ़ के इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में अपनी बेटी की इस्लाह़ के लिये गिड़-गिड़ा कर दुआ़ मांगी। मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी दा'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ा बने। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ़ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी त़रह़ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक होने पर रिज़ामन्द हो गई। उस ने जब शिर्कत की तो इतनी मुतअष्षिर हुई कि बस दा'वते इस्लामी ही की हो कर रह गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तरक़्क़ी की मंज़िलें तै़ करते करते (ता दमे तह़रीर) मेरी बेटी ह़ल्क़ा ज़िम्मेदार की हैषिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमतों में मशग़ूल है।

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया
छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश अज़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन आ़शिक़ाते रसूल और आक़ा की दीवानियों में न जाने कितनी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुक़र्रब बन्दियां होती होंगी। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़तावा रज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 184 पर फ़रमाते हैं : जमाअ़त में बरकत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल (या'नी मुसलमानों के मजमअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) । उ़-लमा फ़रमाते हैं : **जहां चालीस मुसलमान सालेह़ (या'नी नेक) जम्अ़ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।** (اَلتَّیْسِیْر شرحُ جامعِ الصَّغِیْر حرف الهمزة، ج ۱، ص ۱۱۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पानी पीने के 13 मदनी फूल

दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :-

❁ ऊंट की त़रह़ एक ही सांस में मत पियो, बल्कि दो या तीन मरतबा (सांस ले कर) पियो और पीने से क़ब्ल بِسْمِ اللّٰه पढ़ो और फ़राग़त पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा करो (ترمذی، ج۳، ص۳۵۲، الحدیث:۱۸۹۲)

❁ नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बरतन में सांस लेने या इस में फूंकने से मन्अ़ फ़रमाया है। (ابوداؤد، ج۳، ص۴۷۴، الحدیث:۳۷۲۸)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बरतन में सांस लेना जानवरों का काम है नीज़ सांस कभी ज़ह्रीली होती है इस लिये बरतन से अलग मुंह कर के सांस लो (या'नी सांस लेते वक़्त गिलास मुंह से हटा लो) गर्म दूध या चाय को फूंकों से

www.dawateislami.net

ठंडा न करो बल्कि कुछ ठहरो, क़दरे ठंडी हो जाए फिर पीयो। (मिरआत जि. 6 स. 77) अलबत्ता दुरूदे पाक वग़ैरा पढ़ कर ब निय्यते शिफ़ा पानी पर दम करने में ह़रज नहीं ❁ पीने से पहले بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ लीजिये ❁ चूस कर छोटे छोटे घूंट पिये, बड़े बड़े घूंट पीने से जिगर की बीमारी पैदा होती है ❁ पानी तीन सांस में पिये ❁ बैठ कर और सीधे हाथ से पानी नोश कीजिये ❁ लोटे वग़ैरा से वुज़ू किया हो तो उस का बचा हुवा पानी पीना **70 मरज़** से शिफ़ा है कि येह आबे ज़म ज़म शरीफ़ की मुशाबहत रखता है, इन दो (या'नी वुज़ू का बचा हुवा पानी और ज़म ज़म शरीफ़) के इ़लावा कोई सा भी पानी खड़े खड़े पीना मकरूह है। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 4 स. 575, जि. 21 स. 669) येह दोनों पानी क़िब्ला रू हो कर खड़े खड़े पियें ❁ पीने से पहले देख लीजिये कि पीने की शै में कोई नुक़्सान देह चीज़ वग़ैरा तो नहीं है (إتحاف السّادۃ للزّبیدی،ج ۵،ص ۵۹۴) ❁ पी चुकने के बा'द اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ कहिये ❁ हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡوَالِی फ़रमाते हैं : بِسۡمِ اللّٰہ पढ़ कर पीना शुरूअ़ करे पहली सांस के आख़िर में اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ दूसरे के बा'द اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡن और तीसरे सांस के बा'द اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم पढ़े। (إحیاءُ العُلوم، ج ۲،ص ۸) ❁ गिलास में बचे हुए मुसलमान के साफ़ सुथरे झूटे पानी को क़ाबिले इस्ति'माल होने के बा वुजूद ख़्वा मख़्वाह फैंकना न चाहिये ❁ मन्क़ूल है سُؤۡرُ الۡمُؤۡمِنِ شِفَاءٌ या'नी मुसलमान के झूटे में शिफ़ा है। (کشف الخفاء، ج ۱،ص ۳۸۴) ❁ पी लेने के चन्द लम्ह़ों के बा'द ख़ाली गिलास को देखेंगे तो इस की दीवारों से बह कर चन्द क़त़रे पैंदे में जम्अ़ हो चुके होंगे उन्हें भी पी लीजिये।

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 6

ख़ातूने जन्नत का निकाह़ व जहेज़

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ

اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

ख़ातूने जन्नत का निकाह़ व जहेज़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़ह़ा 1 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआ़एं छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।**"

(سُنَنُ التِّرمِذی، ابواب صفۃ القیامۃ والرقائق والورع، باب ما جاء فی صفۃ اوانی الحوض، ص۵۸۳، الحدیث:۲۴۵۷، ملتقطاً)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बरकाते दुरूदो सलाम

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह''** जिल्द 2, सफ़हा 103 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : या'नी (हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ ने अर्ज़ की, कि मैं) सारे वज़ीफ़े दुआएं छोड़ दूंगा सब की बजाए दुरूद ही पढ़ूंगा क्यूंकि अपने लिये दुआएं मांगने से बेहतर येह है कि हर वक़्त आप (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) को दुआएं दिया करूं (जिस के जवाब में सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कैसी प्यारी बिशारत से नवाज़ा) या'नी अगर तुम ने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी दीन व दुन्या दोनों संभल जाएंगी, दुन्या में रंजो ग़म दफ़्अ होंगे, आख़िरत में गुनाहों की मुआफ़ी होगी।

इसी बिना पर उ-लमा फ़रमाते हैं कि जो तमाम दुआएं वज़ीफ़े छोड़ कर हमेशा कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करे तो उसे बिग़ैर मांगे सब कुछ मिलेगा और दीनो दुन्या की मुश्किलें ख़ुद ब ख़ुद हल होंगी। पता लगा कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद पढ़ना दर हक़ीक़त रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से अपने लिये भीक मांगना है। हमारे भिकारी हमारे बच्चों को दुआएं दे कर हम से मांगते हैं हम रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के भिकारी हैं, उस के हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को दुआएं दे कर उस से भीक मांगें, हमारे दुरूद से हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का भला नहीं होता बल्कि हमारा अपना भला होता है, इस तक़रीर से येह ए'तिराज़ भी उठ गया कि जब हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर हर

www.dawateislami.net

वक़्त रह़मतों की बारिश हो रही है तो इन के लिये दुआए रह़मत करने से फ़ाइदा क्या ? शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ (رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ) फ़रमाते हैं कि मुझे अ़ब्दुल वह्हाब मुत्तक़ी (عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَوِی) जब भी मदीना (زَادَھَا اللہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا) से वदाअ़ करते तो फ़रमाते कि सफ़रे ह़ज में फ़राइज़ के बा'द दुरूद से बढ़ कर कोई दुआ़ नहीं, अपने सारे अवक़ात दुरूद में घेरो और अपने को दुरूद के रंग में रंग लो ।

(مرآۃ المناجیح، کتاب الصلاۃ، باب الصلوۃ علی النبی ﷺ وفضلھا، الفصل الثانی، ج ۲، ص ۱۰۳، ملتقطاً)

विर्दे लब हर दम दुरूदे पाक हो

या शहे अ़रबो अ़जम ! चश्मे करम

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 229)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ातिमा का निकाह़

ह़ज़रते सय्यिदुना शोऐब ह़रीफ़ीश عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْقَدِیْر फ़रमाते हैं : जब आस्माने रिसालत (صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का आफ़्ताबे हुस्नो जमाल चमका और उफ़ुक़े अ़ज़मतो जलाल पर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का बदरे कमाल तुलूअ़ हुवा, तो नेक ख़स्लत ज़ेह्नों में आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ख़याल आया, मुहाजिरीन व अन्सार के मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह़ दिया । लेकिन रिज़ाए इलाही व क़ज़ाए ख़ुदावन्दी के साथ मख़्सूस ज़ाते अक़्दस صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : **''मैं ख़ुदाई फ़ैसले का मुन्तज़िर हूं ।''**

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने भी पैग़ामे निकाह़ अ़र्ज़ किया तो उन से भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही इरशाद फ़रमाया : **"येह मुआ़मला अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के सिपुर्द है।"**

अबू बक्र व उ़मर की सय्यिदुना अ़ली को तरग़ीब

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ मस्जिदे नबवी शरीफ़ عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में तशरीफ़ फ़रमा थे कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का ज़िक्रे ख़ैर चल निकला तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : "तमाम मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने पैग़ामे निकाह़ अ़र्ज़ किया और आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्कार करते हुए येही इरशाद फ़रमाया : येह मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है।" लेकिन ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने पैग़ामे निकाह़ अ़र्ज़ नहीं किया और न ही इस का तज़किरा किया। इस की वजह मेरे ख़याल में उन की गु़र्बत हो सकती है। हमें ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم के पास चल कर उन से शहज़ादिये रसूल (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का मुआ़मला ज़िक्र करना चाहिये और अगर वोह तंगदस्ती को वजह बनाएं तो उन की मदद करनी चाहिये। फिर येह सब ह़ज़राते वाला इ़ज़्ज़त

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की तलाश में चल दिये, पता चला कि वोह इस वक़्त किसी अन्सारी के बाग़ में उजरत पर ऊंटों के ज़रीए पानी निकालने में मसरूफ़ हैं। वहां जब मुलाक़ात हुई तो हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : ''ऐ अ़ली ! (बात येह है कि) क़ुरैश के मुअ़ज़्ज़ज़ीन ने बिन्ते रसूल के लिये पैग़ामे निकाह़ दिया लेकिन हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह कह कर लौटा दिया कि ''येह मुआ़मला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द है।'' और (हम देखते हैं कि) आप हर अच्छी आ़दत से कामिल तौ़र पर मुत्तसिफ़ हैं और हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के क़राबत दार भी हैं, मुझे उम्मीद है कि **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم ने इन का मुआ़मला आप के लिये रोका हुवा है। रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم की आंखें अश्कबार हो गईं और फ़रमाया : ''ऐ अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ! ग़ुर्बत ने मुझे इस से रोक रखा है।'' हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : **ऐ अ़ली ! ऐसा न कहो ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और उस के रसूल** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **के नज़दीक दुन्या और जो कुछ इस में है, उड़ते ग़ुबार की मानिन्द है।**

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون فی زواج علی ابن ابی طالب بفاطمۃ...الخ، ص۲۷۵، ملخصاً)

www.dawateislami.net

अस्लाफ़े किराम का मुबारक शिआ़र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अपने मुसलमान बहन भाई की ज़रूरत का एह़सास करना और इस ज़रूरत की तक्मील के लिये ह़त्तल इमकान दामे दरमे क़दमे सुख़ने (या'नी रूपिये पैसे जान और ज़बान हर त़रह़ से) मदद करना और मदद की निय्यत करना हमारे अस्लाफ़े किराम का मुबारक शिआ़र है । और इन मुबारक हस्तियों का वत़ीरा रहा है कि दीनी व नसबी त़ौर पर ख़्वाह कितना ही फ़ज़्लो शरफ़ अ़त़ा हो जाए अपना बोझ ख़ुद ही उठाया जाए और मेह़नते शाक़्क़ा की तक्लीफ़ गवारा कर के ख़ुद अपनी दुन्यावी ज़रूरिय्यात पूरी करने का सामान किया जाए । बारगाहे रिसालत के तरबिय्यत याफ़्तगान के क़ुलूब व अज़्हान में येह बात रासिख़ हो चुकी थी कि दीने इस्लाम दुन्या और अस्बाबे दुन्या को अहम्मिय्यत नहीं देता बल्कि रिज़ाए इलाही और क़ज़ाए ख़ुदावन्दी के आगे सरनिगूं होना (या'नी सर झुकाना) सिखाता है और बताता है कि दुन्यावी जाहो ह़श्मत (या'नी इ़ज़्ज़त व शौकत) और सीमो ज़र (या'नी मालो दौलत) की ह़ैषिय्यत ढलती छाऊं और उड़ते ग़ुबार की सी है । निगाहे इस्लाम में इ़ज़्ज़तो क़बूलिय्यत का मदार तक़्वा व इख़्लास पर है । इसी बिना पर इन सह़ाबए किराम علیہم الرضوان ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالی وجہہ الکریم का ह़ौसला बढ़ाया और बाहगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अपना मुद्दआ़ पेश करने का मश्वरा दिया ।

www.dawateislami.net

सय्यिदुना अ़ली की बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم अपने काम से वापस आ कर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर की त़रफ़ चल दिये, दरवाज़ा खट-खटाया, ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने पूछा : कौन ? तो सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "उठो और दरवाज़ा खोलो, **येह वोह हैं जिन से अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **और उस का रसूल** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **मह़ब्बत करते हैं और येह भी उन से मह़ब्बत करते हैं ।"** ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : "मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! येह कौन हैं ?" तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**येह मेरा भाई है और मुझे सारी मख़्लूक़ से बढ़ कर प्यारा है ।"** ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मैं इस तेज़ी से उठी कि चादर में उलझने लगी थी । मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर सलाम अ़र्ज़ किया और सामने बैठ गए और ज़मीन कुरैदने लगे गोया कुछ कहना चाहते हैं लेकिन ह़या का पर्दा ह़ाइल है ।"

www.dawateislami.net

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : **''ऐ अ़ली** (رضی اللہ تعالی عنہ) ! **कोई काम है तो बताओ, हमारे हां तुम्हारी हर ह़ाजत पूरी होगी ।''** ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کرم اللہ تعالی وجہہ الکریم ने अ़र्ज़ की : **''या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم **!** मेरे मां बाप आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم पर कुरबान ! आप जानते हैं कि आप ने मुझे अपने चचा और चची फ़ात़िमा बिन्ते असद से लिया, मैं उस वक़्त एक ना समझ बच्चा था । आप ने मेरी रहनुमाई फ़रमाई, मुझे अदब सिखाया, मुझे शाइस्ता (شا-اِس-تہ या'नी बा अख़्लाक़) बनाया ।'' आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने मुझ पर मां बाप से बढ़ कर शफ़क़त व एह़सान फ़रमाया, **अल्लाह** عزوجل ने आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के ज़रीए़ मुझे हिदायत बख़्शी । **या रसूलल्लाह** صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم **! आप ही दुन्या व आख़िरत में मेरा वसीला और ज़ख़ीरा हैं,** और मैं येह पसन्द करता हूं कि **अल्लाह** عزوجل आप के ज़रीए़ मेरी पुश्त पनाही इस त़रह़ फ़रमाए कि मेरा भी एक घर और बीवी हो, मैं जिस में चैन ह़ासिल करूं । लिहाज़ा मैं आप की बारगाह में आप की शहज़ादी फ़ात़िमा رضی اللہ تعالی عنہا के लिये निकाह़ का पैग़ाम ले कर ह़ाज़िर हुवा हूं ।

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون فی زواج علی ابن ابی طالب بفاطمۃ...الخ، ص۴۲۵، ملخصاً)

www.dawateislami.net

शाने मुस्तफ़ा व अ़ज़मते मुर्तज़ा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत से शाने मुस्तफ़ा, इल्मे ग़ैबे मुस्तफ़ा, शफ़्क़त व एह़साने मुस्तफ़ा और अ़ज़मते अ़लिय्युल मुर्तज़ा के मुअ़त्तर व मुअ़म्बर मदनी फूल चुनने को मिलते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दरो दीवार के पीछे का भी इ़ल्म था कि वहां कौन है ? अमीरुल मोअमिनीन, मौला अ़ली मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ह़ाज़िर हो कर अपने करीम, मोह़सिन व मुरब्बी(1) आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के एह़सानात और शफ़्क़तों का तज़्किरा किया। नबवी तरबिय्यत से हमें येह मदनी फूल चुनने को मिला कि सिलए रेह़्मी, ह़ुस्ने सुलूक और अच्छी ता'लीमो तरबिय्यत का एहतिमाम मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत है। और एह़सान लेने वाला अपने मोह़सिन के एह़सानात को याद रखे और उस का वफ़ादार व शुक्र गुज़ार रहे। मज़ीद बरआं(2) मह़बूबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, अमीरुल मोअमिनीन, मौला अ़ली मुश्किल कुशा ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की शाने अ़ज़मत निशान कि मह़बूबे ख़ुदा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन को अपना मह़बूब क़रार दिया। इस्लाम व सह़ाबिय्यत का शरफ़ ही बहुत बड़ी ने'मत है, इस के साथ अगर बारगाहे रिसालत में मक़्बूलिय्यत व मह़बूबिय्यत का मुज़्दए जांफ़िज़ा(3) मिल जाए तो उस मुक़द्दर के सिकन्दर के क्या कहने !!!

---

(1)..... [illegible] या'नी तरबिय्यत फ़रमाने वाले (2)..... [illegible] या'नी इस से बढ़ कर
(3)..... [illegible] या'नी जान को ख़ुश करने वाली ख़ुश ख़बरी

www.dawateislami.net

मुर्तज़ा शेरे ह़क़, اَشْجَعُ الْاَشْجَعِیْن साक़िये शेरो शरबत पे लाखों सलाम

अस्ले नस्ले सफ़ा, बजहे वस्ले ख़ुदा बाबे फ़ज़्ले विलायत पे लाखों सलाम

शेरे शमशीरे ज़न, शाहे ख़ैबर शिकन पर्तवे दस्ते क़ुदरत पे लाखों सलाम

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे कलामे रज़ा : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शेर और बहादुरों में सब से बड़े बहादुर हैं, दूध और शरबत से मेहमान नवाज़ी करने वाले ह़ैदरे कर्रार पर लाखों सलाम हों । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ख़ालिस पाक सादात की बुन्याद हैं, वासिले बिल्लाह (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब) होने का सबब और फ़ज़ाइले विलायत मिलने का दरवाज़ा हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर लाखों सलाम नाज़िल हों । आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तलवार चलाने वाले बहादुरी में शेर की मिष्ल, ख़ैबर का दरवाज़ा तोड़ने वाले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यदे क़ुदरत का पर्तव हैं, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर लाखों सलाम का नुज़ूल हो । (सुख़ने रज़ा, स. 373 ता 376, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आस्मान पर निकाह़ और फ़िरिश्तों की बारात

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : "मैं ने देखा कि हुज़ूर सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का चेहरए अन्वर ख़ुशी व मसर्रत से खिल उठा । फिर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते

www.dawateislami.net

अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم को देख कर मुस्कुराए और इस्तिफ़्सार (या'नी दरयाफ़्त) फ़रमाया : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! क्या तुम्हारे पास कोई चीज़ है जिस से तुम फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا का ह़क़्क़े महर अदा कर सको ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप पर मेरी ह़ालत पोशीदा नहीं, मेरे पास मेरी ज़िरह(1) तलवार और पानी भरने के लिये एक ऊंट के सिवा कुछ नहीं । तो दाफ़ेए रन्जो मलाल, साह़िबे जूदो नवाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अपनी तलवार से तो तुम **अल्लाह** की राह में जिहाद करोगे लिहाज़ा इस के बिग़ैर गुज़ारा नहीं और ऊंट से अपने घर वालों के लिये पानी भर कर लाओगे और सफ़र में भी इस पर अपना सामान लादोगे, लेकिन ज़िरह के बदले में, मैं अपनी बेटी का निकाह़ तुम से करता हूं और मैं तुम से खुश हूं, और **ऐ अ़ली** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ! **तुम्हें मुबारक हो कि अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ज़मीन पर फ़ात़िमा** (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) **से तुम्हारा निकाह़ करने से पहले आस्मान में तुम दोनों का निकाह़ कर दिया है** और तुम्हारे आने से पहले आस्मानी फ़िरिश्ता मेरे पास ह़ाज़िर हुवा जिस को मैं ने पहले कभी न देखा था। उस के कई चेहरे और पर थे, उस ने आ कर कहा : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को मुबारक मिलन और पाकीज़ा नस्ल की बिशारत हो ।"

(1)... फ़ौलाद का जालीदार कुर्ता जो लड़ाई में पहनते थे। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 789)

www.dawateislami.net

फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने आ कर सलाम अ़र्ज़ किया और मुझे बताया कि ''या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या पर नज़रे रह़मत फ़रमाई और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये एक ह़बीब, भाई और दोस्त मुन्तख़ब फ़रमा कर इस के साथ आप की बेटी ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا का निकाह़ फ़रमा दिया है। और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सारी जन्नतों और हूरों को आरास्ता व पैरास्ता होने, शजरे तूबा को ज़ेवरात से मुज़य्यन होने और मलाइका को चौथे आस्मान में बैतुल मा'मूर के पास जम्अ़ होने का हुक्म दिया है और रिज़वाने जन्नत عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से बैतुल मा'मूर के दरवाज़े पर मिम्बरे करामत रख दिया है। **येह वोही मिम्बर है जब अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ह़ज़रते आदम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **को तमाम अश्या के नाम सिखाए थे तो उन्हों ने इस पर ख़ुत्बा दिया था।''**

फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से इस मिम्बर पर राह़ील नामी फ़िरिश्ते ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के शायाने शान उस की ह़म्दो षना की तो आस्मान फ़रह़त व सुरूर से झूम उठा। ह़ज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने मज़ीद येह भी बताया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वह़्य फ़रमाई कि ''**मैं ने अपने मह़बूब बन्दे अ़ली** (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ) **का निकाह़ अपनी मह़बूब बन्दी और अपने रसूल की बेटी फ़ातिमा** (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) **से कर दिया है, तुम इन का अ़क़्दे निकाह़ कर दो।''** पस मैं ने अ़क़्दे निकाह़ कर दिया और इस पर फ़िरिश्तों को गवाह बनाया और

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने शजरे तूबा को हुक्म दिया कि वोह अपने ज़ेवरात बिखेरे। जब उस ने ज़ेवरात की बोछाड़ की तो मलाइका और हूरों ने सब ज़ेवरात चुन लिये और वोह क़ियामत तक येह ज़ेवरात एक दूसरे को तोहफ़े में देते रहेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे हुक्म दिया है कि बारगाहे रिसालत में येह पैग़ाम पहुंचा दूं कि ज़मीन पर ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की शादी ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से कर दीजिये और **ह़ज़रते फ़ातिमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **को दो ऐसे शहज़ादों की बिशारत भी अ़ता कर दीजिये जो इन्तिहाई सुथरे, उ़म्दा ख़साइल (या'नी आ़दात) व फ़ज़ाइल के ह़ामिल, पाकीज़ा फ़ित़रत और दोनों जहां में भलाई वाले होंगे।**

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आस्मान पर निकाह़ की तक़रीब और बैतुल मा'मूर(1) में फ़िरिश्तों की बारात फ़ातिमा बतूल और मह़बूबए रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का ही ख़ास्सा (या'नी ख़ास वस्फ़) है।

फिर मक्की मदनी सुल्तान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे दो जहान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मैं तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़ हुक्मे इलाही नाफ़िज़ कर रहा हूं, तुम मस्जिद में पहुंच जाओ, मैं भी आ रहा हूं। मैं लोगों की मौजूदगी में तुम्हारा निकाह़ करूंगा तुम्हारे वोह फ़ज़ाइल बयान करूंगा जिन से तुम्हारी आंखें ठंडी हों।

---

(1) .... **बैतुल मा'मूर** फ़िरिश्तों का क़िब्ला है। का'बए मुअ़ज़्ज़मा के मुक़ाबिल सातवें आस्मान के ऊपर है।" (مراٰۃ المناجیح، کتاب الفضائل، معراج کا بیان، ج۸، ص۱۴۴)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : "मैं बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से जल्दी से निकला और मैं खुशी की शिद्दत की वजह से खुद-रफ़्ता हो गया। जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो उन का चेहरा खुशी से दमक रहा था। आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को हुक्म फ़रमाया की वोह मुहाजिरीन व अन्सार को बुलाएं। जब सब लोग जम्अ़ हो गए तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अक़्दस पर जलवा अफ़रोज़ हो कर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ह़म्दो षना की और इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानो ! अभी अभी ह़ज़रते जिब्रीले अमीन عَلَیْہِ السَّلَام मेरे पास आए और येह ख़बर दी कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने **बैतुल मा'मूर** के पास मलाइका को गवाह बना कर मेरी बेटी फ़ातिमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का निकाह़ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से कर दिया है।" और मुझे भी हुक्म फ़रमाया है कि मैं ज़मीन पर इन का निकाह़ कर दूं। मैं तुम सब को गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपनी बेटी का निकाह़ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) से कर दिया है। फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़ुत़्बए निकाह़ पढ़ने का हुक्म इरशाद फ़रमाया।

ख़ुत़्बए निकाह़

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने खड़े हो कर येह ख़ुत़्बा पढ़ा :

www.dawateislami.net

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَشُكْرًا لِاَنْعُمِهٖ وَاَيَادِيْهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا شَبِيْهَ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ نَبِيُّهُ النَّبِيْهُ وَرَسُوْلُهُ الْوَجِيْهُ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَبَنِيْهِ صَلَاةً دَائِمَةً تُرْضِيْهِ"

तर्जमा : *सब ता'रीफ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं और उस के इन्आ़मात व एह़सानात पर उस का शुक्र है, मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इ़बादत के लाइक़ नहीं, वोह यक्ता (अकेला) है, उस का कोई शरीक व मिष्ल (या'नी उस जैसा) नहीं और गवाही देता हूं कि (ह़ज़रते सय्यिदुना) मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के ख़ास बन्दे और रसूल हैं, उस के मोअ़ज़्ज़ज़ नबी और अ़ज़ीमुश्शान रसूल हैं, इन पर और इन के आल व अस्ह़ाब, अज़्वाजे मुत़ह्हरात और अवलादे अत़हार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ऐसी दाइमी रह़मत हो जो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खुश कर दे (आमीन) ।*

इस के बा'द फ़रमाया : "निकाह़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म पर अ़मल है और उस ने इस की इजाज़त दी है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का निकाह़ मुझ से कर दिया है और मेरी इस, ज़िरह को ब तौ़रे ह़क़्क़े महर[1] मुक़र्रर फ़रमाया है । ह़ाज़िरीन ने मुबारक बाद देते हुए कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **आप के जोड़े में बरकत व इत्तिफ़ाक़ अ़ता फ़रमाए ।"**

---

(1) .... ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا के ह़क़्क़े महर के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं । तमाम अक़्वाल में नफ़ीस तत़बीक़ देते हुए आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "अस्ल महरे करीम जिस पर अ़क़्दे अक़्दस वाक़ेअ़ हुवा चार सो मिषक़ाल (तक़रीबन 150 तोले) चांदी थी व लिहाज़ा उ़-लमाए सियर ने इस पर जज़्म फ़रमाया ।" (फ़तावा रज़विय्या, जि. 12, स. 155)

www.dawateislami.net

सय्यिदए काइनात का जहेज़

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी ज़िरह ली और बाज़ार में हज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को 400 दिरहम में फ़रोख़्त कर दी। जब मैं ने दिरहमों पर और उन्हों ने ज़िरह पर क़ब्ज़ा कर लिया तो मुझ से फ़रमाने लगे : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) क्या अब मैं ज़िरह का और आप दराहिम के ह़क़दार नहीं ?" मैं ने कहा : क्यूं नहीं। तो कहने लगे : "फिर येह ज़िरह मेरी त़रफ़ से आप को हदिय्या (हदिय्या या'नी तोह़फ़ा) है।" हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : मैं ने ज़िरह और दराहिम लिये और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर हज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हुस्ने सुलूक की ख़बर दी तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें दुआ़ए ख़ैरो बरकत से नवाज़ा। फिर हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बुला कर उन्हें (मुठ्ठी भर) दिरहम दिये और फ़रमाया : "इन दराहिम के इ़वज़ फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये मुनासिब अश्या ख़रीद लाओ।" हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी और हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ख़रीदी हुई अश्या उठाने में मदद के लिये साथ भेजा। हज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : मुझे हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने 63 दिरहम अ़ता फ़रमाए थे, **मैं ने रूई से भरा हुवा मोटे कपड़े का बिस्तर, चमड़े का दस्तर ख़्वान, चमड़े का तकिया जिस में खजूर के पत्ते भरे हुए थे, पानी के लिये एक मशकीज़ा और कूज़ा** (या'नी मिट्टी का आबख़ूरा) और नर्म ऊन का एक पर्दा ख़रीदा। फिर मैं, ह़ज़रते सलमान और ह़ज़रते बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने थोड़ा थोड़ा कर के वोह सामान उठा लिया और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर कर दिया। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा तो रोने लगे और आस्मान की जानिब निगाह उठा कर अ़र्ज़ की : **''ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ऐसे लोगों को अपनी रह़मत से नवाज़ जिन का शिआ़र (या'नी त़रीक़ा) ही तुझ से डरना है।''**

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون فی زواج علی ...الخ، ص۲۷۵ تا ۲۷۷، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत की जहेज़ की मन्ज़ूम (1) तफ़्सील

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی ने शहज़ादिये कौनैन, वालिदए ह़सनैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के जहेज़ की तफ़्सील नज़्म में लिखी है, मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और तरग़ीब ह़ासिल कीजिये।

(1).... अश्आ़र में लिखा हुवा कलाम।

www.dawateislami.net

फ़ातिमा ज़हरा का जिस दिन अ़क़्द था — सुन लो ! उन के साथ क्या क्या नक़्द था
एक चादर सतरह पैवन्द की — मुस्त़फ़ा ने अपनी दुख़्तर को जो दी
एक तौशक (1) जिस का चमड़े का ग़िलाफ़ — एक तकिया, एक ऐसा ही लिह़ाफ़
जिस के अन्दर ऊन, न रेशम, रूई — बल्कि इस में छाल ख़ुर्मे (2) की भरी
एक चक्की पीसने के वासित़े — एक मशकीज़ा था पानी के लिये
एक लकड़ी का प्याला साथ में — नुक़रई कंगन (3) की जोड़ी हाथ में
और गले में हार हाथी दांत का — एक जोड़ा भी खड़ाऊं (4) का दिया
शाहज़ादी सय्यिदुल कौनैन की — बे सुवारी ही अ़ली के घर गई
वासित़े जिन के बने दोनों जहां — उन के घर थीं सीधी सादी शादियां
उस जहेज़े पाक पर लाखों सलाम — साह़िबे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक अज़् ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنان)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने बक़िया दिरहम ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رضی اللہ تعالی عنھا के ह़वाले कर दिये और इरशाद फ़रमाया : ''इन दराहिम को अपने पास रखो ।'' फिर एक महीने तक शर्मो ह़या के बाइ़ष मैं आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم की ख़िदमत में ह़ाज़िर न हुवा । जब कभी अकेले में आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم से मुलाक़ात होती तो आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم

(1) .... रूई दार बिस्तर (2) .... खजूर के दरख़्त का छिलका
(3) .... कलाई में पहनने वाला चांदी का ज़ेवर (4) .... लकड़ी की जूती ।

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाते : **ऐ अ़ली** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) **मैं ने तुम्हारा निकाह़ उस के साथ किया है जो तमाम जहानों की औ़रतों की सरदार है ।** (اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون في زواج علي ...الخ، ص ۲۷۷)

जहेज़ कैसा और कितना हो ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मख़्दूमए काइनात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का जहेज़ किस क़दर सादा और मुख़्तसर था, और जो दिया गया मौलाए काइनात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ से इस का भी मुत़ालबा न था, इस में उम्मत के लिये दर्स व रग़बत है कि कषीर और पुर तकल्लुफ़ जहेज़ का एहतिमाम ज़रूरी नहीं और न ही लड़के वाले इस का मुत़ालबा करें, येह सुन्नत जिस क़दर सादगी से अदा की जाए बेहतर है, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"जन्नती ज़ेवर"** सफ़ह़ा 153 पर शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : "मां-बाप कुछ कपड़े, कुछ ज़ेवरात, कुछ सामान, बरतन, पलंग, बिस्तर, मेज-कुरसी, तख़्त, जाए नमाज़, कुरआने मजीद, दीनी किताबें वग़ैरा लड़की को दे कर सुसराल भेजते हैं येह लड़की का जहेज़ कहलाता है। बिला शुबा येह जाइज़ बल्कि सुन्नत है क्यूंकि हमारे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी अपनी प्यारी बेटी ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को जहेज़ में कुछ सामान दे कर रुख़्सत फ़रमाया था लेकिन **याद रखो कि जहेज़ में सामान का देना येह मां-बाप की मह़ब्बत व शफ़्क़त की निशानी है**

www.dawateislami.net

और उन की ख़ुशी की बात है। मां-बाप पर लड़की को जहेज़ देना येह फ़र्ज़ो वाजिब नहीं है। लड़की और दामाद के लिये हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं कि वोह ज़बरदस्ती मां-बाप को मजबूर कर के अपनी पसन्द का सामान जहेज़ में वुसूल करें, मां-बाप की हैसियत इस क़ाबिल हो या न हो मगर जहेज़ में अपनी पसन्द की चीज़ों का तक़ाज़ा करना और उन को मजबूर करना कि वोह क़र्ज़ ले कर बेटी-दामाद की ख़्वाहिश पूरी करें, येह ख़िलाफ़े शरीअ़त बात हैं बल्कि आज कल तिलक जैसी रस्म मुसलमानों में भी चल पड़ी है कि शादी तै करते वक़्त ही येह शर्त़ लगा देते हैं कि जहेज़ में फ़ुलां फ़ुलां सामान और इतनी इतनी रक़म देनी पड़ेगी, चुनान्चे बहुत से ग़रीबों की लड़कियां इसी लिये बियाही नहीं जा रहीं हैं कि इन के मां बाप लड़की के जहेज़ की मांग पूरी करने की त़ाक़त नहीं रखते येह रस्म यक़ीनन ख़िलाफ़े शरीअ़त है और जब्रन क़ह्‌रन (या'नी बज़ोर) मां बाप को मजबूर कर के ज़बरदस्ती जहेज़ लेना येह ना जाइज़ है। लिहाज़ा मुसलमानों पर लाज़िम है कि इस बुरी रस्म को ख़त्म कर दें।" (जन्नती ज़ेवर, रुसूमात, स. 153 ता 154)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बिन्ते अ़त्तार का जहेज़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज के इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो शादी-बियाह के मौक़अ़ पर होने वाली इन ना जाइज़ रुसूमात से इजतिनाब करते हैं : इन में

www.dawateislami.net

नुमायां नाम शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का है : आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه शादी बियाह की ख़ुशी में होने वाली बेहूदा तक़रीबात व रुसूमात को न सिर्फ़ ख़ुद ना पसन्द करते हैं बल्कि दीगर मुसलमानों को भी इन गुनाहों भरे मुआ़मलात से इजतिनाब की शफ़्क़त आमेज़ ताकीद फ़रमाते रहते हैं : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी इकलौती बेटी की शादी भी सादगी को मल्हूज़ रखते हुए ऐ़न सुन्नत के मुत़ाबिक़ करने की कोशिश फ़रमाई थी। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक मदनी मुज़ाकरे में कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : मैं ने पूरी कोशिश की, कि ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को मेरे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो जो इनायत फ़रमाया इस की पेरवी की जाए।

वासिते़ जिन के बने दोनों जहां
उन के घर थीं सीधी सादी शादियां
उस जहेज़े पाक पर लाखों सलाम
साहि़बे लौलाक पर लाखों सलाम

(दीवाने सालिक अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان)

मषलन मश्कीज़ा, गेहूं पीसने वाली हाथ की चक्की, नुक़रई (نُقْرَئی या'नी चांदी के) कंगन पेश किये, इसी त़रह़ की दीगर चीज़ें किताबों से देख कर जो जो मुयस्सर आया : चटाई, मिट्टी के बरतन और खजूर की छाल भरा चमड़े का तकिया वग़ै़रा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ जहेज़ में पेश करने की कोशिश की। और रुख़्सत करते वक़्त जिस त़रह़ सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर शफ़्क़तें फ़रमाई थीं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इन सुन्नतों पर भी अ़मल करने की कोशिश की थी।

(सुन्नते निकाह़, क़िस्त़. 3, स. 44)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदा फ़ात़िमा की रुख़्सती

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم इरशाद फ़रमाते हैं : जब महीना गुज़र गया तो मेरे भाई ह़ज़रते अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मेरे पास तशरीफ़ लाए और कहने लगे : "ऐ मेरे भाई ! आज तक मैं इतना ख़ुश नहीं हुवा जितना येह सुन कर ख़ुश हुवा की आप की शादी बिन्ते रसूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से हो गई है, अब अगर आप इन को अपने घर भी ले आओ तो तुम्हारी मुलाक़ात से हमारी आंखें ठंडी हो जाएंगी।" मैं ने जवाब दिया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं भी येही चाहता हूं लेकिन मुझे ताजदारे ह़रम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से शर्म आती है।" उन्हों ने कहा : "मैं आप को क़सम देता हूं कि आप मेरे साथ चलें।" लिहाज़ा हम आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में मुलाक़ात के इरादे से घर से निकले तो रास्ते में हमें बारगाहे रिसालत की ख़ादिमा ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मिलीं। हम ने उन से तज़किरा किया तो कहने लगीं : "ज़रा इन्तिज़ार करें, हम औ़रतें आप

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुतअ़ल्लिक़ बात करती हैं कि (इन मुआ़मलात में) मर्दों की निस्बत औ़रतों की बातें ज़ियादा मुअष्षिर होती हैं।" वोह वापस मुड़ कर ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास गईं और उन्हें और फिर दूसरी अज़्वाजे मुत़ह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُن को सारी बात बताई तो सब उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُن इकठ्ठी हो कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हुजरए मुबारका में ह़ाज़िर हुईं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के चारों त़रफ़ बैठ कर अ़र्ज़ गुज़ार हुईं : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे मां-बाप आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! हम एक अहम मुआ़मले में आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास ह़ाज़िर हुई हैं, वोह येह कि **आप के चचाज़ाद और दीनी भाई ह़ज़रते अ़ली** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अपनी बीवी ह़ज़रते फ़ात़िमा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا **की रुख़्सती चाहते हैं।**" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को बुला भेजा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : "मैं बरगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर सर झुका कर बैठ गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम अपनी ज़ौजा की रुख़्सती चाहते हो ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! इरशाद फ़रमाया : "बड़ी मह़ब्बतो इ़ज़्ज़त से, اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **आज रात से तुम अपनी ज़ौजा के साथ रहा करोगे।**"

www.dawateislami.net

दा'वते तआम

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना के गुलशन के महकते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़जरते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को आरास्ता करने का हुक्म दिया और ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के पास रखे हुए दराहिम में से 10 दिरहम ह़ज़रते अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجۡہَہُ الۡکَرِیۡم को दिये और इरशाद फ़रमाया : "इन से खजूर, घी और पनीर ख़रीद लो।" आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं येह चीज़ें ख़रीद कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चमड़े का एक दस्तरख़्वान मंगवाया और आस्तीनें चढ़ा कर खजूरों को घी में मसलने लगे और फिर पनीर के साथ इस त़रह़ मिलाया कि वोह ह़लवा बन गया। फिर इरशाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) जिसे चाहो बुला लाओ।" मैं मस्जिद गया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सह़ाबए किराम رِضۡوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ से कहा : "आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दा'वत क़बूल करें।" सब लोग उठ कर चल दिये। जब मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की, कि लोग बहुत ज़ियादा हैं तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चमड़े के दस्तरख़्वान को एक रूमाल से ढांप दिया और इरशाद फ़रमाया : "दस दस अफ़राद को दाख़िल करते जाओ।" मैं ने ऐसा ही किया। **सब सह़ाबए**

www.dawateislami.net

किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ **ने खाना खाया लेकिन खाने में बिल्कुल कमी न हुई यहां तक कि आप** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **की बरकत से 700 अफ़्राद ने वोह ह़लवा तनावुल फ़रमाया ।**

इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते फ़ातिमा और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا) को अपने पास बुलाया और ह़ज़रते अ़ली کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْم को अपने दाएं और ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को अपने बाएं त़रफ़ बिठा कर सीने से लगाया और दोनों की आंखों के दरमियान पेशानी पर बोसा दिया और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया : "**ऐ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मैं ने कितनी अच्छी ज़ौजा से तेरा निकाह़ किया है।**" फिर उन दोनों के साथ उन के घर तक पैदल चले। फिर घर से बाहर निकल कर दरवाज़े के किवाड़ पकड़े और येह दुआ़ फ़रमाई : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **तुम दोनों को इत्तिफ़ाक़ व इत्तिह़ाद अ़त़ा फ़रमाए, मैं तुम्हें अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के सिपुर्द करता हूं और तुम दोनों को उस की ह़िफ़ाज़त में देता हूं।**"
(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثانی والاربعون فی زواج علی بفاطمۃ...الخ،ص ۲۷۷ تا ۲۷۸، ملخصاً)

शहज़ादिये कौनैन, वालिदए ह़सनैन (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم) के निकाह़ के मुतअ़ल्लिक़ मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی का मन्ज़ूम कलाम मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और नसीह़त के मदनी फूल चुनिये :

www.dawateislami.net

गोशे दिल से मोमिनो ! सुन लो ज़रा   है येह क़िस्सा फ़ातिमा के अ़क़्द का
पन्दरह साला नबी की लाडली   और थी बाईस साल उ़म्रे अ़ली
अ़क़्द का पैग़ाम ह़ैदर ने दिया   मुस्त़फ़ा ने मरह़बा अहलन कहा
पीर का दिन सतरह माहे रजब   दूसरा सिने हिजरत शाहे अ़रब
फिर मदीने में हुवा ए'लाने आ़म   ज़ोहर के वक़्त आएं सारे ख़ासो आ़म
इस ख़बर से शोर बरपा हो गया   कूचा व बाज़ार में ग़ुल सा मचा
आज है मौला की दुख़्तर का निकाह़   आज है उस नेक अख़्तर का निकाह़
आज है उस पाक व सच्ची का निकाह़   आज है बे मां की बच्ची का निकाह़
ख़ैर से जब वक़्त आया ज़ोहर का   मस्जिदे नबवी में मज्मअ़ हो गया
एक जानिब हैं अबू बक्रो उ़मर   एक त़रफ़ उ़षमान भी हैं जलवा गर
हर त़रफ़ अस्ह़ाबो अन्सार हैं   दरमियां में अह़मदो मुख़्तार हैं
सामने नौशा अ़लिय्युल मुर्तज़ा   ह़ैदरे कर्रार शाहे ला फ़ता
आज गोया अ़र्श आया है उतर   या कि क़ुदसी आ गए हैं फ़र्श पर
चार सो मिषक़ाल चांदी महर था   वज़्न जिस का डेढ़ सो तोला हुवा
बा'द में खुर्मे लूटाए ला कलाम   मा सिवा इस के न था कोई त़आ़म
उन के ह़क़ में फिर दुआ़ए ख़ैर की   और हर एक ने मुबारक बाद दी
घर से रुख़्सत जिस घड़ी ज़हरा हुई   वालिदा की याद में रोने लगीं
दी तसल्ली अह़मदे मुख़्तार ने   और फ़रमाया शहे अबरार ने

www.dawateislami.net

फ़ातिमा हर त़रह़ से बाला हो तुम
मैके व सुसराल में आ'ला हो तुम

बाप तुम्हारे इमामुल अम्बिया
और शौहर औलिया के पेश्वा

माहे ज़िल ह़िज्जा में जब रुख़्सत हुई
तब अ़ली के घर में एक दा'वत हुई

जिस में थीं दस सैर जव की रोटियां
कुछ पनीर और थोड़े ख़ुर्मे बे गुमां

इस ज़ियाफ़त(1) का वलीमा(2) नाम है
और येह दा'वते सुन्नते इस्लाम है

सब को इन की राह चलना चाहिये
और बुरी रस्मों से बचना चाहिये

(दीवाने सालिक अज़ ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنّان)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादियां तो बहुत हुई हैं, हो रही हैं और होती रहेंगी लेकिन ऐसी सादा मगर अ़ज़ीमुश्शान रस्मे निकाह़ व बियाह सिर्फ़ मह़बूबीने ख़ुदा और मुक़र्रबीने मुस्त़फ़ा का ह़िस्सा है, तकल्लुफ़ (या'नी ज़ाहिरदारी) नाम का नहीं लेकिन रश्क हर मुसलमान को आता है, धूम धाम का कोई अता पता नहीं लेकिन चर्चा आज भी हो रहा है।

---

(1) .... दा'वत
(2) .... निकाह़ के बा'द की दा'वत जो दुल्हा की त़रफ़ से दी जाती है।
(फ़ीरोज़ुल लुग़ात, स. 1482)

www.dawateislami.net

नामवरी का कोई इरादा नहीं लेकिन डंके चार दांगे आ़लम(1) बज रहे हैं। येह बात बिल्कुल नहीं कि येह शादी धूम धाम से नहीं हो सकती थी बल्कि अगर सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم ख़ुद भी नहीं बल्कि सिर्फ़ अपने ग़ुलामों को ही इशारा कर देते तो इस की मिष्ल व हमसरी करना किसी के बस की बात न रहती। लेकिन वालिये उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم ने सादगी और बे तकल्लुफ़ी को सुन्नत बनाया, ताकि उम्मत परेशानी और क़र्ज़ों के बोझ तले न दबे। इसी जानिब ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने भी तवज्जोह दिलाई, चुनान्चे

शादी बियाह की इस्लामी रस्में

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 170 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी ज़िन्दगी**" सफ़ह़ा 54 पर ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی तह़रीर फ़रमाते हैं : सब से बेहतर तो येह होगा कि अपनी अवलाद के निकाह़ के लिये ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत, शाहज़ादिये इस्लाम, फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाहे़ पाक को नुमूना बनाओ। यक़ीन करो कि हमारी अवलाद इन के क़दमे पाक पर क़ुरबान ! और येह भी समझ लो कि अगर ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم की मरज़ी होती कि मेरी लख़्ते जिगर की शादी बड़ी धूम धाम से हो और सह़ाबए किराम

(1) .... दुन्या की चारों त़रफ़

www.dawateislami.net

عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इस के लिये चन्दा वग़ैरा के लिये हुक्म फ़रमा दिया जाता तो उ़षमाने ग़नी رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का ख़ज़ाना मौजूद था। जो एक एक जंग के लिये नव नव सो ऊंट और नव नव सो अशरफ़ियां ह़ाज़िर कर देते थे। लेकिन चूंकि मनशा (या'नी मक़्सद) येह था कि क़ियामत तक येह शादी मुसलमानों के लिये नुमूना बन जाए। इस लिये निहायत सादगी से येह इस्लामी रस्में अदा की गईं।

लिहाज़ा मुसलमानो ! अव्वलन तो अपनी बियाह बारात से सारी ह़राम रस्में निकाल डालो, बाजे, आतश बाज़ी, औ़रतों के गाने, मीराषी, डोम वग़ैरा के गीत, रन्डियों, औ़रतों के नाच, औ़रतों और मर्दों का मेल जोल, फूल पत्ती का लुटाना एक दम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर मिटा दो। अब रही फ़ुज़ूल ख़र्ची की रस्में इन को या तो बन्द ही कर दो अगर बन्द न कर सको तो इन के लिये ऐसी ह़द मुक़र्रर कर दो जिस से फ़ुज़ूल ख़र्ची न रहे और घर की बरबादी न हो। जिन्हें अमीर व ग़रीब सब बे तकल्लुफ़ पूरा कर सकें। लिहाज़ा हमारी राय येह है कि इस त़रीक़े से निकाह़ की रस्म अदा होनी चाहिये।

दुल्हा, दुल्हन निकाह़ से पहले उबटन या ख़ुश्बू का इस्ति'माल करें मगर मेहंदी और तेल लगाने और उबटन की रस्म बन्द कर दी जाए या'नी गाना बाजा औ़रतों का जम्अ़ होना बन्द कर दो। अब अगर बारात शहर की शहर में है तो ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर बारात का मज्मअ़ दुल्हा के घर जम्अ़ हो और दुल्हन वाले लोग दुल्हन के घर जम्अ़ हों। दुल्हन के यहां इस वक़्त

www.dawateislami.net

ना'त ख़्वानी या वा'ज़ या दुरूद शरीफ़ की मजलिस गर्म हो। उधर दुल्हा को ले कर पैदल या सुवार कर के इस त़रह़ बरात का जुलूस रवाना हो, आगे आगे उ़म्दा ना'त ख़्वानी होती जावे, तमाम बाज़ारों में येह जुलूस निकाला जाए। जब येह बारात दुल्हन के घर पहुंचे तो दुल्हन वाले इस बारात को किसी क़िस्म की रोटी या खाना हरगिज़ न दें क्यूंकि ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के निकाह़ में हु़ज़ूर عَلَیْہِ السَّلَام ने कोई खाना न दिया। ग़रज़ येह कि लड़की वाले के घर खाना न हो। बल्कि पान या ख़ाली चाय से तवाज़ोअ़ कर दी जाए। फिर उ़मदा त़रीक़े से खु़त़्बए निकाह़ पढ़ कर निकाह़ हो जाए। अगर निकाह़ मस्जिद में हो तो और भी अच्छा है। **निकाह़ का मस्जिद में होना मुस्तह़ब है** और अगर लड़की के घर हो तब भी कोई ह़रज नहीं। निकाह़ होते ही बाराती लोग वापस हो जाएं। येह तमाम काम अ़स्र से पहले हो जाएं और बा'दे मग़रिब को दुल्हन को रुख़्सत कर दिया जाए ख़्वाह रुख़्सत टांगे में हो या डोली वग़ैरा में। मगर इस पर किसी क़िस्म का निछावर और बिखेर बिल्कुल न हो कि बिखेर करने में पैसे गुम हो जाते हैं। हां ! निकाह़ के वक़्त खु़र्मे (या'नी खजूरें या छूहारे) लुटाना सुन्नत है।

(इस्लामी ज़िन्दगी, फ़स्ले षानी : निकाह़ और रुख़्सत की रस्में, स. 54 ता 55)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ हर मुआ़मले में मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

सुन्नतों पर अ़मल की कोशिश फ़रमाते हैं, चुनान्चे आप ने अपनी अवलाद की शादियां भी फ़ुज़ूल रस्मों से दूर रह कर और आक़ा की सुन्नतों पर अ़मल कर के सर अन्जाम दीं जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 86 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले **"सुन्नते निकाह़"** सफ़ह़ा 32 से 41 तक आप के बड़े साहि़ब ज़ादे की शादी का ज़िक्र मौजूद है मुख़्तसरन पेशे ख़िदमत है मुलाहज़ा फ़रमाइये :

शहज़ादए अ़त़्त़ार مدظلہ की शादी

जहां अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने अपनी शादी ख़ाना आबादी में हर मौक़अ़ पर शरई अह़काम की पासदारी की, वहीं आप ने अपने शहज़ादए ख़ुश-लक़ा, उ़रूसे दिलरुबा, अलह़ाज मौलाना अबू उसैद अह़मद उ़बैदुर्रज़ा क़ादिरी रज़वी अ़त़्त़ारी अल मदनी دامت برکاتہم العالیہ की **"शादी"** के पुर मुसर्रत लमह़ात में तमाम मुआ़मलात शरीअ़त के ऐ़न मुत़ाबिक़ रखने पर भी भरपूर तवज्जोह फ़रमाई। जिस के नतीजे में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ येह शादी मुबारक भी इन्तिहाई सादगी का मज़्हर और दौरे ह़ाज़िर की मिषाली शादी क़रार पाई।

मरह़बा अ़त़्त़ार का लख़्ते जिगर दुल्हा बना
ख़ुशनुमा सेहरा उ़बैदे क़ादिरी के सर सजा

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तक़रीबे निकाह़

शहज़ादए अ़त़्त़ार مدظلہ के निकाह़ की तक़रीब बरक़ी क़ुमक़ुमों से जगमगाते शादी हॉल के बजाए मदीनतुल औलिया

www.dawateislami.net

मुल्तान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा सुन्नतों भरे बैनल अक़्वामी इजतिमाअ़ में 18 अक्तूबर सि. 2003 ई. को शबे इतवार बड़ी सादगी के साथ अन्जाम पाई ।

बराती हैं तमामी अहले सुन्नत

उ़बैदे क़ादिरी दुल्हा बना

तिलावत के बा'द पुरसोज़ ना'तें पढ़ी गईं, रिक़्क़त अंगेज़ समां था, खु़त्बए निकाह़ पढ़ कर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ही ने निकाह़ पढ़ाया फिर छूहारे लुटाए गए जो मंच (स्टेज) के क़रीब मौजूद मख़्सूस इस्लामी भाइयों ने लूटे । निकाह़ के बा'द छूहारे लुटाने के बारे में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि "ह़दीष शरीफ़ में लूटने का हुक्म है और लुटाने में भी कोई ह़रज नहीं ।" (اَحکامِ شریعت، باب ملفوظات اعلٰی حضرت، حصہ دوم ،ص۲۲۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मकान पर सजावट

इस मौक़अ़ पर देखने वाले ह़ैरत ज़दा थे कि दुन्याए अहले सुन्नत के अमीर, बानिये दा'वते इस्लामी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के शहज़ादे की शादी के मौक़अ़ पर घर पर मुरुव्वजा **सजावट या बरक़ी कुमकुमों** वग़ैरा की कोई तरकीब ही नहीं थी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

पुर तकल्लुफ़ जहेज़ लेने से इन्कार

हाजी अहमद उबैद रज़ा مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की शादी में जब लड़की वालों ने पुर तकल्लुफ़ जहेज़ देना चाहा तो अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने उन्हें सादगी अपनाने की तलक़ीन की। दूसरी तरफ़ शहज़ादए अत्तार دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ भी पलंग वग़ैरा के बजाए **चटाई क़बूल करने पर रिज़ामन्द हुए।**

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इजतिमाए ज़िक्रो ना'त

शहज़ादए अत्तार مَدَّظِلُّہُ الْعَالِی की शादी की ख़ुशी में **दा'वते इस्लामी** की बाबुल मदीना (कराची) की मजलिसे मुशावरत ने आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना (बाबुल मदीना कराची) में **इजतिमाए ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम किया। जिस में हज़ारों इस्लामी भाइयों ने शिर्कत की। इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का आग़ाज़ **तिलावते कुरआने हकीम** से हुवा, फिर सरकारे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में गुलहाए अक़ीदत ना'त शरीफ़ की सूरत में पेश किये गए। इस के बा'द शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने इस मौक़अ पर मदनी मुज़ाकरे में इस्लामी भाइयों के सुवालात के जवाबात दिये। फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का लिखा हुवा मन्ज़ूम दुआइया सहरा शरीफ़ पढ़ा गया और सलातो सलाम पर इस इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का इख़्तिताम हुवा।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

रस्मे रुख़्सती

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पहले ही से ताकीद कर दी थी कि किसी सूरत में कोई ग़ैर शरई रस्म या मुआ़मला न होने पाए बल्कि वक़्ते रुख़्सती भी तमाम मुआ़मलात ऐ़न शरीअ़त के दाइरे में रहते हुए होने चाहियें।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की इस ख़्वाहिश को अ़मली जामा पहनाया गया और आख़िर तक हर हर मुआ़मला ऐ़न शरीअ़त के मुता़बिक़ रखने की ही कोशिश की गई। ह़त्ता कि रुख़्सती के वक़्त जो ख़वातीन दुल्हन को छोड़ने के लिये रस्म के तौ़र पर आती हैं इस से पेशगी मन्अ़ कर दिया गया कि सिर्फ़ दुल्हन का सगा भाई शरई पर्दे के साथ दुल्हन को ले आए। इस शादी में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के घर वालों की त़रफ़ से भी इस्लामी बहनों के लिये कोई तक़रीब नहीं रखी गई थी।

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी काश बुर्क़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

धूमधाम से वलीमा करने का मुता़लबा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मदनी मुज़ाकरे के दौरान कुछ यूं इरशाद फ़रमाया : धूम धाम से वलीमा का भी बहुत इसरार रहा। किसी ने ऑफ़र भी की, कि 200 देगें बिला उजरत पका देंगे, बस दो लाख रूपे का सामान आएगा। मैं ने कहा : दो लाख रूपे तो मेरे पास नही हैं, मगर मेरे लिये दो लाख रुपे जम्अ़ करना मुश्किल भी नहीं है, बस येही होगा कि जिस से

www.dawateislami.net

कहूंगा उस के दिल में मेरी जो इ़ज़्ज़त होगी वोह ख़त्म हो जाएगी, दो चार सेठों को फ़ोन कर दूंगा, थोड़ी सी ख़ुशामद करना पड़ेगी जो कि मेरे मिज़ाज में नहीं है, 200 की जगह 1200 देगें हो जाएंगी, यूं मेरे बेटे का वलीमा तो धूम धाम से होगा और आप लोग भी ख़ुश हो जाएंगे मगर मुझे इस के लिये अपनी ख़ुद्दारी का सौदा करना पड़ेगा । फिर आप ने बत़ौरे तरग़ीब एक वाक़िआ़ भी सुनाया :

एक पीर साहि़ब के हां लंगर ख़ाना चल रहा था । एक साहि़बे षरवत मुरीद पैसे देने की तरकीब कर रहा था । लंगर ख़ाने के मुन्तज़िम ने अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! अब महंगाई बढ़ गई है, बहुत दिक़्क़त हो रही है, अगर आप इस लंगर ख़ाने का ख़र्चा देने वाले मुरीद को इशारा कर देंगे कि वोह रक़म दुगनी कर दे तो अपना लंगर ख़ाना ज़रा आसानी से चलेगा । पीर साहि़ब इस पर राज़ी हो गए और उस मुरीद को फ़रमाया कि **अल्लाह** तआ़ला ने तुझे बहुत दिया है, तुम माहाना चन्दा दुगना कर दो । उस मुरीद ने सआ़दत मन्दी से जवाब दिया : मुर्शिद ! आप का हुक्म सर आंखों पर । कुछ अ़र्से के बा'द लंगर खाने के मुन्तज़िम ने पूछा : हु़ज़ूर ! आप ने रक़म में इज़ाफ़े के लिये कहा या नहीं ? पीर साहि़ब ने फ़रमाया कि मैं ने उस से कह दिया था और उस ने दुगना कर भी दिया है मगर फ़र्क़ येह है कि पहले बड़ी अ़क़ीदत से आ कर पेश करता था, अब ख़ुद नहीं आता भिजवा देता है ।

www.dawateislami.net

(फिर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया) اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरा बेटा (या'नी ह़ाजी अह़मद उ़बैद रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی ख़ुद वलीमे की सुन्नत अदा करेगा। धूम धाम से न सही मगर वलीमा होगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते वलीमा

शहज़ादए अ़त्तार مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ह़स्बे ख़्वाहिश इन्तिहाई सादगी से दा'वते वलीमा का एहतिमाम फ़रमाया जिस में सिर्फ़ दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन और तीन या चार दूसरे इस्लामी भाइयों को मदऊ़ किया लेकिन खाने के वक़्त घर के बाहर जम्अ़ होने वाले दीगर अ़क़ीदत मन्द इस्लामी भाइयों को भी अन्दर बुलवा लिया गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी वलीमे में शरीक थे। दा'वते वलीमा में दाल और चावल पेश किये गए। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बताया कि "खाना घर में पकाया गया है, दाल पानी में पकाई गई है और इस में तेल का एक क़त़रा भी नहीं डाला गया।" मगर खाने वालों का कहना है कि दाल-चावल ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर इन्तिहाई लज़ीज़ थे। (सुन्नते निकाह़, क़िस्त़. 3 स. 32 ता 41 मुल्तक़त़न)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शादी के मौक़अ़ पर रुख़्सती के वक़्त क़ब्र की त़रफ़ रुख़्सती को पेशे नज़र रखना चाहिये। अकषर नमाज़ की पाबन्द इस्लामी बहनें भी इस मौक़अ़ पर फ़र्ज़ नमाज़ तक छोड़ देती हैं। देखिये ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने शादी की पहली रात कैसे गुज़ारी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को शादी की पहली रात भी फ़िक्रे क़ब्रो आख़िरत ने बेचैन कर रखा था चुनान्चे मन्क़ूल है कि

शादी की पहली रात भी इबादत

सय्यिदए काइनात(1) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की रुख़्सती के बा'द जब रात का अन्धेरा छाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोने लगीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने पूछा : "ऐ तमाम औ़रतों की सरदार ! क्या तुम इस बात से ख़ुश नहीं कि मैं तुम्हारा शोहर और तुम मेरी ज़ौजा हो ?" कहने लगीं : "मैं क्यूं कर राज़ी न होऊंगी, आप तो मेरी रिज़ा बल्कि इस से भी बढ़ कर हैं, मैं तो अपनी उस ह़ालत व मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ सोच रही हूं कि जब मेरी उ़म्र बीत जाएगी और मुझे क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाएगा। आज मेरा इ़ज़्ज़त व फ़ख़्र के बिस्तर में दाख़िल होना कल क़ब्र में दाख़िल होने की मानिन्द है। आज रात हम अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में खड़े हो कर इबादत करेंगे कि वोही इबादत का ज़ियादा ह़क़ रखता है। इस के बा'द वोह दोनों इबादत की जगह खड़े हो कर पूरी रात रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ रहे।"

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس، الثامن والاربعون فی زواج علی بفاطمة...الخ، ص٢٧٨)

(1) .... या'नी काइनात की सरदार।

www.dawateislami.net

इबादत हो तो ऐसी हो !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह ऐसे लोग हैं कि जिन का पुख़्ता अ़ज़्म, ख़्वाहिशात और मक़्सूद न तो दुन्या और इस की लज़्ज़ात थीं और न ही नफ़्स की राह़त व ख़्वाहिशात। बल्कि इन की बुलन्द हिम्मतों की परवाज़ हमेशा बाक़ी रहने वाले ठिकाने की त़रफ़ थी। यक़ीनन इन का ज़िक्र क़ुरआने पाक में लिख दिया गया और इन को बिशारत दे दी गई :

إِنَّمَا يُرِيدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿٣٣﴾

(پ٢٢، الاحزاب:٣٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह *तो येही चाहता है ऐ नबी के घर वालो कि तुम से हर नापाकी दूर फ़रमा दे और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दे।* (1)

---

(1) .... मुफ़स्सिरे शहीर, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ह़ाफ़िज़ मुफ़्ती सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي "तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान" में इस आयए मुबारका के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी गुनाहों की नजासत से तुम आलूदा न हो। इस आयत से अहले बैत की फ़ज़ीलत षाबित होती है और अहले बैत में नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत फ़ात़िमा ज़हरा और अ़लिय्युल मुर्तज़ा और ह़सनैने करीमैन رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُم सब दाख़िल हैं। आयात व अह़ादीष को जम्अ़ करने से येही नतीजा निकलता है और येही ह़ज़रते इमाम अबू मन्सूर मातुरीदी رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मन्क़ूल है। इन आयात में अहले बैते रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को नसीह़त फ़रमाई गई है ताकि वोह गुनाहों से बचे और तक़्वा व परहेज़गारी के पाबन्द रहें।" (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पारह 22. अल अह़ज़ाब, तह़तुल आयत, 33)

www.dawateislami.net

इन दोनों मुबारक हस्तियों ने अपनी लज़्ज़ात के बिस्तर को छोड़ दिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत में मसरूफ़ हो गए, रात क़ियाम में तो दिन रोज़े की ह़ालत में बसर होता ह़त्ता कि तीन रोज़ इसी त़रह़ गुज़र गए। फिर वोह दोनों अपने बिस्तर पर आराम फ़रमा हुए। चौथे दिन ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** तआ़ला आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सलाम भेजता है और इरशाद फ़रमाता है कि **अ़ली (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ) और फ़ात़िमा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ने तीन दिन से नींद और बिस्तर को तर्क कर रखा है और इबादत और रोज़ों में मसरूफ़ हैं,** तुम उन के पास जाओ और उन से इरशाद फ़रमाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारी वजह से मलाइका पर फ़ख़्र फ़रमा रहा है और येह कि तुम दोनों बरोज़े क़ियामत गुनहगारों की शफ़ाअ़त करोगे।" आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़ौरन उन के घर तशरीफ़ लाए तो वहां ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को पाया तो इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "किस चीज़ ने तुझे यहां ठहराया है ? ह़ालांकि घर में एक मर्द भी मौजूद है।" अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! मैं ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ख़िदमत के लिये ह़ाज़िर हुई थी। इस पर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक

www.dawateislami.net

नमनाक (या'नी आंसूओं से तर–बतर) हो गईं और दुआ फ़रमाई : **"ऐ अस्मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तेरी दुन्या व आख़िरत की तमाम ह़ाजात पूरी फ़रमाए ।"**

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، الثامن والاربعون فی زواج علی بفاطمة...الخ، ص۲۷۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने जिस त़रह़ ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को अ़ज़मतो रिफ़्अ़त अ़त़ा फ़रमाई इसी त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की अवलाद को भी अ़ज़ीम शानों से नवाज़ा । अहले बैते पाक की अ़ज़मत तो देखिये कि एक त़रफ़ मां जन्नती औ़रतों की सरदार है तो दूसरी त़रफ़ बेटे जन्नती जवानों के सरदार । आइये ! ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की अवलादे पाक का ज़िक्रे ख़ैर भी मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये !

ख़ातूने जन्नत की अवलादे पाक

﴿1﴾.... सय्यिदुना इमामे ह़सन की विलादते बा सआ़दत

ख़ातूने जन्नत के बड़े शहज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा हैं, आप का इस्मे गिरामी ह़सन, कुन्यत अबू मुह़म्मद और अल्क़ाब सय्यिदे शबाबे अहले जन्नत, सब्त़ो रैह़ाने रसूल हैं । आप की विलादते बा सआ़दत 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हि. में हुई । हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप का नाम ह़सन रखा

www.dawateislami.net

फिर पैदाइश के सातवें दिन आप का अ़क़ीक़ा किया, बाल उतरवाए और हुक्म फ़रमाया कि बालों के वज़्न के बराबर चांदी सदक़ा की जाए। (اُسْدُ الْغَابَۃ فِی مَعْرِفَۃِ الصَّحَابَۃ، باب الحاء والسین،حسن بن علی، ج۲، ص۱۴-۱۳، ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना इमामे ह़सन की अज़्वाज व अवलाद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने 90 शादियां कीं। (تاریخ الخلفاء، ص۱۲۲)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की चन्द बीवियों के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

(1).... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे बशीर बिन्ते अबू मसऊ़द अन्सारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا)

(2)...ह़ज़रते सय्यिदतुना खौला बिन्ते मन्ज़ूर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(3)...ह़ज़रते सय्यिदतुना रमला बिन्ते सई़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(4).... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे इस्ह़ाक़ बिन्ते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चन्द शहज़ादों और शहज़ादियों के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1).... ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (2).... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (3).... ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (4).... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (5).... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (6).... ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

www.dawateislami.net

(7).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (8).... ह़ज़रते सय्यिदुना हुसैन इषरम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (9).....ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (10)..... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (11).... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا

(اَنْسَابُ الْاَشْرَاف، ج۳، ص۳۰۴ تا ۳۰۲، ملخّصاً)

सय्यिदुना इमामे ह़सन की शहादत

फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अह़मद अम्जदी अपनी किताब "**ख़ुत़्बाते मुहर्रम**" सफ़ह़ा 278 पर नक़्ल फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पेंतालीस (45) साल छे माह चन्द रोज़ की उ़म्र में ब मक़ामे मदीनए त़य्यिबा 5 रबीउ़ल अव्वल सि. 49 हि. में ज़ह्‌र ख़्वानी से शहादत नसीब पाई और जन्नतुल बक़ीअ़ में अपनी प्यारी अम्मी जान ख़ात़ूने जन्नत जिगर गोशए रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पहलू में मदफ़ून हुए। اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ۝

वोह ह़सने मुज्तबा सय्यिदुल अस्ख़िया   राकिबे दोशे इ़ज़्ज़त पे लाखों सलाम
शहद ख़्वारे लुआ़बे ज़बाने नबी   चाश्नी गीर इ़स्मत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾2﴿.... सय्यिदुना इमामे हुसैन की विलादते बा सआ़दत

आप का इस्मे गिरामी हुसैन, कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह और अल्क़ाब सय्यिदे शबाबे अहले जन्नत, सब्त़े रैह़ाने रसूल हैं। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादते बा सआ़दत 5 शा'बान सि. 4 हि. में हुई। हुज़ूर नबिय्ये करीम ने प्यारे शहज़ादे के कान में अज़ान इरशाद फ़रमाई और सातवें दिन आप का अ़क़ीक़ा किया गया।

(اسد الغابة، باب الحاء والسين، حسين بن علی، ج ۲، ص۲۵-۲۴، ملخصاً)

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की विलादत पर ह़ज़रते रूहुल अमीन ब हुक्मे रब्बुल आ़लमीन तहनिय्यते विलादत (या'नी पैदाइश की मुबारक बाद) के साथ ता'ज़ियत भी लाए। उस वक़्त हुज़ूर आप के गुलूए नाज़ को चूम रहे थे। रूहुल अमीन ने आबदीदा हो कर अ़र्ज़ किया कि इस बोसागाह पर छुरी चलेगी और येह क़ुर्रतुल ऐ़न ख़ुदा की राह में शहीद होगा। (اَوراقِ غم، ص ۲۷۰)

मरह़बा सरवरे आ़लम के पिसर आए हैं सय्यिदा फ़ात़िमा के लख़्ते जिगर आए हैं
वोह क़िस्मत के चराग़े ह़रमैन आए हैं ऐ मुसलमानो ! मुबारक कि हुसैन आए हैं

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

सय्यिदुना इमामे हुसैन की अज़्वाज व अवलाद

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कई शादियां कीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की चन्द बीवियों के नाम दर्जे ज़ैल हैं :

www.dawateislami.net

(1).... ह़ज़रते सय्यिदतुना लैला बिन्ते अबी मुर्रह उ़र्वा बिन मसऊ़द षक़फ़ी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (2).... ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे इस्ह़ाक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (3).... ह़ज़रते सय्यिदतुना रुबाब बिन्ते इम्रउल क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا । इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के चन्द शहज़ादों और शहज़ादियों के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1)... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली असग़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (اَنْسَابُ الْاَشْرَاف، ج۳، ص ۳۶۱، ۳۶۲ ملخّصاً) (3).... ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (ایضاً، ج۲، ص ۴۲۲) (4).... ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (5).... ह़ज़रते सय्यिदतुना सुकैना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (اَنْسَابُ الْاَشْرَاف، ج۳، ص ۳۶۱، ۳۶۲ ملخّصاً)

सय्यिदुना इमामे हुसैन की शहादत

सय्यिदुश्शुहदा, इमामे आ़ली मक़ाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की पैदाइश के साथ ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की शहादत की भी शोहरत आ़म हो गई थी। ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ दस मुह़र्रमुल ह़राम सि. 61 हि. ब रोज़ जुमुअ़तुल मुबारक अपने अहले बैते अत़हार और 72 जां निषारों के साथ मैदाने करबला में मर्तबए शहादत पर फ़ाइज़ हो कर सय्यिदुश्शुहदा के लक़ब से मुलक़्क़ब हुए। शहादते इमामे आ़ली मक़ाम की तफ़्सील दरकार हो तो सवानहे़ करबला, आईनए क़ियामत, करबला का ख़ूनीं मन्ज़र वग़ैरा कुतुब की त़रफ़ रुजूअ़ करें।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾3-4﴿ ...सय्यिदुना मोह़सिन व सय्यिदतुना रुक़य्या

ह़ज़रते सय्यिदुना मोह़सिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और ह़ज़रते सय्यिदतुना रुक़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल तो बचपन में ही हो गया था इस लिये तारीख़ो सीरत की किताबों में इन का तज़किरा न होने के बराबर है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾5﴿..... सय्यिदतुना ज़ैनब का ज़िक्रे ख़ैर

ह़ज़रते सय्यिदा ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बड़ी शहज़ादी हैं। इन की कुन्यत उम्मुल ह़सन थी और वाक़िअ़ए करबला के बा'द इन की कुन्यत उम्मुल मसाइब मशहूर हो गई थी।

सय्यिदा ज़ैनब का निकाह़

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी लख़्ते जिगर ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाह़ ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के साह़िब ज़ादे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया।

(اُسدُ الْغَابَۃِ فِی مَعْرِفَۃِ الصَّحَابَۃ، حرف الزای، زینب بنت علی، ج۷، ص۱۳۴)

www.dawateislami.net

सय्यिदा ज़ैनब की अवलाद

हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चार साहिबज़ादे थे जिन के नाम दर्जे ज़ैल हैं : (1).... हज़रते सय्यिदुना अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (2).... हज़रते सय्यिदुना औन अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (3).... हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ (4).... हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की एक साहिबज़ादी थी जिन का नाम हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا है । (ऐज़न)

﴾6﴿..... सय्यिदा उम्मे कुलषूम

ख़ातूने जन्नत की सब से छोटी साहिबज़ादी हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपनी बड़ी हमशीरा हज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के मुशाबेह थीं ।

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का निकाह

हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह फ़रमाया और हक़्क़े महर में 40,000 दिरहम दिये । जैसा कि रिवायत में है कि हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके़ आ'जम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने हज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को महर में 40,000 दिरहम दिये ।

(اُسْدُ الْغَابَۃِ فِی مَعْرِفَۃِ الصَّحَابَۃ، ج۷،حرف الکاف،ا م کلثوم بنت علی، ص۳۸۷)

www.dawateislami.net

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम की अवलाद

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बत़्ने मुबारक से ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का एक बेटा ज़ैद बिन उ़मर अक्बर और एक बेटी रुक़य्या पैदा हुई।

(اُسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ، ج۷، حرف الکاف، امکلثوم بنت علی، ص۳۷۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इन्तिक़ाल के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का निकाहे़ षानी ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना औ़न बिन जा'फ़र के इन्तिक़ाल के बा'द उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इन्तिक़ाल के बा'द उन के भाई ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हुवा।

(الطبقات الکبرٰی لابن سعد، تسمیۃ النساء اللواتی ---- الخ، ام کلثوم بنت علی، ج۸، ص۳۳۸)

सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का इन्तिक़ाले पुर मलाल

ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के निकाह़ में हुवा। ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا और उन के बेटे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) का इन्तिक़ाल एक ही साअ़त में हुवा।

(الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ، القسم الرابع، اُمِّ کلثوم بنت علی، ج۸، ص۳۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए सय्यिदैना अ़ली व फ़ातिमा के हुस्ने मुआ़शरत पर मुश्तमिल एक रिवायत पेश की जाती है :

अ़ली व फ़ातिमा कभी नाराज़ न हुए

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "एक इन्तिहाई ठंडी और शदीद सर्द सुब्ह़ रसूले ख़ुदा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे हां तशरीफ़ लाए। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हमें दुआ़ए ख़ैर से नवाज़ा और फिर ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से तन्हाई में पूछा : ऐ मेरी बेटी ! तू ने अपने शोहर को कैसा पाया ?" जवाब दिया : "वोह बेहतरीन शोहर हैं।" फिर आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को बुला कर इरशाद फ़रमाया : "अपनी ज़ौजा से नर्मी से पेश आना, बेशक फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا मेरे जिस्म का टुकड़ा है, जो चीज़ इसे दुख देगी मुझे भी दुख देगी और जो इसे ख़ुश करेगी मुझे भी ख़ुश करेगी, मैं तुम दोनों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं, और तुम दोनों को उस की ह़िफ़ाज़त में देता हूं। उस ने तुम से नापाकी दूर कर दी और तुम्हें पाक कर के ख़ूब सुथरा कर दिया।"

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस हुक्मे मुस्त़फ़ा के बा'द मैं ने न तो कभी ह़ज़रते फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर ग़ुस्सा किया न ही किसी बात पर उन्हें ना पसन्द किया यहां तक कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन को अपने पास बुला लिया, बल्कि वोह भी कभी मुझ से नाराज़ न हुई और न ही किसी बात में मेरी ना फ़रमानी की और जब भी मैं उन को देखता तो वोह मेरे दुख-दर्द दूर करती दिखाई देतीं ।"

(اَلرَّوْضُ الْفَائِق، المجلس الثامن والاربعون فی زواج علی بفاطمة......الخ، ص۲۷۸، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस से अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मह़ब्बत करें उस को अज़िय्यत व तक्लीफ़ से बचाना और हर दम उस को ख़ुश रखने की कोशिश करना हर सह़ीह़ुल अ़क़ीदा कामिल मुसलमान अपने ऊपर लाज़िम गरदानता (या'नी लाज़िम मानता) है, जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने नसीह़ते मुस्त़फ़ा पर कारबन्द रहते हुए अपने ऊपर लाज़िम कर लिया था कि बिन्ते रसूल ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا पर ग़ुस्से और ना पसन्दीदगी का इज़्हार नहीं करना । और इस ख़ुश गवार माह़ोल को मज़ीद तक़विय्यत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के त़र्ज़े अ़मल ने दी कि अपने शोहरे नामदार,

www.dawateislami.net

महबूबे ह़बीबे परवर दगार के दुख-दर्द दूर करने और उन को खुश रखने की कोशिश की, अगर बीवी सय्यिदए काइनात और शोहर मौलाए काइनात (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के तर्ज़े अ़मल को अपना लें तो घर ज़रूर अम्न का गहवारा बन जाएंगे।[1] क्यूंकि इन नुफ़ूसे कुदसिय्या (या'नी पाकबाज़ लोगों) की ह़याते त़य्यिबा (या'नी पाकीज़ा ज़िन्दगी) का हर हर पहलू तमाम मुसलमानों के लिये मश्अ़ले राह (या'नी रहनुमा) है। आप से गुज़ारिश है कि तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल को अपना कर इन ह़ज़राते वाला इ़ज़्ज़त के नक़्शे क़दम पर चलते हुए ज़िन्दगी गुज़ारना सीखें कि दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल बुराइयों से बचने और नेकियों पर कारबन्द रहने का ज़ेह्न देता है। इस मदनी माह़ोल को अपना कर मुआ़शरे के कई बिगड़े हुए अफ़राद सुधरने में काम्याब हो गए, जैसा कि

मैं ने मदनी बुर्क़अ़ कैसे अपनाया?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "इस्लामी बहनों की नमाज़" सफ़्हा 273 पर है : बाबुल मदीना (कराची) की एक

(1) .... अपने घरों को **अम्न का गहवारा** बनाने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की VCD "**घर अम्न का गहवारा कैसे बने ?**" खुद भी देखिये और घर वालों को भी दिखाइये।

www.dawateislami.net

इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा फ़ैशनेबल थी, फ़ोन के ज़रीए ग़ैर मर्दों से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, पड़ोस की शादियों में रस्मे मेहंदी वग़ैरा के मौक़अ़ पर मुझे ख़ास तौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ खुद रक़्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी डांडिया रास सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अकषर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं। बद क़िस्मती से घर में **T.V** बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था। रबीउ़न्नूर शरीफ़ की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में मक्तबतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन केसिटें थीं, इन में से एक बयान का नाम "क़ब्र की पहली रात" था खुश क़िस्मती से मैं ने येह केसेट सुनने की सआ़दत ह़ासिल की, क़ब्र का मर्ह़ला किस क़दर कठिन है, इस का एह़सास मुझे येह बयान सुन कर हुवा। मगर अफ़्सोस ! मेरे दिल पर गुनाहों की लज़्ज़त का इस क़दर ग़लबा था कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई। हां ! इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एह़सास होने लगा। कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में दा'वते इस्लामी की ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिलसिला **"ग्यारहवीं शरीफ़"** इजतिमाए ज़िक्रो ना'त का एहतिमाम किया। मुझे भी

www.dawateislami.net

शिर्कत की दा'वत दी गई। "क़ब्र की पहली रात" सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्चे मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार इजतिमाए ज़िक्रो ना'त में जाने का इरादा किया। मगर मेरी ह़माक़त कि ख़ूब मेक-अप कर के जदीद फ़ैशन का लिबास पहन कर इजतिमाअ़ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत **"या ग़ौष बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ"** पढ़ी गई। इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूं मैं दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शरीक होने लगी। मदनी आक़ा की दीवानियों की सोह़बतों की बरकत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हुई, तौबा की सआ़दत मिली। और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फ़ैशन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दूपट्टा भी ठीक त़रह़ से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अ़र्से में मदनी बुर्क़अ़ पहनने की सआ़दत पाने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आज मैं दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 193)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 7

ख़ातूने जन्नत और उम्रे ख़ानादारी

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत और उमूरे ख़ानादारी

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी बहनों की नमाज़**" सफ़ह़ा 170 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं कि ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है।

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی الصلاۃ علیہ وعلی الہ...الخ،ج ۱، ص ۲۵۰، الحدیث ۲۱۷۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अज़्दवाजी ज़िन्दगी

जिगर गोशए रसूल, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बतूल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا निकाह़ के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के दौलत ख़ाने में तशरीफ़ लाईं तो घर के तमाम कामों की ज़िम्मेदारी आप पर आ पड़ी । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने इस ज़िम्मेदारी को बड़े अह़सन अन्दाज़ में निभाया और हर त़रह़ के ह़ालात में अपने अ़ज़ीमुल मर्तबत शोहर का साथ दिया, चुनान्चे

घरेलू कामों की तक़्सीम

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़मरा बिन ह़बीब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उमूरे ख़ानादारी (मषलन चक्की पीसने, झाड़ू देने, खाना पकाने के काम वग़ैरा) अपनी शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के सिपुर्द फ़रमाए और घर से बाहर के काम (मषलन बाज़ार से सौदा सलफ़ लाना, ऊंट को पानी पिलाना वग़ैरा) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ज़िम्मे लगा दिये ।

(اَلْمُصَنَّف لِابْنِ اَبِیْ شَیْبَة، کتاب الزھد،کلام علی بن ابی طالب، ج۸، ص۱۵۷، الحدیث:۱۴)

एक रिवायत में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने अपनी वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा बिन्ते असद (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की : ''फ़ातिमतुज़्ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا) आप की ख़िदमत और घर के काम-काज किया करेंगी ।'' (اَلْاِصَابَةُ فِیْ تَمْیِیْزِ الصَّحَابَةِ، ج۸، ص۲۹۷)

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरत का मुतालआ करने से पता चलता है कि आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ख़ानादारी के कामों की अन्जाम देही के लिये कभी किसी रिश्तेदार या हमसाई को अपनी मदद के लिये नहीं बुलाती थीं। न काम की कषरत और न किसी क़िस्म की मेहनत व मशक़्क़त से घबराती थीं। सारी उम्र शोहर के सामने हर्फ़े शिकायत ज़बान पर न लाईं और न उन से किसी चीज़ की फ़रमाइश की। खाने का उसूल येह था कि चाहे ख़ुद फ़ाक़े से हों जब तक शोहर और बच्चों को न खिला लेतीं ख़ुद एक लुक़्मा भी मुंह में न डालतीं।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हैदरे कर्रार, शेरे ख़ुदा हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शहज़ादी, जन्नती औरतों की सरदार हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने घर में काम के लिये ख़ादिम नहीं रखा बल्कि अपने घर के काम ख़ुद किया करती थीं। हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में आए कि वोह और दौर था अब और ज़माना है। तो सुनिये कि इस दौर की अज़ीम रूहानी शख़्सिय्यत शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के घर में कभी कोई काम करने वाली नहीं रखी गई, इस में हर इस्लामी बहन, बिल ख़ुसूस अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की मुरीद, तालिब या मुहिब्ब इस्लामी बहनों

www.dawateislami.net

के सीखने के लिये बहुत कुछ है। याद रहे ! **फ़ारिग़ दिमाग़ शैत़ान का कारख़ाना होता है** तो ज़ियादा मुनासिब येही है कि घर के काम–काज में लगी रहें, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : करने के काम करो, वरना न करने के कामों में पड़ जाओगे।

घर के काम-काज करने के फ़ाइदे

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रिज़ाए ख़ुदा व मुस्त़फ़ा की ख़ात़िर घर का काम–काज ख़ुद किया करें। घर के काम करने के भी बहुत से फ़ाइदे हैं और इस से भी बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करता है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 75 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**सीरते सय्यिदुना अबू दरदा**" सफ़ह़ा 62 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की त़रफ़ एक मक्तूब रवाना फ़रमाया जिस में येह भी था कि ऐ मेरे भाई ! मुझे मा'लूम हुवा है कि तूने एक ख़ादिम ख़रीदा है। मैं ने **अल्लाह** के ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना है कि "बन्दा जब तक किसी ख़ादिम से मदद नहीं लेता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के क़रीब होता रहता है और जब वोह किसी ख़ादिम से ख़िदमत लेता है तो इस पर उस का ह़िसाब लाज़िम हो जाता है।" मेरी ज़ौजा ने मुझ से एक ख़ादिम रखने का मुत़ालबा किया था लेकिन ह़िसाब के ख़ौफ़ से मैं ने उसे ना पसन्द जाना, ह़ालांकि मैं उन दिनों मालदार था।

(حلیۃ الاولیاء، ابو الدرداء، ج ۱، ص ۲۷۴، رقم ۷۰۲)

www.dawateislami.net

ज़रा हम अपना मुहा़सबा भी कर लें कि हमारी कैफ़िय्यत क्या है ? और याद रखिये कि ख़ा़तूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का घर का काम ख़ुद करना शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہٖ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मरज़ी व मन्शा के मुता़बिक़ था। यक़ीनन जो काम शाहे ख़ै़रुल अनाम, मह़बूबे रब्बुल अनाम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہٖ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पसन्द फ़रमाएं वोह रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भी पसन्दीदा और मह़बूब है। अब ज़रा गौ़र फ़रमाइये कि जिस काम में ख़ुदा व मुस्तफ़ा عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुश्नूदी हो उस से जी चुराना, जान छुड़ाना, सुस्ती करना कैसा ? घर में काम-काज की बरकत से भाई बहनों और मां बाप की मन्ज़ूरे नज़र बन जाएंगी। शादीशुदा हैं तो शोहर, नन्द और सास के दिलों में जगह बन जाएगी। अगर पहले से ही काम करने की आ़दत पड़ेगी तो शादी के बा'द घर संभालना आसान होगा और घर अम्न का गहवारा बन जाएगा, कई नादान वालिदैन अपनी बच्चियों को काम नहीं करने देते। नतीजतन उन्हें खाना पकाने, बरतन धोने, कपड़े धोने, कपड़े सीने की तर्बिय्यत नहीं होती और शादी के बा'द आज़माइश होती है।

घर में काम वाली रख सक्ते हैं या नहीं ?

अब येह भी मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये कि घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं। चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के

www.dawateislami.net

इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 161 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ फ़तावा रज़विय्या के ह़वाले से फ़रमाते हैं :

सुवाल : घर में **"काम वाली"** रख सकते हैं ?

जवाब : रख तो सकते हैं मगर 5 शराइत़ के साथ ......

(1).... कपड़े बारीक न हों जिन से सर के बाल या कलाई वग़ैरा सित्र का कोई ह़िस्सा चमके। (2).... कपड़े तंगो चुस्त न हों जो बदन की हैअत (या'नी सीने का उभार या पिन्डली वग़ैरा की गोलाई वग़ैरा) ज़ाहिर करें। (3).... बालों या गले या पेट या कलाई या पिन्डली का कोई ह़िस्सा ज़ाहिर न होता हो। (4).... कभी ना मह़रम के साथ ख़फ़ीफ़ (या'नी मा'मूली सी) देर के लिये भी तन्हाई न होती हो। (5).... उस के वहां रहने या बाहर आने जाने में कोई मज़िन्नए फ़ितना (फ़ितने का गुमान) न हो। येह पांचों शर्तें अगर जम्अ़ हैं तो ह़रज नहीं। (फ़तावा रज़विया, जि. 22, स. 248)

---

(1) .... किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" पर्दे के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन किताब है, अपने मौज़ूअ़ पर जामेअ़ और बहुत आ़म फ़हम है, हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन के लिये यक्सां मुफ़ीद है, अपने शहर के मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये या फिर दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से पढ़ लीजिये या प्रिन्ट आऊट कर लीजिये।

www.dawateislami.net

मगर इन पांच शराइत़ पर अ़मल फ़ी ज़माना मुश्किल तरीन है। अगर बे पर्दगी करने वाली हुई तो घर के मर्दों का बद निगाहियों में ले जाने वाली ह़रकतों से बचना सख़्त दुश्वार होगा बल्कि مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ घर की पर्दा नशीन ख़्वातीन के अख़्लाक़ भी तबाह कर देगी। ग़ैर औ़रत के साथ मर्द की ख़फ़ीफ़ या'नी मा'मूली सी तन्हाई भी ह़राम है और घर में रहने वाले मर्द का आज कल इस से बचना तक़रीबन ना मुमकिन होता है। लिहाज़ा घर में काम वाली न रखने ही में आ़फ़िय्यत है।

बा'ज़ काम करने वालियां ऐसी भी होती हैं कि घरों में चोरियां करती हैं, मोबाइल ले जाती हैं, घरों में नाचाक़ियों का सबब बनती हैं, बे पर्दगी का सबब बनती हैं, बसा अवक़ात घरों में डकेतियों का बाइ़ष बनती हैं, घर वाली को नशा आवर चीज़ पिला कर सोने के ज़ेवरात ले उड़ती हैं, **अगर्चे सारी ऐसी नहीं होतीं, मगर ऐसी भी होती हैं,** तो काम वालियों या काम वालों से बचने में ही आ़फ़िय्यत है।

ख़ालिक़ की ना फ़रमानी में किसी की इताअ़त जाइज़ नहीं

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है, सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़े गन्जीना, साह़िबे

www.dawateislami.net

मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : ''لَا طَاعَةَ فِیْ مَعْصِيَةِ اللهِ اِنَّمَا الطَّاعَةُ فِی الْمَعْرُوْفِ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नहीं, इत़ाअ़त तो सिर्फ़ नेकी के कामों में है।''

(صَحِیْح مُسْلِم،کتاب الامارہ،باب وجوب طاعۃ الامراء فی غیر...الخ، ص۱۰۲۳،الحدیث:۱۸۴۰)

इस ह़दीषे पाक में इरशाद फ़रमूदा लफ़्ज़ ''मा'रूफ़'' की ता'रीफ़ बयान करते हुए मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : मा'रूफ़ वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ न करे, मा'सिय्यत वोह काम है जिसे शरीअ़त मन्अ़ फ़रमा दे।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب الامارۃ والقضاء، ج۵، ص۳۴۰)

अगर आप का घर से निकलना ज़रूरी हो तो शरई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढीला ढाला मदनी बुर्क़अ़ ओढ़े, हाथों में दस्ताने और पाउं में जुराबें पहने। मगर दस्तानों और जुराबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके। जहां कहीं ग़ैर मर्दों की नज़र पड़ने का इमकान हो वहां चेहरे से निक़ाब न उठाए मषलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली मह़ल्ले वग़ैरा। नीचे की त़रफ़ से भी इस त़रह़ बुर्क़अ़ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर ग़ैर मर्दों की नज़र पड़े। वाज़ेह़ रहे कि औ़रत के सर से ले कर पाऊं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई भी ह़िस्सा मषलन सर के बाल या बाज़ू या कलाई या

www.dawateislami.net

गला या पेट या पिन्डली वग़ैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो) पर बिला इजाज़ते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उ़ज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वग़ैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्टा इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो वज़ए़ लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व त़रीक़ए पौशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औ़रात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाज़ू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई ह़िस्सा खुला हो यूं तो सिवा ख़ास मह़ारिम के जिन से निकाह़ हमेशा को ह़राम है किसी के सामने होना सख़्त ह़रामे क़त़ई है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 217)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जहन्नम में औ़रतों की कषरत

आह ! औ़रतों में बे पर्दगी और गुनाहों की कषरत होना इनतिहाई तशवीशनाक है, ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम का अ़ज़ाब बर्दाश्त नहीं हो सकेगा। "सह़ीह़ मुस्लिम" में है : हु़ज़ूर नबिय्ये

www.dawateislami.net

करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे इब्रत बुन्याद है : मैं ने जहन्नम में मुलाहज़ा फ़रमाया कि औरतें जहन्नम में ज़ियादा हैं ।

(صحیح مُسلِم،کتاب الرقاق،باب اکثراهل الجنة الفقراء۔۔الخ، ص۱۴۶۴، الحدیث:۲۷۳۷)

येह शर्हे आयए इस्मत है जो है बेश न कम दिलो नज़र की तबाही है कुर्बे ना महरम

हया है आंख में बाक़ी न दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बहुत दिनों से निज़ामे हयात है बरहम

येह सैरगाहें कि मक़्तल हैं शर्मो ग़ैरत के येह मा'सिय्यत के मनाज़िर हैं ज़ीनते आलम

येह नीम बाज़ सा बुर्क़अ़ येह दीदा ज़ैब निक़ाब झलक रहा है झला-झल क़मीस का रेशम

न देख रश्क से तहज़ीब की नुमाइश को कि सारे फूल येह काग़ज़ के हैं ख़ुदा की क़सम !

वोही है राह तेरे अ़ज़्मो शौक़ की मंज़िल जहां हैं आइशा व फ़ातिमा के नक़्शे क़दम

तेरी हयात है किरदारे राबिआ़ बसरी

तेरे फ़साने का मौज़ूअ़ इस्मते मरयम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

घर ख़ुशियों का गहवारा कैसे बने ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और महब्बत भरा माहोल क़ाइम करने का एक त़रीक़ा येह है कि घर के तमाम अफ़राद अपने सिपुर्द कामों को

www.dawateislami.net

सर अन्जाम दें अगर ऐसा हो जाए तो किसी को भी शिकायत नहीं होगी और घर का निज़ाम अच्छे त़रीक़े से चलता रहेगा और घर में मदनी माह़ोल भी बन जाएगा। लगे हाथों घर में मदनी माह़ोल बनाने के मदनी फूल भी मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले "**ख़ामोश शहज़ादा**" सफ़ह़ा 39 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

"या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना" के उनीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में मदनी माह़ोल बनाने के 19 मदनी फूल

(1)..... घर में आते जाते बुलन्द आवाज़ से सलाम कीजिये।

(2)..... वालिदा या वालिद साह़िब को आते देख कर ता'ज़ीमन खड़े हो जाइये।

(3)..... दिन में कम अज़ कम एक बार इस्लामी भाई वालिद साह़िब के और इस्लामी बहनें मां के हाथ और पाऊं चूमा करें।

(4)..... वालिदैन के सामने आवाज़ धीमी रखिये, इन से आंखें हरगिज़ न मिलाइये, नीची निगाहें रख कर ही बात कीजिये।

(5)..... इन का सोंपा हुवा हर वोह काम जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो फ़ौरन कर डालिये।

(6).... सन्जीदगी अपनाइये। घर में तू तुकार, अबे तबे, और मज़ाक

www.dawateislami.net

मस्ख़री करने, बात-बात पर ग़ुस्से हो जाने, खाने में ऐ़ब निकालने, छोटे भाई बहनों को झाड़ने, मारने, घर के बड़ों से उलझने, बहषें करते रहने की अगर आप की आ़दतें हों तो अपना रविय्या यक्सर तब्दील कर दीजिये, हर एक से मुआ़फ़ी तलाफ़ी कर लीजिये।

(7).... घर में और बाहर हर जगह आप सन्जीदा हो जाएंगे तो إن شاء الله عزوجل घर के अन्दर (और बाहर) भी ज़रूर इस की बरकतें ज़ाहिर होंगी।

(8).... मां बल्कि बच्चों की अम्मी हो तो उसे नीज़ घर (और बाहर) के एक दिन के बच्चे को भी ''आप'' कह कर ही मुख़ाति़ब हों।

(9).... अपने मह़ल्ले की मस्जिद में इ़शा की जमाअ़त के वक़्त से ले कर दो घन्टे के अन्दर अन्दर सो जाइये। काश ! तहज्जुद में आंख खुल जाए। वरना कम अज़ कम नमाज़े फ़ज्र तो ब आसानी (मस्जिद की पहली सफ़ में बा जमाअ़त) मुयस्सर आए और फिर काम-काज में भी सुस्ती न हो।

(10).... घर के अफ़राद में अगर नमाज़ों की सुस्ती, बे पर्दगी, फ़िल्मों ड्रामों और गानों बाजों का सिलसिला हो और आप अगर सरपरस्त नहीं हैं, नीज़ ज़न्ने ग़ालिब है कि आप की नहीं सुनी जाएगी तो बार बार टोका-टोक के बजाए सब को नर्मी के साथ मक्तबतुल मदीना से जारी शुदा सुन्नतों भरे बयानात की ऑडियो केसिटें सुनाइये, विडियो सीडीज़ दिखाइये, मदनी चैनल दिखाइये, إن شاء الله عزوجل ''मदनी नताइज'' बर आमद होंगे।

(11).... घर में कितनी ही डांट बल्कि मार भी पड़े सब्र सब्र और सब्र कीजिये। अगर आप ज़बान चलाएंगे तो ''मदनी माह़ोल'' बनने की कोई उम्मीद नहीं बल्कि मज़ीद बिगाड़ पैदा हो सकता

www.dawateislami.net

है कि बे जा सख़्ती करने से बसा अवक़ात शैत़ान लोगों को ज़िद्दी बना देता है।

(12).... मदनी माह़ोल बनाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ येह भी है कि घर में रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स ज़रूर, ज़रूर, ज़रूर दीजिये या सुनिये।

(13).... अपने घर वालों की दुन्या व आख़िरत की बेहतरी के लिये दिल सोज़ी के साथ दुआ़ भी करते रहिये कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है ''اَلدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ'' या'नी दुआ़ मोमिन का हथियार है।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاكِم، کتاب الدعاء والتکبير والتهليل...الخ، باب الدعاء سلاح المومن...الخ، ج۲، ص۱۲۲، الحديث:۱۸۵۵)

(14).... सुसराल में रहने वालियां जहां घर का ज़िक्र है वहां सुसराल और जहां वालिदैन का ज़िक्र है वहां सास और सुसर के साथ वोही हुस्ने सुलूक बजा लाएं जब कि कोई मानेए़ शरई न हो। हां ! येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि बहू सुसर के हाथ-पाउं न चूमे, यूंही दामाद सास के।

(15).... ''मसाइलुल क़ुरआन'' में है हर नमाज़ के बा'द येह दुआ़ अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ एक बार पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ बाल बच्चे सुन्नतों के पाबन्द बनेंगे। और घर में मदनी माह़ोल क़ाइम होगा। (दुआ़ येह है :)

(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا۝ (پ۱۹، الفرقان:۷۴)

www.dawateislami.net

(اَللّٰھُمَّ आयते कु़रआनी का हि़स्सा नहीं) या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी अवलाद से आंखों की ठंडक और हमें परहेज़गारों का पेश्वा बना ।

(مسائلُ القران،چند قرآنی اعمال، ص۲۸۲)

(16).... ना फ़रमान बच्चा या बड़ा जब सोया हो तो 11 या 21 दिन तक उस के सिरहाने खड़े हो कर येह आयाते मुबारका सिर्फ़ एक बार इतनी आवाज़ से पढ़िये कि उस की आंख न खुले

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ بَلۡ ہُوَ قُرۡاٰنٌ مَّجِیۡدٌ ﴿۲۱﴾ فِیۡ لَوۡحٍ مَّحۡفُوۡظٍ ﴿۲۲﴾ (پ۳۰، البروج: ۲۱، ۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह *के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला । बल्कि वोह कमाले शरफ़ वाला कु़रआन है लौहे़ मह़फ़ूज़ में ।*

(अव्वल व आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़) याद रहे ! बड़ा ना फ़रमान हो तो सोते सोते सिरहाने वज़ीफ़ा पढ़ने में उस के जागने का अन्देशा है ख़ुसूसन जब कि उस की नींद गहरी न हो, येह पता चलना मुश्किल है कि सिर्फ़ आंखें बन्द हैं, या सो रहा है लिहाज़ा जहां फ़ितने का ख़ौफ़ हो वहां येह अ़मल न किया जाए, ख़ास कर बीवी अपने शोहर पर येह अ़मल न करे ।

(17).... नीज़ ना फ़रमान अवलाद को फ़रमां बरदार बनाने के लिये ता हु़सूले मुराद नमाज़े फ़ज्र के बा'द आस्मान की त़रफ़ रुख़ कर के "یَا شَہِیۡدُ" 21 बार पढ़िये (अव्वल व आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

(18).... मदनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल की आ़दत बनाइये और घर के जिन अफ़राद के अन्दर नर्म गोशा पाएं उन में, और आप अगर बाप हैं तो अवलाद में नर्मी और हि़कमते अ़मली के

www.dawateislami.net

साथ मदनी इन्आ़मात का निफ़ाज़ कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से घर में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाएगा।

(19).... पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कर के घर वालों के लिये भी दुआ़ कीजिये। मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की बरकत से भी घरों में मदनी माह़ोल बनने की "**मदनी बहारें**" सुनने को मिलती हैं।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ख़ादिम के लिये दरख़्वास्त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि जनाबे सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं उस तक्लीफ़ की शिकायत करने जो इन के हाथ को चक्की से पहुंचती थी इन्हें जब ख़बर मिली थी कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ग़ुलाम आए हैं। इन्हों ने हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न पाया तो ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से येह क़िस्सा अ़र्ज़ किया। मज़ीद फ़रमाते हैं कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए जब कि हम बिस्तर पकड़ चुके थे तो हम उठने लगे तो फ़रमाया : अपनी जगह रहो। तशरीफ़ लाए, मेरे और फ़ात़िमतुज़्ज़हरा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के दरमियान बैठ गए। ह़त्ता कि

www.dawateislami.net

मैं ने हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم के क़दम की ठंडक अपने पेट पर महसूस की। फ़रमाया : "मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज़ न बता दूं ? जब तुम अपने बिस्तर लो तो 33 बार سُبْحٰنَ اللہ 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 34 बार اَللّٰہُ اَکْبَر पढ़ लो, येह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है।"

(مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح،کتاب الدعوات،باب مایقول عند الصباح والمساء والمنام، ج ۱، ص۴۴۶، الحدیث:۲۳۸۷)

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह"** जिल्द 4 सफ़्हा 7 पर इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم की सब से छोटी प्यारी-चहीती साहिबज़ादी थीं, शादी से पहले काम-काज न किया था। हज़रते अली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हां आ कर तमाम काम करने पड़े, काम से कपड़े काले और चक्की से हाथों में छाले पड़ गए थे जो फूट कर ज़ख़्म बन गए थे।

(जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم की बारगाह में हाज़िर हुईं) उस दिन हुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم का क़ियाम हज़रते उम्मुल मोअमिनीन आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के घर था, इस लिये ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا उन्हीं के घर तशरीफ़ लाईं, मगर इत्तिफ़ाक़न हुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلّم बाहर थे। दौलत ख़ाने में न थे इस लिये वालिदए माजिदा से अर्ज़ कर के वापस हो गईं।

www.dawateislami.net

पर न थे दौलत कदे में शाहे दीं

वालिदा से अ़र्ज़ कर के आ गई

ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बताया था कि आज क़ैदी ग़ुलाम हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हां आए हैं, हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ुलाम बांट रहे हैं एक लौंड़ी तुम भी हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मांग लो जो घर का काम–काज करे।

घर में जब आए ह़बीबे किब्रिया　　वालिदा ने माजरा सारा कहा

फ़ात़िमा छाले दिखाने आई थीं　　घर की तक्लीफ़ें सुनाने आई थीं

एक लौंडी आप अगर इन को भी दें　　चक्की और चूलहे के दुख से वोह बचें

हु़ज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने न तो ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को कुछ जवाब दिया न दिन में ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ लाए, रात को सोते वक़्त तशरीफ़ लाए तो बिस्तरे फ़ात़िमतुज़्ज़हरा पर इस त़रह़ तशरीफ़ फ़रमा हुए कि एक क़दम ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर था दूसरा जनाबे अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सीनए पुर अन्वार पर, उस सीने के क़ुरबान जो क़दमे रसूल चूमे। मुफ़्ती साह़िब ह़दीषे मुबारक के इस ह़िस्से "**मैं तुम्हें तुम्हारे सुवाल से बेहतर चीज़ न बता दूं?**" के तह़्त फ़रमाते हैं : "या'नी लौंडी ख़ादिम का फ़ाइदा तुम को सिर्फ़ दुन्या में पहुंचे मगर इस दुआ़ का फ़ाइदा दुन्या, क़ब्र, ह़श्र

www.dawateislami.net

हर जगह पाओगी, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें ख़ादिम क्यूं न अ़ता फ़रमाया।"

शब को आए मुस्त़फ़ा ज़हरा के घर — और कहा दुख़्तर से ऐ जाने पिदर
हैं येह ख़ादिम उन यतीमों के लिये — बाप जिन के जंग में मारे गए
तुम पे साया है रसूलुल्लाह का — आसरा रख फ़क़त ***अल्लाह*** *का*

मुफ़्ती साहिब ह़दीषे मुबारक के इस हिस्से **जब तुम अपने बिस्तर लो तो 33 बार سُبْحٰنَ اللہ 33 बार اَلْحَمْدُ لِلّٰہ और 34 बार اَللّٰہُ اَکْبَر पढ़ लो, येह तुम्हारे लिये ख़ादिम से बेहतर है।** के तह़त फ़रमाते हैं : इस का नाम **तस्बीहे फ़ात़िमा** है जो तमाम सिलसिलों में ख़ुसूसन **सिलसिलए क़ादिरिया** में बहुत मा'मूल है, इस तस्बीह़ के लिये आ़म तस्बीह़ों में हर 33 दाने पर छोटा इमाम पड़ा होता है।

(مراٰۃ المناجیح، کتاب الدعوات، باب مایقول عند الصباح......الخ، ج۴، ص۸)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि मुहाजिर फ़ुक़रा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर बोले कि मालदार बड़े दर्जे और दाइमी ने'मत ले गए। फ़रमाया : येह कैसे ? अ़र्ज़ किया : जैसे हम नमाज़ें पढ़ते हैं वोह भी पढ़ते हैं, जैसे हम रोज़े रखते हैं वोह भी रखते हैं जब कि वोह ख़ैरात करते हैं हम नहीं करते, वोह ग़ुलाम आज़ाद करते हैं हम नहीं करते। तो हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें वोह चीज़ न

www.dawateislami.net

सिखाऊं जिस से तुम आगे वालों को पकड़ लो और पीछे वालों से आगे बढ़ जाओ और तुम में से कोई अफ़्ज़ल न हो उस के सिवा जो तुम्हारे से काम करे ? बोले : हां ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! फ़रमाया : हर नमाज़ के बा'द 33-33 बार तस्बीह़, तक्बीर और ह़म्द करो। ह़ज़रते अबू सालेह़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ कहते हैं कि फिर मुहाजिर फ़ुक़रा हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में लौटे और अ़र्ज़ किया : हमारे इस अ़मल को हमारे मालदार भाइयों ने सुन लिया तो उन्हों ने भी यूं ही किया तब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है जिसे चाहे दे।

(السنن الکبری للبیہقی، کتاب الصلاۃ، باب الترغیب فی مکث المصلی......الخ، ج۲، ص۲۶۵، ۳۰۲۲، ملتقطاً)

ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى "**मिरक़ात शरहे मिश्कात**" में फ़रमाते हैं : सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो तस्बीह़ात पढ़ने की ता'लीम फ़रमाई इस में येह ह़िक्मत भी है कि सोते वक़्त इन तस्बीह़ात के पढ़ने से दिन के काम-काज की थकन और दर्दो आलाम दूर हो जाते हैं।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيْح شَرْح مِشْكَاةُ الْمَصَابِيْح،کتاب الدعوات، باب ما یقول عند الصباح والمساء والمنام، ج۵، ص۳۰۰)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस्लामी बहनों के लिये जो 63 मदनी इन्आ़मात अ़त़ा फ़रमाए हैं इन में मदनी इन्आ़म नम्बर 3 में है : "**क्या आज आप ने नमाज़े पंजगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम**

www.dawateislami.net

एक एक बार आयतुल कुर्सी, सूरए इख़्लास और तस्बीहे फ़ातिमा पढ़ी ? नीज़ रात में सूरतुल मुल्क पढ़ या सुन ली ?"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अगर आज से पहले सुस्ती थी तो अब निय्यत फ़रमा लीजिये और न सिर्फ़ तस्बीहे फ़ातिमा की बल्कि अमीरे अहले सुन्नत के अ़ता कर्दा तमाम मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की निय्यत कीजिये और मक्तबतुल मदीना के बस्ते से मदनी इन्आ़मात का रिसाला ह़ासिल कर के इस के मुत़ाबिक़ अपना मुह़ासबा फ़रमाइये ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तर्बिय्यत व ता'लीम का ख़ज़ाना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा ह़दीषे पाक में आप ने सुना कि सय्यिदा फ़ातिमा ने ख़ादिम की दरख़्वास्त की तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें प्यारे प्यारे मदनी फूल अ़ता फ़रमाए । शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِی **मिरआतुल मनाजीह** जिल्द 4 सफ़ह़ा 8 पर ह़दीषे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : मां बाप को चाहिये कि अपनी अवलाद को मेह़नती, आ़बिद, ज़ाहिद, मुत्तक़ी बनाएं, उन्हें सिर्फ़ मालदार करने की कोशिश न करें । लड़की के लिये बेहतरीन जहेज़ आ'माले सालेह़ा हैं न की सिर्फ़ माल ।

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح شَرْح مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح،کتاب الدعوات، باب مایقول عند الصباح......الخ، ج٤، ص٨)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ख़ातूने जन्नत और घरेलू काम-काज

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मेरे पास अपने हाथ से चक्की पीसती थीं जिस की वजह से हाथों में निशान पड़ गए थे और ख़ुद पानी की मशक भर कर लाती थी जिस की वजह से सीने पर मशक की रस्सी के निशान पड़ गए थे और घर में झाड़ू वग़ैरा ख़ुद ही देती थीं जिस की वजह से तमाम कपड़े मैले हो जाया करते थे।

(سُنَنُ اَبِیْ داود،کتاب الادب،باب فی التسبیح عند النوم، ص۷۹۰، الحدیث:۵۰۶۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर का काम-काज अपने हाथों से करना जिगर गोशए ताजदारे रिसालत, ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल ह़सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सुन्नते मुबारका है। इस्लामी बहनें अपने काम ख़ुद करेंगी तो उन का घर ख़ुशियों का गहवारा बन जाएगा। अपने बच्चों के अब्बू के सोंपे हुए काम भी करें और अपनी सास के सोंपे हुए काम भी करें। अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपनी बेटी की इसी त़रह़ तर्बिय्यत फ़रमाई, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 86 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**सुन्नते निकाह़**" सफ़ह़ा 48 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ह़वाले से मन्क़ूल है :

www.dawateislami.net

घर को खुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत संवारने के लिये "अत्तार" की तरफ़ से "बिन्ते अत्तार" के लिये 12 मदनी फूल

《1》.... शोहर की त़रफ़ से मिलने वाला हर हुक्म जो ख़िलाफ़े शरअ़ न हो, बजा लाना ज़रूरी है।

《2》.... अपने शोहर और सास का खड़े हो कर इस्तिक़्बाल कीजिये और खड़े हो कर ही रुख़्सत भी कीजिये।

《3》.... दिन में कम अज़ कम एक बार (मुमकिन हो तो) सास की दस्त बोसी कीजिये।

《4》.... अपनी सास और सुसर का वालिदैन की त़रह़ इकराम कीजिये। इन की आवाज़ के सामने अपनी आवाज़ पस्त रखिये। इन के और अपने शोहर के सामने ''जी जनाब'' से बात कीजिये।

《5》.... शोहर ज़रुरतन सज़ा देने का मजाज़ है।(1) ऐसा हो तो

---

(1).... मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी علیہ رحمۃ اللہ الغنی सूरतुन्निसा की आयत नम्बर 34 के तह़्त लिखते हैं : रब्ब तआ़ला ने यहां इन की (या'नी बीवियों की) इस्लाह़ की तीन सूरतें बयान फ़रमाईं : (1).... नसीह़त करना (2).... बाइकॉट करना (3).... मारना। (मज़ीद लिखते हैं :) ना फ़रमानी पर ख़ावन्द मार सकता है मगर इस्लाह़ की मार मारे न कि ईज़ा (या'नी तक्लीफ़ देने) की जैसे शागिर्द को उस्ताद या अवलाद को मां बाप इस्लाह़ के लिये मारते हैं। बिला कुसूर बीवी को मारना सख़्त ममनूअ़ है जिस की पकड़ रब्ब عزوجل के हां ज़रूर होगी। (تفسیرِ نعیمی، پ۵، النساء تحت الآیہ ۳۴، ج۵، ص ۷۰، ملتقطاً) बहारे शरीअ़त में है : ''बीबी नमाज़ न पढ़े तो शोहर उस को मार सकता है इसी त़रह़ तर्के ज़ीनत पर भी मार सकता है और (बिला इजाज़त) घर से बाहर निकल जाने पर भी मार सकता है।'' (बहारे शरीअ़त, मुतफ़र्रिक़ात, जि. 3 हिस्सा. 16 स. 655)

www.dawateislami.net

सब्रो तहम्मुल का मुज़ाहरा कीजिये, **गु़स्सा** कर के या ज़बान दराज़ी कर के घर से रूठ कर आ जाने की सूरत में **आप पर "मैके" के दरवाज़े बन्द हैं।**

﴾**6**﴿....हां ! बिग़ैर रूठे शोहर की इजाज़त की सूरत में जब चाहें मैके आ सकती हैं।

﴾**7**﴿.... अपने मैके की कोताहियां शोहर को बता कर **ग़ीबत** के गुनाहे कबीरा में न ख़ुद मुब्तला हों न अपने शोहर को "**सुनने**" के गुनाहे कबीरा में मुलव्वष करें।

﴾**8**﴿.... अपनी बे अ़मली या ला इ़ल्मी को ढांपने के लिये इस त़रह़ कह देना कि मुझे तो वालिदैन ने येह नहीं सिखाया सख़्त ह़माक़त है।

﴾**9**﴿.... बहारे शरीअ़त ह़िस्सा **7** से "नान-नफ़क़ा का बयान" "ज़ौजैन के ह़ुक़ूक़" वग़ैरा का मुत़ालआ़ कर लीजिये।

﴾**10**﴿.... अपने लिये किसी क़िस्म का "सुवाल" अपने शोहर से कर के उन पर बोझ मत बनना। हां ! अगर वोह मुक़र्रर कर्दा ह़ुक़ूक़ अदा न करें तो मांग सकती हैं।

﴾**11**﴿.... मेहमान की ख़िदमत सआ़दत समझ कर करना, इस के अख़राजात के मुआ़मले में शोहर पर बे जा बोझ मत डालना। अपने वालिद (या'नी सगे मदीना) से त़लब कर लेना, إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मायूसी नहीं होगी और अगर वोह ख़ुश दिली से रिज़ामन्द हों तो उन की सआ़दत मन्दी होगी।

www.dawateislami.net

《12》.... शोहर की इजाज़त के बिग़ैर घर से न निकलें।

(इस्लामी बहनों को चाहें तो तोह़फ़े में इस तह़रीर की फ़ोटो कॉपी दे सकती हैं)

(3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सि. 1418 हि.)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हुक़ूक़े ज़ौजैन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! घर को चलाने और इस को ख़ुशियों का गहवारा बनाने में मियां और बीवी का बहुत किरदार है। अगर दोनों अपनी अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करें तो घर ख़ुशियों का गहवारा बन सकता है। मियां-बीवी के दरमियान हर एक के दूसरे पर बहुत से हुक़ूक़ वाजिब हैं इन में जो अपने हुक़ूक़ अदा न करेगा अपने गुनाह में गिरिफ़्तार होगा, अगर बीवी या शोहर में से एक ह़क़ अदा न करे तो दूसरा इसे दलील बना कर उस के ह़क़ की अदाएगी को नहीं छोड़ सकता। लिहाज़ा मियां-बीवी के हुक़ूक़ पर मुश्तमिल चन्द अह़ादीषे मुबारका पेश की जाती हैं।

"हुक़ूक़े शोहर" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से शोहर के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा

《1》..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर मैं किसी

www.dawateislami.net

शख़्स को किसी के लिये सज्दा करने का हुक्म देता तो औ़रत को हुक्म देता कि वोह अपने शोहर को सज्दा करे ।

(اَلْمُسْتَدْرَک لِلْحَاکِم، کتاب البر والصلۃ، حق الزوج علی الزوجۃ، ج۵، ص ۲۴۰، الحدیث:۷۴۰۶)

﴾2﴿...... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर आदमी का आदमी के सिये सज्दा करना दुरुस्त होता तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि अपने शोहर को सज्दा करे कि इस का उस के ज़िम्मे बहुत बड़ा ह़क़ है, क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर क़दम से सर की चोटी तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच-लहू (या'नी पीप मिला ख़ून) बहता हो फिर औ़रत इसे चाटे तो ह़क़्क़े शोहर अदा न किया ।

(مُسْنَدِ اَحْمَد، مسند انس بن مالک، ج ۵، ص ۴۴۵، الحدیث:۱۲۹۳۹)

﴾3﴿..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : शोहर ने औ़रत को अपने पास बुलाया उस ने इन्कार कर दिया और ग़ुस्से में इस ने रात गुज़ारी तो सुब्ह तक उस औ़रत पर फ़िरिश्ते ला'नत भेजते रहते हैं ।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب بدأ الخلق، باب اذا قال احدکم آمین والملائکۃ فی السمآء...الخ، ص۸۲۹، الحدیث:۳۲۳۷)

और दूसरी रिवायत में है : जब तक शोहर उस से राज़ी न हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से नाराज़ रहता है ।

(صَحِیْح مُسْلِم، کتاب النکاح، باب تحریم امتناعها من فراش زوجها، ص۵۳۹، الحدیث:۱۴۳۶)

www.dawateislami.net

﴾4﴿..... ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब औ़रत अपने शोहर को दुन्या में ईज़ा देती है तो हूरे ऐ़न कहती हैं : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ तुझे ग़ारत करे, इसे ईज़ा न दे, येह तो तेरे पास मेहमान है, अ़न क़रीब तुझ से जुदा हो कर हमारे पास आएगा ।"

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب الرضاع، باب ماجاء فی کراھیة الدخول...الخ، ص۳۰۵، الحدیث:۱۱۷۴، ملخصاً)

﴾5﴿..... हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "जो औ़रत इस ह़ाल में मरी कि उस का शोहर उस से राज़ी था तो वोह जन्नत में दाख़िल होगी ।

(سنن ابن ماجه، کتاب النکاح، باب حق الزوج علی المرأة، ص۲۹۷، الحدیث:۱۸۵۴)

﴾6﴿..... ख़ातमुल मुरसलीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जब औ़रत पांच वक़्त नमाज़ पढ़े, माहे रमज़ान के रोज़े रखे, अपनी शर्मगाह की हि़फ़ाज़त करे और अपने शोहर की फ़रमां बरदारी करे तो वोह जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहेगी दाख़िल हो जाएगी ।"

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب النکاح، باب معاشرة الزوجین، ذکر ایجاب الجنة للمرأة اذا طاعت زوجها...الخ، ص۱۱۲۷، الحدیث:۴۱۶۳)

www.dawateislami.net

﴾7﴿..... सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शादीशुदा औ़रत (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सीन बिन मोह़सिन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की फूफी) से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तेरा अपने शोहर से कैसा बरताव है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मैं ने उस की ख़िदमत में कोई कमी नहीं की लेकिन अब मैं उस से आ़जिज़ आ गई हूं ।" तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "ग़ौर करो ! तुम कैसे उस से आ़जिज़ आ गई हो ह़ालांकि वोह तो तेरी जन्नत और दोज़ख़ है ।"

(مسند احمد بن حنبل،مسند القبائل، حدیث عمۃ حصین بن محصن، ج ۱۰، ص ۲۶۷، الحدیث: ۲۸۱۱۴)

﴾8﴿..... उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में अ़र्ज़ की : "औ़रत पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?" तो आप صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "शोहर का ।" फिर मैं ने अ़र्ज़ की : "मर्द पर सब से ज़ियादा ह़क़ किस का है ?" इरशाद फ़रमाया : "उस की मां का ।" (المستدرک علی الصحیحین،کتاب البر والصلۃ، باب اعظم الناس حقا علی الرجل امہ، ج ۵، ص ۲۴۴، الحدیث: ۷۴۱۸)

बीवी के हुक़ूक़ के मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीषे मुबारका

मर्दों को भी औ़रतों के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये क्यूंकि औ़रत टेढ़ी पस्ली से पैदा की गई है इस लिये इस के टेढ़ेपन से ही फ़ाइदा उठाना चाहिये ।

www.dawateislami.net

﴾1﴿..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "मुसलमान मर्द औ़रते मोमिना को मबग़ूज़ न रखे अगर उस की एक आ़दत बुरी मा'लूम होती है दूसरी पसन्द होगी।"

(صحیح مسلم، کتاب الرضاع، باب الوصیۃ بالنساء، ص۵۵۶ الحدیث:۱۴۶۹)

या'नी तमाम आ़दतें ख़राब नहीं होंगी जब कि अच्छी बुरी हर क़िस्म की बातें होंगी तो मर्द को येह न चाहिये कि ख़राब ही आ़दत को देखता रहे बल्कि बुरी आ़दत से चश्मपोशी करे और अच्छी आ़दत की त़रफ़ नज़र करे।

﴾2﴿..... हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में अच्छे वोह लोग हैं जो औ़रतों से अच्छी त़रह़ पेश आएं।

(سُنَن اِبْنِ مَاجَۃ، کتاب النکاح، باب حسن معاشرۃ النساء، ص ۳۱۲، الحدیث:۱۹۷۸)

﴾3﴿..... एक रिवायत में है : "औ़रत को ग़ुलाम की त़रह़ मारने का क़स्द करता है (या'नी ऐसा न करे) कि शायद दूसरे वक़्त उसे अपना हम ख़्वाब करे।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی، کتاب التفسیر، سورۃ والشمس وضحھا، ص ۱۲۷۶، الحدیث:۴۹۴۲)

या'नी ज़ौजिय्यत के तअ़ल्लुक़ात इस क़िस्म के हैं कि हर एक को दूसरे की ह़ाजत और बाहम ऐसे मरासिम कि इन को छोड़ना दुश्वार है लिहाज़ा जो इन बातों का ख़याल करेगा मारने का हरगिज़ क़स्द न करेगा।

www.dawateislami.net

मियां–बीवी की इस्लाह़ के लिये निगराने शूरा के दो अ़दद **VCD** बयान “**शोहर को कैसा होना चाहिये ?**” और “**बीवी को कैसा होना चाहिये ?**” मक्तबतुल मदीना से ख़ुद भी ह़ासिल कीजिये और दूसरी इस्लामी बहनों को भी इस की तरग़ीब दिलाइये ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बीवी के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शोहर के हुक़ूक़ औ़रत पर ब कषरत हैं और शोहर के हुक़ूक़ की अदाएगी औ़रत पर बहुत ज़ियादा लाज़िम और ज़रूरी है । औ़रत पर सब से बड़ा ह़क़ शोहर का है या'नी मां बाप से भी ज़ियादा । मर्द पर सब से बड़ा ह़क़ मां का है या'नी ज़ौजा का ह़क़ इस से कम बल्कि बाप से भी कम । येह इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन में एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी । واللّٰہ تعالٰی أعلم

मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن “**फ़तावा रज़विय्या**” जिल्द 24 में बीवी के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : औ़रत पर मर्द का ह़क़ ख़ास उमूरे मुतअ़ल्लिक़ा ज़ौजियत में **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم के बा'द तमाम हुक़ूक़ ह़त्ता कि मां बाप के ह़क़ से ज़ाइद है, इन उमूर में उस के अह़काम की इत़ाअ़त और उस के नामूस की निगहदाश्त औ़रत

www.dawateislami.net

पर फ़र्ज़े अहम है, बे इस के इज़्न के (या'नी इस की इजाज़त के बिग़ैर) मह़ारिम के सिवा कहीं नहीं जा सकती और मह़ारिम के यहां भी मां बाप के यहां हर आठवें दिन वोह भी सुब्ह़ से शाम तक के लिये और बहन, भाई, चचा, मामूं, ख़ाला, फूपी के यहां साल भर बा'द और शब (या'नी रात) को कहीं नहीं जा सकती । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 24 स. 380)

एक और मक़ाम पर फ़रमाया : उमूरे मुतअ़ल्लिक़ा ज़न-शवी में मुत़लक़न इस की इत़ाअ़त (या'नी मीयां-बीवी से मुतअ़ल्लिक़ मुआ़मलात में बीवी मुत़लक़न शोहर की फ़रमांबरदारी करे) कि इन उमूर में उस की इत़ाअ़त वालिदैन पर भी मुक़द्दम है, उस के नामूस की ब शिद्दत (या'नी सख़्ती से) ह़िफ़ाज़त, उस के माल की ह़िफ़ाज़त, हर बात में उस की ख़ैरख़्वाही (या'नी अच्छा चाहना), हर वक़्त उमूरे जाइज़ में उस की रिज़ा का त़ालिब रहना, उसे अपना मौला जानना, नाम ले कर न पुकारना, किसी से उस की बे जा शिकायत न करना, और ख़ुदा عزوجل तौफ़ीक़ दे तो बजा (या'नी दुरुस्त शिकायत) से भी एह़तिराज़ करना (या'नी बचना), न बे उस की इजाज़त के आठवें दिन से पहले वालिदैन या साल भर से पहले और मह़ारिम के यहां जाना, वोह नाराज़ हो तो उस की इन्तिहाई ख़ुशामद कर के उसे मनाना (कि) अपना हाथ उस के हाथ में रख कर कहना कि येह मेरा हाथ तुम्हारे हाथ में है यहां तक कि तुम राज़ी हो या'नी मैं तुम्हारी ममलूका हूं जो चाहो करो मगर राज़ी हो जाओ । (ऐज़न, स. 371)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दुन्यवी मुश्किलात पर सब्र की तल्क़ीन

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को देखा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ऊंट के बालों से बना मोटा लिबास पहने चक्की पीस रही थीं, नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों से सैले अश्क रवां हो गए फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "(आज) दुन्या की तंगी व सख़्ती पर सब्र करो ताकि कल जन्नत की अबदी ने'मतें ह़ासिल हों ।"

(کنز العُمّال، کتاب الفضائل، باب فضائل النبی ﷺ، ج ۱۲، ص ۱۹۰، الحدیث: ۳۵۴۷۰)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कैसी तर्बिय्यत थी कि इतने मसाइबो आलाम मगर ज़बां पर ह़र्फ़े शिकायत नहीं बल्कि राज़ी ब रिज़ा हैं अपनी तक्लीफ़ का किसी से ज़िक्र नहीं करतीं और एक हम नादान हैं कि मा'मूली सी तक्लीफ़ आ जाए तो आस्मान सर पे उठा लेती हैं । **अल्लाह** वाले मसाइब पर सब्र करते हैं और सब्र के बारे में तो हमारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ भी फ़रमाता है, चुनान्चे पारह 4, सूरए आले इमरान, आयत नम्बर 200 में इरशादे ख़ुदाए रह़मान है :

"یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَ صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا۫ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ۠"

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ इमान वालो ! सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरह़द पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और* ***अल्लाह*** *से डरते रहो इस उम्मीद पर कि काम्याब हो ।*

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 244 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''बहिश्त की कुंजियां''** सफ़ह़ा 220 पर शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि सब्र तीन हैं : (1).. मुसीबत पर सब्र (2).. इ़बादत पर सब्र (3).. गुनाह से सब्र, तो जो मुसीबत पर सब्र करे यहां तक कि मुसीबत को अच्छी तसल्ली से दूर कर दे तो **अल्लाह** عزوجل उस के लिये 300 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीनो आस्मान के दरमियान है और जो इ़बादत पर सब्र करता है **अल्लाह** عزوجل उस के लिये 600 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना कि ज़मीन की निचली कीचड़ और तमाम ज़मीनों के मुन्तहा के दरमियान फ़ासिला है और जो गुनाह से सब्र करे तो **अल्लाह** عزوجل उस के लिये 900 दर्जे लिख देता है जिस के दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला होता है जितना की ज़मीन की निचली कीचड़ों और अ़र्श के मुन्तहा के दरमियान के दो गुने के दरमियान फ़ासिला है।

(کَنْزُ الْعُمَّال، ج۳ کتاب الاخلاق، فضیلۃ الصبر، ص ۱۱۱، الحدیث: ۶۱۵۲)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तशरीहात व फ़वाइद

सब्र के मा'ना "حَبْسُ النَّفْسِ عَلَى الْمَكَارِهِ" या'नी नफ़्स को तक्लीफ़ों के ऊपर रोके रहना और कन्ट्रोल में रखना, अब ग़ौर कीजिये कि सब्र की तीनों क़िस्मों पर येह ता'रीफ़ सादिक़ आती है।

(1).... صَبْرٌ عَلَى الْمُصِيبَةِ या'नी **"मुसीबत पर सब्र"** : ज़ाहिर है कि मुसीबत के वक़्त नफ़्स में बड़ी बेचैनी और बे क़रारी पैदा होती है और बा'ज़ मरतबा ऐसी बोखलाहट बल्कि जुनून व दीवानगी की कैफ़िय्यत पैदा हो जाती है कि इन्सान रोने पीटने, बाल नोचने और कपड़े फाड़ने लगता है अब इसी मौक़अ़ पर अपने नफ़्स को रोने पीटने और जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ की ह़रकतों से रोके रहना येही **"मुसीबत पर सब्र करना"** है।

(2).... صَبْرٌ عَلَى الطَّاعَةِ या'नी **"इबादत पर सब्र"** : ज़ाहिर है कि गर्मियों का रोज़ा हो और आदमी प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो और सामने ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा शरबत रखा हुवा हो नफ़्स बार बार शरबत की त़रफ़ लपकता है मगर रोज़ादार नफ़्स को रोके हुए है जो नफ़्स पर गिरां और शाक़ है येही **"इबादत पर सब्र करना"** है।

(3).... صَبْرٌ عَنِ الْمَعْصِيَةِ या'नी **"गुनाह से सब्र"** : जवान आदमी है, शहवत का ग़लबा शबाब पर है, बदकारी के लिये नफ़्स बे क़रार है मगर परहेज़गार मुसलमान (मर्दो औ़रत) अपने नफ़्स को रोके हुए है और बदकारी से बचा हुवा है। येही **"गुनाह से सब्र करना"** है।

www.dawateislami.net

ह़दीष में आप ने पढ़ लिया कि सब्र की इन तीनों क़िस्मों का बड़ा दरजा है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰہَ مَعَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۳﴾ (پ۲ البقرۃ:۱۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक **अल्लाह** साबिरों के साथ है।*

सब्र करने वालों के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इमदाद व नुस्रत होती है और साबिरीन का मददगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता है। سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस से बढ़ कर सब्र का अज्रो षवाब क्या होगा कि ख़ुद ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ साबिरीन के साथ होता है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि कुछ अन्सारी लोगों ने ह़ुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवाल किया। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें दिया। उन्हों ने फिर मांगा ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अ़ता फ़रमाया ह़त्ता कि वोह माल जो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास था ख़त्म हो गया, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो कुछ माल मेरे पास होगा वोह तुम से हरगिज़ बचा न रखूंगा और जो सुवाल से बचना चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बचाएगा और जो ग़नी बनना चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ग़नी कर देगा और जो सब्र चाहे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सब्र अ़ता करेगा और किसी को सब्र से बेहतर और वसीअ़ कोई चीज़ न मिली।

(سُنَنُ الدَّارِمی، کتاب الزکاۃ، باب فی الاستعفاف عن المسألۃ، ص ۴۸۱، الحدیث:۱۶۵۲)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِی इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : वोह हज़रात मांगते रहे और हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم देते रहे उन्हें सब कुछ दे कर मस्अला बताया, इस में तब्लीग़ भी है और सख़ावते मुत़लक़ा का इज़हार भी। ख़याल रहे कि जिस को हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने कुछ ख़ुश हो कर दिया है वोह बहुत अ़र्से तक ख़त्म न हुवा, चुनान्चे हज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا और हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ को थोड़े थोड़े जव अ़त़ा फ़रमाए थे जो उन बुज़ुर्गों ने सालहा साल खाए और खिलाए, फिर जब तोले तो उतने ही थे मगर तोलने से ख़त्म हो गए। हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के हां साड़े चार सेर (तक़रीबन चार किलो) जव की रोटी पर सेंकड़ों आदमियों की दा'वत फ़रमाई। रब्ब तआ़ला फ़रमाता है : اَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِیْ या'नी मैं अपने बन्दे के गुमान के क़रीब रहता हूं। इस का ज़ुहूर आख़िरत में तो होगा ही, कि अगर बन्दा मुआ़फ़ी की उम्मीद करता हुवा मर जाए तो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ उसे मुआ़फ़ी ही मिलेगी, अकषर दुन्या में भी हो जाता है कि जो क़र्ज़ न लेने न मांगने का ख़ुदा के भरोसे पर पूरा इरादा कर ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इन से बचा ही लेता है और जो येह कोशिश करे कि दुन्या वालों से ला परवाह रहूं तो

www.dawateislami.net

बहुत ह़द तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ला परवाह ही रखता है, मगर येह फ़क़त ज़बानी दा'वा न हो अ़मली कोशिश भी हो कि कमाने में मशग़ूल रहे, ख़र्च दरमियाना रखे, गुलछर्रे न उड़ाए **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم सच्चे हैं इन के वा'दे ह़क़, ग़लत़ी हम कर जाते हैं।

"जो सब्र चाहे अल्लाह तआ़ला उसे सब्र अ़त़ा करेगा" इस के तह़त मुफ़्ती साहिब फ़रमाते हैं : रब्ब तआ़ला की अ़त़ाओं में से बेहतरीन और बहुत गुन्जाइश वाली अ़त़ा सब्र है कि रब्ब तआ़ला ने इस का ज़िक्र नमाज़ से पहले फ़रमाया :

اِسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (پ ۲، البقرة:۱۵۳)

*(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** सब्र और नमाज़ से मदद चाहो)*

और साबिर के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ होता है, नीज़ सब्र के ज़रीए इन्सान बड़ी बड़ी मशक़्क़तें बरदाश्त कर लेता है और बड़े बड़े दर्जे ह़ासिल कर लेता है, रब्ब तआ़ला ने ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के बारे में फ़रमाया : اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا (پ ۲۳، صٓ:۴۴) या'नी हम ने इन्हें बन्दए साबिर पाया। "सब्र ही की बरकत से ह़ज़रते सय्यदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ **सय्यिदुश्शुहदा** हुए।"

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح شَرْح مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح،کتاب الزکاۃ،باب لاتحل له المسألة ومن تحل له، ج ۳، ص ۲۰، ملتقطاً)

www.dawateislami.net

सब्र की ह़क़ीक़त

कुत़्बे रब्बानी, ग़ौषे समदानी ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی से सब्र के मुतअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने फ़रमाया : "सब्र येह है कि बला व मुसीबत के वक़्त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुस्ने अदब रखे और उस के फ़ैसलों के आगे सरे तस्लीम ख़म कर दे।"

(बह्जतुल असरार (मुतर्जम) स. 417)

अन्दाज़े अमीरे अहले सुन्नत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 101 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**ता'रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत**" सफ़ह़ा 47 पर है : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के मह़ल्ले में रहने वाले एक इस्लामी भाई ने जो आप को बचपन से जानते हैं, ह़ल्फ़िया बताया कि अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه बचपन में भी निहायत ही सादा त़बीअ़त के मालिक थे। अगर आप دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه को कोई डांट देता या मारता तो इन्तिक़ामी कार-रवाई करने की बजाए ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते। हम ने इन्हें बचपन में भी कभी किसी को बुरा भला कहते या किसी के साथ झगड़ा करते हुए नहीं देखा।

www.dawateislami.net

यक़ीनन इस्लामी बहनों के लिये ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इत्तिबाअ़ में बेहतरीन अज्रो षवाब और आ़फ़िय्यत ही आ़फ़िय्यत है चुनान्चे तिरमिज़ी शरीफ़ "**किताबुल मनाक़िब**" में है : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "तुम्हें तक़लीद के लिये तमाम दुन्या की औ़रतों में **मरयम बिन्ते इमरान** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا **फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا और फ़िरऔ़न की बीवी **आसिया** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا काफ़ी हैं ।"

(سُنَنُ التِّرمِذِی،ابواب المناقب،باب فضل خدیجه رضی الله عنها، ص۸۷۴،الحدیث:۳۸۹۳)

शहज़ादिये कौनैन, उम्मुल ह़सनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا की इत्तिबाअ़ की निय्यत कीजिये اِنۡ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ख़ूब अज्रो षवाब ह़ासिल होगा ।

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

छोटे भाई की इनफ़िरादी कोशिश

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने, हुक़ूक़ो फ़राइज़ सीखने, हलाकत से ख़ुद को बचाने और मग़फ़िरत पाने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा मदनी माह़ोल भी है । बसा अवक़ात एक फ़र्द की दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी घर भर की इस्लाह़ का सबब बन जाती है ऐसी बीसियों बहारें मौजूद हैं,

www.dawateislami.net

एक मदनी बहार मुलाहज़ा हो चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि हमारा घराना बहुत मॉर्डन था। घर के अफ़राद फ़िल्मों ड्रामों और गाने बाजों के रसिया थे। ख़ुदा का करना यूं हुवा कि मेरे छोटे भाई पर एक इस्लामी भाई ने इनफ़िरादी कोशिश की। इस पर उन्हों ने दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाई। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इजतिमाअ़ में मुसल्सल ह़ाज़िरी से भाई के किरदार में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, नमाज़ों के पाबन्द हो गए, सुन्नतों पर अ़मल की कोशिश और घर वालों की इस्लाह़ की फ़िक्र में रहने लगे। वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतें बताते और हमें इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की रग़बत दिलाते। उन की मुसल्सल इनफ़िरादी कोशिश बिल आख़िर रंग लाई और मैं ने इस्लामी बहनों के इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाई, वहां के माह़ोल की रूह़ानिय्यत और सुन्नतों भरे बयान ने मुझ पर अ़जीब कैफ़िय्यत त़ारी कर दी, दुआ़ के दौरान मैं ने ख़ूब रो रो कर अपने गुनाहों से तौबा की और दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल को कभी न छोड़ने का अ़ज़्मे मुसम्मम किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में पाबन्दी से शिर्कत की ब दौलत ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा बढ़ाने का जज़्बा नसीब हुवा। दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी के सदक़े हमारे घर का बिगड़ा हुवा माहोल **मदनी माहोल** में तब्दील हो गया। घर वालों की बा–हमी रिज़ा मन्दी से **T.V** निकाल दिया गया क्यूंकि इस के होते हुए फ़िल्मों ड्रामों से बचना बेहद दुश्वार है और अब हमारे घर में फ़िल्में ड्रामे और गाने नहीं बल्कि सरकार صلی اللہ تعالیٰ علیہ و اٰلہ وسلم की ना'तों के तराने सुने जाते हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 62)

न मरना याद आता है न जीना याद आता है

मुहम्मद याद आते हैं मदीना याद आता है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बिग़ैर हिम्मत हारे ख़ूब ख़ूब इनफ़िरादी कोशिश करती रहें اِنْ شَآءَاللہ عزوجل नाकामी नहीं होगी। इस ज़िम्न में अगर कोई तक्लीफ़ भी पहुंच जाए तो सब्र व शिकैबाई का दामन हाथ से मत छोड़िये कि आने वाली मुसीबत اِنْ شَآءَاللہ عزوجل बहुत बड़ी भलाई का पेश ख़ैमा षाबित होगी। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صلی اللہ تعالیٰ علیہ و اٰلہ وسلم का फ़रमाने रूह परवर है : "**अल्लाह** عزوجل जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे मुसीबत में मुब्तला फ़रमा देता है।"

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی،کتاب المرضی، باب ماجاء فی کفارۃ المرض، ص۱۴۳۲، الحدیث:۵۶۴۵)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 8

ख़ातूने जन्नत
का
पर्दे का एहतिमाम

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का पर्दे का एहतिमाम

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शमसुद्दीन मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान सख़ावी शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الشَّافِى नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिबली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मेरा एक पड़ोसी फ़ौत हो गया। मैं ने उसे ख़्वाब में देखा और पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? उस ने कहा : ऐ शिबली ! मुझ पर बहुत बड़ी मुसीबतें आईं ह़त्ता कि सुवाल के वक़्त मेरी ज़बान बन्द हो गई। मेरे दिल में ख़याल आया कि मुझ पर येह आज़माइश कहां से आई, क्या मेरी मौत इस्लाम पर नहीं हुई ? तो निदा आई कि येह परेशानियां दुन्या में ज़बान की ग़फ़्लत की वजह से हैं। इसी दौरान जब (अ़ज़ाब के) फ़िरिश्ते मेरे क़रीब आने लगे तो एक ख़ूबसूरत उ़म्दा ख़ुश्बू वाला शख़्स मेरे और फ़िरिश्तों के दरमियान ह़ाइल हो गया और उस ने मुझे जवाबात याद करवाए जो मैं ने फ़िरिश्तों के सामने पेश कर दिया (तो मेरी जां बख़्शी हो गई)। मैं ने उस (नूरानी) शख़्स से पूछा : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप पर रह़्म फ़रमाए ! आप कौन हैं ? उस ने कहा : मैं एक ऐसा शख़्स हूं जिस को तेरे नबिय्ये अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर **ब कषरत दुरूदे पाक**

www.dawateislami.net

पढ़ने की वजह से पैदा किया गया है । अब मुझे तुम्हारी हर तक्लीफ़ पर मदद करने का हुक्म दिया गया है ।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علٰی رسولِ اللّٰہ، ص۱۲۷)

हज़रते अ़ल्लामा किफ़ायत अ़ली काफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی फ़रमाते हैं :

नज़्अ़ में गोर में क़ियामत में

हर जगह यारे ग़मगुसार है दुरूद

(काफ़ी की ना'त, अज़ मौलाना किफ़ायत अ़ली काफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुनादी की निदा बराए सय्यिदा फ़ातिमा

हाफ़िज़ुल ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुर्रह़मान जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی ने अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत की है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुअ़ज़्ज़म है : **"जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा, ऐ अहले मज्मअ़ ! अपनी निगाहें झुका लो ताकि ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) **पुल सिरात़ से गुज़रें ।"**

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیْر مَعَ فَیْضُ الْقَدِیْر، حرف الھمزۃ، ج۱، ص۵۴۹، الحدیث:۸۲۲)

***अल्लाह* रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

वोह रिदा जिस की ततहीर अल्लाह रे   आस्मां की नज़र भी न जिस पर पड़े

जिस का दामन न सहवन हवा छू सके   जिस का आंचल न देखा मह व मिहर ने

उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा इ़ज़्ज़त व बा वफ़ा, पैकरे शर्मो ह़या मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم की साहि़बज़ादी और आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم की आग़ोश में तर्बिय्यत पाने वाली शहज़ादी ज़ौजए अ़ली ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنھا के मक़ामो मर्तबे की एक झलक अज़ रूए ह़दीष आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई कि अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل ने आप رضی اللہ تعالٰی عنھا को पर्दादार रहने का एक सिला येह दिया कि रोज़े मेह़शर आप رضی اللہ تعالٰی عنھا की ख़ाति़र अहले मेह़शर को निगाहें झुकाने का हुक्म सादिर किया जाएगा क्यूंकि येह वोह अ़फ़ीफ़ व त़य्यिब शख़्सिय्यत हैं जिन्हों ने सारी ज़िन्दगी बल्कि बा'द अज़ विसाल भी अपने पर्दे का ख़याल रखा। तो जो अपनी आ़दात निखारने और अपने ह़ालात सुधारने का मुतमन्नी और इस के लिये कोशां होता है अल्लाह तबारक व तआ़ला उस का ह़ामी व नासिर होता है। उसे उस की कोशिशों का बदला उस की निय्यतों के मुत़ाबिक़ अपने फ़ज़्लो करम से दुन्या या आख़िरत या दोनों जहां में अ़त़ा फ़रमाता है। पस जो शख़्स अपनी इ़ज़्ज़त को ख़राब और अपने वक़ार को मजरूह़

www.dawateislami.net

नहीं होने देता उस के लिये मुअ़ज़्ज़ज़ व बा वक़ार बनना और इसी ह़ालत पर क़ाइम रहना आसान होता है। औ़रत के मोअ़ज़्ज़ज़ व बा वक़ार होने और रहने में शरई पर्दे का बहुत बड़ा दख़्ल है। जो इस्लामी बहन पर्दादार होती है वोह मुअ़ज़्ज़ज़ होती है उस का मुआ़शरे में भी मक़ाम होता है और बारगाहे रब्बुल अनाम में भी। पैकरे इफ़्फ़तो अ़ज़मत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चल कर चादर और चार दीवारी को अपने ऊपर लाज़िम कर लेने वाली इस्लामी बहन اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ख़ातूने जन्नत के जिलौ में जगह पाएगी और जिसे अपने पर्दे का ख़याल नहीं, तो उस के लिये मुआ़शरे में इ़ज़्ज़त पाना और अपना मक़ाम बनाना बहुत मुश्किल है। क्यूंकि मुआ़शरा और अफ़रादे मुअ़शरा उसी को इ़ज़्ज़त देते हैं जो अपनी इ़ज़्ज़त का ख़याल रखता है। जो जिस ख़स्लत का आ़दी होता है लोग उस की उसी ख़स्लत का लिह़ाज़ रखते हैं, इ़ज़्ज़त उसी की होती है जो अपनी इ़ज़्ज़त संभालता है जैसे मह़बूबे मुस्त़फ़ा, सय्यिदुल अस्ख़िया उ़षमाने बा ह़या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के बारे में मन्क़ूल है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत बा ह़या थे, इस ख़स्लते बा अ़ज़मत ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को येह इ़ज़्ज़त दी कि सय्यिदुल अम्बिया (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और मलाइकए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से ह़या फ़रमाते थे जैसा कि

बा ह़या से ह़या

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 649 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''ह़िकायते**

www.dawateislami.net

और नसीहतें'' सफ़ह़ा 598 पर ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शोऐब ह़रीफ़ीश رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली बिन अबी त़ालिब (کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) से मरवी है, ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ़ज़मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानिय्यत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सरापा बरकत है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अबू बक्र पर रह़्म फ़रमाए, उन्हों ने अपनी बेटी मेरी ज़ौजिय्यत में दी, मुझे अपनी ऊंटनी पर सुवार कर के मदीनए पाक ले गए और बिलाल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) को अपने माल से आज़ाद किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) पर रह़्म फ़रमाए, वोह ह़क़ बोलते हैं अगर्चे कड़वा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उ़षमाने ग़नी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) पर रह़्म फ़रमाए, मलाइका इन से **ह़या** करते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) पर रह़्म फ़रमाए, **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) जहां चले ह़क़ को इस के साथ चला दे।

(سُنَنُ التِّرمِذِی، ابواب المناقب عن رسول اللہ ،باب مناقب علی بن ابی طالب ،ص۸۴۲، الحدیث:۳۷۲۳)

ह़याए उ़षमानी

उम्मुल मोअमिनीन बिन्ते अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे घर में तशरीफ़

www.dawateislami.net

फ़रमा थे इस आ़लम में कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दोनों मुबारक पिन्डलियां कुछ ज़ाहिर थीं । इस दौरान ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए और इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें इजाज़त अ़ता फ़रमाई और इसी त़रह़ आराम फ़रमा रहे और गुफ़्त्गू फ़रमाते रहे । फिर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें भी इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाई जब कि आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم इसी त़रह़ लैटे रहे और गुफ़्त्गू फ़रमाते रहे । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इजाज़त त़लब की तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये । ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी बातें करते रहें । जब वोह चले गए तो ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं, मैं ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब ह़ज़रते अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन के लिये कोई फ़िक्रो एहतिमाम नहीं किया, जब ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तब भी आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई एहतिमाम नहीं किया लेकिन जब ह़ज़रते उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आए तो आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उठ कर बैठ गए और अपने कपड़े दुरुस्त कर लिये । रसूले रह़मत, नबिय्ये रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

"मैं उस शख़्स से कैसे ह़या न करूं जिस से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं ।"

(صَحِیْح مُسْلِم،کتاب فضائل الصحابہ ،باب فضائل عثمان بن عفان،ص۱۳۰۶،الحدیث:۲۴۰۱)

www.dawateislami.net

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उ़लुव्वए शान का क्यूं कर बयां हो आप की प्यारे

ह़या करती है मौला आप से मख़्लूके़ नूरानी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 498)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुन्या में बहुत ज़ियादा पैकरे शर्मो ह़या और बा पर्दा रहीं तो उन्हें इस के सिले में रोजे़ मेह़शर भी बा पर्दा रखा जाएगा, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़षमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी जि़न्दगी बा ह़या गुज़ारी इस के सिले में रोजे़ मेह़शर इन का हि़साब ही नहीं होगा, जैसा कि मह़बूबे रह़मान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : (ह़ज़रते) उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बहुत ज़ियादा ह़या करने वाले शख़्स हैं, मैं ने **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ मांगी है कि वोह उ़षमान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से हि़साब न ले तो **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी **सिफ़ारिश** क़बूल फ़रमाई ।

(كنز العمال، كتاب الفضائل، ذكر الصحابة وفضلهم، ج ١١، ص ٢٩٢، الحديث: ٣٣٠٩٢)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

जन्नत में भी पर्दा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम ने औ़रत के ह़क़ में पर्दे को किस क़दर अहम्मिय्यत दी कि जन्नत कि जहां किसी बद निगाही और बदकारी का वहमो गुमान तक नहीं वहां भी जन्नती औ़रतें और हूरें पर्दे में होंगी जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : (मोमिन के लिये) जन्नत में एक खोखले मोती का ख़ैमा होगा जिस की चौड़ाई या लम्बाई 60 मील (तक़रीबन 96.54 किलो मीटर) की है इस के हर गोशे में उस के घर वाले होंगे कि दूसरों को न देख सकेंगे। मोमिन इस ख़ैमे में घूमें फिरेंगे।

(صَحِیْحُ الْبُخَارِی،کتاب التفسیر،باب حور مقصورات فی الخیام، ص۱۲۵۰، الحدیث:۴۸۷۹)

बयान कर्दा ह़दीषे पाक की शर्ह़ करते हुए ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی **"मिरआतुल मनाजीह़ शर्हे़ मिश्कातुल मसाबीह़"** में रक़म त़राज़ हैं : "या'नी इस मोती के मकान के चारों गोशों में उस के मुख़्तलिफ़ घर वाले आबाद होंगे। कहीं अपनी दुन्यावी बीवी बच्चे, कहीं वोह दुन्यावी औ़रतें जिन के ख़ावन्द काफ़िर मरे और इन के निकाह़ में दी गई, कहीं वोह कंवारी लड़कियां जो दुन्या में बिग़ैर शादी फ़ौत हुईं, कहीं हूरें, ख़ुद्दाम इन के इ़लावा इन्हें एक दूसरे को न देखना

www.dawateislami.net

फ़ासिले की वजह से न होगा कि जन्नती मोमिन की निगाह बहुत दूर से देखेगी बल्कि इन जगहों में इमारतें मुख़्तलिफ़ होंगी कोठियां, बंगले। ख़याल रहे कि जन्नत में पर्दा होगा। रब्ब फ़रमाता है : ''حُوۡرٌ مَّقۡصُوۡرٰتٌ فِی الۡخِیَامِ ۚ﴿۷۲﴾ (پ۲۷، الرحمٰن:۷۲) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** हूरें हैं ख़ैमों में पर्दा नशीन)'' और फ़रमाता है : قٰصِرٰتُ الطَّرۡفِ ۙ(پ۲۷، الرحمٰن:۵۶) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह औ़रतें हैं कि शोहर के सिवा किसी को आंख उठा कर नहीं देखतीं।)'' पर्दा इस लिये नहीं होगा कि वहां लोग फ़ासिक़ो फ़ाजिर होंगे बल्कि इस लिये कि शर्मो ह़या अच्छी चीज़ है, बे पर्दगी में बे शर्मी है, हां ! दोज़ख़ में पर्दा नहीं होगा वहां नंगे मर्दो औ़रत एक ही तन्नूर में जलेंगे।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکاۃ المصابیح، کتاب احوال قیامۃ وبدء الخلق، باب صفۃ الجنۃ واھلھا، ج۷، ص۴۷۹)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बीबी फ़ाति़मा के कफ़न का भी पर्दा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**'' सफ़ह़ा 200 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़्ल फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا पर ग़मे मुस्त़फ़ा का

www.dawateislami.net

इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई ! अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गईं । इस का वाक़िआ़ कुछ यूं है : शर्मो ह़या की पैकर ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को येह तशवीश थी कि उ़म्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से ख़ुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़नपोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़ पर ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : मैं ने ह़ब्शा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं । फिर उन्हों ने खजूर की शाख़ें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दिखाया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बहुत ख़ुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई । बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई ।
(جَذْبُ الْقُلُوب (مُتَرْجَم)، ص ۲۳۱)

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पर्दे की भी क्या बात है ! किसी ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

چو زہرا باش از مخلوق رُو پوش
کہ دَر آغوشِ شبیرے بہ بینی

या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रह़ परहेज़गार व पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते सय्यिदुना शब्बीरे नामदार इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसी अवलाद देखो ।

www.dawateislami.net

जिस का आंचल न देखा मह व मिहर ने

उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ सलामे रज़ा :

या'नी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا की चादरे अन्वर का पल्लू चांद सूरज ने भी नहीं देखा, उस पाकीज़ा चादर की त़हारत व पाकीज़गी पर लाखों सलाम नाज़िल हों ।

उस बतूल, जिगर पारए मुस्त़फ़ा

ह़-जला आराए इफ़्फ़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ सलामे रज़ा :

या'नी पारसाई व परहेज़गारी की चारपाई को ज़ैबो ज़ीनत देने वाली सय्यिदा फ़ाति़मा رضی اللہ تعالٰی عنہا जिन का लक़ब बतूल है, सरकारे दो आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم के जिगर मुबारक का टुकड़ा हैं, उन पर लाखों सलाम हों ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

उम्मते मुस्लिमा की तनज़्ज़ुली का एक सबब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज मुसलमान औ़रतों की ह़ालत ऐसी है कि सर शर्म से झुक जाता है पर्दे का तसव्वुर ही नहीं रहा । जब से कुफ़्फ़ारे मक्कार के ज़ेरे अषर आ कर मुसलमानों ने बे पर्दगी का सिलसिला शुरूअ़ किया है, मुसल्सल

www.dawateislami.net

तनज़्ज़ुल (या'नी ज़वाल) के गहरे गढ़े में गिरते चले जा रहे हैं, कल तक जो कुफ़्फ़ारे बद अन्जाम मुसलमान के नाम से लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते (या'नी कांप उठते) थे आज वोह मुसलमानों की बे पर्दगियों और बद अ़मलियों के बाइ़ष ज़ोर आवर हो चुके हैं, इस्लामी मुमालिक पर बा क़ाइदा जारिह़ाना ह़म्ले हो रहे हैं और ज़ालिमाना क़ब्ज़े किये जा रहे हैं मगर मुसलमान है कि ग़फ़्लत की चादर ताने लम्बी नींद सोया हुवा है। ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये इस्लाम, जिगर गोशए शाहे ख़ैरुल अनाम ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरते मुबारका, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का रातों को जाग जाग कर इ़बादत करने का ज़ौक़ और आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के शर्मो ह़या का येह मुबारक ह़ाल उन नादान मुसलमानों के लिये बाइ़षे तवज्जोह है जो **T.V** और **INTERNET** पर फ़िल्में ड्रामे चला कर, बेहूदा फ़िल्मी गीत गुनगुना कर, शादियों में नाचरंग की मह़फ़िलें जमा कर, काफ़िरों की नक़्क़ाली में दाढ़ी मुंडा कर कुफ़्फ़ार जैसा बे शर्माना लिबास बदन पर चढ़ा कर, स्कूटर के पीछे बे पर्दा बेगम को बिठा कर, बे ह़या बीवी को मेक-अप करवा कर, मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाह में ले जा कर, अपनी अवलाद को दुन्यवी ता'लीम की ख़ात़िर कुफ़्फ़ार के मुमालिक में काफ़िरों के सिपुर्द करवा कर बे ह़याई की आख़िरी ह़दें फलांग रहे हैं।

वोह क़ौम जो कल तक खेलती थी शमशीरों के साथ
सीनेमा देखती है आज वोह हमशीरों के साथ

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا إِلَى الله! أَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बे पर्दगी की होलनाक सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इमाम शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद बिन हजर मक्की शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الشَّافِی हदीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : "**मे'राज की रात** सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जो बा'ज़ औरतों के अ़ज़ाबात के हौलनाक मनाज़िर मुलाहज़ा फ़रमाए, उन में येह भी था कि एक औ़रत बालों से लटकी हुई थी और उस का दिमाग़ खोल रहा था, सरकारे आ़ली मर्तबत, बाइ़षे ख़ैरो बरकत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ़्क़त में अ़र्ज़ की गई कि येह औ़रत अपने बालों को ग़ैर मर्दों से नहीं छुपाती थी।"

(اَلزَّوَاجِر عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر، الكبيره ٢٨٠،نشوز المرأة، ج٢، ص٨٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कंघी के बाल भी छुपाइये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कहीं हमारे फ़ैशन हमें तबाह न कर दें, हमारी बे पर्दगी हमें जहन्नम में न धकेल दे, मरने से पहले संभल जाना चाहिये और पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सच्ची तौबा कर लेनी चाहिये, ग़ैर मर्दों से अपने बाल

www.dawateislami.net

न छुपाने की वजह से बालों से लटकाए जाने का अ़ज़ाब आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया, इस्लामी बहनों को ग़ैर मर्दों से अपने बाल छुपाना भी ज़रूरी है यहां तक कि कंघी से निकलने वाले बालों को भी ऐसी जगह फैंकना मम्नूअ़ है जहां पर अजनबी मर्दों की नज़र पड़े, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 449 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "औ़रतों के लिये लाज़िम है कि कंघा करने या सर धोने में जो बाल निकलें उन्हें कहीं छुपा दें कि उन पर अजनबी (या'नी ग़ैर मर्दों) की नज़र न पड़े ।"

सुन्नतों का हो अ़ता दर्द मुसलमानों को
दूर फ़ैशन की हो भरमार रसूले अ़रबी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِیَه स. 326)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ना जाइज़ फ़ैशन करने वालियों के अ़ज़ाब का मुशाहदा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 480 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बयानाते अ़त्तारिय्या**" ह़िस्सए अव्वल के रिसाले "**क़ब्र का इम्तिह़ान**" सफ़ह़ा 30 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते

www.dawateislami.net

इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''(मे'राज की रात) मैं ने एक बदबूदार गढ़ा देखा जिस में शोरो ग़ोग़ा बरपा था, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? तो जिब्रईले अमीन (عَلَیْہِ السَّلَام) ने अ़र्ज़ की : येह वोह औ़रतें हैं जो ना जाइज़ अश्या से ज़ीनत ह़ासिल करती थीं ।'' (تاریخ بغداد، ج ۱، ص ۴۱۵)

मुसलमां बाज़ आ जाएं शहा ! फ़ैशन परस्ती से
करम कर दो बनें पाबन्दे सुन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 148)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللہ! اَسْتَغْفِرُ اللہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दीने इस्लाम अपने मानने वाले हर मर्द व ज़न को सादगी अपनाने की तरग़ीब देता और ना जाइज़ ज़राएअ़ से ज़ीनत ह़ासिल करने से मन्अ़ करता है । सादगी में इ़ज़्ज़त व बचत है । फ़ैशन की ख़ातिर रोज़ रोज़ नए लिबास पहनने वालियां, ज़रा फ़ैशन तब्दील हुवा या लिबास थोड़ा पुराना हुवा या कहीं से मा'मूली सा फटा तो पैवन्दकारी कर के उस को पहनने में आ़र (या'नी ऐ़ब) मह़सूस करने वालियां इस रिवायात को बार बार पढ़ें :

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि मह़बूबे रब्बुल इ़बाद, क़रारे हर क़ल्बे नाशाद صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे ह़क़ीक़त बुन्याद है : ''क्या तुम सुनते नहीं ? क्या तुम सुनते नहीं ? कि कपड़े का पुराना होना ईमान से है, बेशक कपड़े का पुराना होना ईमान से है।''

(سُنَنُ اِبِی داود،کتا ب الترجل، ص۲۵۳، الحدیث: ۴۱۶۱)

इस रिवायत के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शाह अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिष देहलवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ''**ज़ीनत का तर्क करना अहले ईमान के अख़्लाक़ में से है।**''

(اَشِعَّةُ اللَّمعَات (مُتَرْجَم)،کتاب اللباس،الفصل الثانی، ج۵، ص۵۷۶)

वलवला सुन्नते मह़बूब का दे दे मालिक

आह ! फ़ैशन पे मुसलमान मरा जाता है

(वसाइले बख़्शिश अज़् अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه स. 127)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रतों के ना जाइज़ फ़ैशन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! रेशम, सोना, मेहंदी, मूंछों के बाल साफ़ करवाना वग़ैरा औ़रत के लिये जाइज़ है। हां ! ज़ीनत व फ़ैशन की बा'ज़ ऐसी सूरतें भी हैं जो औ़रतों के लिये भी मन्अ़ हैं, जैसे इन्सानी बालों की चोटी बना कर अपने बालों में गूंधना, अब्रू के बाल नोचना, रेती से दांत रगड़ना वग़ैरा जैसा कि **दा'वते**

www.dawateislami.net

इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द 3 ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 596 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : इन्सान के बालों की चोटी बना कर औ़रत अपने बालों में गूंधे येह ह़राम है। ह़दीष में इस पर ला'नत आई बल्कि उस पर भी ला'नत जिस ने किसी दूसरी औ़रत के सर में ऐसी चोटी गूंधी और अगर वोह बाल जिस की चोटी बनाई गई ख़ुद उसी औ़रत के हैं जिस के सर में जोड़ी गई जब भी ना जाइज़ और अगर ऊन या सियाह धागे की चोटी बना कर लगाए तो इस की मुमानअ़त नहीं। सियाह कपड़े का मूबाफ़(1) बनाना जाइज़ है और कलावा(2) में तो अस्लन ह़रज नहीं कि येह बिल्कुल मुमताज़ होता है। इसी त़रह़ गूदने वाली और गूदवाने वाली या रेती से दांत रेत कर ख़ूबसूरत करने वाली या दूसरी औ़रत के दांत रेतने वाली या मौचने(3) से अब्रू के बालों को नोच कर ख़ूबसूरत बनाने वाली और जिस ने दूसरी के बाल नोचे इन सब पर ह़दीष में ला'नत आई है। (ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحۃ، فصل فی النظر، ج۹، ص۶۱۵)

---

(1).... बालों में धागा लगा कर इन्हें दराज़ करना मुबाफ़ कहलाता है।

(2).... कच्चा सूत जो तक्ले पर लगा हुवा हो और तक्ला चर्ख़े की उस आहनी सलाख़ को कहते हैं जिस पर कातते वक़्त लच्छ़ी बनती जाती है

(3).... मोचना : या'नी बाल उखाड़ने का आला।

www.dawateislami.net

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस्लामी बहनें जो शरई हुदूद व क़ुयूद को बालाए ताक़ रख कर आए दिन फ़ैशन के नित नए ढंग और ज़ैबो ज़ीनत के नए रंग अपनाने में इस क़दर जी जान से मगन रहती हैं कि फ़र्ज़ पर्दा तक को مَعَاذَاللہ बोझ मह़सूस करने लग जाती हैं। उन के तसव्वुराते बद में चादर और चार दीवारी किसी अहम्मिय्यत की ह़ामिल नहीं होती। ऐसी ख़्वातीन का आइडियल अज़्वाज व बनाते मुस्त़फ़ा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ) नहीं बल्कि कुफ़्फ़ारे ना बकार की चाल–ढाल और फ़िरंगी तहज़ीब होती है। फ़ैशन परस्ती और बे पर्दगी की इस बेहूदगी का अन्जाम क्या होता है ? इस से हर ज़ी शुऊर बा ख़बर होगा।

बे ग़ैरती की इन्तिहा

काफ़िरों की उलटी तरक़्क़ी की रीस करते हुए बे पर्दगी और बे ह़याई का बाज़ार गर्म करने वाले ज़रा ग़ौर तो करें। **यूरोप, अमरीका** और इन से मुतअष्षिर होने वाले मुल्कों में क्या हो रहा है ! रक़्स गाहों में लोग अपनी आंखों से अपनी बहू बेटीयों को दूसरों की आग़ोश में देखते हैं और टस से मस नहीं होते बल्कि

www.dawateislami.net

वोह दय्यूष[1] फ़ख़्र से इतराते हुए दाद दे रहे होते हैं ! ! ! बे पर्दा और फ़ैशनेबल ओ़रतों के "**मुंह काले**" होने की ह़यासोज़ ख़बरें आए दिन अख़्बारात में छपती हैं। वोह ओ़रत जो मर्द की शहवत रानी का शिकार होती है उसे अगर ह़म्ल ठहर गया तो कहां सर छुपाएगी ? ह़म्ल गिराने की सूरत में वोह अपनी जान भी खो सकती है। चलिये माना कि यूरोप के तरक़्क़ी याफ़्ता मुमालिक (बल्कि अब तो दुन्या भर) में ऐसे अस्पताल मौजूद हैं जो इसक़ाते ह़म्ल (या'नी ह़म्ल गिराने) की "ख़िदमत" अन्जाम देते हैं और ऐसी पनाह गाहें भी मौजूद हैं जहां ग़ैर शादीशुदा माओं को "पनाह" मिल जाती है लेकिन क्या मुआ़शरे में इन्हें कोई क़ाबिले एह़तिराम मक़ाम भी नसीब हो सकता है ! माना कि रुसवा हो कर इन दोनों (या'नी ग़ैर शादी शुदा जोड़े) ने अपने किये की दुन्या में हाथों हाथ सज़ा पाई लेकिन वोह बच्चा जो इस त़रह़ पैदा हुवा है अगर ज़िन्दा बच भी गया तो उस का क्या बनेगा ? उस के हवस कार बाप ने भी उस से आंखें फैर लीं, बदकार मां भी उसे कचरा कूंडी या किसी मोह़ताज ख़ाने में छोड़ कर चली गई ! येह सब बे ग़ैरती और बे पर्दगी का दुन्यवी अन्जाम है। न जाने क़ियामत के दिन क्या होगा ?

---

(1)..... जो लोग बा वुजूदे कुदरत अपनी ओ़रतों और मह़ारिम को बे पर्दगी से मन्अ़ न करें वोह "दय्यूष" हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 65) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़लाउद्दीन ह़स्कफ़ी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : "दय्यूष" वोह शख़्स होता है जो अपनी बीवी या किसी मह़रम पर ग़ैरत न खाए। (دُرِّمختار، کتاب الحدود، باب التعزیر، ص۳۱۸)

www.dawateislami.net

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَی اللّٰه! اَسْتَغْفِرُ اللّٰه

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बहारे शरीअ़त का मुत़ालआ़ फ़रमाइये !

इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों के लिये ज़ीनत के शरई अह़काम क्या हैं इन को जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 ह़िस्सा 16 सफ़ह़ा 591 ता 597 मुलाह़ज़ा फ़रमाएं। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जाइज़ व ना जाइज़ ज़ीनत के बारे में मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा। **अल्लाह** तआ़ला अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अ़मल का हो जज़्बा अ़त़ा या इलाही !
गुनाहों से मुझ को बचा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه स. 84)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पिछले सफ़ह़ात में दय्यूष या'नी बे ग़ैरत के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा, जिस के मुतअ़ल्लिक़ अह़ादीषे करीमा में बहुत सारी वईदात हैं इस के बा'द यहां एक ग़ैरतमन्द शोहर की ह़िकायत

www.dawateislami.net

बयान की जाती है जिस ने ग़ैरत मन्दी का षुबूत देते हुए अपनी बीवी का चेहरा ग़ैर मर्द के सामने ज़ाहिर नहीं होने दिया। इस ग़ैरत खाने की वजह से उसे इ़ज़्ज़त भी नसीब हुई, चुनान्चे

ग़ैरत मन्द शोहर

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 413 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**उ़यूनुल ह़िकायात**" ह़िस्सए दुवुम, सफ़ह़ा 123 पर इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ली जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मूसा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मन्क़ूल है कि "एक मरतबा मैं "रै" (ईरान के दारुल ख़िलाफ़ा, मौजूदा नाम **तेहरान**) के क़ाज़ी ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّزَّاق की मह़फ़िल में था। क़ाज़ी साह़िब लोगों के मसाइल ह़ल करे रहे थे। इतने में एक औ़रत उन के पास लाई गई, उस के सर परस्तों का दा'वा था कि उस औ़रत के शोहर ने उस का 500 दीनार महर अदा नहीं किया। जब उस के शोहर से पूछा गया तो उस ने इन्कार कर दिया और कहा : मुझ पर महर का दा'वा बे बुन्याद है। शोहर के इन्कार पर क़ाज़ी साह़िब ने औ़रत से गवाह त़लब किये। गवाह ह़ाज़िर किये गए तो उन में से एक ने कहा : मैं इस औ़रत को देखना चाहता हूं ताकि इसे पहचान कर

www.dawateislami.net

गवाही दूं।" चुनान्चे वोह औ़रत की त़रफ़ बढ़ा और कहा : "तुम अपना निक़ाब हटाओ ताकि तुम्हारी पहचान हो सके।" येह देख कर उस के शोहर ने कहा : "येह शख़्स मेरी ज़ौजा के पास क्यूं आया है ?" वकील ने कहा : "येह गवाह तुम्हारी ज़ौजा का चेहरा देखना चाहता है ताकि पहचान हो जाए।"

येह सुन कर **ग़ैरत मन्द शोहर** पुकार उठा : "इस शख़्स को रोक दो, मैं क़ाज़ी साहि़ब के सामने इक़रार करता हूं कि जो दा'वा मेरी ज़ौजा ने मुझ पर किया है वोह मुझ पर लाज़िम है, मैं 500 दीनार अदा करने को तय्यार हूं, ख़ुदारा ! मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी ग़ैर मर्द पर ज़ाहिर न किया जाए।" चुनान्चे गवाह को रोक दिया गया। जब औ़रत ने अपने ग़ैरत मन्द शोहर का येह जज़्बा देखा तो कहा : "सब गवाह हो जाओ ! मैं ने अपना महर मुआ़फ़ कर दिया, मैं दुन्या व आख़िरत में इस का मुत़ालबा न करूंगी, येह महर मेरे **ग़ैरत मन्द शोहर** को मुबारक हो।"

मह़फ़िल में मौजूद तमाम लोग मियां-बीवी के इस फ़ैसले पर अश-अश कर उठे। क़ाज़ी साहि़ब ने फ़रमाया : "इन दोनों का येह मुआ़मला बेहतरीन अवसाफ़ और आ'ला अख़्लाक़ पर दलालत करता है।" (उ़यूनुल ह़िकायात, स. 275)

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

امین بجاہ النبی الامین صلی اللہ تعالٰی علیہ والہ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

इस वाक़िए में हमारे लिये बेहतरीन सबक़ है। कैसा ग़ैरत मन्द था वोह शख़्स ! कि अपने ऊपर लाज़िम पांच सो (500) दीनार का इक़रार कर लिया लेकिन उस की ग़ैरत ने येह गवारा ना किया कि मेरी ज़ौजा का चेहरा किसी ग़ैर मर्द के सामने ज़ाहिर हो। येह ह़या का आ'ला दर्जा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में तरग़ीब दिलाई जाती है कि ग़ैर मह़रम से पर्दा किया जाए और बे पर्दगी की नुहू़सत से ख़ुद भी बचा जाए और अपने घर वालों को भी बचाया जाए। इसी उ़न्वान या'नी पर्दे के बारे में अह़काम से मुतअ़ल्लिक़ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की जामेअ़ किताब ''पर्दे के बारे में सुवाल जवाब'' दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल फ़रमाएं, ख़ुद भी पढ़िये और मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही की निय्यत से दूसरों को भी तोह़्फ़तन पेश करें।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पर्दा इ़ज़्ज़त है बे इ़ज़्ज़ती नहीं

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नती ज़ेवर''** सफ़ह़ा 82 पर शैख़ुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی तह़रीर फ़रमाते हैं : आज कल बा'ज़ मुलह़िद (या'नी बे दीन) क़िस्म के दुश्मनाने इस्लाम मुसलमान

www.dawateislami.net

औ़रतों को येह कह कर बहकाया करते हैं कि इस्लाम ने औ़रतों को पर्दे में रख कर औ़रतों की बे इ़ज़्ज़ती की है इस लिये औ़रतों को पर्दों से निकल कर हर मैदान में मर्दों के दोश बदोश खड़ी हो जाना चाहिये। मगर प्यारी बहनो ! ख़ूब अच्छी त़रह़ समझ लो कि इन मर्दों का येह प्रोपेगन्डा इतना गन्दा और घिनावना फ़रैब और धोका है कि शायद शैत़ान को भी न सूझा होगा।

ऐ अल्लाह عزوجل की बन्दियो ! तुम्हीं इन्साफ़ करो कि तमाम किताबें खुली पड़ी रहती हैं और बे पर्दा रहती हैं मगर कु़रआन शरीफ़ पर हमेशा ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा जाता है तो बताओ क्या कु़रआने मजीद पर गिलाफ़ चढ़ाना येह कु़रआन की इ़ज़्ज़त है या बे इ़ज़्ज़ती ? इसी त़रह़ तमाम दुन्या की मस्जिदें बे पर्दा रखी गई हैं मगर ख़ानए का'बा पर ग़िलाफ़ चढ़ा कर इस को पर्दे में रखा गया है तो बताओ क्या का'बए मुक़द्दसा पर गिलाफ़ चढ़ाना इस की इ़ज़्ज़त है या बे इ़ज़्ज़ती ? तमाम दुन्या को मा'लूम है कि कु़रआने मजीद और का'बए मुअ़ज़्ज़मा पर गिलाफ़ चढ़ा कर इन दोनों की इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत का ए'लान किया गया है कि तमाम किताबों में सब से अफ़्ज़लो आ'ला कु़रआन है और तमाम मस्जिदों में अफ़्ज़लो आ'ला का'बए मुअ़ज़्ज़मा है। इसी त़रह़ मुसलमान औ़रतों को पर्दे का हुक्म दे कर **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की त़रफ़ से इस बात का ए'लान किया गया है कि अक़्वामे आ़लम की तमाम औ़रतों में मुसलमान औ़रत तमाम औ़रतों से अफ़्ज़लो आ'ला है।

www.dawateislami.net

प्यारी बहनो ! अब तुम्हीं को इस का फ़ैसला करना है कि इस्लाम ने मुसलमान औ़रतों को पर्दों में रख कर इन की इ़ज़्ज़त बढ़ाई है या इन की बे इ़ज़्ज़ती की ही ?

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

किस किस से पर्दा है ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देवर व जेठ, बहनोई और ख़ालाज़ाद, मामूज़ाद, चचाज़ाद व फूफीज़ाद, फूफा और ख़ालू से पर्दे की ताकीद करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **"जेठ, देवर, बहनोई, फुप्पा (फुफ्फा), ख़ालू, चचाज़ाद, मामूंज़ाद, फुप्पी (फुफ्फी) ज़ाद, ख़ालाज़ाद भाई** येह सब लोग औ़रत के लिये मह़ज़ अजनबी (या'नी ग़ैर मर्द) हैं बल्कि इन का ज़रर (नुक़्सान) निरे (या'नी मुत़लक़न) बेगाने (या'नी पराए) शख़्स के ज़रर से ज़ाइद है कि मह़ज़ ग़ैर (या'नी बिल्कुल ना वाक़िफ़) आदमी घर में आते हुए डरेगा और येह (या'नी बयान कर्दा रिश्तेदार) आपस के मेलजोल (या'नी जान पहचान) के बाइ़ष ख़ौफ़ नहीं रखते । औ़रत निरे अजनबी (या'नी मुत़लक़न ना वाक़िफ़) शख़्स से दफ़्अ़तन (फ़ौरन) मेल नहीं खा सकती (या'नी बे तकल्लुफ़ नहीं हो सकती) और इन (या'नी मज़्कूरा रिश्तेदारों) से लिह़ाज़ टूटा होता है (या'नी झिजक उड़ी हुई होती है) लिहाज़ा जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ग़ैर

www.dawateislami.net

औ़रतों के पास जाने को मन्अ़ फ़रमाया (जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है कि इस पर) एक अन्सारी सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! **जेठ-देवर** के लिये क्या हुक्म है ? फ़रमाया : **जेठ-देवर तो मौत हैं ।"**

(صحیح البخاری، کتاب النکاح،باب لایخلون رجل بامراۃ...الخ، ص۱۳۴۴،الحدیث:۵۲۳۲ دار المعرفۃ بیروت. فتاوٰی رضویہ (مُخرَّجہ)، ج۲۲، ص۲۱۷)

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो
तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो
उन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो
वरना सुन लो ! क़ब्र में जब जाओगी
सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

औ़रत के लिये फ़ोन वुसूल करने का त़रीक़ा

इस्लामी बहनों को चाहिये कि अगर ग़ैर मर्दों का फ़ोन वुसूल करना पड़ जाए तो आवाज़ नर्म न रखें मषलन नर्मी के साथ "हेलो हेलो" कहने के बजाए रूखे अन्दाज़ में पूछे : "**कौन ?**" यहां मुआ़मला ज़रा दुश्वार है क्यूंकि इम्कान है कि सामने वाला घर के किसी मर्द से बात करवाने का मुत़ालबा करे, अपना नाम व पैग़ाम बयान करे और बात करने का वक़्त वग़ैरा पूछे, नीज़ येह भी हो सकता है कि ख़ुदा न ख़्वास्ता बा ह़या और बा अ़मल इस्लामी बहन के भिंचे हुए रूखे अन्दाज़े गुफ़्तगू का बुरा मनाए, और शरई मसाइल से ना वाक़िफ़ होने के सबब

www.dawateislami.net

मुंह फट हो तो "कुछ" बोल भी पड़े जैसा कि बा'ज़ इस्लामी भाइयों ने अपना तजरिबा बयान किया है कि ना महरम औरतों से ज़रूरतन फ़ोन पर बात करने की नौबत आने पर हमारे ग़ैर नर्म और रूखे लहजे पर औरतों ने مَعَاذَاللّٰہ इस तरह की बातें सुना दी हैं : (मषलन) **मौलाना ! आप को ग़ुस्सा क्यूं आ रहा है !** बहर हाल आफ़िय्यत इसी में मा'लूम होती है कि "आन्सरिंग मशीन (**Answering Machine**)(1) लगा दी जाए और इस में मर्द की आवाज़ में येह जुम्ला भर दिया जाए : "पैग़ाम रेकोर्ड (**Record**) करवा दीजिये ।" बा'द में मर्दों के रेकोर्ड शुदा पैग़ामात घर के मर्द अपनी सहूलिय्यत से सुन लिया करें । इसी तरह ना महरम पीर साहिब से लबो लहजा क़दरे रुखा सा हो । आवाज़ लोचदार व नर्म और अन्दाज़ बे तकल्लुफ़ाना न हो ।"

उम्महातुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُنَّ के मुतअ़ल्लिक़ पारह 22 सूरतुल अहज़ाब आयत नम्बर 32 में इरशादे रब्बुल इबाद है :

يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَیْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَیَطْمَعَ الَّذِیْ فِیْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّ قُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۚ﴿۳۲﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ नबी की बीबियो ! तुम और औरतों की तरह नहीं हो, अगर अल्लाह से डरो तो बात में ऐसी नर्मी न करो कि दिल का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी बात कहो ।*

---

(1).... ऐसी मशीन जो किसी की ग़ैर मौजूदगी में टेलीफ़ोन कोल रेकोर्ड करती है ।

www.dawateislami.net

साबिक़ा रिवायात से पता चला कि औ़रत घर में या बाहर सर ता पा बापर्दा रहे, घर में रहते हुए भी अपने ग़ैर मह़रम रिश्तेदारों से पर्दा लाज़िम है, इसी त़रह़ ज़रूरतन घर से बाहर निकलते वक़्त भी पर्दे का लिह़ाज़ रखना इन्तिहाई ज़रूरी है लिहाज़ा

घर से निकलते वक़्त की एह़तियात

शरई इजाज़त की सूरत में घर से निकलते वक़्त इस्लामी बहन ग़ैर जाज़िबे नज़र कपड़े का ढिला ढाला मदनी बुर्क़अ़ औढ़े, दस्ताने और जुराबें पहने। मगर दस्तानों और जुराबों का कपड़ा इतना बारीक न हो कि खाल की रंगत झलके, जहां कहीं ग़ैर मर्दों की नज़र पड़ने का इमकान हो वहां चेहरे से निक़ाब न उठाए मषलन अपने या किसी के घर की सीढ़ी और गली मह़ल्ला वग़ैरा, नीचे की त़रफ़ से भी इस त़रह़ बुर्क़अ़ न उठाए कि बदन के रंग बिरंगे कपड़ों पर ग़ैर मर्दों की नज़र पड़े, वाज़ेह़ रहे कि औ़रत के सर से ले कर पाउं के गिट्टों के नीचे तक जिस्म का कोई भी हि़स्सा मषलन सर के बाल या बाज़ू या कलाई या गला या पेट या पिन्डली वग़ैरा अजनबी मर्द (या'नी जिस से शादी हमेशा के लिये ह़राम न हो) पर बिला इजाज़ते शरई ज़ाहिर न हो बल्कि अगर लिबास ऐसा महीन या'नी पतला है जिस से बदन की रंगत झलके या ऐसा चुस्त है कि किसी उ़ज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत या उभार वग़ैरा) ज़ाहिर हो या दूपट्टा

www.dawateislami.net

इतना बारीक है कि बालों की सियाही चमके येह भी बे पर्दगी है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माहि़ये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़षे ख़ैरो बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जो वज़्ए़ लिबास (या'नी लिबास की बनावट) व त़रीक़ए पौशिश (या'नी पहनने का अन्दाज़) अब औ़रात में राइज है कि कपड़े बारीक जिन में से बदन चमकता है या सर के बालों या गले या बाज़ू या कलाई या पेट या पिन्डली का कोई ह़िस्सा खुला हो यूं तो (सिवा) ख़ास मह़ारिम के जिन से निकाह़ हमेशा को ह़राम है, किसी के सामने होना सख़्त ह़रामे क़त़ई है।

(फ़तावा रज़विय्या (मुख़र्रजा), जि. 22, स. 217)

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 288)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे पर्दगी सबबे ग़ज़बे इलाही

मुफस्सिरे कुरआन, ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना ह़ाफ़िज़ सय्यिद मुफ़्ती मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی पारह 18 सूरतुन्नूर आयत नम्बर 31 के तह़त **"तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान"**

www.dawateislami.net

में झांझन[1] की मुमानअ़त बयान करते हुए फ़रमाते हैं : "इस से समझना चाहिये कि जब ज़ेवर की आवाज़ अ़दमे क़बूले दुआ़ (या'नी दुआ़ क़बूल न होने) का सबब है तो ख़ास औ़रत की (अपनी) आवाज़ (का बिला इजाज़ते शरई ग़ैर मर्दों तक पहुंचना) और **उस की बे पर्दगी कैसी मूजिबे ग़ज़बे इलाही होगी,** पर्दे की त़रफ़ से बे परवाई, तबाही का सबब है (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की पनाह) ।"

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पर्दे की अहम्मिय्यत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस बयान में आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि सरापाए इफ़्फ़त व इ़स्मत, जिगर गोशए मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का कैसा मदनी पर्दा था। ज़िन्दगी भर पर्दा, कफ़न व दफ़न में भी पर्दा, जनाज़ा भी रात के अन्धेरे में पढ़ने की वसिय्यत फ़रमाई ताकि ग़ैर मह़रम की नज़र न पड़े लिहाज़ा इस मालिकए जन्नत, साह़िबए रिदाए इफ़्फ़त व इ़स्मत को अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत इतनी इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमाएगा कि जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पुल सिरात़ पर तशरीफ़ लाएंगी तो तमाम अहले मेह़शर को हुक्म होगा : सर झुका लो ! ह़ज़रते मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बेटी फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا आ रही हैं।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) .... औरतों के पाउं का एक ज़ेवर जो अन्दर से खोखला होता है और अन्दर पड़े हुए दानों की वजह से **छन-छन** करता है।

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! यक़ीनन पर्दे की बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत है, पर्दा मुसलमान औ़रत की ज़ीनत है, उस की इफ़्फ़त व पाक दामनी की अ़लामत है, शर्मो ह़या का निशान है, बा पर्दा इस्लामी बहन **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰه تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم का हुक्म मानने वाली है जब कि बे पर्दगी ग़ज़बे इलाही की मूजिब और मुसलमानों की तबाही व बरबादी, तनज़्ज़ुली व पस्ती और दुन्या व आख़िरत की ज़िल्लत का सबब है । तमाम इस्लामी बहनों की ख़िदमत में गुज़ारिश है कि इस्लाम की ता'लीमात पर अ़मल और ख़्वातीने इस्लाम को आईडियल बनाने में ही बेहतरी और दीनो दुन्या की भलाई है । ग़ैर शरई ज़ीनतों और फ़ैशनों से जान छुड़ाइये, शरई पर्दे की पाबन्दी कीजिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के ज़ेरे एहतिमाम होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत कीजिये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त की ख़ूब ख़ूब बहारें हैं, मषलन फ़ैशन परस्ती और फ़ह़्ह़ाशी व उ़रयानी से सरशार मुआ़शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों की दल-दल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ाति़मा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ) की दीवानियां बन गईं, जो बे नमाज़ी थीं नमाज़ी बन गईं, गले में

www.dawateislami.net

दूपट्टा लटका कर शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटकने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُن की शर्मो ह़या की वोह बरकतें नसीब हुईं कि मदनी बुर्क़अ़ उन के लिबास का जुज़्वे ला युन्फ़क (या'नी जुदा न होने वाला ह़िस्सा) बन गया और उन्हों ने इस मदनी मक़्सद को अपना लिया कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।"** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से बा'ज़ अवक़ात रब्बे काइनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से **ईमान अफ़रोज़ करिश्मात** का भी ज़ुहूर हुवा मषलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे अवलादों को अवलाद नसीब हुई, आसेब ज़दा को ख़ुलासी मिली वग़ैरहा । तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"पर्दे के बारे में सुवाल जवाब"** सफ़ह़ा 182 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ नक़्ल फ़रमाते हैं :

मैं फ़ैशनेबल थी !

इस्लामी बहनो ! एक मुबल्लिग़ए दा'वते इस्लामी ने दा'वते इस्लामी में अपनी शुमूलिय्यत के जो अस्बाब बयान किये वोह मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे **एक** इस्लामी बहन के

www.dawateislami.net

तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नित नए **फ़ैशन** के कपड़े पहना करती और **बे पर्दा** ही घर से निकल जाया करती थी। एक मरतबा चन्द इस्लामी बहनें हमारे घर आईं और **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल की बरकतें बताते हुए हमारे घर में **सुन्नतों भरा इजतिमाअ़** करने की इजाज़त मांगी। हम ने ब ख़ूशी इजाज़त दी, आख़िर इजतिमाअ़ का दिन भी आ गया, मैं ख़ुद भी उस इजतिमाअ़ में शरीक हुई, मुझे इस्लामी बहनों की **सादगी, हुस्ने अख़्लाक़** और मदनी काम करने का अन्दाज़ बहुत पसन्द आया। बिल ख़ुसूस रिक़्क़त अंगेज़ **दुआ़** से मैं बहुत मुतअष्षिर हुई, ऐसी दुआ़ मैं ने पहली मरतबा सुनी थी। यूं इस इजतिमाअ़ की बरकत से मुझे गुनाहों से **तौबा** नसीब हुई और मैं **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गई। **फ़ैशन** तर्क कर के मैं ने भी सादगी अपना ली और अब ज़ैली सत्ह़ की ज़िम्मेदार की ह़ैषिय्यत से दा'वते इस्लामी का **मदनी काम** कर के अपनी आख़िरत बनाने के लिये कोशां हूं, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मक्तबतुल मदीना का जारी कर्दा एक केसिट बयान रोज़ाना सुनने का भी मा'मूल है। मैं **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करती हूं कि उस ने मुझे इतना प्यारा मदनी माह़ोल अ़त़ा किया, ऐ काश ! हर इस्लामी बहन **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाए।

ऐ इस्लामी बहनो ! तुम्हारे लिये भी　　सुनो है बहुत काम का मदनी माह़ोल
तुम्हें सुन्नतों और पर्दे के अह़काम　　येह ता'लीम फ़रमाएगा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 603)

www.dawateislami.net

क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) के एक इस्लामी भाई का बयान कुछ यूं है कि हमारे अ़लाक़े में एक वर्कशॉप थी, उस में एक **T.V** भी रखा हुवा था जिस पर कारीगर मुख़्तलिफ़ चैनल्ज़ देखा करते थे। रमज़ानुल मुबारक सि. 1429 हि. (सि. 2008 ई.) में जब दा'वते इस्लामी का **मदनी चैनल** शुरूअ़ हुवा तो उन्हें कुछ ऐसा भाया के दीगर तमाम चैनल्ज़ के बजाए अब वोह मदनी चैनल देखने लगे। इन कारीगरों में एक क्रिस्चैन नौजवान भी शामिल था वोह भी मदनी चैनल के पुरसोज़ सिलसिलों (प्रोग्राम्ज़) में दिलचस्पी लेने लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तीन दिन के बा'द वोह कहने लगा कि **मैं अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ **की सादगी से बहुत मुतअष्षिर हुवा हूं।** और वोह कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गया।

मदनी चैनल की मुहिम है नफ़्सो शैतां के ख़िलाफ़
जो भी देखेगा करेगा اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ *ए'तिराफ़*

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 8

ख़ातूने जन्नत

के

फ़ाक़े

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत के फ़ाक़े

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सहाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना समुरा सुवाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहरबार में ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे रब्बे लम यज़ल में सब से अच्छा अ़मल कौन सा है ? तो मह़बूबे ख़ुदा, सरवरे अम्बिया, शाहे हर दो सरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “सच बोलना और अमानत अदा करना।” (राविये ह़दीष ह़ज़रते सय्यिदुना समुरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं :) मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मज़ीद कुछ इरशाद फ़रमाइये ! फ़रमाया : “कषरते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अ़मल फ़क़्र (या’नी गुर्बत) **को दूर करता है।”**

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علٰی رسولِ اللّٰہ، ص ۱۳۵)

तुम पढ़ो साह़िबे लौलाक पर कषरत से दुरूद
है अ़जब दर्दे निहां (1) और अमां (2) का ता’वीज़

(काफ़ी की ना’त, अज़ मौलाना किफ़ायत अ़ली काफ़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الشَّافِی)

(1).... पोशीदा, छुपा हुवा दर्द। (2).... ह़िफ़ाज़त

www.dawateislami.net

ख़ातूने जन्नत का आ़लमे ग़ुर्बत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 680 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताबे मुस्तत़ाब "**मुकाशफ़तुल कुलूब**" सफ़ह़ा 265 पर हु़ज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی नक़्ल फ़रमाते हैं : मह़बूबे शाहे कौनैन ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि दिलो जान से प्यारे, बे कसों के सहारे, दो आ़लम के राज दुलारे صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ से बहुत **हुस्ने ज़न रखते थे** । एक मरतबा आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : ऐ इमरान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मेरे नज़दीक तुम्हारा एक ख़ास मक़ाम है, क्या तुम मेरी बेटी फ़ात़िमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की इयादत को चलोगे ? मैं ने अ़र्ज़ की : "فِدَاکَ اُمِّیْ وَاَبِیْ یَا رَسُوْلَ اللہ" या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! क्यूं नहीं ? ज़रूर चलूंगा ।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हु़सैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : फिर मैं मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मइय्यत में (معیت या'नी साथ) ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दरे अन्वर पर ह़ाज़िर हो गया । **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **ने दरवाज़े पर दस्तक दी और सलाम के बा'द अन्दर आने की इजाज़त त़लब फ़रमाई** । शहज़ादिये मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा

www.dawateislami.net

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने तशरीफ़ आवरी के लिये अ़र्ज़ की, तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे साथ एक और शख़्स भी है। पूछा : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वोह कौन है ? फ़रमाया : "इमरान।" पैकरे शर्मो ह़या ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अ़र्ज़ करने लगीं : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मेरे पास पर्दे के लिये सिर्फ़ एक चादर है। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस्ते अक़्दस के इशारे से फ़रमाया : तुम ऐसे ऐसे पर्दा कर लो। अ़र्ज़ की : इस त़रह़ मेरा जिस्म तो ढक जाता है मगर सर नहीं छुपता। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की त़रफ़ अपनी मुबारक चादर बढ़ा दी और फ़रमाया : इस से सर ढाप लो। फिर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم घर में दाख़िल हुए और सलाम के बा'द पूछा : बेटी ! कैसी हो ? तो शहज़ादिये इस्लाम, मालिकए दारुस्सलाम ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी **ग़ुर्बत और बीमारी की ह़ालत** बयान करते हुए अ़र्ज़ किया : ऐ ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं दोहरी तक्लीफ़ में मुब्तला हूं, एक तो बीमारी की तक्लीफ़ और दूसरी भूक की तक्लीफ़ ! और मेरे पास ऐसी कोई चीज़ भी नहीं जिसे खा कर भूक मिटा सकूं। ये सुन कर दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, दुन्या व आख़िरत के शाहो ताजदार, उम्मत के ग़म गुसार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अश्क बार हो गए और अपने इख़्तियारी फ़ाक़ों की ख़बर और तसल्ली देते हुए इरशाद फ़रमाया : बेटी ! घबराओ नहीं, रब्ब (عَزَّوَجَلَّ) की क़सम ! मैं ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया ह़ालांकि बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में

www.dawateislami.net

मेरा तुम से ज़ियादा मर्तबा है, अगर मैं **अल्लाह** तआ़ला से मांगू तो वोह मुझे ज़रूर खिलाए मगर **मैं ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी है।**

कौनो मकां के आक़ा हो कर, दोनों जहां के दाता हो कर

फ़ाक़े से हैं शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

सरवरे दो जहां(1) नबिय्ये इन्सो जां(2) वालिये कौषरो जिनां(3) صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के कंधे पर हाथ रख कर मजीद मह़ब्बतों, शफ़्क़तों और बिशारतों से नवाज़ते हुए इरशाद फ़रमाया : "ख़ुश हो जाओ कि तुम जन्नती औ़रतों की सरदार हो और **तुम जन्नत के ऐसे मह़ल्लात में रहोगी,** जिन में कोई ऐ़ब होगा न दुख और न ही कोई तक्लीफ़। फिर फ़रमाया : अपने चचाज़ाद के साथ ख़ुश रहो(4) मैं ने दुन्या व आख़िरत के सरदार के साथ तुम्हारा निकाह़ किया है।"

(مُکَاشَفَۃُ الْقُلُوب،باب فی فضل الفقراء،ص ۱۸۰)

***अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।*

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मक़ामे मरयमो ह़व्वा भी है बजा लेकिन तेरा मक़ाम है तेरा मक़ाम या ज़हरा !
हर एक सांस से आती थी मुस्त़फ़ा की महक तेरी ह़यात पे लाखों सलाम या ज़हरा !

---

(1).... या'नी दोनों जहां के सरदार (2).... या'नी इन्सानो जिन्नात के नबी (3).... या'नी नह्‌रे कौषर व जन्नतों के मालिक (4).... या'नी ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अहले अ़रब बाप के चचाज़ाद को भी चचाज़ाद कह देते हैं। (इ़ल्मिय्या)

www.dawateislami.net

"फ़ातिमा" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से इस वाक़िए से ह़ासिल होने वाले 5 मदनी फूल

﴾1﴿.... ह़बीबे ख़ुदा صلّی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلّم और अहले बैते मुस्त़फ़ा رضی اللہ تعالٰی عنہم अस्ह़ाबे इफ़्फ़तो अ़ज़मत (या'नी पाक दामनी व बुज़ुर्गी वाले), शर्मो ह़या के पैकर और हर ह़ाल में इस दौलते बे मिषाल से माला माल मुक़द्दस हस्तियां हैं । बिल ख़ुसूस वालिदए ह़सनैन व उम्मे कुल्षूम व रुक़य्या ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا तो **इन्तिहाई दर्जा बा पर्दा व बा ह़या हैं,** आप رضی اللہ تعالٰی عنہا का जनाज़ा भी पर्दे में उठाया गया यहां तक कि रिवायत में आता है कि बरोज़े क़ियामत भी आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के शर्मो ह़या का मुकम्मल लिह़ाज़ रखते हुए आप رضی اللہ تعالٰی عنہا की आमद पर तमाम अहले मेह़शर को निगाहें झुकाने का हुक्म दिया जाएगा ।

(اَلْجامِعُ الصَّغِيْر مع فَيْضُ الْقَدِيْر، حرف الهمزه، ج ۱، ص ۵۴۹، الحديث: ۸۲۲)

येही माएं हैं जिन की गोद में इस्लाम पलता था

ह़या से इन की इन्सान नूर के सांचे में ढलता था

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

﴾2﴿.... शादी के बा'द बेटी के घर जाना और उस की इ़यादत करना सरकारे मदीना صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم के मुबारक अ़मल से षाबित है।

﴾3﴿.... इस नूरानी वाक़िए़ से येह भी पता चला कि शाहे अबरार, दो आ़लम के ताजदार, बि इज़्ने परवर दगार صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم मालिको मुख़्तार हैं। तक्लीफ़ों और फ़ाक़ों भरी ज़िन्दगी बसर करना आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم का मह़्ज़ इख़्तियारी अ़मल था न कि इज़्तिरारी (या'नी मजबूरी व बे बसी न थी)। तभी तो आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "अगर मैं (**अल्लाह** عزوجل से) मांगूं तो वोह मुझे ज़रूर खिलाए मगर मैं ने दुन्या पर आख़िरत को तरजीह़ दी।" इसी त़रह़ आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم का मुबारक घराना भी **क़नाअ़त की दौलत से माला माल और पैकरे सब्रो रिज़ा था।**

कुल जहां मिल्क और जव की रोटी ग़िज़ा

उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ सलामे रज़ा :

हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم तमाम जहानों के मालिक हैं मगर क़नाअ़त का येह आ़लम कि बिग़ैर छने जव के आटे की रोटी

www.dawateislami.net

तनावुल फ़रमाते। **अल्लाह अल्लाह** ! इस पेट के सब्र का येह आ़लम इस ! साबिर पेट पर लाखों सलाम का नुज़ूल हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾4﴿.... ग़ुर्बत और फ़क़्रो फ़ाक़ा में सब्र करना और इस की तलक़ीन करना सुन्नते मुस्त़फ़ा है, जैसा कि इस वाक़िए से पता चलता है कि **राह़तुल आ़शिक़ीन, अनीसुल ग़ुरबाए वल मसाकीन, जनाबे रह़्मतुल्लिल आ़लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी लाडली और चहीती बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को ग़ुर्बत की **आज़माइश में सब्र करने और षाबित क़दम रहने की तलक़ीन फ़रमाई** और ख़ुद भी कई दिनों से फ़ाक़ों पर सब्र किये हुए थे।

आप भूके रहें और पेट पे पथ्थर बांधे

ने'मतों के दें हमें ख़्वान मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश अज़् अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه स. 306)

﴾5﴿.... ग़ुर्बत **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की ने'मत, नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चाहत, बहुत सारी फ़ज़ीलत और बे शुमार फ़वाइद का पेश ख़ैमा है, इसी वजह से अल्लाह वालों ने ग़ुर्बत को पसन्द फ़रमाया।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

काशानए फ़ातिमा में फ़ाक़ा कशी का आलम

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 85 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी**" सफ़ह़ा 42 पर है : एक दिन हु़ज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़लाक صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : मेरे दोनों बेटे (या'नी ह़ज़राते ह़सन व हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) कहां हैं ? ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : आज जब हम ने सुब्ह़ की तो हमारे घर में खाने के लिये कोई चीज़ नहीं थी तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुझ से फ़रमाया कि "मैं इन दोनों को कहीं ले जाता हूं, मुझे डर है कि येह तुम्हारे पास (भूक की वजह से) रोएंगे और तुम्हारे पास इन्हें खिलाने को कुछ नहीं ।" पस वोह फ़ुलां यहूदी की त़रफ़ गए हैं ।

तो हु़ज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم भी उधर तशरीफ़ ले गए, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहां पहुंचे तो देखा कि दोनों शहज़ादे ह़ौज़ में खेल रहे हैं और कुछ बची हुई खजूरें उन के सामने पड़ी हैं, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! क्या मेरे बेटों को गर्मी की शिद्दत से पहले पहले घर नहीं ले जाओगे ?" ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आज जब हम ने सुब्ह़

www.dawateislami.net

की तो हमारे घर में खाने के लिये कुछ नहीं था, अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ी देर बैठ जाएं तो मैं ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये येह बची हुई खजूरें चुन लूं।" पस ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा हो गए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने बची हुई खजूरें इकट्ठी कर के एक कपड़े में जम्अ़ कीं फिर चल दिये, एक शहज़ादे को ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और दूसरे को ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने उठा लिया यहां तक कि उन को घर पहुंचा दिया।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر، اسماء بنت عميس عن فاطمة، ج ۹، ص ۳۷۶، الحديث: ۱۸۴۷۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! नबी की लाडली, आक़ा की शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी किस क़दर फ़ाक़ा मस्ती में और इस कठिन दौर को कितने सब्रो शुक्र के साथ गुज़ारा, पूरी तारीख़े इस्लाम शाहिद है कि ग़ुर्बत व फ़ाक़े बल्कि किसी भी मुश्किल के बारे में शिकवा व शिकायत के लिये आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लब न खुले, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे नुबुव्वत के ज़ेरे साया पलीं बढ़ी, जहां से इन्हों ने तर्बिय्यत पाई थी कि फ़क्र, ग़ना (या'नी दौलत मन्दी) से अफ़ज़ल है। इस बारगाहे आ़लिया की ता'लीमात में से है कि साबिर ग़रीब को रोज़े क़ियामत उमरा पर फ़ज़ीलत ह़ासिल होगी जैसा कि

www.dawateislami.net

जन्नत पाने में सबक़त

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 743 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** सफ़ह़ा 672 पर ह़ाफ़िज़ुल मशरिक़ो मग़रिब ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुह़म्मद शरफ़ुद्दीन अ़ब्दुल मोमिन दिमयाती عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत बयान करते हुए नक़्ल फ़रमाते हैं : फ़ैज़याबे फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मुह़िब्बुल फ़ुक़राए वल मसाकीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है :

''يَدْخُلُ فُقَرَاءُ الْمُسْلِمِيْنَ الْجَنَّةَ قَبْلَ الْاَغْنِيَاءِ بِنِصْفِ يَوْمٍ وَهُوَ خَمْسُمِائَةِ عَامٍ''

या'नी मुसलमान फ़ुक़रा अग़निया से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और वोह (आधा दिन) 500 साल (के बराबर) होगा ।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی،کتاب الزھد،باب ماجاء ان فقراء المھاجرین یدخلون...الخ، ص ۵٦۲، الحدیث:۲۳۵۴)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی **''मिरआतुल मनाजीह़''** जिल्द 7, सफ़ह़ा 67 पर इस ह़दीषे पाक की तशरीह़ में फ़रमाते हैं : ''येह उन फ़ुक़रा की शान दिखाने के लिये होगा कि अमीरों को ह़िसाब के नाम पर रोक लिया गया और फ़क़ीरों को जन्नत की त़रफ़ चलता कर दिया गया ।''

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح،کتاب الرقاق،باب فضل الفقراء ج۷، ص٦۷)

www.dawateislami.net

अ़ज़ाबे क़ब्रो मेह़शर से, बचा लो नारे दोज़ख़ से

ख़ुदारा साथ ले के जाओ जन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 147)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुर्बत पर सब्र

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह सब फ़ज़ाइल उस ग़रीब मुसलमान के लिये हैं जो अपनी ग़ुर्बत पर सब्र करे। हर वक़्त जम्ए़ माल के चक्कर में पड़े रहने, अमीरों और उन की ने'मतों को देख देख कर दिल जलाने या ह़सद की आफ़त में मुब्तला होने वाला जो मुफ़्लिस व नादार अपनी ग़ुर्बत पर साबिर नहीं वोह बयान कर्दा इन्आ़म का मुस्तह़िक़ नहीं और अगर बद क़िस्मती से बे सब्री में मज़ीद आगे बढ़ गया तो फिर ज़िल्लतो रुस्वाई मुक़द्दर बन सकती है। पस नादारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाह** क़दीर عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़या तदबीर से डरते रहना ज़रूरी है** क्यूंकि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए़ आज़माइश में डाला गया हो और ना जाइज़ गिले शिकवे, ग़ैर शरई बे सब्री व ग़ुर्बत व मुसीबत को ह़राम ज़राएअ़ से ख़त्म करने की कोशिशें आख़िरत में तबाही व बरबादी का सबब बन जाएं। मोह़ताजी एक मरज़ है जो इस में मुब्तला हुवा और सब्र

www.dawateislami.net

किया वोह इस का अज्रो षवाब पाएगा और ग़रीब लोग अमीरों से पहले जन्नत में जाएंगे चुनान्चे नबिय्ये पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है कि फ़ुक़रा अमीरों से 500 साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।

(سنن الترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء ان فقرا......الخ، ص ٥٦٢، الحدیث:٢٣٥٣)

रहें सब शाद घरवाले शहा ! थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़त़ा हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 186)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अहले बैत के तीन रोज़े

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 1442 पर मन्क़ूल है : ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا बचपन में एक बार बीमार हो गए तो अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा کَرَّمَ اللّٰہ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم व ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ात़िमा और ख़ादिमा ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़िज़्ज़ा (رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने इन शहज़ादों رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا की सिह़्ह़त याबी के लिये तीन रोज़ों की मन्नत मानी। **अल्लाह** तआ़ला ने दोनों शहज़ादों رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُمَا को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाई, चुनान्चे तीन रोज़े रख लिये गए। **ह़ज़रते**

www.dawateislami.net

मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ **तीन साअ़** जव लाए, एक एक साअ़ (या'नी 4 किलो में से 160 ग्राम कम) तीनों दिन पकाया, जब इफ़्तार का वक़्त आया और तीनों रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम और एक दिन क़ैदी दरवाज़े पर ह़ाज़िर हो गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां उन साइलों को दे दीं और सिर्फ़ पानी से इफ़्त़ार कर के अगला रोज़ा रख लिया।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, पा. 29, अद्दह्र : तह़्तुल आयह : 8, स. 1073, मुलख़्ख़सन)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

भूके रह के ख़ुद औरों को खिला देते थे
कैसे साबिर थे मुह़म्मद के घराने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب !　　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ुरआने मजीद में अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की प्यारी शहज़ादी के घराने के इस ईमान अफ़रोज़ ईषार को पारह 29 सूरतुद्दह्र आयत नम्बर 8-9 में इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

www.dawateislami.net

وَ يُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّ يَتِيْمًا وَّ اَسِيْرًا ۝ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُكُوْرًا ۝

(پ۲۹، الدھر:۸،۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और खाना खिलाते हैं उस की महब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (या'नी क़ैदी) को। उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं, तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते।

سُبْحٰنَ اللّٰہ इस ईमान अफ़रोज़ **हिकायत** में अहले बैते अत़हार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के जज़्बए ईषार का क्या ख़ूब इज़्हार है ! वाक़ेई तीन दिन तक सिर्फ़ पानी पी कर **रोज़ा** रख लेना कोई मा'मूली बात नहीं। हम अगर एक **रोज़ा** रखें तो इफ़्त़ार में ठंडा ठंडा शरबत, कबाब समोसे, मीठे मीठे फल, गर्मा गर्म बिरयानी और न जाने क्या क्या चाहिये ! इस क़दर तंगदस्ती के आ़लम में इतना शानदार ईषार इन्हीं का हि़स्सा था।

ईषार की फ़ज़ीलत में ख़ुद मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : **''जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर (किसी और को) तरजीह़ दे, तो अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **उसे बख़्श देता है।''**

(کَنْزُ الْعُمَّال،کتاب المواعظ والرقائق والخطب والحکم،الباب الاول فی المواعظ والترغیبات،ج۱۵،ص۳۳۲،الحدیث:۴۳۱۰۵)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़ाक़ा कशिये फ़ातिमा और दुआए मुस्तफ़ा

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : एक दफ़्आ हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुईं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी का हाल मुलाहज़ा फ़रमाया कि शिद्दते भूक की वजह से चेहरे से ख़ून ख़त्म और रंग ज़र्द पड़ चुका है, हबीबे ख़ुदा, शाहे हर दो सरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को क़रीब बुलाया और अपना दस्ते पुर अन्वार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सीने पर रख कर बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की :

''اَللّٰھُمَّ مُشْبِعَ الْجَاعَۃِ وَرَافِعَ الْوَضِیْعَۃِ اِرْفَعْ فَاطِمَۃَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ

तर्जमा : *ऐ भूकों को सैर करने वाले और पस्तों को बुलन्द करने वाले परवर दगार ! फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद से भूक की शिद्दत उठा ले ।*

हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : दुआए मुस्तफ़ा के बा'द मैं ने मुलाहज़ा किया कि हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के चेहरे की ज़र्दी पर ख़ून ग़ालिब आ गया और फिर किसी मौक़अ़ पर जब हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मुलाक़ात हुई तो मेरे पूछने पर बताया कि इस वाक़िए के बा'द मुझे शदीद भूक न लगी ।

(دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ لِلْبَیْہقی، باب ما جاء فی دعائه لابنته فاطمة...الخ ج ٦، ص١٠٨، ملخصاً)

www.dawateislami.net

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

इजाबत का सहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ क्लामे रज़ा :

हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہٖ وسلم की दुआ़ ने जब इ़ज़्ज़तो शान से क़दम आगे बढ़ाया तो क़बूलिय्यत ने झुक कर ता'ज़ीम दे कर उस को अपने गले लगाया और मुजीबुद्दा'वात की बारगाह से क़बूलिय्यत का शाहाना ताज दिलवाया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जिस हस्ती की दुआ़एं इस क़दर पुर अषर और मक़ामे क़बूलिय्यत पाने में जल्द तर हों उन्हें किस चीज़ की कमी ? लेकिन दुन्यावी व ज़ाहिरी ज़िन्दगी में जो पसन्द किया वोह येही कि अगर्चे **अल्लाह** तआ़ला ने दो जहां की ने'मतें अपने हाथ में दे दी हैं लेकिन गुज़ारा इस त़रह़ किया जाए कि ता क़ियामत आने वाली उम्मत के लिये सब्रो भूक की सुन्नत क़ाइम हो जाए। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत علیہ رحمۃ رب العزت "**ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़**" में शहनशाहे काइनात की मिलकिय्यत व इख़्तियारी फ़क्र की त़रफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :

www.dawateislami.net

मालिके कौनैन है गो पास कुछ रखते नहीं

दो जहां की ने'मतें हैं इन के ख़ाली हाथ में

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्ह़े कलामे रज़ा :

हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم तमाम जहानों के मालिको मुख़्तार हैं मगर अपने पास कुछ नहीं रखते। दोनों जहां (दुन्या व उ़क़्बा) की तमाम ने'मते हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہٖ وسلم के तसर्रुफ़ में हैं मगर हाथ ख़ाली हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वस्वसा : येह चश्म दीद वाक़िआ़ बयान करने वाले सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ातूने जन्नत, पैकरे इफ़्फ़तो इस्मत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के लिये ना मह़रम हैं, फिर पर्दे का लिह़ाज़ क्यूं न रखा गया ?

जवाबे वस्वसा : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र अह़मद बिन हुसैन बैहक़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इख़्तितामे रिवायत पर इस वस्वसे की काट करते हुए सराह़त फ़रमाई है कि येह वाक़िआ़ आयते पर्दा नाज़िल होने से पहले का है।

(دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ لِلْبَیْہَقی، باب ماجاء فی دعائہ لابنتہ فاطمۃ...الخ، ج۱، ص۱۰۸)

वर्ना ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा ज़हरा, त़य्यिबा, त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तो बा पर्दा और पैकरे शर्मो ह़या थीं, पर्दे के शरई

www.dawateislami.net

हुक्म के नुज़ूल के बा'द ग़ैर मर्दों से गुफ़्त्गू और बे पर्दगी से कोसों दूर रहीं, इन की पर्दादरी और ह़यादारी **ज़र्बुल मषल**(1) बन गई, पर्दा और रिदाए ह़या का इतना ख़याल कि ब वक़्ते कुर्बे वफ़ात अपने कफ़न को भी बा पर्दा रखने की वसिय्यत फ़रमाई। सीरते फ़ातिमा का येह लाइक़े तक़लीद पहलू (या'नी गोशा) इस्लामी बहनों की तवज्जोह चाहता है। फ़ोन पर ग़ैर मर्दों से गुफ़्त्गू, ना मह़रमों से इन्टरनेट पर चेटिंग और चादर व चार दीवारी को उ़बूर करने वालियां ग़ौर करें और सुन लें कि अगर दुन्या में इ़ज़्ज़त व वक़ार और आख़िरत में सुर्ख़रूई मत़लूब हो तो पर्दा व रिदाए ह़या का बहुत ख़याल रखिये वर्ना लोग ख़्वाह आप को मोह़तरमा कहते रहें दुन्या व आख़िरत में आप ना मोह़तरमा ही होंगी।

येह शर्हे आयए इ़स्मत है जो है बेश न कम
दिलो नज़र की तबाही है कुर्बे ना मह़रम
ह़या है आंख में बाक़ी न दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा
बहुत दिनों से निज़ामे ह़यात है बरहम
येह सैरगाहें कि मक़तल हैं शर्मो ग़ैरत के
येह मा'सियत के मनाज़िर हैं ज़ीनते आ़लम
येह नीम बाज़ सा बुर्क़अ़ येह दीदाज़ैब निक़ाब
झलक रहा है झला झल क़मीस का रेशम
न देख रश्क से तहज़ीब की नुमाइश को
के सारे फूल येह काग़ज़ के हैं ख़ुदा की क़सम!
वोही है राह तेरे अ़ज़्मो शौक़ की मंज़िल
जहां हैं आ़इशा व फ़ातिमा के नक़्शे क़दम
तेरी ह़यात है किरदारे राबिआ़ बसरी
तेरे फ़साने का मौज़ूअ़ इ़स्मते मरयम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1).... **कहावत** या'नी ऐसा जुम्ला जो मिषाल के त़ौर पर मशहूर हो।

www.dawateislami.net

तीन दिन का फ़ाक़ा

ख़ादिमे बारगाहे रिसालत ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ रिवायत करते हैं कि एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब, बीमार दिलों के त़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मख़्दूमए काइनात, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के घर तशरीफ़ ले गए, तो ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने अपने फ़ाक़े का आ़लम बयान करते हुए अ़र्ज़ की : मैं ने अपने पेट पर तीन पथ्थर बांध रखे हैं और हर पथ्थर एक दिन की भूक की वजह से बांधा है। जवाब में मालिके कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बत़्ने अक़्दस पर चार पथ्थर बंधे हुए दिखाए।

(بَرِیقَۃٌ مَحۡمُوۡدِیَہ، جز۳، ص۲۵، المکتبۃ الشاملۃ)

मालिके दीनो दुन्या हो कर दोनों जहां के सरवर हो कर
फ़ाक़े से हैं शाहे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! शिकम सैर रहना और खाने की लज़्ज़तों से लुत़्फ़ अन्दोज़ होते रहना सुन्नत नहीं बल्कि सुन्नत भूक और फ़ाक़े में है अगर्चे पेट भर कर खाना मुबाह़ या'नी जाइज़ है मगर **"पेट का कुफ़्ले मदीना"** लगाते हुए या'नी अपने पेट को ह़राम और शुबुहात से बचाते हुए ह़लाल ग़िज़ा भी भूक से कम खाने में दीनो दुन्या के बे शुमार फ़वाइद

www.dawateislami.net

हैं । खाना मुयस्सर न होने की सूरत में मजबूरन भूका रहना कमाल नहीं, वाफ़िर मिक़दार में खाना मौजूद होने के बा वुजूद फ़क़त़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर भूक बर्दाश्त करना ह़क़ीक़त में कमाल है और कषीर फ़वाइद व फ़ज़ाइल का मूजिब है जैसा कि

भूक के 10 फ़वाइद

(1) दिल की सफ़ाई । (2) रिक़्क़ते क़ल्बी । (3) आ़जिज़ी व इन्किसारी । (4) आख़िरत की भूक व प्यास की याद । (5) गुनाहों की रग़बत में कमी । (6) नींद में कमी । (7) इ़बादत में आसानी । (8) तन्दुरुस्ती । (9) थोड़ी रोज़ी में किफ़ायत । (10) बचा हुवा ख़ैरात करने का जज़्बा ।

(اِحْیَاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن،کتاب کسر الشھوتین،بیان فوائد الجوع وآفات الشبع، ج۳، ص۱۰۵تا۱۱۰، ملخّصاً)

भूक का सिला

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते है : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن फ़रमाते हैं : اَلْجُوْعُ رَأْسُ مَالِنَا या'नी भूक हमारा बेहतरीन सरमाया है । इस से मुराद येह है कि हमें जो वुस्अ़त, सलामती, इ़बादत, ह़लावत और इ़ल्मे नाफ़ेअ़ ह़ासिल होता है येह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला के लिये भूक और इस पर सब्र करने के सबब ह़ासिल होता है ।

(مِنْھَاجُ الْعَابِدِیْن،تقوی الاعضاء الخمسة، فصل فی رعایة الاعضاء الاربعة العین...الخ، ص۲۲۹)

www.dawateislami.net

भूक सरमाया बने मेरा ख़ुदाए ज़ुल जलाल !

अज़ त़ुफ़ैले मुस्त़फ़ा ! कर भूक से मुझ को निहाल

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जन्नत व दोज़ख़ के दरवाज़े

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : पेट और शर्मगाह जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है और इस की अस्ल पेट भर कर खाना है और आ़जिज़ी व इन्किसारी जन्नत के दरवाज़ो में से एक दरवाज़ा है और इस की जड़ (या'नी बुन्याद) भूक है। अपने ऊपर जहन्नम का दरवाज़ा बन्द करने वाला यक़ीनन अपने लिये जन्नत का दरवाज़ा खोलता है क्यूंकि इन दोनों मुआ़मलात के अन्दर एक दूसरे में मशरिक़ व मग़रिब की त़रह़ फ़र्क़ है लिहाज़ा इन में से एक दरवाज़े के क़रीब होना यक़ीनन दूसरे से दूर होना है। (या'नी जो भूक के ज़रीए़ आ़जिज़ी अपना कर जन्नत के क़रीब हुवा वोह जहन्नम से दूर हुवा और जो डट कर खाने के ज़रीए़ पेट और शर्मगाह की आफ़तों में मुब्तला हुवा वोह जहन्नम से क़रीब हो कर जन्नत से दूर जा पड़ा।)

(اِحیاءُ عُلُوْمِ الدِّیْن،کتاب کسر الشھوتین،بیان فوائد الجوع وآفات الشبع، ج۳، ص۱۰۶)

दूर आफ़त हो डट कर खाने की

काश ! सूरत हो, ख़ुल्द पाने की

www.dawateislami.net

बदन की इस्लाह़

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : तुम पेट भर कर खाने पीने से बचो क्यूंकि येह जिस्म को ख़राब करता, बीमारियां पैदा करता और नमाज़ में सुस्ती लाता है और तुम पर खाने पीने में मियाना रवी लाज़िम है क्यूंकि इस से जिस्म की इस्लाह़ होती और फ़ुज़ूल ख़र्ची से नजात मिलती है।

(کنز العمال، کتاب المعیشۃ، محظور الاکل، ج ۱۵، ص ۱۸۳، الحدیث: ۴۱۷۰۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इन रिवायात व वाकि़आ़त से हमें येह इ़ल्म ह़ासिल हुवा कि शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और ख़ानदाने नुबुव्वत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी का बेशतर ह़िस्सा फ़ाक़ा के आ़लम में गुज़ारा। ताजदारे काइनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द फ़क्रो फ़ाक़ा और सब्र व शिकेबाई के कषीर मवाक़ेअ़ ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ह़याते मुबारका में आए। बहुत कम आमदनी, खाने की तंगी और घर के काम–काज की ज़ियादती कठिन उमूर हैं जिन को बिग़ैर किसी शिकवा व शिकायत के सब्रो शुक्र से गुज़ारना सीरते फ़ात़िमा का एक लाइके़ तक़लीद और क़ाबिले सद तह़सीन पहलू है। याद रखिये ! मुश्किल लमह़ात में वावेला और शोर मचाना बे सूद षाबित होता बल्कि बे सब्री की बिना पर अज्रो षवाब से भी मह़रूम कर देता है, अन्धेरी रात में डरने और

www.dawateislami.net

बिल बिलाने वालों के लिये सूरज जल्दी तुलूअ़ नहीं हो जाता। हां ! सब्र से रोशन सुब्ह़ का इन्तिज़ार करने वालों की नींद ज़ाएअ़ होती है न जान जोखों में पड़ती है। ब तक़ाज़ाए बशरिय्यत जब ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا दुन्यावी मुश्किलात व मसाइब से कबीदा ख़ातिर (या'नी रंजीदा दिल) हुईं तो रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم ने इन की तवज्जोह जन्नती इन्आ़मात व करामात की त़रफ़ दिला दी या'नी रात को सुब्ह़ का इन्तिज़ार करने का हुक्म इरशाद फ़रमाया। इस नफ़्सियाती उसूल को अगर हर ग़मज़दा मुसलमान अपने ऊपर लागू कर ले तो बई़द नहीं कि दिल बरदाश्तगी और ग़मज़दगी अपनी राह ले और राह़तो सुकून का बसेरा हो जाए। बहर कैफ़ सीरते फ़ातिमा में हर मुसलमान के लिये नसीह़त व हिदायत के मदनी फूल हैं बिल खुसूस इस्लामी बहनों के लिये तो ह़याते ज़हरा का हर दौर मषलन शरीफ़ाना बचपन, सौतेले रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक, शादी की सादगी और बेहतरीन अज़्दवाजी ज़िन्दगी अपने अन्दर कई मदनी फूल लिये हुए है। काश ! हर इस्लामी बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के नक़्शे क़दम पर चलने की ह़त्तल इमकान सअ़्य करे, और इस पर मदद पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** का मदनी माह़ोल अपना ले कि येह माह़ोल सीरते उम्महातुल मोअमिनीन और सीरते फ़ातिमा पर अ़मल का दर्स देता है। तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार और इस्लामी बहनों में मदनी काम की कुछ तफ़्सील मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

www.dawateislami.net

मेरे मसाइल ह़ल हो गए

बाबुल मदीना (कराची) की एक मुअ़म्मर इस्लामी बहन का ह़लफ़िया बयान कुछ इस त़रह़ है कि मैं मुख़्तलिफ़ घरेलू मसाइल में गिरिफ़्तार थी। हम किराये के मकान में रहते, मगर आमदनी कम होने की वजह से किराया भी वक़्त पर न दे पाते। बच्चियां भी जवान हो रही थीं, इन की शादियों की फ़िक्र अलग खाए जा रही थी। एक रोज़ किसी इस्लामी बहन से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्हों ने मेरी ग़मख़्वारी की और इनफ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पाबन्दी के साथ शिर्कत की निय्यत करवाई और वहां आ कर अपने मसाइल के लिये दुआ़ करने की भी तरग़ीब दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने लगी। मैं वहां अपने मसाइल के ह़ल के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बाहगाह में दुआ़ भी किया करती। कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के करम से मेरे बच्चों के अब्बू को अच्छी मुलाज़मत मिल गई और करम बालाए करम येह हुवा कि कुछ ही अ़र्से में हम ने किराये का घर छोड़ कर अपना ज़ाती मकान भी ख़रीद लिया। **अल्लाह** मुजीब عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में मांगी जाने वाली दुआ़ की बरकत से बच्चियों की शादियों के फ़रीज़ों से ओ़हदा बरआ होने की त़ाक़त भी इनायत फ़रमा दी। इस

www.dawateislami.net

तृरह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकत से हमारे मसाइल का रेगिस्तान, हंसते मुस्कुराते लहलहाते गुलिस्तान में तब्दील हो गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 289)

बे कसो बे बस व बे यारो मददगार जो हो

आप के दर से शहा सब का भला होता है

(सामाने बख़्शिश अज़ मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द رحمۃ اللہ تعالی علیہ)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी वालों पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर दगार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहनशाहे अबरार صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का कितना बड़ा करम है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों में भी दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की हर तृरफ़ धूमें हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी दा'वते इस्लामी के मदनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ैशन परस्ती से सरशार मुआ़शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मोअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُن की दीवानियां बन गईं। गले में दूपट्टा लटका कर शोपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सीनेमा घरों

www.dawateislami.net

की ज़िनत बनने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُن की शर्मो ह़या के सदक़े वोह बरकतें नसीब हुईं कि मदनी बुर्क़अ़ उन के लिबास का जुज़्वे ला यन्फ़क (या'नी जुदा न होने वाला ह़िस्सा) बन गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी मुन्नों और इस्लामी बहनों को क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और आ़लिमा बनाने के लिये मुतअ़द्दद **''जामिआ़तुल मदीना''** क़ाइम हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में ''ह़ाफ़िज़ात'' और ''मदनिया आ़लिमात'' की ता'दाद बढ़ती जा रही है। बहर ह़ाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी त़रह़ पीछे नहीं हैं, 1433 सिने हिजरी के मदनी माह रबीउ़ल ग़ौष (ब मुत़ाबिक़ मार्च 2012 ई.) में पाकिस्तान के अन्दर होने वाले **दा'वते इस्लामी** के मदनी कामों की इस्लामी बहनों की **''मजलिसे मुशावरत''** की त़रफ़ से मिलने वाली कारकर्दगी की एक झलक मुलाह़ज़ा हो :

《1》.... इस एक मदनी माह में मुल्क भर के अन्दर रोज़ाना तक़रीबन 64,762 घर दर्स हुए **《2》**.... रोज़ाना लगने वाले मद्रसतुल मदीना (बालिग़ात) की ता'दाद लग भग 3,495 और इन से इस्तिफ़ादा करने वालियों की ता'दाद तक़रीबन 38,552 **《3》**.... ह़ल्क़ा/अ़लाक़ा सत्ह़ के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त की ता'दाद तक़रीबन 3,000 और इन में शरीक होने वालियां लगभग 1,95,175 **《4》**.... हफ़्तावार तर्बिय्यती

www.dawateislami.net

ह़ल्कों की शुरका की ता'दाद तक़रीबन 29,829 ﴾5﴿.... तक़रीबन 91,254 मदनी इन्आ़मात के रसाइल तक़्सीम हुए और 82,340 वुसूल हुए ﴾6﴿.... अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत की शुरका की ता'दाद 20,479 ﴾7﴿.... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान या मदनी मुज़ाकरा सुनने वाली इस्लामी बहनों की ता'दाद तक़रीबन 1,19,924 ﴾8﴿.... इनफ़िरादी कोशिश से 22,976 इस्लामी बहनें मदनी माहोल से मुन्सलिक हुईं।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

मेरी जिस क़दर हैं बहनें, सभी मदनी बुर्क़अ़ पहनें
हो करम शहे ज़माना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه स. 288)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाख़ुन काटने के 9 मदनी फूल

﴾1﴿.... जुमुआ़ के दिन नाख़ुन काटना मुस्तह़ब है। हां ! अगर ज़ियादा बढ़ गए हों तो जुमुआ़ का इन्तिज़ार न कीजिये। (الدُّرُّ الْمُخْتَار، ص ۱۲۴) सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा मौलाना अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "बहारे शरीअ़त" हिस्सा 16 सफ़ह़ा 226 पर ह़दीषे पाक नक़्ल फ़रमाते हैं : जो जुमुआ़ के रोज़ नाख़ुन तरशवाए (काटे) **अल्लाह** तआ़ला उस को दूसरे जुमुए तक बलाओं से मह़फ़ूज़ रखेगा और 3 दिन ज़ाइद या'नी 10 दिन तक। (الدُّرُّ الْمُخْتَار، ص ۱۲۴) एक रिवायत में येह भी है कि जो जुमुआ़ के दिन नाख़ुन तरशवाए (काटे) तो रह़मत आएगी और गुनाह जाएंगे। (رَدُّ الْمُحْتَار، ج ۹، ص ۱۲۹)

www.dawateislami.net

《2》.... हाथों के नाख़ुन काटने के मन्क़ूल त़रीक़े का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : पहले सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शुरूअ़ कर के तरतीब वार छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) समेत नाख़ुन काटे जाए मगर अंगूठा छोड़ दीजिये। अब उलटे हाथ की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये। अब आख़िर में सीधे हाथ के अंगूठे का नाख़ुन काटा जाए। (الدُّرُّ المُختار، ص۶۷۴) 《3》.... पाऊं के नाख़ुन काटने की कोई तरतीब मन्क़ूल नहीं, बेहतर येह है कि सीधे पाउं की छुंगलिया (या'नी छोटी उंगली) से शुरूअ़ कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाख़ुन काट लीजिये फिर उलटे पाऊं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंगलिया समेत नाख़ुन काट लीजिये। (احیاءُ العُلوم، ج ۱، ص ۱۸۹) 《4》.... जनाबत की ह़ालत (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज होने की सूरत) में नाख़ुन काटना मकरूह है। (फ़तावा आ़लम गीरी, जि, **5** स. **358**) 《5》.... दांत से नाख़ुन काटना मकरूह है और इस से बर्स या'नी कोढ़ के मरज़ का अन्देशा है। (التَّرجعُ السّابِق) 《6》.... नाख़ुन काटने के बा'द इन को दफ़्न कर दीजिये और अगर इन को फैंक दें तो भी ह़रज नहीं। (التَّرجعُ السّابِق) 《7》.... नाख़ुन का तराशा (या'नी कटे हुए नाख़ुन) बैतुल ख़ला या ग़ुस्ल ख़ाने में डाल देना मकरूह है कि इस से बीमारी पैदा होती है। (التَّرجعُ السّابِق) 《8》.... बुध के दिन नाख़ुन नहीं काटने चाहिये कि बर्स या'नी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है अलबत्ता अगर 39 दिन से नहीं काटे थे, आज बुध को 40 वां दिन है अगर आज नहीं काटता तो 40 दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो उस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिये के 40 दिन से ज़ाइद नाख़ुन रखना ना जाइज़ व मकरूहे तह़रीमी है। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 22 सफ़ह़ा 574-685 मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये) 《9》.... लम्बे नाख़ुन शैत़ान की निशस्तगाह हैं या'नी इन पर शैत़ान बैठता है। (احیاءُ العُلوم، ج ۱، ص ۱۸۹)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 10

ख़ातूने जन्नत

का

ज़ोह्द

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का ज़ोह्द

हुज़ूर ﷺ का मुश्किल कुशाई फ़रमाना

ह़ज़रते सय्यिदुना **शैख़ फ़रीदुद्दीन अ़त्तार** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار "**तज़किरतुल औलिया**" में इरशाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की विलादत की शब आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاجِد के हां न तो इतना तेल था जिस से नाफ़ की मालिश की जाती और न इतना कपड़ा था जिस में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا को लपेटा जा सकता, ह़त्ता कि ग़ुर्बत का येह आ़लम था कि घर में चराग़ तक न था और चूंकि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا अपनी तीन बहनों के बा'द पैदा हुई थीं इसी मुनासबत से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا का नाम "राबिआ़" (या'नी चौथी) रखा गया।

जब आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا की वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने आप के वालिद साहि़ब से कहा कि पड़ोस से थोड़ा सा तेल मांग लाइये ताकि घर में कुछ रोशनी हो जाए तो उन्हों ने शदीद इस्रार पर हमसाया के दरवाज़े पर सिर्फ़ हाथ रख कर घर आ कर कह दिया कि वोह दरवाज़ा नहीं खोलता क्यूंकि वोह येह अ़हद कर चुके थे कि **अल्लाह** रब्बुल आ़लमिन عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कभी किसी से कुछ त़लब न करूंगा। इसी

www.dawateislami.net

परेशानी में नींद आ गई तो ख़्वाब में मक्की मदनी, मुश्किल कुशा नबी صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने तसल्ली व तशफ़्फ़ी देते हुए फ़रमाया कि तेरी येह बच्ची बहुत ही मक़्बूलिय्यत ह़ासिल करेगी और इस की शफ़ाअ़त से मेरी उम्मत के **1000** अफ़राद बख़्श दिये जाएंगे ।

इस के बा'द सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अरदे़ वस्समावात, अह़मदे मुजतबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि वालिये बसरा के पास एक काग़ज़ पर तह़रीर कर के ले जाओ कि तुम हर रोज़ 100 मरतबा मुझ पर दुरूद भेजते हो और शबे जुमुआ़ 400 मरतबा । लेकिन आज जुमुआ़ की जो रात गुज़री है इस में तुम दुरूद भेजना भूल गए लिहाज़ा बत़ौरे कफ़्फ़ारा येह तह़रीर लाने वाले को 400 दीनार दे दो ।

ह़ज़रते सय्यिदतुना राबिआ़ बसरिया رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا के वालिदे माजिद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَاحِد अगली सुब्ह़ बेदार हो कर बहुत रोए और ख़त़ तह़रीर कर के दरबान के ज़रीए़ वालिये बसरा के पास भेज दिया, उस ने मक्तूब पढ़ते ही हुक्म दिया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की याद आवरी के शुक्राने में 10,000 दिरहम तो फ़ुक़रा में तक़्सीम कर दो और 400 दीनार उस शख़्स को दे दो । इस के बा'द वालिये बसरा ता'ज़ीमन ख़ुद आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मुलाक़ात करने पहुंचा और अ़र्ज़ किया कि

www.dawateislami.net

जब भी आप رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ को किसी चीज़ की ज़रूरत हुवा करे मुझे इत्तिलाअ़ फ़रमा दिया करें, चुनान्चे उन्हों ने 400 दीनार ले कर ज़रूरत का तमाम सामान ख़रीद लिया।

(تَذکِرَۃُ الْاَوْلِیاء(مُتَرجَم)، ص۴۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِیب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ मक्की मदनी सुल्तान रहमते आलमिय्यान صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم ने अपने गुलाम की किस त़रह़ मुश्किल कुशाई फ़रमाई कि ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर अपनी ज़ियारत से भी मुशर्रफ़ फ़रमाया और ह़ाजत की चीज़ें भी दिला दीं नीज़ उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले का भी काम बन गया कि रह़मते आ़लम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم ने ख़ुद अपनी ज़बाने ह़क़्क़े तर्जमान से अपने उस दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले गुलाम का तज़किरा फ़रमाया यक़ीनन एक आ़शिक़े रसूल के लिये येही बहुत बड़ी सआ़दत है कि मक्के मदीने के ताजदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم की बारगाहे बेकस पनाह में उस का ज़िक्रे ख़ैर हो, जिस का तज़किरा ख़ुद सरकारे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلّم फ़रमाएं उस की ख़ुश बख़्ती का आ़लम क्या होगा ?

उफ़ वोह रहे संगलाख़ आह येह पा शाख़ शाख़
ऐ मेरे मुश्किल कुशा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

www.dawateislami.net

शर्हे कलामे रज़ा :

हाए ! अफ़सोस ! रास्ता पथरिला है, आह ! येह पाऊं ज़ख़्मों से चूर चूर हैं, ऐ मेरी मुश्किलों को ह़ल फ़रमाने वाले आक़ा ! मेरी मुश्किल कुशाई फ़रमाइये, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर करोड़ों रह़मतें नाज़िल फ़रमाए।

अल्लाह मोअ्त़ी है, हुज़ूर क़ासिम हैं

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को बे शुमार इख़्तियारात अ़त़ा फ़रमाए जिस त़रह़ विसाले ज़ाहिरी से क़ब्ल आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों की रहनुमाई व मुश्किल कुशाई फ़रमाया करते थे बा'द अज़ विसाल भी रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ा से अपने ग़ुलामों की मुश्किलें ह़ल फ़रमाते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़बू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی **''सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़''** में रिवायत फ़रमाते हैं कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात, मह़बूबे रब्बुल अरद़े वस्समावात, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَخَازِنٌ وَاللّٰہُ یُعْطِی'' या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़त़ा फ़रमाता है और मैं क़ासिम (या'नी तक़्सीम करने वाला) और ख़ाज़िन हूं।

(صحیح البخاری،کتاب فرض الخمس،باب قول اللّٰہ تعالٰی فان للّٰہ خمسہ، ص۲۹۸، الحدیث:۳۱۱۴)

www.dawateislami.net

उस की बख़्शिश इन का सदक़ा देता वोह है दिलाते येह हैं
रब्ब है मो'ती, ये हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं
लाखों बलाएं करोड़ों दुश्मन कौन बचाए बचाते येह हैं

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ कलामे रज़ा :

ह़क़ीक़त में बख़्शिश फ़रमाने वाली ज़ात **अल्लाह** عزوجل की ही है लेकिन रब्ब عزوجل अपने मह़बूब صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के सदक़े हमारी बख़्शिश फ़रमाता है, ह़क़ीक़त में अ़ता **अल्लाह** عزوجل ही फ़रमाता है और हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में सिफ़ारिश फ़रमाते हैं।

रब्ब तआ़ला मो'ती (या'नी अ़ता फ़रमाने वाला) है और सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم रब्ब عزوجل की ने'मतें उस के बन्दों में तक़्सीम फ़रमाते हैं, रोज़ी **अल्लाह** रब्बुल आ़लमिन عزوجل ही की है और उस के मह़बूब صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم उस के इज़्न से अ़ता फ़रमाते हैं।

और हमारे सामने दुन्या व आख़िरत में बे शुमार बलाएं और दुश्मन हैं जिन से हमें प्यारे आक़ा صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के सिवा और कौन बचा सकता है ?

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ज़ोह्द की ता'रीफ़

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى **"एह़याउल उ़लूम"** में "ज़ोह्द" से मुतअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाते हैं : अगर ज़ोह्द से मुराद "माल के होने या न होने में बिल्कुल रग़बत न होना" हो तो येह कमाल की इन्तिहा है और अगर इस से मुराद "माल के न होने में रग़बत होना" हो तो येह भी कमाल है लेकिन पहले दर्जे से कम।

(اِحْيَاءُ عُلُوْمِ الدِّيْن،كتاب الفقر والزهد،الشطر الاول من الكتاب فى الفقر، ج٤، ص٢٣٤)

ज़ोह्द व फ़क़्र की फ़ज़ीलत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! फ़क़्र का सब से बुलन्द दर्जा "ज़ोह्द" है और "ज़ोह्द" अबरार (या'नी नेक लोगों) का कमाल है और इस को इख़्तियार करने वाले "**मुक़र्रबीन**" में शुमार होते हैं, शहनशाहे अबरार, मह़बूबे रब्बे ग़फ़्फ़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़ोह्द व फ़क़्र के फ़ज़ाइल बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने जन्नत में झांक कर देखा तो अकषर जन्नती (वोह थे जो दुन्या में) फ़ुक़रा थे और मैं ने जहन्नम में झांक कर देखा तो अकषर जहन्नमी औ़रतें थीं।

(صحيح البخارى، كتاب الرقاق، باب فضل الفقر، ص٥٨٧ ١، حديث ٦٤٤٩)

एक दूसरी रिवायत में है : (जब मैं ने जन्नत में अकषर "फ़ुक़रा" को देखा तो) मैं ने पूछा कि "अग़निया (या'नी मालदार)

www.dawateislami.net

कहां हैं ? बताया गया : (माल इकठ्ठा करने की) तगो दो (या'नी कोशिश) ने इन्हें रोक रखा है।" (احیاء علوم الدین، کتاب الفقر والزھد، ج ۴، ص ۲۳۸)

एक और रिवायत में है : जब मैं ने जहन्नम में ज़ियादा तर औ़रतों को देखा तो पूछा : इन का क्या ह़ाल है (या'नी येह क्यूं जहन्नम में हैं) ? बताया गया : इन्हें दो सुर्ख़ चीज़ों या'नी सोने और ज़ा'फ़रान ने मशग़ूल रखा (कि येह दोनों चीज़ें औ़रतों के भलाई से ग़ाफ़िल होने और इस से रू-गरदानी करने का सबब हैं।) (المرجع السابق)

अल्लाह عزوجل के मह़बूब बन्दे

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब्ब عزوجل तेरी मख़्लूक़ में तेरे मह़बूब बन्दे कौन हैं ताकि तेरी वजह से मैं भी इन से मह़ब्बत करूं ? **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل ने इरशाद फ़रमाया : हर फ़क़ीर (मेरा मह़बूब बन्दा है) (المرجع السابق، ص ۲۳۹)

रूहुल्लाह علیہ السلام का पसन्दीदा नाम

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह علی نبینا وعلیہ الصلوۃ والسلام इरशाद फ़रमाते हैं : बेशक मैं मिस्कीनी से मह़ब्बत और आसाइशों को ना पसन्द करता हूं। आप علیہ الصلوۃ والسلام का पसन्दीदा नाम येह था कि आप علیہ الصلوۃ والسلام को "या मिस्कीन" कह कर पुकारा जाए। (المرجع السابق)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़ोह्द व फ़क्र की एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत येह है कि हमारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे खुद भी इख़्तियार फ़रमाया और अपने अहले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ को भी इस के इख़्तियार करने की तरग़ीब फ़रमाई चुनान्चे इस सिलसिले में प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अपनी शहज़ादी, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا को ज़ोह्द व फ़क्र की ता'लीम देने के मुतअ़द्दद वाक़िआ़त ज़िक्र किये गए हैं जैसा कि

हुज़ूर की ख़ातूने जन्नत को ज़ोह्द की ता'लीम

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा प्यारे प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا के पास तशरीफ़ लाए तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अपनी गर्दन में पहना हुवा सोने का हार पकड़ कर अ़र्ज़ की : येह अबुल ह़सन (या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने मुझे तोह़फ़े में दिया है । **इमामुज़्ज़ाहिदीन, सय्यिदुल मह़बूबीन** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की तर्बिय्यत करते हुए इरशाद फ़रमाया : **ऐ फ़ातिमा !** क्या लोगों के इस त़रह़ कहने से तुम्हें ख़ुशी होगी कि "फ़ातिमा बिन्ते मुह़म्मद" के हाथ में आग का हार है ?

www.dawateislami.net

येह कह कर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बैठे बिग़ैर ही तशरीफ़ ले गए इस के बा'द उम्मुस्सादात ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वोह हार दे कर एक ग़ुलाम ख़रीदा फिर उसे आज़ाद कर दिया।

जब नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इस बात की ख़बर पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ نَجّٰی فَاطِمَۃَ مِنَ النَّار" या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस ने फ़ातिमा को आग से नजात अ़ता फ़रमाई। (اَلْمُسْتَدْرَک عَلَی الصَّحِیْحَیْن لِلْحَاکِم، کتاب معرفۃ الصحابہ، زھد فاطمۃ رضی اللہ عنہا، ج۴، ص۱۳۴، الحدیث:۴۷۷۸)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कैसी तर्बिय्यत फ़रमाई ? अगर्चे इस्लामी बहनों को सोने के ज़ेवरात पहनना जाइज़ हैं लेकिन इमामुज़्ज़ाहिदीन, सय्यिदुल मह़बूबीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी शहज़ादी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ज़ोह्द की ता'लीम देते हुए

www.dawateislami.net

इस से मन्अ़ फ़रमा दिया। याद रहे ! अ़वलाद की सह़ीह़ दीनी तर्बिय्यत करना, उन्हें इ़ल्मे दीन की ला ज़वाल ने'मत से बहरा वर करना और अच्छे अख़्लाक़ सिखाना वालिदैन की ज़िम्मेदारी है। आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ''مَشْعَلَۃُ الاِرْشَادِ فِیْ حُقُوْقِ الاَوْلَادِ'' में वालिदैन पर अवलाद के ह़ुक़ूक़ बयान करते हुए एक ह़क़ येह भी बयान फ़रमाते हैं कि (वालिदैन अपनी अवलाद को) इ़ल्मे दीन ख़ुसूसन वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ व रोज़ा के मसाइल, तवक्कुल, क़नाअ़त, ज़ोह्द, इख़्लास, तवाज़ोअ़, अमानत, सिद्क़, अ़द्ल, ह़या, सलामते सद्र व लिसान वग़ैरहा (दिलो ज़बान और दीगर आ'ज़ा की सलामती की) ख़ूबियों के फ़ज़ाइल (पढ़ाए नीज़), ह़िर्स व तम्अ़, ह़ुब्बे दुन्या (दुन्या की मह़ब्बत), ह़ुब्बे जाह, रिया, उ़जब, तकब्बुर, ख़ियानत, किज़्ब, ज़ुल्म, फ़ोह्श, ग़ीबत, ह़सद, कीना वग़ैरहा बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाए।

और ख़ास बच्चों के ह़ुक़ूक़ बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : 9 बरस की उ़म्र से (वालिद बेटियों को) न अपने पास सुलाए न भाई वग़ैरा के साथ सोने दे, इस उ़म्र से ख़ास निगहदाश्त शुरूअ़ करे, शादी बारात में जहां नाच-गाना हो हरगिज़ न जाने दे अगर्चे ख़ास अपने भाई के यहां हो कि गाना सख़्त संगीन जादू है और इन नाज़ुक शीशियों को थोड़ी ठेस बहुत है, बल्कि हंगामों में जाने की मुत़लक़ बन्दिश करे (या'नी फ़ंक्शनों में जाने से

www.dawateislami.net

बिल्कुल रोक दे), घर को इन पर ज़िन्दां (क़ैद ख़ाने की त़रह़) कर दे, बाला ख़ानों (छतों) पर न रहने दे, जब कुफ़्व मिले निकाह़ में देर न करे, ज़निहार.... ! ज़निहार.....! किसी फ़ासिक़ फ़ाजिर ख़ुसूसन बद मज़हब के निकाह़ में न दे ।

(مَشْعَلَةُ الْاِرْشَاد فِیْ حُقُوْقِ الْاَوْلَاد، ص ۲۱۔۲۸، ملتقطاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने अवलाद के चन्द हुक़ूक़ मुलाह़ज़ा फ़रमाए इस से मा'लूम हुवा कि अवलाद को "ज़ोह्द" की ता'लीम देना भी वालिदैन पर अवलाद के हुक़ूक़ में से है, अवलाद के हुक़ूक़ के बारे में मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले "**अवलाद के हुक़ूक़**" का मुत़ालआ़ फ़रमाइये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अ़ज़ीम ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुज़य्यन घर में दाख़िल होना नबी के शायाने शान नहीं

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़ीना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रिवायत करते हैं कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल

www.dawateislami.net

मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का मेहमान हुवा आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने उस के लिये खाना तय्यार किया तो जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا बोलीं कि काश ! हम रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा, صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाते तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم भी हमारे साथ खाना तनावुल फ़रमाते, चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को बुलाया गया । नबिय्युल ह़रमैन, इमामुल क़िब्लतैन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए तो आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दोनों हाथ दरवाज़े की चोखटों पर रखे, घर के एक गोशे में पर्दा देखा, चुनान्चे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم वापस तशरीफ़ ले गए । जनाबे फ़ातिमा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे गई, अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! किस चीज़ ने आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को वापस किया ? फ़रमाया : **''मेरे लिये या नबी के लिये येह मुनासिब नहीं कि मुज़य्यन घर में दाख़िल हो ।''**

(مشکوۃ المصابیح،کتاب النکاح،باب الولیمۃ، ج ۱، ص ۵۹۱، الحدیث: ۳۲۲۱)

आस्मां ख़्वान, ज़मीं ख़्वान, ज़माना मेहमान
साहि़बे ख़ाना लक़ब किस का है तेरा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

शारेह़े मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ज़िक्र कर्दा ह़दीष शरीफ़ की शर्ह़ करते हुए तह़रीर फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि येह पर्दा

www.dawateislami.net

नक़्शीन (या'नी नक़्शो निगार वाला) था और इस पर जानदारों की तसावीर थीं, इस लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم वहां तशरीफ़ न लाए, इस से मा'लूम हुवा कि अगर दा'वत में कोई ममनूअ़ काम हो तो न जाए, मगर येह (कहना) ग़लत़ है (कि पर्दा नक्शीन था) अगर ना जाइज़ पर्दा होता तो सरकारे आ़ली صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मन्अ़ फ़रमाते बल्कि दस्ते अक़्दस से फाड़ देते, पर्दा सादा था, जाइज़ था मगर दुन्यावी तकल्लुफ़ और ज़ाहिरी टीप टॉप अहले नुबुव्वत के लाइक़ न थी इस लिये मन्अ़ तो न फ़रमाया अ़मलन ना पसन्दीदगी का इज़्हार फ़रमा दिया ताकि आयन्दा जनाबे ज़हरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) अपना घर नेक आ'माल से ही आरास्ता रखें । **ज़ीनते दुन्या नुक़्साने आख़िरत का ज़रीआ़ बन सकती है ।**

(مرآۃ المناجیح، کتاب النکاح، باب الولیمہ ، ج۵، ص۸۰)

कंगन सदक़ा कर दिये !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अब आइये प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का अपनी शहज़ादी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا को दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत की रग़बत का ज़ेहन देने का एक और वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक बार मदीने के ताजदार, नबियों के सालार, मह़बूबे किर्दगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सफ़र से वापस तशरीफ़ लाए तो ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के हां तशरीफ़ ले गए देखा कि उन के दरवाज़े पर एक पर्दा है और

www.dawateislami.net

हाथों में चांदी के कंगन पहन रखे हैं (येह देख कर) आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم वापस तशरीफ़ ले गए। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ आप رضی اللہ تعالیٰ عنہا के पास आए तो आप रो रही थीं, आप رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने उन्हें नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए उम्मत صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم के वापस चले जाने की इत्तिलाअ़ दी तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अ़र्ज़ किया : पर्दे और कंगनों की वजह से आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم वापस तशरीफ़ ले गए, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالیٰ عنہا ने पर्दा फाड़ दिया और कंगन उतार कर ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رضی اللہ تعالیٰ عنہ के हाथ सय्यिदुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم की ख़िदमत में भेज दिये और अ़र्ज़ किया : **"मैं ने इन को सदक़ा कर दिया, आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم जहां मुनासिब समझें ख़र्च फ़रमा दें।"**

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे आदमो बनी आदम, रसूले मोह़तशम صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : जाओ ! इसे फ़रोख़्त कर के इस की क़ीमत अहले सुफ़्फ़ा को दे दो। चुनान्चे दोनों कंगन अढ़ाई दिरहम में फ़रोख़्त हुए और अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہم पर सदक़ा कर दिये गए फिर आप صلی اللہ تعالیٰ علیہ و الہ وسلم ख़ातूने जन्नत رضی اللہ تعالیٰ عنہا के (घर) तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : तेरा बाप तुझ पर कुरबान ! तूने अच्छा किया। (قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون شرح مقامات الیقین۔۔۔الخ، ج۱، ص۳۳۰)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ सय्यिदा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरवरे काइनात, शहनशाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ना गवारी से किस क़दर इजतिनाब की कोशिश फ़रमाती थीं कि मह्ज़ इस वजह से कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दर तशरीफ़ न लाने की वजह येह पर्दा और कंगन है, पर्दे को फाड़ दिया और कंगन सदक़ा कर दिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सय्यिदा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सदक़े हमें भी रसूले ख़ुदा, अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ऐसा सच्चा आ़शिक़ बनाए कि ह़राम व ना जाइज़ बल्कि ख़िलाफ़े सुन्नत कामों से इजतिनाब करते हुए नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हर हर सुन्नत को दीवाना वार अपनाने की सआ़दत नसीब हो जाए। आमीन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ज़िक्र कर्दा रिवायत पर्दे का हुक्म आने से पहले की है इसी वजह से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास आने का ज़िक्र है। फिर जब **अल्लाह** तबारक व तआ़ला ने पर्दे का हुक्म नाज़िल फ़रमा दिया तो इस के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की क्या कैफ़िय्यत थी। आइये ! मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक मरतबा पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी बेटी ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से

www.dawateislami.net

इस्तिफ़्सार फ़रमाया : ऐ बेटी ! औ़रत के लिये क्या चीज़ बेहतर है ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाबन अ़र्ज की : "न वोह किसी (अजनबी) मर्द को देखे और न कोई (अजनबी) मर्द उसे देखे।" आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें सीने से लगा लिया और येह आयत तिलावत फ़रमाई :

ذُرِّیَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍؕ

(پ۳، ال عمرٰن:۳۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *येह एक नस्ल है एक दूसरे से।*

(ایضاً،الفصل ،الخامس والاربعون فیه ذکر التزویج وترکه۔۔۔الخ، ج۲، ص۲۱۸)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! पारह 22 सूरतुल अह़ज़ाब, आयत नम्बर 33, परवर दगारे आ़लम عَزَّوَجَلَّ पर्दे का हुक्म देते हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَ قَرْنَ فِیْ بُیُوْتِكُنَّ وَ لَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِیَّةِ الْاُوْلٰى

(پ۲۲، الاحزاب:۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी।*

ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन** मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयत के तह़त फ़रमाते हैं : अगली जाहिलिय्यत से मुराद क़ब्ले इस्लाम का ज़माना है, उस ज़माने में औ़रतें इतराती निकलती थीं, अपनी ज़ीनत व मह़ासिन (या'नी बनाव

www.dawateislami.net

सिंघार और जिस्म की ख़ूबियां मषलन सीने के उभार वग़ैरा) का इज़्हार करती थीं कि ग़ैर मर्द देखें, लिबास ऐसे पहनती थीं जिन से जिस्म के आ'ज़ा अच्छी त़रह़ न ढकें।

(تفسیرِ خَزَائِنُ الْعِرْفَان،پ ۲۲،اَلْاَحْزاب ، تحت الایہ:۳۳،ص ۷۸۰)

अफ़्सोस, सद करोड़ अफ़्सोस ! मौजूदा दौर में भी वोही ज़मानए जाहिलिय्यत वाली बे पर्दगी पाई जा रही है, यक़ीनन जैसे उस ज़माने में पर्दा ज़रूरी था वैसा ही अब भी है बल्कि अब तो ह़ालत येह है कि औ़रतें बाज़ारों, कम्पनी, बाग़ों, तफ़रीह़ गाहों और सीनेमा घरों में घूमती फिरती हैं, स्कूल्ज़-कोलेजिज़ में लड़के लड़कियां एक साथ बैठ कर ता'लीम ह़ासिल करते हैं बल्कि मर्द व औ़रत वग़ैरा मिल कर टेनिस, होकी वग़ैरा खेल खेलते हैं।

याद रहे ! औ़रतों का बे पर्दा बाहर आना जाना, घूमना फिरना, ग़ैर मह़रम मर्दों से मिलना जुलना ह़राम ह़राम ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, रसूले करीम, रउफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : औरत छुपाने के लाइक़ है (लिहाज़ा इस को पर्दे में रहना चाहिये) जब कोई औ़रत बाहर निकलती है तो शैत़ान उस को झांक झांक कर देखता है।

(سُنَنُ التِّرمِذِی،کتاب الرضاع،باب ماجاء فی کراھیۃ الدخول علی المغیبات، ص ۳۰۴، الحدیث:۱۱۷۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوبُوا اِلَی اللّٰہ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ
صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

सीधा रास्ता मिल गया

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बद अ़क़ीदगी से बचने और गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये । दा'वते इस्लामी का मदनी काम भी करती रहिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस मदनी माह़ोल की बरकत से लाखों इस्लामी बहनों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया, इस ज़िम्न में एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़माइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है : हमारा ख़ानदान अ़क़ाइद के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ ख़ानों में बटा हुवा था, मैं शदीद परेशान थी कि न जाने कौन से लोग सह़ीह़ रास्ते पर हैं ! मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़एं किया करती कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे सीधा रास्ता मिल गया और इस की सूरत यूं बनी कि एक दिन चन्द इस्लामी बहनों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शरीक हुई । वहां एक मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन ने **फ़ैज़ाने सुन्नत** से देख कर बयान किया, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा से कांप उठी, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़, सलातो सलाम और इस्लामी

www.dawateislami.net

बहनों की अपनाइयत भरी मुलाक़ातों ने मज़ीद बहुत मुतअष्षिर किया, ‏اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ‏ **सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत की बरकत से मज़हबे मुहज़्ज़ब अहले सुन्नत की सदाक़त पर यक़ीन की दौलत के साथ साथ मुझे नमाज़े पन्जगाना और रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों की पाबन्दी** भी नसीब हुई, यूं मैं दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतों को समेटती समेटती ता दमे तह़रीर तह़सील ज़िम्मेदार की हैषिय्यत से इस्लामी बहनों में **नेकी की दा'वत** आ़म करने के लिये कोशां हूं।

(इस्लामी बहनों की नमाज़, स. 277)

आ़सी व ख़त़ाकार भी ह़द भर हूं मैं ज़ालिम हूं जफ़ाकार व सितम गर हूं मैं
सुन्नी हूं मुसलमान मगर हूं मैं येह सब है मगर प्यारे तेरी रह़मत से

‏صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !‏ ‏صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد‏

सलाम के 11 मदनी फूल

﴾1﴿ मुसलमान से मुलाक़ात करते वक़्त उसे सलाम करना सुन्नत है। ﴾2﴿ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, सफ़ह़ा 102 पर लिखे हुए जुज़इये का ख़ुलासा है : "सलाम करते वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि जिस को सलाम करने लगा हूं इस का माल और इ़ज़्ज़तो आबरू सब कुछ मेरी ह़िफ़ाज़त में है और मैं इन में से किसी चीज़ में दख़्ल अन्दाज़ी करना ह़राम जानता हूं।" ﴾3﴿.... दिन में कितनी ही बार मुलाक़ात हो, एक कमरे से दूसरे कमरे में बार बार आना जाना हो वहां मौजूद मुसलमानों को सलाम करना कारे षवाब है। ‏(سُنَنِ ابی داوٗد،ص ۸۱۰، الحدیث:۵۲۰۰)‏

www.dawateislami.net

﴾4﴿.... सलाम में पहल करना सुन्नत है। (المرجعُ السّابق، الحدیث:۵۱۹۷)
﴾5﴿.... सलाम में पहल करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब है। (المَرجعُ السَّابِق) ﴾6﴿.... सलाम में पहल करने वाला तकब्बुर से भी बरी है। जैसा कि मेरे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा सफ़ा है : पहले सलाम कहने वाला तकब्बुर से बरी है। (شُعَبُ الْاِیمان، ج۶، ص۴۳۳، الحدیث:۸۷۸۶) ﴾7﴿.... सलाम (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं। (شُعَبُ الْاِیمان، ج۶، ص۲۵۳، الحدیث:۸۰۵۲)
﴾8﴿.... اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحْمَۃُ اللہ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी और وَبَرَکَاتُہٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। (المُعْجَمُ الکَبِیر، ج۶، ص۳۳۳، الحدیث: ۵۶۳۹) ﴾9﴿.... इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَیْکُمُ السَّلَامُ وَرَحْمَۃُ اللہِ وَبَرَکَاتُہٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं। ﴾10﴿.... सलाम का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना वाजिब है कि सलाम करने वाला सुन ले। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 16, स. 103 ता 107)
﴾11﴿.... सलाम और जवाबे सलाम का दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ याद फ़रमा लीजिये :

اَلسَّلَامُ عَلَیْکُمْ (اَس۔سلا۔مُ۔عَلَے۔کُمْ) وَعَلَیْکُمُ السَّلَام (وَ۔عَ۔لَیکُ۔مُس۔سلام)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 11

विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की कैफ़िय्यत

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की कैफ़िय्यत

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ातमुल मुरसलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़लमिनीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी रात) मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने वालों के नाम लिखते हैं ।

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الاذکار، الباب السادس فی آداب الصلاۃ علیہ و علی آلہ، ج ۱، الجزء الاول، ص ۲۵۰، الحدیث: ۲۱۷۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नबी की ग़ैबी ख़बर

उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا तशरीफ़ लाईं, उन का चलना रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की

www.dawateislami.net

चाल के मुशाबेह था । नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “मेरी बेटी को मरह़बा ! फिर उन्हें दाएं या बाएं बिठाया, फिर उन के कान में कोई बात फ़रमाई तो वोह रोने लगीं । मैं ने पूछा : तुम क्यूं रोई ? फिर थोड़ी देर के बा’द उन के कान में एक और बात कही, तो वोह हंसने लगीं । मैं ने कहा : आप में ग़म से ज़ियादा ख़ुशी मैं ने आज से पहले नहीं देखी । फिर मैं ने ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से इस रोने और हंसने का सबब पूछा ? तो उन्हों ने साफ़ कह दिया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती । जब हुज़ूर صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वफ़ात हो गई तो (सय्यिदा आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا के दोबारा दरयाफ़्त करने पर) ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पहली मरतबा मेरे कान में येह फ़रमाया था कि ह़ज़रते जिब्रईल عَلَیْہِ السَّلَام हर साल एक मरतबा क़ुरआने पाक का मुझ से दौर करते (या’नी दोनों एक दूसरे को क़ुरआने पाक सुनाते) थे और इस साल इन्हों ने दो मरतबा दौर किया है, लगता है कि मेरी वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया है, मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी । येह सुन कर मैं फ़र्ते ग़म से रो पड़ी, फिर फ़रमाया : क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम अहले जन्नत की औ़रतों की सरदार हो ? येह सुन कर मैं मुस्कुरा पड़ी ।”

(صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوۃ فی الاسلام، ص ٩٢٠، الحدیث: ٣٦٢٣، ٣٦٢٤)

www.dawateislami.net

जिन की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें
उस तबस्सुम की आ़दत पे लाखों सलाम

(ह़दाइके़ बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत علیہ رحمۃ رب العزت)

शर्हे़ सलामे रज़ा :

हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم की तसल्ली से ग़मज़दा रोते हुए हंसने लगते और अपने ग़मों को भूल जाते थे, आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم के हमा वक़्त मुस्कुराने की आ़दतो ख़स्लत पर लाखों सलाम नाज़िल हों ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीषे मुबारक से चन्द मदनी फूल चुनने को मिले । पहला मदनी फूल येह है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم अपनी बेटी से किस क़दर मह़ब्बत फ़रमाया करते थे कि इन की आमद पर फ़रमाया : **"मेरी बेटी को मरह़बा !"** और फिर इन को अपने पास बिठाया । यक़ीनन बेटी **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عزوجل की अ़ज़ीम ने'मत है । बा'ज़ नादान बेटी को अच्छा नहीं समझते, बेटों की पैदाइश पर तो ख़ूब ख़ुशियां मनाते हैं मगर बेटियों की पैदाइश पर ख़ुश नहीं होते । याद रखिये ! इस्लाम ऐसे मज़मूम ख़यालात की इजाज़त नहीं देता । अह़ादीषे मुबारका में बेटी की बहुत सी फ़ज़ीलतें वारिद हैं, चुनान्चे

बेटी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रामैने मुस्त़फ़ा

(1).... जब किसी के हां लड़की पैदा होती है तो **अल्लाह** तआ़ला उस के घर फ़िरिश्तों को भेजता है जो आ कर कहते हैं :

www.dawateislami.net

"ऐ घर वालो ! तुम पर सलामती हो । फिर फ़िरिश्ते उस बच्ची को अपने परों के साए में ले लेते हैं और उस के सर पर हाथ फैरते हुए कहते हैं कि एक नातुवां व कमज़ोर जान एक नातुवां से पैदा हुई है, इस नातुवां जान की परवरिश करने वाला क़ियामत तक मदद किया जाएगा ।"

(مجمع الزوائد، کتاب البر والصلۃ،باب ماجاء فی الاولاد، ج۸، ص۲۸۵، الحدیث:۱۳۳۸۴)

﴾2﴿.... जो बेटियों के ज़रीए (आज़माइश में) मुब्तला किया जाए और वोह इन के साथ हुस्ने सुलूक करे तो येह बेटियां उस के लिये जहन्नम से रोक बन जाएंगी ।

(صحیح مسلم،کتاب البر والصلۃ والاداب،باب فضل الاحسان الی البنات، ص۱۴۱۴، الحدیث:۲۶۲۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीषे मुबारक से जो दूसरा मदनी फूल हमें चुनने को मिलता है **वोह है राज़ को पोशीदा रखना कि** ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया कि मैं रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का राज़ ज़ाहिर नहीं कर सकती । आज हम में से बा'ज़ ऐसी नादान भी हैं जो दूसरों के राज़ों को ज़ाहिर करती और ऐ'बों को उछालती हैं । याद रहे ! मुसलमान के हुक़ूक़ में से एक ह़क़ येह है कि वोह तमाम मुसलमानों के राज़ों को पोशीदा रखे । और राज़ को पोशीदा रखने के बारे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने बड़ी ताकीद फ़रमाई है, चुनान्चे

www.dawateislami.net

राज़ छुपाने के मुतअ़ल्लिक़ 2 अहा़दीषे मुबारका

《1》.... मोमिन जब अपने भाई का कोई राज़ देखता है और उस को छुपाता है तो **अल्लाह** तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। (المعجم الاوسط، باب الالف، من اسمه احمد، ج ۱، ص ۴۰۴، الحدیث:۱۳۸۰)

《2》.... हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم ने ह़ज़रते अमीरे मुआ़विया बिन अबी सुफ़्यान (رضی اللہ تعالٰی عنہ) से इरशाद फ़रमाया : ''बेशक तुम अगर लोगों के राज़ों को तलाश करोगे तो तुम उन को ख़राब कर दोगे या उन को ख़राब करने के क़रीब कर दोगे।''

(سنن ابی داؤد، کتاب الادب، باب فی النهی عن التجسس، الحدیث:۴۸۸۸، ص ۷۶۲)

मेरे आक़ा सरे मेह़शर मेरा पर्दा रखना

राज़ ऐबों का मेरे फ़ाश हुवा जाता है

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 127)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़दीषे मुबारक से हमें येह मदनी फूल भी चुनने को मिला कि **अल्लाह** عزوجل ने अपने रसूले मक़्बूल, गुलशने आमिना के महकते फूल صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم को इ़ल्मे ग़ैब भी अ़ता फ़रमाया है। जभी तो जान लिया कि मेरे विसाल का वक़्त क़रीब आ गया है और येह भी बता दिया कि मेरे घर वालों में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी। और बा'द में येह बात उसी त़रह़ षाबित भी हुई। और इ़ल्मे ग़ैब का तो

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में वाज़ेह़ इरशाद फ़रमा दिया है। चुनान्चे पारह 30 सूरतुत्तक्वीर आयत नम्बर 24 में इरशादे रब्बानी है :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ (پ۳۰، التکویر:۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।*

और येह जब ही हो सकता है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इल्मे ग़ैब हो और आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم लोगों को इस से मुत्तलअ़ फ़रमाते हों।

एक ह़दीषे मुबारक भी मुलाह़ज़ा फ़रमा लीजिये, चुनान्चे ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : हम पर हमारी उम्मत पेश फ़रमाई गई अपनी अपनी सूरतों में मिट्टी में जिस त़रह़ कि ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर पेश हुई थी हम को बता दिया गया कौन हम पर ईमान लाएगा और कौन कुफ़्र करेगा येह ख़बर मुनाफ़िक़ीन को पहुंची तो हंस कर कहने लगे कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि उन लोगों की पैदाइश से पहले ही काफ़िर व मोमिन की ख़बर हो गई हम तो इन के साथ हैं और हम को नहीं पहचानते। येह ख़बर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंची तो आप صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर खड़े हुए और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो षना की, फिर फ़रमाया : उन लोगों का क्या ह़ाल है जो हमारे इल्म में त़ा'न करते हैं, अब से क़ियामत तक किसी चीज़ के बारे में जो भी तुम हम से पूछोगे हम तुम को ख़बर देंगे।

(تَفْسِیْرُ الْبَغَوِی، پ۴، آل عمران، تحت:الایۃ۱۷۹، ج۱، ص۳۵۴)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत **मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : इस हदीष से दो बातें मा'लूम हुई एक येह की हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्म में ता'ने करना मुनाफ़िक़ों का तरीक़ा है। दूसरे येह कि क़ियामत तक के वाक़िआत सारे हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इल्म में हैं। (جَآءَالْحَق ص ۱۴۳)

तुम मकीनें ला मकां हो, और हक़ के राज़दां हो
इज़्ने रब्ब से ग़ैब दां हो, क्या है जो तुम से निहां हो

یا نبی سلام علیک یا رسول سلام علیک
یا حبیب سلام علیک صلوۃُ اللہ علیک

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 573)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

महबूबे रब्बे ज़ुल जलाल का ज़ाहिरी विसाल

हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم फ़रमाते हैं : एक दिन रसूले अकरम, नबिय्ये मुकर्रम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया सब को नमाज़ के लिये बुलाओ, चुनान्चे मुहाजिरीन व अन्सार रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मस्जिद शरीफ़ में जम्अ हो गए। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो षना की, फिर ऐसा ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया कि (इसे सुन कर) दिल डर गए और आंखों से सैले अश्क रवां हो गया : फिर

www.dawateislami.net

इरशाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! तुम ने मुझे कैसा नबी पाया ?" सहाबए किराम علیہم الرضوان ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عزوجل आप को जज़ाए ख़ैर दे, आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم बेहतरीन नबी हैं, हम पर बाप की त़रह़ लुत़्फ़ो करम फ़रमाने वाले, भाई की त़रह़ नासेह़ और शफ़ीक़ हैं, आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने **अल्लाह** عزوجل के पैग़ामात पहुंचा दिये, हम तक उस की वह़्य पहुंचा दी और अपने रब्ब عزوجل के रास्ते की त़रफ़ हि़क्मत और अच्छी नसीह़त के साथ दा'वत दी, **अल्लाह** عزوجل हमारी त़रफ़ से आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم को इस से बेहतर व अफ़ज़ल जज़ा अ़त़ा फ़रमाए जो जज़ा वोह किसी नबी को उस की उम्मत की त़रफ़ से देता है। हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عزوجل की और अपने उस ह़क़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी त़रफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से बदला ले ले। कोई भी खड़ा न हुवा। आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم ने दोबारा क़सम दी, फिर भी कोई खड़ा न हुवा। तीसरी बार इरशाद फ़रमाया : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! मैं तुम्हें **अल्लाह** عزوجل की और अपने उस ह़क़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी त़रफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहुंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से क़ियामत के दिन क़िसास (قِصَاص) से पहले अपना क़िसास ले ले। सहाबए किराम رضی اللہ تعالٰی عنہم में से एक बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा رضی اللہ تعالٰی عنہ खड़े हुए और हु़ज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم के

www.dawateislami.net

सामने पहुंच कर अ़र्ज़ गुज़ार हुए : मेरे मां बाप आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर कुरबान ! आप बार बार क़सम न देते तो इन में से किसी चीज़ पर इक़दाम की जुर्अत न होती । एक ग़ज़्वे में, मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ था । अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हमें फ़त्ह़ दी और अपने नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की मदद की, हम वापस लौट रहे थे कि मेरी ऊंटनी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ऊंटनी के क़रीब हो गई । मैं नीचे उतरा ताकि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की पिन्डली मुबारक को चूम कर बरकतें ह़ासिल कर दूं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने शाख़ उठा कर मेरे पहलू में मार दी, मैं नहीं जानता कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने जान बूझ कर मारी या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ऊंटनी को मारने का इरादा फ़रमा रहे थे । हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं तुझे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की पनाह में लाता हूं इस बात से कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ का रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم तुम्हें क़स्दन मारे । ऐ बिलाल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर जाओ और पतली लम्बी शाख़ ले कर आओ । ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने सर पर हाथ रखे परेशानी के आ़लम में कहते जा रहे थे कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी जान का क़िसास देंगे ? ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के घर पहुंच कर दरवाज़ा बजाया और अ़र्ज़ की : ऐ रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की लाडली शहज़ादी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! मुझे पतली लम्बी शाख़ दीजिये ।

www.dawateislami.net

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ने फ़रमाया : ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ! मेरे वालिदे मोह़तरम ने शाख़ क्या करनी है ? न तो आज ह़ज का दिन है और न ही किसी ग़ज़्वे का ! अ़र्ज़ की : ऐ सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا ! आप इस मुआ़मले से ग़ाफ़िल न रहिये जिस में आप के वालिद हैं, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दीन को (तक्मील के बा'द) अल वदाअ़ फ़रमाने वाले और येह दुन्या छोड़ कर जाने वाले हैं और अपनी जान का क़िसास देना चाहते हैं। फ़रमाया : ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ किस के दिल ने येह बात गवारा कर ली कि वोह हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़िसास ले। ऐ बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तुम ह़सन व हु़सैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا को उस शख़्स के पास ले जाओ, वोह इन दोनों से क़िसास ले ले। ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ (शाख़ ले कर) मस्जिद में (बारगाहे रिसालत में) ह़ाज़िर हुए। हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से शाख़ ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को पकड़ा दी। ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا येह मन्ज़र देख कर खड़े हो गए और फ़रमाया : ऐ अ़क्काशा ! हम तेरे सामने खड़े हैं हम से क़िसास ले लो और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से न लो। हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन से फ़रमाया : ऐ अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا) ठहरो, **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारा मक़ामो मर्तबा जानता है। ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली इब्ने अबी त़ालिब (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ) खड़े हुए और फ़रमाया। ऐ अ़क्काशा ! मैं अभी ज़िन्दा हूं, मेरा दिल कैसे गवारा करेगा कि मेरे होते हुए तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़िसास लो !

www.dawateislami.net

देखो ! येह रही मेरी पीठ और येह रहा मेरा पेट, मुझ से क़िसास लो और मुझे 100 कोड़े मार लो मगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे महबूब صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बदला मत लो, नबिय्ये रहमत صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अली (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम बैठ जाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा मक़ाम और तुम्हारी निय्यत जानता है । अब हसन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا खड़े हुए और फ़रमाया : ऐ अक्काशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) क्या आप जानते नहीं कि हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नवासे हैं ? हम से क़िसास लेना ऐसे ही है जैसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़िसास लेना । हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरी आंखों की ठंडक ! तुम दोनों बैठ जाओ, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हें तुम्हारा येह मक़ाम न भुलाए । फिर आप صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अक्काशा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) अगर तुम मारना चाहते हो तो मार लो । अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब आप ने मुझे मारा था तब मेरे पेट पर कुछ न था, हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने बत़्ने अक़्दस से कपड़ा हटा दिया, येह देख कर सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के रोने की आवाज़ बुलन्द हो गई और कहने लगे : क्या अक्काशा को रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से बदला लेते हुए देखना गवारा कर लोगे ? जब हज़रते सय्यिदुना अक्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बत़्ने अन्वर की पुरनूर सफ़ेदी देखी

www.dawateislami.net

तो बे ताबाना जिस्मे अक़्दस से लिपट गए और आ़लमे बेख़ुदी में बोसे लेने लगे और अ़र्ज़ गुज़ार हुए, या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से क़िसास लेने की हिम्मत किस में है ? हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम मुझ से क़िसास ले लो या मुझे मुआ़फ़ कर दो। अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मैं ने अपना ह़क़ मुआ़फ़ किया इस उम्मीद पर कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन मुझे भी मुआ़फ़ फ़रमाए । आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो जन्नत में मेरे पड़ोसी को देखना चाहता है वोह इस शैख़ की त़रफ़ देख ले, येह सुनते ही सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم खड़े हुए और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की दोनों आंखों के दरमियान बोसे देते हुए कहने लगे : (ऐ अ़क्काशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) तुम्हें मुबारक हो, तुम बुलन्द दरजात और जन्नत में नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त पा गए।

इसी दिन से हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अ़लील हो गए और 18 दिन तक अ़लील रहे (और मरज़ को बरकतें लेने की सआ़दत अ़त़ा फ़रमाते रहे) इस दौरान सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم इयादत के लिये ह़ाज़िर होते रहे, इतवार के दिन मरज़ ने शिद्दत इख़्तियार की, फिर पीर के दिन मरज़ ने और शिद्दत इख़्तियार की। **अल्लाह** तआ़ला ने मलकुल मौत عَلَیْہِ السَّلَام को हुक्म इरशाद फ़रमाया : मेरे ह़बीब

www.dawateislami.net

मेरे सफ़ी की बारगाह में ह़ाज़िरी दो, इन के पास बड़ी प्यारी सूरत में जाना और इन की रूह़ क़ब्ज़ करने में नर्मी करना। ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने एक आ'राबी की सूरत में दरवाज़ए मुक़द्दसा पर खड़े हो कर सलाम किया और अन्दर दाख़िल होने की इजाज़त त़लब की। ह़ज़रते आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا तुम उस शख़्स को जवाब दो। ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे आने का तुझे अज्र दे, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़बीअ़त ठीक नहीं। ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर इजाज़त त़लब की तो येही जवाब मिला। तीसरी मरतबा दरवाज़ा बजा कर फ़रमाया मेरा अन्दर आना ज़रूरी है। हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام की आवाज़ सुनी तो पूछा : दरवाज़े पर कौन है ? ह़ज़रते सय्यिदा फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : एक शख़्स बार बार अन्दर आने की इजाज़त त़लब कर रहा है, तीसरी मरतबा जब मैं ने उस की आवाज़ सुनी तो मेरे रोंगटे (या'नी जिस्म के बाल) खड़े हो गए और आ'ज़ा कांपने लग गए। इरशाद फ़रमाया : ऐ फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ! तुम जानती हो, दरवाज़े पर कौन है ? येह लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाला, जमाअ़तों में जुदाई डालने वाला, बीवियों को बेवा करने वाला, अवलाद को यतीम करने वाला, घरों को वीरान करने वाला, क़ब्रों को आबाद करने वाला है, **येह मलकुल मौत** عَلَيْهِ السَّلَام **हैं**। ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام अन्दर आ जाओ, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए। ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे अक़्दस में

www.dawateislami.net

हाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام तुम मेरी ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुए हो या रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये ? अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं और रूहे़ मुबारक को ले जाने का भी हुक्म हुवा है। मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इजाज़त के बिग़ैर बारगाह में ह़ाज़िरी न दूं न ही बिग़ैर इजाज़त रूहे़ मुबारक क़ब्ज़ करूं, अगर आप इजाज़त अ़त़ा फ़रमाएं तो ठीक वरना मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौट जाता हूं। इरशाद फ़रमाया : मेरे मह़बूब जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को कहां छोड़ आए। अ़र्ज़ की : वोह आस्माने दुन्या पर हैं और फ़िरिश्ते उन से आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'ज़ियत कर रहे हैं। नागाह (फ़ौरन) ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! तशरीफ़ ले आए और सरे अन्वर के पास बैठ गए। हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ! येह दुन्या से कूच का वक़्त है जो कुछ मेरे लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास है मुझे इस की बिशारत दो। अ़र्ज़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم आप ख़ुश हो जाइयें, मैं आस्मानों के दरवाज़े खुले छोड़ आया हूं, फ़िरिश्ते सफ़ दर सफ़, दस्त बस्ता, सलामती की दुआ़एं करते, ख़ुश्बू में बसे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे़ मुबारक के इस्तिक़्बाल की ख़ात़िर मुन्तज़िर खड़े हैं। इरशाद फ़रमाया : सब ता'रीफ़ें मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, ऐ जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام मुझे और ख़ुश ख़बरी दो।

www.dawateislami.net

अ़र्ज़ की : मैं आप को ख़ुश ख़बरी देता हूं कि जन्नतों के दरवाज़े खुले हैं इस की नहरें जारी हैं, इस के दरख़्त फलों से लदे हैं और आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم की रूहे मुबारक के इस्तिक़्बाल के लिये हूरें आरास्ता हैं। इरशाद फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ें मेरे रब्ब عزوجل के लिये हैं। ऐ जिब्रील علیہ السلام मुझे और ख़ुशी की ख़बर सुनाओ। अ़र्ज़ की : आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم सब से पहले शफ़ाअ़त फ़रमाने वाले हैं और क़ियामत के दिन सब से पहले आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم ही की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी। सरकार صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : तमाम ता'रीफ़ें मेरे रब्ब عزوجل के लिये हैं।

हज़रते सय्यिदुना जिब्रील علیہ السلام मज़ीद अ़र्ज़ गुज़ार हुए कि **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : ऐ मुहम्मद ! मैं ने तमाम अम्बियाए किराम और उम्मतों पर जन्नत ह़राम कर दी है यहां तक कि आप और आप की उम्मत इस में दाख़िल हो जाए। (येह सुन कर) फ़रमाया : अब मेरा दिल ख़ुश हो गया है लिहाज़ा ऐ मलकुल मौत علیہ السلام ! जिस का तुम्हें हुक्म हुवा वोह करो। हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم को ग़ुस्ल कौन दे, किन कपड़ों में कफ़न दें, आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و اٰلہ وسلم पर नमाज़ कौन पढ़े और क़ब्र में कौन दाख़िल करे ? फ़रमाया : ऐ अ़ली رضی اللہ تعالٰی عنہ आप मुझे ग़ुस्ल देना और फ़ज़्ल बिन अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہ पानी डालें और जिब्रील علیہ السلام तुम्हारे साथ होंगे। जब तुम मेरे ग़ुस्ल से

www.dawateislami.net

फ़ारिग़ हो जाओ तो तीन नए कपड़ों में कफ़न देना और जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام जन्नती ख़ुश्बू लाएंगे। जब तुम मुझे चारपाई पर लैटा दो तो मुझे मस्जिद में रख कर चले जाना क्यूंकि सब से पहले मेरा रब्ब फ़ौक़ल अ़र्श से (जैसे उस की शान के लाइक़ है) मुझ पर दुरूद भेजेगा फिर जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फिर मीकाईल عَلَيْهِ السَّلَام फिर इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام फिर दीगर मलाइका عَلَيْهِمُ السَّلَام गुरौह दर गुरौह, इस के बा'द तुम सफ़ दर सफ़ खड़े होना और मुझ से आगे कोई भी न बढ़े। ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अ़र्ज़ की : बाबा जान ! आज जुदाई का दिन है तो मेरी आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात कब होगी ? इरशाद फ़रमाया : ऐ मेरी बेटी ! तुम मुझे क़ियामत के रोज़ ह़ौज़ के पास मिलना जहां मैं अपने उम्मतियों में से ह़ौज़ पर आने वालों को पानी पिला रहा होऊंगा। अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अगर मैं वहां आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से मुलाक़ात न कर सकूं तो ? रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम मीज़ान के पास मुझे मिलना मैं अपने उम्मतियों की शफ़ाअ़त कर रहा होऊंगा। अ़र्ज़ की : अगर वहां न पाऊं तो कहा मिलूं ? इरशाद फ़रमाया : तुम पुल सिरात़ के पास मुझे मिल लेना मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हु़ज़ूर येह सदा बुलन्द कर रहा होऊंगा "رَبِّیْ سَلِّمْ اُمَّتِیْ مِنَ النَّار या'नी ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरी उम्मत को आग से सलामती के साथ गुज़ार दे।"

इस के बा'द मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने रूह़ क़ब्ज़ करनी शुरूअ़ की, जब रूह़ नाफ़ तक पहुंची तो हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हाए ! कैसी सख़्ती का वक़्त है। हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बेताबान पुकारा : हाए ! मेरे बाबा जान की तक्लीफ़ ! जब रूहे मुबारक मुक़द्दस बतन से जुदा हुई तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वसिय्यत के मुताबिक़ अ़मल किया गया और ह़ज़राते अबू बक्र सिद्दीक़, अ़लिय्युल मुर्तज़ा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने क़ब्रे अन्वर में उतारा और तदफ़ीन कर दी, जब सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم तदफ़ीन से फ़ारिग़ हो कर पलटे तो हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कहा : ऐ अबल ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तुम लोगों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दफ़्न कर दिया ? फ़रमाया : हां। हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : तुम्हारे दिलों ने किस त़रह़ गवारा कर लिया कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर मिट्टी डालो ? क्या तुम्हारे सीनों में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये रह़्म न था ? क्या वोह भलाई की बातें सिखाने वाले न थे ?

हज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا क्यूं नहीं, लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हुक्म टाला नहीं जा सकता। हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا रोते हुए फ़रमाने लगीं : हाए बाबा जान ! अब जिब्रील कभी नहीं आएंगे।

(اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر، باب الحاء، بقیۃ اخبار حسن بن علی رضی اللہ عنہ ج۳، ص۱۹۱، الحدیث:۲۶۷۶، ملخصاً وملتقطاً)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! वोह कैसा रिक्क़त अंगेज़ मन्ज़र होगा जब सय्यिदे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم दुन्या से तशरीफ़ ले गए होंगे ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھُم पर कोहे ग़म टूट पड़ा होगा और ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا की क़ल्बी कैफ़िय्यत क्या होगी ? यक़ीनन मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की जुदाई से आप رَضِیَ اللّٰہُ تعَالٰی عَنْھَا का दिल रंजो ग़म से घाइल हो गया होगा ! ! !

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हुक़ूक़ुल इ़बाद के बारे में किस क़दर मोह़तात़ थे । गुनाहों से पाक होने के बा वुजूद फ़रमाया कि **''ऐ मुसलमानों के गुरौह! में तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की और अपने उस ह़क़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है, मेरी त़रफ़ से किसी को कोई तक्लीफ़ पहोंची हो तो वोह खड़ा हो और मुझ से बदला ले ले''** इस फ़रमाने आ़लीशान में हमारे लिये दर्स व नसीह़त के कितने मदनी फूल हैं । हम ग़ौर करें कि हमारी ह़ालत क्या है ? और हम लोगों के कितने हुक़ूक़ पामाल करते हैं ? हमारे अस्लाफ़े किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की आ़दते मुबारका थी कि वोह हुक़ूक़ुल इ़बाद से बहुत डरते थे

www.dawateislami.net

ख़्वाह मा'मूली सी चीज़ मषलन किसी का ख़िलाल (दांत कुरैदने का तिनका) या सूई ही हो तो इस से भी डरते थे। ख़ुसूसन जब अपने आ'माल का मुह़ासबा फ़रमाते तो ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बे क़रार हो जाते कि हमारे पास तो कोई ऐसी नेकी नहीं जिसे मुख़ालिफ़ को उस के ह़क़ के बदले क़ियामत के दिन दे कर राज़ी किया जाए। बसा अवक़ात किसी एक ही बे इन्साफ़ी के इवज़ ज़ालिम की तमाम नेकियां ले कर भी मज़लूम ख़ुश न होगा।

आ़म तौ़र पर लोग बन्दों के हुक़ूक़ की अहम्मिय्यत नहीं समझते ह़ालांकि बन्दों के हुक़ूक़ का मुआ़मला बहुत ही अहम, नाज़ुक और इस में कोताही सख़्त तशवीशनाक है। बल्कि एक हैषिय्यत से देखा जाए तो हुक़ूक़ुल्लाह (या'नी **अल्लाह** के हुक़ूक़) से ज़ियादा हुक़ूक़ुल इबाद (बन्दों के हुक़ूक़) सख़्त हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाला है अगर वोह अपने फ़ज़्लो करम से चाहेगा तो अपने बन्दों पर रह़्म फ़रमा कर अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ फ़रमा देगा मगर बन्दों के हुक़ूक़ को उस वक़्त तक मुआ़फ़ न फ़रमाएगा जब तक बन्दे अपने हुक़ूक़ को मुआ़फ़ न कर दें। लिहाज़ा बन्दों के हुक़ूक़ को अदा करना या मुआ़फ़ करा लेना बेह़द ज़रूरी है वरना क़ियामत में बड़ी बड़ी मुश्किलात का सामना हो सकता है।

www.dawateislami.net

हुक़ूक़ुल इबाद की मुआ़फ़ी का त़रीक़ा

मेरे आक़ा, आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن हुक़ूक़ुल इबाद की मुआ़फ़ी का त़रीक़ा बयान करते हुए इरशाद फ़रमाते हैं : हुक़ूक़ुल इबाद मुआ़फ़ होने की दो सूरतें हैं :

(1).... जो क़ाबिले अदा है अदा करना वरना उन से मुआ़फ़ी चाहना।

(2).... साह़िबे ह़क़ बिला मुआ़वज़ा लिये मुआ़फ़ कर दे।

और बा'ज़ तुरुक़े जामेअ़ा जिन से हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद बि इज़्निल्लाहि तआ़ला सब मुआ़फ़ हो जाते हैं मषलन (जिस से उस का कोई ह़क़ मुआ़फ़ कराना है उस से इस त़रह़ कहे :) **''छोटे से छोटा बड़े से बड़ा जो गुनाह एक मर्द दूसरे का कर सकता है जान माल इ़ज़्ज़त आबरू हर शै के मुतअ़ल्लिक़ इस में से जो तेरा मैं ने गुनाह किया हो सब मुझे मुआ़फ़ कर दे।''**

(फ़तावा रज़विया (मुख़र्रजा), जि. 24 स. 373-374, मुलतक़त़न)

मुफ़्लिस कौन ....?

ह़दीष शरीफ़ में है कि रसूले ख़ुदा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से पूछा : **''क्या तुम जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है ?''** सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अ़र्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जिस के पास दिरहम व मताअ़ न हो वोह मुफ़्लिस है। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने

www.dawateislami.net

फ़रमाया : मेरी उम्मत में से मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात ले कर आए और उस ने किसी को गाली दी हो, किसी पर तोहमत लगाई हो किसी का माल खाया हो, किसी का ख़ून बहाया हो, किसी को मारा हो (तो मुद्दई आ जाएं और अ़र्ज़ करें कि परवर दगार ! इस ने मुझे गाली दी, इस ने मुझे मारा, इस ने मेरा माल खाया, इस ने मेरा ख़ून किया) तो उस की नेकियां इन मुद्दइयों को दे दी जाएंगी अगर लोगों के हुक़ूक़ जो उस पर हैं इन के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो इन के गुनाह ले कर उस पर डाल कर उसे जहन्नम में डाला जाए।

(صحیح مُسلِم،کتاب البر والصلة والاداب، باب تحریم الظلم، ص۱۰۰۰، حدیث ۲۵۸۱)

या'नी ह़क़ीक़त में मुफ़्लिस वोह है कि क़ियामत के रोज़ बा वुजूद नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात होने के वोह ख़ाली का ख़ाली रह जाए।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा कि कोई दोज़ख़ी दोज़ख़ में और कोई जन्नती जन्नत में दाख़िल न हो और न ही वोह शख़्स जिस पर कोई ज़ुल्म हुवा हो ह़त्ता कि मैं इस (या'नी मज़्लूम) के लिये उस (या'नी ज़ालिम) से क़िसास ले लूं। (تنبیہ المغترین، ومن اخلاقھم کثرۃ الخوف من اللہ۔۔۔الخ، ص۴۷)

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 318 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**फ़ज़ाइले दुआ़**" सफ़ह़ा 155 पर **रईसुल मुतकल्लिमीन** मौलाना नक़ी

www.dawateislami.net

अ़ली ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان नक़्ल फ़रमाते हैं : सुफ़्यान षौरी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی कहते हैं : बनी इस्राईल सात बरस **क़ह़्त़** में मुब्तला रहे यहां तक कि मुर्दों और बच्चों को खाने लगे, हमेशा पहाड़ों में निकल जाते और आ़जिज़ी व इन्किसारी के साथ दुआ़ मांगते और रोते मगर रह़मते इलाही उन के ह़ाल पर असलन तवज्जोह न फ़रमाती यहां तक कि उन के पैग़म्बर عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام पर वह़्य हुई अगर तुम मेरी त़रफ़ इस क़दर चलो कि तुम्हारे घुटने घिस जाएं और तुम्हारे हाथ आस्मान को लग जाएं और तुम्हारी ज़बानें दुआ़ करते करते गूंगी हो जाएं जब भी मैं तुम में से किसी दुआ़ मांगने वाले की दुआ़ क़बूल न करूं और किसी रोने वाले पर रह़्म न फ़रमाऊं, जब तक मज़्लूमों को उन के ह़क़ वापस न कर दें। पस बनी इस्राईल ने मज़्लूमों को उन के हुक़ूक़ वापस किये, इसी दिन मींह बरसा।

(اِحیاءُ عُلُومِ الدِّین، کتاب الاذکار و الدعوات، الباب الثانی فی آداب الدعاء وفضلہ...الخ ج ۱، ص ۴۰۶)

हुक़ूक़ुल इ़बाद के ह़वाले से "फ़िक्रे मदीना"

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कभी इस त़रह़ अपना मुह़ासबा कीजिये कि मेरी ज़ात से कितने ही लोगों के शरई हुक़ूक़ वाबस्ता हैं ?... मषलन मां, बाप, बच्चों, बच्चों के अब्बू, मन्सूब, क़राबत दारों, पड़ोसियों, आ़म मुसलमानों, मुर्शिद, उस्ताज़, शागिर्द और मा तह़्त लोगों के हुक़ूक़ .... लेकिन अफ़्सोस ! मैं इन के हुक़ूक़ कमा ह़क़्क़ुहू अदा करने में नाकाम रही, मैं सआ़दत मन्द

www.dawateislami.net

बेटी, शफ़ीक़ मां, मिषाली बीवी, बे ज़रर पड़ोसन, सच्ची मुरीदनी, कामयाब उस्तादनी, मिषाली त़ालिबा और बेहतरीन ज़िम्मेदार बनने में काम्याब न हो सकी ।

इन के हुक़ूक़ पूरे करना तो एक त़रफ़ रहा, मैं ने तो इन में से किसी को गाली भी दी, किसी पर तोहूमत लगाई, किसी की ग़ीबत की, किसी का माल नाह़क़ खाया, किसी का ख़ून बहाया, किसी को बिला इजाज़ते शरई तक्लीफ़ दी, किसी को मारा–पीटा, किसी का क़र्ज़ दबा लिया, किसी की चीज़ आ़रियतन ले कर वापस न की, किसी का नाम बिगाड़ा, किसी की चीज़ बिला इजाज़त, बा वुजूद उसे ना गवार गुज़रने के इस्ति'माल की, किसी मा तह़्त की ह़क़ तलफ़ी की और बा वुजूदे क़ुदरत उस की परेशानी का कोई ह़ल न निकाला वग़ैरा वग़ैरा ......

आह सद आह ! मैं ने जिन लोगों के हुक़ूक़ तलफ़ किये .... या..... उन पर ज़ुल्म किया, अगर क़ियामत के दिन उन सब ने मेरे ख़िलाफ़ बारगाहे इलाही में दा'वा कर डाला तो मुझे उन से छुटकारा ह़ासिल करने के लिये उन्हें अपनी नेकियां देना पड़ेंगी और जब नेकियां ख़त्म हो जाएंगी तो उन के गुनाह मेरी गर्दन पर डाल दिये जाएंगे । हाए अफ़सोस ! मेरे पास तो पहले ही नेकियों का फ़ुक़दान (या'नी कमी) है इतने सारे लोगों के हुक़ूक़ के बदले में देने के लिये नेकियां कहां से लाऊंगी और इन सब के गुनाहों का बोझ मैं किस त़रह़ बर्दाश्त कर पाऊंगी,

www.dawateislami.net

आह ! मेरा क्या बनेगा ?.... नहीं, नहीं, मैं जल्द अज़् जल्द अपने बचने की कोई सूरत निकालूंगी, जिस के लिये मैं उन सब से अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ कर देने की दरख़्वास्त करूंगी, उन पर किये गए ज़ुल्म का इज़ाला करूंगी, किसी न किसी त़रह़ उन सब को राज़ी कर लूंगी, ताकि मैदाने मेह़शर के कर्बनाक (या'नी बे क़रारी के) माह़ोल में मुझे उन के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़रा सा काग़ज़ फटने पर मा'ज़िरत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस पुर फ़ितन दौर में भी ऐसी हस्तियां मौजूद हैं कि जो हुक़ूक़ुल इ़बाद का इस क़दर ख़याल रखती हैं कि इन के वाक़िआ़त पढ़ या सुन कर दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा हो जाती है, चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 101 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत**" सफ़ह़ा 70 पर है कि दौरए ह़दीष (जामिअ़तुल मदीना बाबुल मदीना कराची) के एक त़ालिबे इ़ल्म की फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ की एक जिल्द चन्द दिन अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के ज़ेरे मुत़ालआ़ रही । आप ने फ़तावा रज़विया शरीफ़ की जिल्द मअ़ रुक़्आ़ जब वापस फ़रमाई तो त़ालिबे इ़ल्म रुक़्आ़ पढ़ कर शशदर रह गए और जज़्बाते तअष्षुर से उन की पलकें भीग गईं । (मज़्मून कुछ यूं था)

www.dawateislami.net

मेरे मीठे मीठे मदनी बेटे زِیدَ مَجدُہٗ की ख़िदमत में शुक्रिया भरा सलाम, आप के फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ से मत़लूबा इबारात के इ़लावा भी इस्तिफ़ादा किया, ख़ास ख़ास कलिमात व फ़िक़रात को ख़त़ कशीदा करने की आ़दत है मगर मजाज़ (या'नी बा इख़्तियार) न होने के बाइ़ष मुजतनिब (या'नी रुका) रहा मगर बे एह़तियात़ी के सबब एक सफ़ह़े के ऊपर की जानिब मा'मूली सा काग़ज़ फट गया, बसद नदामत, मा'ज़िरत-ख़्वा हूं, उम्मीद है मुआ़फ़ी की ख़ैरात से मह़रूम नहीं फ़रमाएंगे। काग़ज़ इतना कम शक़ हुवा है कि ग़ालिबन ढूंडने पर भी न मिल सके। इ़लावा अज़ीं भी जो हुक़ूक़ तलफ़ हुए हों मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। दैन हो तो वुसूल कर लीजिये (या'नी मेरी त़रफ़ आप की कोई रक़म वग़ैरा बनती हो तो ले लीजिये)। दुआ़ए मग़फ़िरत से नवाज़ते रहिये। وَالسَّلَام مَعَ الْاِکْرَام

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! साहि़बे जूदो नवाल, शाहे ख़ुश ख़िसाल, मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल तो क्या हुवा गोया ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर कोहे ग़म व अलम टूट पड़ा, चुनान्चे रिवायत में आता है कि

फ़िराक़े रसूल पर बे चैनी व इज़तिराब

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا पर ग़मे मुस्त़फ़ा का इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक बार ही मुस्कुराती देखी गई। (جذبُ القُلُوب (مترجم)، ص۲۳۱)

www.dawateislami.net

आप के हिज्र का ग़म काश रुलाए मुझ को

ख़ून रोता रहूं सरकार ! रसूले अ़रबी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 325)

ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا रसूले मक़्बूल صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के ग़म व जुदाई की मुसीबत के ज़माने में लोगों की सोह़बत से परेशान हो कर तन्हाई इख़्तियार कर के **बैतुल ह़ुज़्न** में क़ियाम पज़ीर हो गई थीं।

(مدارج النبوۃ (مترجم)، ج ۲، باب اول در ذکر اولاد کرام، ص ۴۲۵)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने सुना कि ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا ने रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के फ़िराक़ में ख़ल्वत इख़्तियार कर ली। गोशा नशीनी व तन्हाई की भी कई बरकात हैं, चुनान्चे फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द ह़ज़रते मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी علیہ رحمۃ اللہ القوی ख़ल्वत के फ़वाइद बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जब आदमी अ़लाइक़े दुन्यविय्या से अलग हो कर एक गोशे में रहना इख़्तियार करता है तो हज़ारों फ़ुज़ूल बातों से नजात पा जाता है और दिल एक त़रफ़ मुतवज्जेह होता है अब आदमी अगर मुतवज्जेह इलल्लाह है तो येह क़वी से क़वीतर होगी इस में षबात व इस्तिह़काम होगा इस तअ़ल्लुक़ में जितनी कुव्वत और इस्तिमरार

www.dawateislami.net

होगा उसी क़दर अन्वारे इलाही व असरारे इलाही का इन्किशाफ़ होगा। आदमी जब लोगों से इख़्तिलात़ रखता है तो ला मुह़ाला हज़ारों त़रह़ के मुआ़मलात दर पेश होते हैं। किसी की मह़ब्बत, किसी से अ़दावत, किसी से लड़ाई, कभी किसी से ख़ुश, कभी किसी से नाराज़, कभी ग़म, कभी फ़िक्रे नानो ख़ुर्श, लिबास व सुकना वग़ैरा वग़ैरा। ख़ुसूसन मुतअ़ल्लिक़ीन से राबित़ा और इन रवाबित़ के अषरात दिल पर पड़ते हैं। जिस से दिल की तवज्जोह बटती है फिर जज़्बात की तक्मील की ख़्वाहिश और इस ख़्वाहिश के लिये जिद्दो जहद। इस में मा'रका आराइयां, हैजाने नफ़्स का बाइ़ष हो सकते हैं और फिर इस से जो मफ़ासिद पैदा हो सकते हैं वोह सब को मा'लूम हैं।

ख़ल्वत में जा कर आदमी ख़ुद ब ख़ुद कितने गुनाहों से मह़फ़ूज़ हो जाता है इसे हर शख़्स जानता है और गुनाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ तअ़ल्लुक़ में कितने ह़ारिज हैं येह किसी से मख़्फ़ी (या'नी पोशीदा) नहीं इस लिये ख़ल्वत से बढ़ कर गुनाहों से रोकने वाली कोई चीज़ नहीं।

(نُزہۃُ القاری شرح صحیحُ البخاری، باب کیف کان بدء الوحی، ج ۱، ص ۲۴۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत का ग़म व अलम

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हुवा तो हज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (शिद्दते ग़म के सबब) फ़रमाने लगीं। हाए बाबा जान ! आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के बुलावे को क़बूल कर लिया, हाए बाबा जान ! जन्नतुल फ़िरदौस आप का मक़ाम हो गया, हाए बाबा जान ! हम जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام को ता'ज़ियत देते हैं।

(صَحِیْحُ ابْنُ حِبَّان،کتاب التاریخ،ذکر الخبر المدحض...الخ ص۱۷۱۵، الحدیث:۶۶۲۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नौह़ा और बे सब्री में फ़र्क़

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस रिवायत के तह़त फ़रमाते हैं : सय्यिदा (फ़ातिमा) رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के येह अल्फ़ाज़ न तो नौह़ा हैं न बे सब्री, बल्कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़िराक़ पर बे चैनी है जो ब ज़ाते ख़ुद इ़बादत है। नौह़ा येह है कि मय्यित के ऐसे अवसाफ़ बयान किये जावें जो उस में न हों और पीटा जावे। बे सब्री येह है कि रब्ब तआ़ला की शिकायत की जावे। जनाबे सय्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا इन दोनों से मह़फ़ूज़ हैं। येह भी ख़याल रहे कि दुन्या में पांच ह़ज़रात बहुत रोए हैं :

www.dawateislami.net

﴾1﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना आदम علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام फ़िराक़े जन्नत में। ﴾2-3﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام व ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या علٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ौफ़े ख़ुदा में ﴾4﴿..... ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़िराक़े रसूल में और ﴾5﴿.... ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आबेदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वाक़िअ़ए करबला के बा'द ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की प्यास याद कर के। जनाबे सय्यिदा ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती थीं :

صُبَّتْ عَلَیَّ مَصَائِبُ لَوْ اَنَّهَا

صُبَّتْ عَلَی الْاَیَّامِ صِرْنَ لَیَالِیَا

तर्जमा : मुझ पर ऐसी मुसीबत पड़ीं कि अगर रोज़े रोशन पर पड़ती तो वोह शबे तारीक बन जाते।

(مِرْاٰۃُ الْمَنَاجِیْح شَرْح مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح، کتاب الفضائل والشمائل، باب، ج۸، ص ۲۹۱)

दिन रात हिजरे यार में आहें भरा करूं

रोया करूं फ़िराक़ में ज़ारो क़ित़ार मैं

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 407)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की क़ल्बी कैफ़िय्यत

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि जब मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का विसाल हो गया और आप عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم

www.dawateislami.net

को दफ़्न कर दिया गया तो ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا मज़ार पर ह़ाज़िर हुईं, ख़ाके अक़्दस की मुठ्ठी भरी, आंखों पर लगाई, आंखों से आंसू रवां हो गए और ज़बाने अक़्दस, ग़मे दिल को इन अल्फ़ाज़ में ढालने लगी।

(1).... उस शख़्स पर क्या मलामत हो सकती है जिस ने तुर्बते अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सूंघा है कि वोह रहती दुन्या तक क़ीमती से क़ीमती ख़ुश्बूओं को न सूंघे। मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जसदे अत़हर से ख़ाके तुर्बत में बसने वाली ख़ुश्बू उस को हमेशा हमेशा के लिये दूसरी ख़ुश्बूओं से बे नियाज़ कर देने वाली है।

(2).... मुझ पर मसाइबो शदाइद की वोह सियाह रातें आन पड़ी हैं कि इन को दिनों पर डाला जाता तो रातों में तब्दील हो जाते।

(اَلْوَفَا بِاَحْوَالِ الْمُصْطَفٰی (مترجم)، ابواب وصال مصطفیٰ، چالیسواں باب بعد وصال حضرت فاطمہ کی کیفیت، ص ۸۳۱)

दाग़े मुफ़ारक़त [1] तो मिला काश ! अब ऐसा हो
रोया करूं फ़िराक़ [2] में ज़ारो क़ित़ार मैं

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 409)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

---

(1) ....या'नी जुदाई (2) .... या'नी जुदाई

www.dawateislami.net

मय्यित पर रोना कैसा ?

शारेहे मिश्कात, ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी** علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : मय्यित पर आवाज़ से या सिर्फ़ आंसूओं से रोना जाइज़ है बल्कि मुर्दे के बा'ज़ फ़ज़ाइल बयान करना भी दुरुस्त है जैसे ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़ह़रा رضی اللہ تعالٰی عنہا ने हु़ज़ूर पर रोते हुए फ़रमाया था : अब्बा जान ! आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم जन्नत में चले गए। अब वह़्य आना बन्द हो गई वग़ैरा। हां ! उस पर सर या सीना कूटना, मुंह पर थप्पड़ लगाना, बाल नोचना, उस के झूटे अवसाफ़ बयान करना जैसे हाए मेरे पहाड़, हाए ! काली घोड़ी के सुवार। येह सब ह़राम है कि नौह़ा में दाखि़ल है।

(مراٰۃ المناجیح شرح مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الجنائز، باب البکاء علی المیت، ج ۲، ص ۴۹۹)

नौह़ा की ता'रीफ़

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 854 पर सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : नौह़ा या'नी मय्यित के अवसाफ़ मुबालग़ा के साथ बयान कर के आवाज़ से रोना

www.dawateislami.net

जिस को बैन कहते हैं, बिल इजमाअ़ ह़राम है यूं हीं वावैला, वा मुसीबता कह के चिल्लाना।

(बहारे शरीअ़, किताबुल जनाइज़, ता'ज़िय्यत का बयान, जि. 1, स. 854)

नौह़ा करने का अ़ज़ाब

शहनशाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : नौह़ा करने वाली औ़रत क़ियामत वाले दिन अपनी क़ब्र से इस ह़ाल में निकलेगी कि उस के बाल बिखरे हुए और गर्द आलूद होंगे और उस पर ख़ारिश का कुर्ता और ला'नत की चादर होगी वोह अपने हाथों को अपने सर पर रखे चीखते और चिल्लाते हुए कहेगी : हाए बरबादी। मालिक عَلَيْهِ السَّلَام कहेंगे : आमीन (या'नी ऐसा ही हो)। फिर इस (या'नी रोने पीटने) में से उस का हि़स्सा जहन्नम की आग होगी।

(كنزالعمال، كتاب الموت، قسم الاقوال، ج٨، الجزء الخامس عشر، ص٢٠٠، حديث٤٢٢٤٧)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नौह़ा करने वाली और नौह़ा सुनने वाली पर ला'नत फ़रमाई है।" (جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف اللام، ج٦، ص٣٢، الحديث:١٧٠٥٨)

www.dawateislami.net

एक सय्यिदज़ादे इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ज़रते इमामे ह़सन बसरी علیہ رحمۃ اللہ القوی से पूछा : क्या ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم के ज़माने में भी मुहाजिरीन की औ़रतें नौह़ा करती थीं ? तो उन्हों ने इरशाद फ़रमाया ! नहीं । फिर फ़रमाया : **अल्लाह** عزوجل की क़सम ! एक औ़रत रोती हुई बारगाहे रिसालत मआब صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم में ह़ाज़िर हुई जिस का बाप, बेटा और भाई जंग में शहीद हो गए थे, हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने उस से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुझे किस मुसीबत ने रुलाया है ?" उस ने अ़र्ज़ की : "मेरे घर के तमाम मर्द फ़ौत हो गए ।" आप صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : "तू सब्र करे तो तेरे लिये जन्नत है ।" उस ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عزوجل की क़सम ! जब मेरे लिये जन्नत है तो **मैं आज के बा'द कभी न रोऊंगी ।**"

(قُرَّۃُ الْعُیُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن مع الروض الفائق،الباب السادس فی عقوبۃ النائحۃ، ص ۳۹۲)

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़लमीन صلی اللہ تعالی علیہ و الہ وسلم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : "वोह हम में से नहीं (या'नी हमारे त़रीक़े पर नहीं) जो अपने मुंह पर तमांचे मारे गिरेबान चाक करे और ज़मानए जाहिलिय्यत की त़रह़ वावैला मचाए ।"

(صحیح البخاری، کتاب الجنائز، باب لیس منا من شق الجیوب، ص ۳۲۶، الحدیث: ۱۲۹۴)

www.dawateislami.net

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ۝ (پ۲۳ الزمر:۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *साबिरों ही को उन का षवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती ।*

बच्चे की मौत पर सब्र करना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस औ़रत से जिस का बच्चा फ़ौत हो गया था, इस त़रह़ इरशाद फ़रमाएगा : "ऐ मेरी बन्दी ! मैं तेरे बच्चे की मौत का फ़ैसला लौह़े मह़फ़ूज़ में कर चुका था और जब मैं ने इस की रूह़ क़ब्ज़ की तो तेरे दिल ने जज़्अ़ व फ़ज़्अ़ न की और न ही तेरा सीना तंग हुवा तो सुन ! आज मेरी रिज़ा व ख़ुशनूदी की तुझे ख़ुश ख़बरी हो और तुझे अपने बेटे के साथ ऐसे ज़िन्दगी वाले घर या'नी जन्नत में इकठ्ठा कर दिया गया जहां न मौत है और न ही ग़म व मलाल और ऐसे मक़ाम में कि जहां से कभी निकलना नहीं ।"

(قرۃ العیون ومفرح القلب المحزون مع الروض الفائق، الباب السادس فی عقوبۃ النائحۃ، ص۳۹۵)

जन्नत में घर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : जब किसी आदमी का बच्चा फ़ौत हो जाता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (सब कुछ जानने के बा वुजूद) फ़िरिश्तों से इस्तिफ़्सार फ़रमाता है : तुम ने मेरे बन्दे के बेटे की रूह़ क़ब्ज़ कर ली है ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : जी हां ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : तुम ने

www.dawateislami.net

इस के दिल का फल ले लिया है ? फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : जी हां ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : मेरा बन्दा क्या कह रहा था ? वोह अ़र्ज़ करतें हैं वोह तेरी ह़म्द कर रहा था और اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ रहा था तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है मेरे बन्दे के लिये जन्नत में घर बनाओ और उस का नाम बैतुल ह़म्द रखो ।

(جمع الجوامع،قسم الأقوال، حرف الهمزة،ج ١، ص٢٤٩،الحديث: ١٨٠٠)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बे पर्दगी से तौबा

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! अ़मल का जज़्बा बढ़ाने के लिये मदनी माह़ोल ज़रूरी है वरना आ़रिज़ी तौ़र पर जज़्बा पैदा होता भी है तो अच्छी सोह़बत के फ़ुक़दान (या'नी कमी) के सबब इस्तिक़ामत नहीं मिल पाती । अपना मदनी ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये । سُبْحٰنَ اللہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और मदनी क़ाफ़िलों की भी क्या ख़ूब बहारें और बरकतें हैं । दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे माह़ोल में रचने बसने की बरकत से मुतअ़द्दद इस्लामी बहनों को शरई पर्दा करने की सआ़दत नसीब हो गई । ऐसी ही एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के

www.dawateislami.net

तह़रीरी बयान का लुब्बे लुबाब है : मैं दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले **T.V** पर फ़िल्में ड्रामे देखने की आ़दी थी, बाज़ार वग़ैरा जाने के लिये बे पर्दा ही निकल खड़ी होती, नमाज़ भी नहीं पढ़ती थी। यूं मेरे सुब्ह़ो शाम ग़फ़्लत व मा'सियत में बसर हो रहे थे। एक बार किसी ने मुझे मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्नतों भरे बयानात के केसिट दिये, मैं ने इन्हें सुना तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़्वाबे ग़फ़्लत से बेदार हो गई। इन बयानात की बरकत से मुझे ख़ौफ़े ख़ुदा की दौलत नसीब हुई, इश्क़े रसूल का जज़्बा मिला और मैं नमाज़ी बन गई, मैं ने अपने तमाम गुनाहों बिल ख़ुसूस बे पर्दगी से पक्की तौबा कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी बुर्क़अ़ मेरे लिबास का ह़िस्सा बन गया। वोह बे लगाम ज़बान जो पहले गाने गुन-गुनाने में मसरूफ़ रहती थी अब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ना'ते मुस्त़फ़ा सुनाने लगी। ता दमे तह़रीर दा'वते इस्लामी की ज़ैली मुशावरत की ख़ादिमा के त़ौर पर सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 31)

कटी है ग़फ़्लतों में ज़िन्दगानी — न जाने ह़श्र में क्या फ़ैसला हो
इलाही ! हूं बहुत कमज़ोर बन्दी — न दुन्या में न उक़्बा में सज़ा हो

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 165)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! ऐसी इस्लामी बहन जो गुनाहों के दलदल में फंसी हुई थी उस को ख़ौफ़े ख़ुदा जैसी अ़ज़ीम दौलत मिल गई, बे पर्दगी से तौबा की तौफ़ीक़ भी नसीब हुई । आप भी मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले बयानात की केसिटें ख़ुद भी सुनें और अपने मह़ारिम रिश्तेदारों को भी तोहूफ़तन पेश करें और दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत की भी दा'वत देती रहें कि अगर आप के दा'वत देने से किसी का दिल चोट खा गया और वोह इजतिमाअ़ में शिर्कत कर के क़ुरआनो सुन्नत की राह पर आ गई तो आप का भी सीना मदीना होगा । हर इस्लामी बहन अपना मदनी ज़ेह्न बना ले कि ''**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।**'' إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये ''**मदनी इन्आ़मात**'' पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को, जिन की उ़म्र 22 साल या इस से ज़ियादा है, ''**मदनी क़ाफ़िलों**'' में सफ़र करवाना है । إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 193)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तेल डालने के मदनी फूल

❁ फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस के बाल हों वोह इन का एह्तिराम करे।" (ابوداؤد، ج۴، ص ۱۰۳، الحدیث:۴۱۶۳) या'नी इन्हें धोए, तेल लगाए और कंघी करे (اَشِعَّةُ اللَّمعات، ج۳، ص۶۱۷) बाल साबुन वग़ैरा से धोने का जिन का मा'मूल नहीं होता उन के बालों में अकषर बदबू हो जाती है ख़ुद को अगर्चे बदबू न आती हो मगर दूसरों को आती है। ❁ ह़ज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दिन में दो मरतबा तेल लगाते थे (مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبَہ، ج۶ ص۱۱۷) बालों में तेल का ब कषरत इस्ति'माल ख़ुसूसन अहले इ़ल्म ह़ज़रात के लिये मुफ़ीद है कि इस से सर में ख़ुश्की नहीं होती, दिमाग़ तर और ह़ाफ़िज़ा क़वी होता है ❁ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जब तुम में से कोई तेल लगाए तो भंवों (या'नी अबरूओं) से शुरूअ़ करे, इस से **सर का दर्द दूर होता है** " (اَلْجامِعُ الصَّغِیر، ص۲۸، الحدیث:۳۶۹) ❁ कन्ज़ुल उ़म्माल में है : प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब तेल इस्ति'माल फ़रमाते तो पहले अपनी उलटी हथेली पर तेल डाल लेते थे, फिर पहले दोनों अबरूओं पर फिर दोनों आंखों पर और फिर सरे मुबारक पर लगाते थे। (کَنْزُ الْعُمّال، ج۷، ص۴۶، رقم:۱۸۲۹۵، ۱۸۲۹۶)

www.dawateislami.net

बयान नम्बर 12

ख़ातूने जन्नत

का

विसाले मुबारक

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ख़ातूने जन्नत का विसाले मुबारक

मोतियों का ताज

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 308 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**इस्लामी बहनों की नमाज़**" सफ़ह़ा 72 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ब्बास अह़मद बिन मन्सूर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَفُوْر को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर मोतियों का ताज सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस "**शीराज़**" की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं। ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ मैं कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया कि **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़फ़िरत कर दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع، الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علٰی رسولِ اللّٰہ، ص ۱۲۳، ملخصاً)

www.dawateislami.net

हर दर्द की दवा है सल्ले अ़ला मुह़म्मद

ता'वीज़े हर बला है सल्ले अ़ला मुह़म्मद

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

वफ़ाते सय्यिदा की ख़बर

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी लाडली शहज़ादी, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदा फ़ाति़मतुज़्ज़ुहरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से फ़रमाया : ''اَنْتِ اَوَّلُ اَھْلِیْ لُحُوْقًا بِیْ'' या'नी मेरे घर वालों में सब से पहले तुम (वफ़ात पा कर) मुझ से मिलोगी ।

(حِلْیَۃُ الْاَوْلِیَاءِ وَطَبَقَاتُ الْاَصْفِیَاء، ذکر النساء الصحابیات، فاطمۃ بنت رسول اللّٰہ، ج۲، ص۵۰، الحدیث:۱۴۴۳)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ैब की ख़बर इरशाद फ़रमाई कि "मेरे अहल में से सब से पहले तुम मुझ से मिलोगी ।" ग़ैब क्या होता है ? आइये ! सुनिये, चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत **मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ग़ैब के (लफ़्ज़ी) मा'ना ग़ाइब या'नी छुपी हुई चीज़ । इस्तिलाह़ (मख़्सूस, मुरादी मा'ना) में ग़ैब वोह चीज़ कहलाती है जो कि ज़ाहिरी बाति़नी ह़वास (मह़सूस करने की कुव्वतों) और अ़क़्ल से

www.dawateislami.net

छुपी हो या'नी न तो आंख, नाक, कान वग़ैरा से मा'लूम हो सके और न ग़ौरो फ़िक्र से अ़क़्ल में आ सके। (تفسیرِ نعیمی، ج ۱، ص ۱۲۷)

मषलन जन्नत हमारे लिये इस वक़्त ग़ैब है क्यूंकि इस को हम ह़वास (या'नी आंख, नाक, कान वग़ैरा) से मा'लूम ही नहीं कर सकते।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर शीराज़ी बैज़ावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "ग़ैब से मुराद पोशीदा शै है कि ह़स इस का इदराक न कर सकें (ह़वासे ख़म्सा या'नी देखने, सुनने, सूंघने, चखने और छूने से न जाना जा सके) और बिदाहते अ़क़्ल इस का तक़ाज़ा नहीं करती। (تفسیرُ الْبَیْضَاوِی، ج ۱، ص ۱۸۰)

ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हमारे मक्की मदनी आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैब की बातें जानते हैं। आइये ! इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक इस्लामी भाई ने शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ को जो कुछ बताया उस का ख़ुलासा येह है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे ख़्वाब में जनाबे रिसालत मआब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की सआ़दत मिली, हिम्मत कर के अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप को इ़ल्मे ग़ैब है ? इरशाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

हां ! इस के बा'द सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक आयते कुरआनी सुनाई । सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबहाए मुबारका से तिलावत, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खुश आवाज़ी और अदाएगिये हुरूफ़ का हुस्ने उस्लूब (या'नी हुरूफ़ की अपने मख़ारिज से अदाएगी की ख़ूब सूरती) मरहबा ! ऐसी उ़म्दा और शीरीं आवाज़ व क़िराअत मैं ने कभी नहीं सुनी, आयते शरीफ़ा मैं भूल गया हूं, हां ! इतना याद पड़ता है कि उस के आख़िर में लफ़्ज़ بِضَنِيْنٍ था इस पर अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने पारह 30 सूरतुत्तक्वीर की आयत नम्बर डबल बारह (24) सुनाई "وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ" वोह इस्लामी भाई बोल उठे **: हां ! हां ! येही आयते करीमा थी ।** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन को आयते करीमा का **तर्जमा** बताया और फ़रमाया कि यक़ीनन सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत व इनायत से इ़ल्मे ग़ैब है ।

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस ह़िकायत से कोई इस वस्वसे में न पड़े कि लो भई ख़्वाबों से इ़ल्मे ग़ैब षाबित किया जा रहा है । ह़ालांकि ग़ैरे नबी का ख़्वाब तो हुज्जत (या'नी दलील) ही नहीं । अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं कि मैं इक़रार करता हूं कि वाक़ेई हर मस्अला ख़्वाब से ह़ल नहीं किया जाता, मगर यहां ख़्वाब से नहीं, ख़्वाब में अ़त़ा कर्दा जवाब

www.dawateislami.net

में बयान कर्दा क़ुरआनी आयत से इल्मे ग़ैब का षुबूत पेश किया जा रहा है और वोह आयते करीमा वाक़ेई इल्मे ग़ैबे मुस्त़फ़ा पर दाल्ल (या'नी दलील) है । लिहाज़ा ज़िक्र कर्दा आयत मअ़ तर्जमा मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ (پ۳۰ التکویر: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।*

इस आयते मुबारका से मा'लूम हुवा कि मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ग़ैब बताते हैं और ज़ाहिर है कि बताएगा वोही जिस को इल्म होगा । तो बिला शको शुबा रब्बुल आ़लमीन की इनायत से रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इल्मे ग़ैब की दौलत से माला माल हैं । आ़शिक़े माहे रिसालत, आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ करते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश अज़ इमामे अहले सुन्नत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت)

शर्ह़े कलामे रज़ा :

या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आप की शाने अ़ज़मत निशान के क्या कहने ! शबे मे'राज ऐन जागती ह़ालत में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक सर की आंखों से अपने पाक

www.dawateislami.net

परवर दगार का दीदार किया, तो यूं **अल्लाह** عزوجل जो कि ग़ैबुल ग़ैब है वोह भी अपने फ़ज़्लो करम से आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم पर ज़ाहिरो आश्कार हो गया तो अब कोई और ग़ैब आप صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم से किस त़रह़ निहां या'नी छुपा रह सकता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا को पहले ही ग़ैबी ख़बर अ़ता फ़रमा दी थी कि तुम सब से पहले मुझ से मिलोगी। अब येह मुलाह़ज़ा फ़रमाइये कि विसाले मुस्त़फ़ा के बा'द ख़ातूने जन्नत رضی اللہ تعالٰی عنہا की कैफ़िय्यत क्या थी ?

ग़मे मुस्त़फ़ा का ग़लबा

सरकारे मदीना صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द ख़ातूने जन्नत, शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ تعالٰی عنہا पर ग़मे मुस्त़फ़ा का इस क़दर ग़लबा हुवा कि आप رضی اللہ تعالٰی عنہا के लबों की मुस्कुराहट ही ख़त्म हो गई। अपने विसाल से क़ब्ल सिर्फ़ एक ही बार मुस्कुराती देखी गईं। इस का वाक़िआ़ यूं है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ातूने जन्नत رضی اللہ تعالٰی عنہا को येह तश्वीश थी कि उ़म्र भर तो ग़ैर मर्दों की नज़रों से ख़ुद को बचाए रखा है अब कहीं बा'दे वफ़ात मेरी कफ़न पोश लाश ही पर लोगों की नज़र न पड़ जाए ! एक मौक़अ़

www.dawateislami.net

पर ह़ज़रते सय्यिदतुना अस्मा बिन्ते उ़मैस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने कहा : मैं ने ह़ब्शा में देखा है कि जनाज़े पर दरख़्त की शाख़ें बांध कर एक डोली की सी सूरत बना कर उस पर पर्दा डाल देते हैं। फिर उन्हों ने खजूर की शाख़ें मंगवा कर उन्हें जोड़ कर उस पर कपड़ा तान कर सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को दिखाया। आप बहुत ख़ुश हुईं और लबों पर मुस्कुराहट आ गई। बस येही एक मुस्कुराहट थी जो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द देखी गई। (جَذْبُ الْقُلُوب (مُتَرجَم)، ص ۲۳۱)

چُو زَہرا باش از مخلوق رُو پوش
کہ دَر آغوش شبّیرے بہ بینی

या'नी ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रह़ परहेज़गार पर्दादार बनो, ताकि अपनी गोद में ह़ज़रते सय्यिदुना शब्बीरे नामदार, इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जैसी अवलाद देखो।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आज कितनी इस्लामी बहनें पर्दा करती हैं। माह़ोल बहुत एडवान्स और फ़ेशन परस्ती आ़म है। शरई पर्दा करते हुए झिजक मह़सूस होती है। क्या ऐसे ह़ालात में शरई पर्दा तर्क कर दिया जाए ? नहीं, शरई पर्दा हरगिज़ तर्क न किया जाए कि येह अ़ज़ीम नेकी है और बे पर्दगी सख़्त गुनाह। पर्दा करने में जितनी तक्लीफ़ ज़ियादा होगी उतना ही षवाब भी اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ज़ियादा मिलेगा। मन्क़ूल है :

www.dawateislami.net

اَفضَلُ العِبادَاتِ اَحمَزُھَا

या'नी अफ़्ज़ल तरीन इबादत वोह है जिस में ज़हमत जियादा हो ।

(کَشفُ الخِفاء، حرف الھمزۃمع الفاء، ج ۱، ص ۱۴۱، الحدیث:۴۵۹)

शैख़ुल इस्लाम हाफ़िज़ मुहयुद्दीन अबू ज़करिया यहया बिन शरफ़ नववी علیہ رحمۃ اللہ القوی फ़रमाते हैं : इबादत में मशक़्क़त और ख़र्च ज़ियादा होने से षवाब और फ़ज़ीलत भी ज़ियादा हो जाती है ।

(شَرحُ صَحِیح مُسلِم لِلنَّوَوِی، کتاب الحج، باب بیان وجوہ الاحرام……الخ، ج ۱، ص ۳۹۰)

नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہٖ وسلّم का फ़रमाने आलीशान है : अफ़्ज़ल अमल वोह है जिस पर नुफ़ूस को मजबूर किया जाए । (احیاءعلوم الدین، کتاب الصبر والشکر، الشطر الاول، ج ۴، ص ۷۵)

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम علیہ رحمۃ اللہ الاکرم फ़रमाते हैं : ''हश्र में वोह अमल वज़्नदार होगा जो दुन्या में दुश्वार महसूस होता है ।'' (तज़किरतुल औलिया (मुतर्जम) स. 72)

हां ! अगर किसी के अपने ही दिल में खोट हो तो क्या कह सकते हैं ! मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنّان **''नूरुल इरफ़ान''** सफ़्हा 772 पर फ़रमाते हैं : जिस को गुनाह आसान मा'लूम हों और नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक़ है, रब तआला महफ़ूज़ रखे ।

(تفسیر نور العرفان، پ ۱۰، التوبۃ، تحت: الآیۃ ۸۱، ص ۷۷۲)

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلّم

صَلُّوا عَلَی الحَبِیب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बा'ज़ इस्लामी बहनें यूं कहती सुनाई देती हैं कि बस "**हमारे लिये दिल का पर्दा काफ़ी है**" येह कहना दुरुस्त नहीं, दुरुस्त क्यूं नहीं ? आइये ! मुलाहृज़ा फ़रमाइये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ 397 सफ़्ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**पर्दे के बारे में सुवाल जवाब**" सफ़्ह़ा 193 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं : "येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है और इस क़ौले बद तर अज़ बौल में उन कुरआनी आयाते मुबारका के इन्कार का पहलू है जिन में ज़ाहिरी जिस्म को पर्दे में छुपाने का हुक्म दिया गया है, मषलन पारह 22 सूरतुल अह़्ज़ाब आयत नम्बर 33 में फ़रमाया गया, **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलिय्यत की बे पर्दगी । इसी सूरए मुबारका की आयत नम्बर 59 में है : **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ नबी ! अपनी बीबियों और साहि़बज़ादियों और मुसलमानों की औ़रतों से फ़रमा दो कि अपनी चादरों का एक हि़स्सा अपने मुंह पर डाले रहें ..... الخ । सूरतुन्नूर की आयत नम्बर 31 में है, **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपना बनाव न दिखाएं .... الخ जो जिस्म के पर्दे का मुत़लक़न इन्कार करे और कहे कि "सिर्फ़

www.dawateislami.net

दिल का पर्दा होना चाहिये" उस का ईमान जाता रहा। शादीशुदा थी तो निकाह़ भी टूट गया किसी की मुरीदनी थी तो बैअ़त भी ख़त्म हुई अगर फ़र्ज़ ह़ज कर लिया था तो वोह भी गया नीज़ गुज़श्ता ज़िन्दगी के तमाम नेक आ'माल बरबाद हो गए। अपने इस कुफ़्र से तौबा कर के कलिमा पढ़ कर नए सिरे से मुसलमान हो और शोहरे अव्वल ही से नए सिरे से निकाह़ करे। (हां ! अगर शोहरे अव्वल निकाह़ करना न चाहे तो किसी और मर्द से निकाह़ कर सकती है) और मुरीद होना चाहे तो किसी भी जामेअ़ शराइत़ पीर से बैअ़त हो जाए। अलबत्ता अगर कोई पर्दे की फ़र्ज़िय्यत का क़ाइल है मगर पर्दे की किसी ख़ास नोइय्यत (या'नी मख़्सूस त़र्ज़) का इन्कार करता है जिस का तअ़ल्लुक़ ज़रूरियाते दीन से नहीं तो फिर हुक्मे कुफ़्र नहीं।"

कुफ़्र से तौबा नीज़ तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह़ का त़रीक़ा मक्तबतुल मदीना की त़रफ़ से शाएअ़ कर्दा 16 सफ़्ह़ात के मुख़्तसर रिसाले **"28 कलिमाते कुफ़्र"** से देख लीजिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़क़ीक़त तो येह है कि "ज़ाहिर" दिल का नुमायन्दा है, दिल अच्छा होगा तो इस का अषर ख़ारिज में भी ज़ाहिर होगा लिहाज़ा पर्दा वोही करेगी जिस का दिल अच्छा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त की त़रफ़ माइल होगा, चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : येह ख़याल कि बात़िन

www.dawateislami.net

(या'नी दिल) साफ़ होना चाहिये ज़ाहिर कैसा ही हो मह़्ज़ बाति़ल है। ह़दीष में फ़रमाया कि इस का दिल ठीक होता तो ज़ाहिर आप (या'नी ख़ुद ही) ठीक हो जाता। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 22, स. 605)

ऐ मेरी बहनो ! सदा पर्दा करो तुम गली कूचों में मत फिरती रहो
अपने देवर जेठ से पर्दा करो उन से हरगिज़ बे तकल्लुफ़ मत बनो
वरना सुन लो क़ब्र में जब जाओगी सांप बिच्छू देख कर चिल्लाओगी

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 669)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ख़ातूने जन्नत की वसिय्यतें

ह़ज़रते सय्यिदा ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने अपने विसाल से क़ब्ल दो वसिय्यतें फ़रमाईं :

(1).... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم को वसिय्यत की, कि मेरी वफ़ात के बा'द आप ह़ज़रते उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से निकाह़ कर लें, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ह़ज़रते सय्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की वसिय्यत पर अ़मल किया। येह निकाह़ ज़ुबैर बिन अ़वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के एहतिमाम से हुवा। (اِکْمَال (مُتَرْجَم) مع مرآت المناجیح، ج۸، ص۷، مُلَخَّصاً)

(2).... जब मैं दुन्या से जाऊं तो मुझे रात में दफ़्न करें ताकि मेरे जनाज़े पर ना मह़रम की नज़र न पड़े। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 307)

ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने दुन्या से तशरीफ़ ले जाने से क़ब्ल वसिय्यत फ़रमाई, वसिय्यत किसे कहते हैं ? और इस के क्या फ़ज़ाइल हैं ? आइये ! मुलाह़ज़ा फ़रमाइये !

www.dawateislami.net

वसिय्यत किसे कहते हैं ?

बहारे शरीअ़त में है : वसिय्यत करने का मत़लब येह है कि बत़ौरे एह़सान किसी को अपने मरने के बा'द अपने माल या मन्फ़अ़त का मालिक बनाना ।

(बहारे शरीअ़त, वसिय्यत का बयान, जि. 3, हि़स्सा. 19, स. 936)

वसिय्यत की अक़्साम

वसिय्यत चार क़िस्म की है : (1)..... **वाजिबा :** जैसे ज़कात की वसिय्यत और कफ़्फ़ाराते वाजिबा की वसिय्यत और सदक़ा, सौमो सलात की वसिय्यत (2)..... **मुबाह़ :** वसिय्यते अग़निया के लिये (3)..... **वसिय्यते मकरूहा :** जैसे अहले फ़िस्क़ व (अहले) मा'सियत के लिये वसिय्यत जब येह गुमान ग़ालिब हो कि वोह माले वसिय्यत गुनाह में सर्फ़ करेगा (4).... **मुस्तह़ब :** इस के इ़लावा के लिये वसिय्यत मुस्तह़ब है ।

(اَلدُّرُّ الْمُخْتَار وردُّ الْمُحتار، کتاب الوصایا، ج ۱۰، ص ۳۵۴)

इस को आप इस त़रह़ याद रखें कि जिन हु़क़ूक़ का अदा करना फ़र्ज़ है उन के लिये वसिय्यत फ़र्ज़ होगी और जिन हु़क़ूक़ का अदा करना वाजिब है उन के बारे में वसिय्यत करना वाजिब । ऐसे मुआ़मलात जो मुस्तह़ब्बात में से हैं उन की वसिय्यत करना भी मुस्तह़ब, मुबाह़ कामों की वसिय्यत भी मुबाह़, मकरूह कामों की वसिय्यत मकरूह और ह़राम कामों के लिये वसिय्यत करना ह़राम ।

www.dawateislami.net

वसिय्यत बाइषे मग़फ़िरत

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गंजीना, बाइषे नुज़ूले सकीना, साहिबे मुअत्तर पसीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जो अच्छी वसिय्यत पर मरा वोह दीन के रास्ते और सुन्नत पर मरा और तक़्वा व शहादत की मौत मरा और बख़्शा हुवा मरा।" (مشکوۃ المصابیح، کتاب الفرائض والوصایا، باب الوصایا، ج ۱، ص ۵۶۷، الحدیث ۳۰۷۶)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीषे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : (अच्छी वसिय्यत से मुराद येह है कि) मरते वक़्त अपने माल का कुछ ह़िस्सा फ़ुक़रा पर या किसी कारे ख़ैर में लगाने की वसिय्यत कर गया या किसी दीनी इदारे में लगाने की वसिय्यत कर गया।

मज़ीद फ़रमाते हैं : इस ह़दीष से मा'लूम हुवा कि बा'ज़ नेक अ़मल ब ज़ाहिर मा'मूली तर हैं मगर इन का षवाब बहुत ज़ियादा होता है। देखो ! बा'दे मौत माल राहे ख़ुदा में ख़र्च करना मा'मूली काम है कि वोह इन्सान अब माल से बे नियाज़ हो चुका मगर इस पर भी इतना बड़ा षवाब मिला और ऐसे दर्जे का मुस्तह़िक़ हुवा। इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि मा'मूली नेकी को भी हलका न जानो, कभी एक घूंट पानी जान बचा लेता है और मा'मूली गुनाह कर न लो कि कभी छोटी चिंगारी घर जला देती है। ख़याल रहे कि यहां शहादत से मुराद हुक्मी शहादत है।

(مِرْاٰةُ الْمَنَاجِیْح شَرْح مِشْکٰوةُ الْمَصَابِیْح، باب الوصایا، ج ۳، ص ۳۸۵)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने वसिय्यत के बारे में सुना हमें भी इस पर अ़मल करने की निय्यत करनी चाहिये । अभी तक जिन के जो हुक़ूक़ हमारे ज़िम्मे हैं उन को अदा करने की कोशिश करें और जो हुक़ूक़ अदा करने में वक़्त दरकार है (अभी नहीं हो सकते) अपने मह़ारिम में से किसी को इन की वसिय्यत फ़रमा दें । इस के मुतअ़ल्लिक़ मज़ीद रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये मक्तबतुल मदीना से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ का मुरत्तब कर्दा 16 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**मदनी वसिय्यत नामा**" ह़ासिल फ़रमा लीजिये । ان شاء اللہ عزوجل आप को अपनी वसिय्यतें लिखने में भी बहुत मदद मिलेगी । और वसिय्यत के तफ़्सीली अह़काम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 उन्नीसवें ह़िस्से से "**वसिय्यत का बयान**" का मुत़ालआ़ फ़रमा लें ।

ख़ातूने जन्नत को किस ने ग़ुस्ल दिया ?

आ'ला ह़ज़रत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** علیہ رحمۃ الرحمن इस की वज़ाह़त करते हुए "**फ़तावा रज़विय्या**" मुख़र्रजा जिल्द 9 में इरशाद फ़रमाते हैं : वोह जो मन्क़ूल हुवा कि सय्यिदुना अ़ली کرم اللہ تعالی وجہہ ने ह़ज़रते बतूल ज़हरा رضی اللہ تعالی عنہا को ग़ुस्ल दिया :

www.dawateislami.net

अव्वलन ...... (पहली बात तो येह कि) इस की ऐसी सिह़ह़त व लियाक़ते हुज्जिय्यत मह़ल्ले नज़र है (या'नी इस के सह़ीह़ होने और दलील बनने के लाइक़ होने पर ए'तिराज़ है)

षानियन....... (दूसरी येह कि एक) दूसरी रिवायत यूं है कि इस जनाब को ह़ज़रते उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا (नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की दाई) ने ग़ुस्ल दिया।

षालिषन...... (तीसरी येह कि यहां) ब मा'ना अम्रे शाएअ़ (या'नी चूंकि आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने ग़ुस्ल देने का हुक्म फ़रमाया था इस वजह से आप کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की त़रफ़ ही ग़ुस्ल देने की निस्बत कर दी गई और अ़रबी कलाम में बारहा ऐसा होता है कि काम करने की निस्बत उस काम का हुक्म देने वाले की त़रफ़ कर दी जाती है जैसे) कहा जाता है बादशाह ने फ़ुला क़ौम से जंग की (ह़ालांकि बादशाह ख़ुद हथियार ले कर जंग नहीं करता बल्कि फ़ौज को जंग करने का हुक्म देता है तो इस हुक्म देने की वजह से जंग करने की निस्बत ही बादशाह की त़रफ़ कर दी जाती है, इसी त़रह़) ह़दीष में आया : नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अज़ान दी या'नी अज़ान का हुक्म दिया।

राबिअ़न.... (चौथी येह कि) इज़ाफ़्ते फे'ल ब सूए मुसब्बिबे ग़ैर मुस्तन्कर और ह़दीषे अ़ली उन वुजूह पर मह़मूल करने से तआ़रुज़ मुर्तफ़ेअ़ या'नी (बा'ज़ दफ़्आ़ किसी काम की निस्बत उस की त़रफ़ कर दी जाती है जो उस काम के करने का सबब होता है और येह कोई ग़ैरे मा'रूफ़ बात नहीं, ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को ग़ुस्ल दिये जाने का सबब चूंकि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم बने इस तौ़र पर कि आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने इन्हें ग़ुस्ल दिये जाने का हुक्म फ़रमाया या आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने ग़ुस्ल का सामान मुहय्या फ़रमाया, इस बिना पर ग़ुस्ल देने की निस्बत आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم की त़रफ़ ही कर दी गई, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ऐमन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के ग़ुस्ल देने की रिवायतों में तत़्बीक़ इस त़रह़ होगी कि) उम्मे ऐमन (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने अपने हाथों से नहलाया और सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हुक्म दिया या अस्बाबे ग़ुस्ल को मुहय्या फ़रमाया।

ख़ामिसन...... (पांचवां येह कि) मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के लिये खु़सूसिय्यत थी औरों का क़ियास इन पर रवा (या'नी दुरुस्त) नहीं हमारे उ़-लमा जो शोहर को ग़ुस्ले ज़ौजा से मन्अ़ फ़रमाते हैं इस की वजह येही है कि बा'दे मौत ब सबबे इनइ़दामे मह़ल्ल, मिल्के निकाह़ ख़त्म हो जाती है (या'नी मरने के बा'द चूंकि निकाह़ का मह़ल्ल ही ख़त्म हो गया लिहाज़ा निकाह़ भी ख़त्म हो गया और जब निकाह़ ख़त्म हुवा) तो शोहर अजनबी हो गया।

इसी लिये मन्क़ूल हुवा कि सय्यिदुना अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم पर ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इस (ग़ुस्ल देने वाले) अम्र पर ए'तिराज़ किया, ह़ज़रते मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने जवाब इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हें ख़बर नहीं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اِنَّ فَاطِمَةَ زَوْجَتُكَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ **''या'नी बेशक फ़ातिमा दुन्या व आख़िरत में तेरी बीवी है।''**

www.dawateislami.net

तो देखो ! इस ख़ुसूसिय्यत की त़रफ़ इशारा फ़रमाया कि येह रिश्ता मुन्क़त़ेअ़ (या'नी ख़त्म) नहीं येह जवाब न फ़रमाया कि शोहर को अपनी औ़रत का नहलाना रवा है। इस से और भी षाबित हुवा कि सह़ाबए किराम (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم) के नज़्दीक सूरते मज़्कूरा में मज़्हब, अ़दमे जवाज़ था (या'नी सह़ाबए किराम رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُم के नज़्दीक मर्द का बीवी के मय्यित को ग़ुस्ल देना ना जाइज़ था) जब तो ह़ज़रते इब्ने मसऊ़द (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) ने इन्कार फ़रमाया और ह़ज़रते (सय्यिदुना अ़ली) मुर्तज़ा (كَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم) ने इसे तस्लीम फ़रमा कर अपनी ख़ुसूसिय्यत से जवाब दिया।

(फ़तावा रज़विया (मुख़र्रजा), जि. 9, स. 92-94, मुल्तक़त़न)

सय्यिदा ज़ह़रा का जनाज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मन्क़ूल है कि ह़ज़रते फ़ात़िमतुज़्ज़ह़रा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا की नमाज़े जनाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पढ़ाई।

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الموت، باب فی اشیاء قبل الدفن، ج۸، الجزء الخامس عشر، ص ۳۰۳، الحدیث: ۴۲۸۵۹)

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الرَّحِیْم से मन्क़ूल है ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और चार तकबीरें कहीं।

(کَنْزُ الْعُمَّال، کتاب الموت، باب فی اشیاء قبل الدفن، ج۸، الجزء الخامس عشر، ص ۲۹۹، الحدیث: ۴۲۸۱۶)

www.dawateislami.net

शारेहे मिश्कात, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं : सहीह येह है कि हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने आप का जनाज़ा पढ़ाया ।

(مِراٰۃُ المَناجِیح شَرح مِشکٰوۃُ المَصابِیح،کتاب الفضائل،باب مناقب اھل بیت النبی، ج۸، ص۴۵۲)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! बा'ज़ इस्लामी बहनें सय्यिदा फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कहानी और इस तरह के दीगर मन घड़त क़िस्से पढ़ती और घरों में पढ़ाती हैं। आइये ! इस बारे में मा'लूमात हासिल करते हैं कि येह पढ़ना कैसा है ? चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 499 सफ़हात पर मुशतमिल किताब "**नमाज़ के अहकाम**" सफ़हा 485 पर शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं : दास्ताने अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं, इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें । इसी तरह एक पेम्फ़लेट ब नाम "वसिय्यत नामा" लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी "**शैख़ अहमद**" का ख़्वाब दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं इस का भी ए'तिबार न करें ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !　　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

"यासीन शरीफ़ पढ़ो" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से सूरए यासीन शरीफ़ के 12 फ़ज़ाइल

अगर ईसाले षवाब के लिये पढ़ना है तो कलिमा शरीफ़ पढ़िये, दुरूदे पाक पढ़िये, सूरए यासीन पढ़िये, सूरए मुल्क पढ़िये, क़ुरआने पाक की तिलावत कीजिये। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ षवाब का अ़ज़ीम ख़ज़ाना ह़ासिल होगा। आइये ! सूरए यासीन शरीफ़ के फ़ज़ाइल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे

क़ुरआन का दिल

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَفَّار से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सूरए यासीन क़ुरआन का दिल है जो इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और आख़िरत की बेहतरी के लिय पढ़ेगा उस की मग़फ़िरत कर दी जाएगी।

(مُسْنَدِ اَحْمَد، مسند البصريين، معقل بن يسار، ج٨، ص٣٢٦، الحديث: ٢٠٨٣٦، ملتقطا)

10 क़ुरआन का षवाब

(2).... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक हर चीज़ का एक दिल है और क़ुरआन का दिल सूरए यासीन है और जो एक मरतबा सूरए यासीन पढ़ेगा उस के लिये दस मरतबा क़ुरआन पढ़ने का षवाब लिखा जाएगा।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی، کتاب فضائل القران،باب ما جاء فی فضل سورة یٰس، ص ٦٧١، الحدیث:٢٨٨٧)

www.dawateislami.net

दुन्या व आख़िरत की भलाई

(3).... ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन अ़तिय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तौरात में सूरए यासीन का नाम मुइम्मतुन है, क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले को दुन्या व आख़िरत की हर भलाई अ़ता करती है, इस से दुन्या व आख़िरत की बलाएं दूर करती है और आख़िरत की हौलनाकियों से नजात बख़्शती है। और इस का नाम दाफ़ेआ़ और क़ाज़िया भी है क्यूंकि येह अपनी तिलावत करने वाले से हर बुराई को दूर कर देती है और उस की हर ह़ाजत पूरी करती है, जिस शख़्स ने इस की तिलावत की येह उस के लिये 20 ह़ज के बराबर है और जिस ने इस को सुना उस के लिये **अल्लाह** तआ़ला की राह में एक हज़ार दीनार ख़र्च करने के बराबर है और जिस ने इस को लिखा फिर इसे पिया तो उस के पेट में हज़ार दवाएं, हज़ार नूर, हज़ार यक़ीन, हज़ार बरकतें और हज़ार रह़मतें, दाख़िल होंगी और इस से हर धोका और बीमारी निकाल देती है।

(کنزالعمال، کتاب الاذکار، قسم الاقوال، سورۃ یٰسٓ، ج ۱، الجزء الاول، ص ۲۹۴، الحدیث:۲۶۸۳)

शहीद की मौत

(4)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, रसूले मोह़्तशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ने फ़रमाया : जो शख़्स हमेशा हर रात सूरए यासीन की तिलावत करता रहा फिर मर गया तो वोह शहीद मरेगा ।

(المعجم الاوسط، بقية ذكر من اسمه محمد، ج۵، ص۱۸۸، الحديث:۷۰۱۸)

तमाम ह़ाजात पूरी हों

(5).... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़त़ा बिन अबू रबाह़ ताबेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, सुरूरे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स दिन की इब्तिदा में सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस की तमाम ह़ाजात पूरी कर दी जाएंगी ।

(سنن الدارمی، کتاب فضائل القرآن، باب فی فضل سورة طه ویٰس، ص۱۰۳۵، الحدیث:۳۴۱۹)

साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़

(6)...... ह़ज़रते सय्यिदुना मा'क़िल बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار से रिवायत है कि बेशक ह़ुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस सूरए यासीन की तिलावत करेगा, उस के पहले के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे, तो तुम इस की तिलावत अपने मरने वालों के पास करो ।

(شُعَبُ الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والآیات، ج۲، ص۴۷۹، الحدیث:۲۴۵۸)

www.dawateislami.net

नज़्अ़ में आसानी

(7).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस मरने वाले के पास सूरए यासीन तिलावत की जाती है। **अल्लाह** तबारक व तआ़ला उस पर (उस की रूह़ क़ब्ज़ करने में) नर्मी फ़रमाता है।

(کنزالعمال، کتاب الموت، قسم الاقوال، ج۸، الجزء الخامس عشر، ص۲۴۰، الحدیث:۴۲۱۷۹)

मग़फ़िरत का इन्आ़म

(8).... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़लाबा رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ से रिवायत है, वोह फ़रमाते हैं : जिस ने सूरए यासीन की तिलावत की उस की मग़फ़िरत हो जाएगी और जिस ने भूक की ह़ालत में पढ़ी वोह शिकम सैर हो जाएगा और जिस ने रास्ता भूल जाने की ह़ालत में पढ़ी वोह रहनुमाई पा लेगा और जिस ने किसी चीज़ के गुम होने पर इस की तिलावत की तो उसे गुमशुदा चीज़ मिल जाएगी और जिस ने खाने पर उस के कम होने के ख़ौफ़ से तिलावत की तो वोह उसे किफ़ायत करेगा और जिस ने किसी मरने वाले के पास इस की तिलावत की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर नर्मी फ़रमाएगा जिस ने किसी औ़रत के पास उस के बच्चे की विलादत की दुश्वारी पर सूरए यासीन की तिलावत की उस पर आसानी होगी और जिस ने इस की तिलावत की गोया कि उस ने ग्यारह मरतबा

www.dawateislami.net

कुरआने पाक की तिलावत की और हर चीज़ के लिये दिल है और कुरआन का दिल सूरए यासीन है।

(شُعَبُ الایمان، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور والایات، ج ۲، ص ۴۸۱، الحدیث ۲۴۶۷)

दिल नर्म होगा !

(9)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی से रिवायत है, फ़रमाते हैं : जो शख़्स अपने दिल में सख़्ती पाए तो वोह एक प्याले में ज़ा'फ़रान से یٰسٓ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِیْمِ लिखे, फिर इसे पी जाए। (المرجع السابق، ص ۴۸۲، الحدیث: ۲۴۶۸)

हर ह़र्फ़ के बदले मग़्फ़िरत

(10).... अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने हर जुमुआ़ को अपने वालिदैन, दोनों या एक की क़ब्र की ज़ियारत की और सूरए यासीन की तिलावत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की बख़्शिश व मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، قسم الاقوال، ج ۸، الجزء السادس عشر، ص ۱۹۵، الحدیث: ۴۵۴۷۸)

(क़ब्र की ज़ियारत का हुक्म मर्दों के लिये है। इस्लामी बहनों को क़ब्रिस्तान जाना मन्अ़ है घर पर ही तिलावत फ़रमा कर इस का षवाब वालिदैन को ईसाल कर दें।)

www.dawateislami.net

अ़ज़ीम सआ़दत

(11)..... ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कु़रआने ह़कीम में एक सूरत है जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अ़ज़ीम कहा जाता है, इस के पढ़ने वाले को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां शरीफ़ कहा जाता है, क़ियामत के रोज़ **रबीआ़** और **मज़र** क़बाइल से भी ज़ाइद अफ़राद के ह़क़ में इस के पढ़ने वाले की शफ़ाअ़त क़बूल की जाएगी, वोह सूरए यासीन है।"

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف القاف، المحلی بأل من ھذا الحرف، ج۵، ص۳۳۸، حدیث ۱۵۵۲۰)

बरकाते यासीन

(12)....**दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 679 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**जन्नती ज़ेवर**" सफ़ह़ा 595 पर शैखुल ह़दीष ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल फ़रमाते हैं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से फ़रमाया कि सूरए यासीन पढ़ो इस में बीस बरकतें हैं : ﴾1﴿.....भूका आदमी इस को पढ़े तो आसूदा किया जाए। ﴾2﴿....प्यासा पढ़े तो सैराब किया जाए। ﴾3﴿....नंगा पढ़े तो लिबास मिले। ﴾4﴿....मर्द बे औ़रत वाला पढ़े तो जल्द उस की शादी हो जाए।

www.dawateislami.net

﴾5﴿.....औ़रत बे शोहर वाली पढ़े तो जल्द शादी हो जाए। ﴾6﴿....बीमार पढ़े तो शिफ़ा पाए। ﴾7﴿....क़ैदी पढ़े तो रिहा हो जाए। ﴾8﴿.....मुसाफ़िर पढ़े तो सफ़र में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से मदद हो। ﴾9﴿.....ग़मगीन पढ़े तो उस का रंजो ग़म दूर हो जाए। ﴾10﴿....जिस की कोई चीज़ गुम हो गई हो वोह पढ़े तो जो खोया है वोह मिल जाए। सूरए यासीन की एक आयत سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ﴿۵۸﴾(پ۲۳، یٰسٓ:۵۸) को एक हज़ार चार सो उन्हत्तर (1469) बार पढ़ो, اِنْ شَآءَاللّٰہعَزَّوَجَلَّ जिस मक़्सद से पढ़ोगे मुराद पूरी होगी, ख़्वाजा दैरबी लिखते हैं : येह मुजर्रब है। और سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِیْمٍ﴿۵۸﴾(پ۲۳، یٰسٓ:۵۸) को पांच जगह एक काग़ज़ पर लिख कर ता'वीज़ बांधो तो ह़वादिषात और चोर वग़ैरा से ह़िफ़ाज़त रहेगी। जो शख़्स सुब्ह़ को सूरए यासीन पढ़ेगा उस का पूरा दिन अच्छा गुज़रेगा और जो शख़्स रात में इस को पढ़ेगा उस की पूरी रात अच्छी गुज़रेगी। ह़दीष शरीफ़ में है कि यासीन कुरआन का दिल है। (जन्नती ज़ेवर, स. 594)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुल्क के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सूरए मुल्क के 3 फ़ज़ाइल

(1)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "जब बन्दा क़ब्र में जाएगा तो (अ़ज़ाब) उस के

www.dawateislami.net

क़दमों की जानिब से आएगा तो उस के क़दम कहेंगे तेरे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ खड़े हो कर सूरए मुल्क पढ़ा करता था, फिर (अ़ज़ाब) उस के सीने या पेट की त़रफ़ से आएगा तो वोह कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी जानिब से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ सूरए मुल्क पढ़ा करता था। फिर वोह उस के सर की त़रफ़ से आएगा तो सर कहेगा कि तुम्हारे लिये मेरी त़रफ़ से कोई रास्ता नहीं क्यूंकि येह मेरे साथ सूरए मुल्क पढ़ा करता था।" पस येह सूरत रोकने वाली है, अ़ज़ाबे क़ब्र से बचाती है, तौरात में इस का नाम **सूरए मुल्क** है।

(اَلْمُسْتَدْرَک عَلَی الصَّحِیْحَیْن لِلْحَاکِم، کتاب التفسیر، تفسیر سورۃ الملک ج۳، ص۳۲۲، حدیث۳۸۹۲)

बेदारी तक ह़िफ़ाज़त

(2)...... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मीठे मीठे आक़ा मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक मैं कु़रआन में एक सूरत पाता हूं इस की 30 आयात हैं जो शख़्स सोते वक़्त इस (सूरत) की तिलावत करे, उस के लिये 30 नेकियां लिखी जाएंगी और उस के 30 गुनाह मिटाए जाएंगे और उस के 30 दर्जात बुलन्द किये जाएंगे, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता उस की त़रफ़ भेजेगा जो उस पर अपने पर बिछा देगा और जागने तक हर चीज़ से उस की ह़िफ़ाज़त करेगा

www.dawateislami.net

और येह मुजादला (या'नी झगड़ा) करने वाली है अपने पढ़ने वाले की मग़फ़िरत के लिये क़ब्र में झगड़ा करेगी और येह تَبٰرَکَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْکُ है।

(جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف الهمزة مع النون، ج٣، ص٢٣٠، الحديث:٨٤٧٩)

नजात दिलाने वाली

(3)..... ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक आदमी से फ़रमाया : क्या मैं तुझे एक ह़दीष तोह़फ़े के तौ़र पर न दूं जिस के साथ तू ख़ुश हो जाए, उस ने अ़र्ज़ की : बेशक। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : येह सूरत पढ़ो تَبٰرَکَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْکُ और येह सूरत अपने अहलो इ़याल, अपने तमाम बच्चों, अपने घर के बच्चों और अपने पड़ोसियों को सिखाओ (इस की उन्हें ता'लीम दो) क्यूंकि येह नजात दिलाने वाली है और क़ियामत के दिन अपने क़ारी के लिये अपने रब्ब के पास झगड़ने वाली है और येह उसे तलाश करेगी ताकि उसे जहन्नम के अ़ज़ाब से नजात दिलाए और इस के सबब इस का क़ारी अ़ज़ाबे क़ब्र से नजात पा जाएगा।

(الدر المنثور، پ٢٩، سورة الملک، ج٨، ص٢٣١)

मा'मूले रसूल

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उस वक़्त तक आराम न फ़रमाते जब तक الٓمّٓ تنزیل और "تَبٰرَکَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْکُ" तिलावत न फ़रमा लेते।

(الادب المفرد، باب ما يقول اذا اوى الى فراشه، ص٣٥٣، الحديث:١٢٠٧)

www.dawateislami.net

आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ و الہ وسلم हर रात सूरए मुल्क की तिलावत फ़रमाया करते, الحمد للہ عزوجل शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ के इस्लामी बहनों को अ़त़ा कर्दा 63 मदनी इन्आ़मात में से मदनी इन्आ़म नम्बर 3 में है कि "क्या आज आप ने नमाज़े पन्जगाना के बा'द नीज़ सोते वक़्त कम अज़ कम एक बार आयतुल कुरसी, सूरए इख़्लास और तस्बीह़े फ़ाति़मा पढ़ी ? नीज़ रात में **सूरए मुल्क** पढ़ या सुन ली ?"(1)

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ भी हमारी तवज्जोह इसी त़रफ़ करवा रहे हैं । येह मदनी इन्आ़मात नेक बनने का नुस्ख़ा हैं अगर हम रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करने में काम्याब हो गईं तो हमारे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा होने के साथ साथ षवाब का भी ख़ज़ाना हाथ आएगा । जैसा कि ह़दीषे पाक में है (आख़िरत के मुआ़मले में) घड़ी भर ग़ौरो फ़िक्र करना 60 साल की इ़बादत से बेहतर है ।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیْر لِلسُّیُوْطِی مع فیض القدیر، حرف الفاء،ج٤، ص٥٨٢، الحدیث:٥٨٩٧)

---

(1) ..... इस्लामी बहनें हैज़ो निफ़ास के अय्याम में कुरआने पाक की तिलावत न करें ।

www.dawateislami.net

दुआए अ़त्तार

मदनी इन्आ़मात की आ़मिलात के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की दुआ़ भी है। फ़रमाते हैं : "या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जो तेरी रिज़ा के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल कर के रोज़ाना इस रिसाले में दिये गए ख़ाने पुर कर के हर माह अपनी ज़ेली मुशावरत ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाए तो उस के अ़मल में इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमा कर उस को अपनी मक़्बूल बन्दी बना ले।"

तू वली अपना बना ले उस को रब्बे लम यज़ल
मदनी इन्आ़मात पर करता है जो कोई अ़मल

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"वाहि़द" के चार हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए त़य्यिबा के 4 फ़ज़ाइल

(1)..... ख़ुश नसीब कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم क़ियामत के दिन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से बहरा मन्द होने वाले ख़ुश नसीब लोग कौन होंगे ? फ़रमाया : ऐ अबू हुरैरा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) मेरा गुमान येही था कि तुम से पहले मुझ से येह बात कोई न

www.dawateislami.net

पूछेगा क्यूंकि मैं ह़दीष सुनने के मुआ़मले में तुम्हारी ह़िर्स को जानता हूं, क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त पाने वाला ख़ुश नसीब वोह होगा जो सिद्के़ दिल से لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ कहेगा।

(صَحِيحُ البُخَارِى،كتاب العلم،باب الحرص على الحديث، ص١٠٠،الحديث:٩٩)

(2)..... अफ़्ज़ल ज़िक्रो दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं ने शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़षे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना : सब से अफ़्ज़ल ज़िक्र لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ और सब से अफ़्ज़ल दुआ़ اَلْحَمْدُ لِلّٰہ है। (سُنَن اِبْنِ مَاجه،كتاب الادب،باب فضل الحامدين،ص٦٠٩،الحديث:٣٨٠٠)

(3)..... आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस बन्दे ने इख़्लास के साथ لَا اِلٰـہَ اِلَّا اللّٰـہُ कहा तो आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, यहां तक कि वोह कलिमा अ़र्श तक पहुंच जाता है जब कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।

(سُنَن التِّرمِذى،احاديث شتى،باب دعاء ام سلمه،ص٨٢٠،الحديث:٣٥٩٠)

www.dawateislami.net

(4).... तजदीदे ईमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अपने ईमान की तजदीद करो। अ़र्ज़ किया गया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! हम अपने ईमान की तजदीद कैसे करें ? फ़रमाया : لَآاِلٰـــہَ اِلَّااللّٰـــہُ कषरत से पढ़ो।

(مُسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ج ۳، ص ۹۳، ۳۹۴، الحدیث: ۸۷۱۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

जे़ह्नी मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! येह फ़ज़ाइल व बरकात पढ़ कर आप का भी ज़ेह्न बना होगा कि हमें भी तिलावते कुरआन करनी चाहिये, ज़िक्रो दुरूद में अपने अवक़ात गुज़ारने चाहियें मगर जैसे किताब पढ़ कर फ़ारिग़ होंगे तो हमारी कैफ़िय्यत दोबारा तब्दील होना शुरूअ़ हो जाएगी और शैत़ान हम पर इस क़दर वार करेगा कि शायद हम में से बा'ज़ तो आज भी इन पर अ़मल करने से मह़रूम रहीं। नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये नेकियों भरा माह़ोल बहुत ज़रूरी है और येह ने'मत हमें दा'वते इस्लामी की सूरत में मुयस्सर है। दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकतों के क्या कहने ! इन बरकतों को लूटने की आ़दत बनाने के लिये आप भी दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल कीजिये।

www.dawateislami.net

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आख़िरत की बे शुमार बरकात के साथ साथ आप के मसाइल भी ह़ैरत अंगेज़ त़ौर पर ह़ल होंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से ग़ैबी इमदादें होंगी, चुनान्चे कहरोड़ पका (पंजाब, पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि मेरे छोटे भाई घरेलू नाचाक़ियों, तंग दस्तियों वग़ैरा परेशानियों के सबब मुसल्सल टेन्शन (या'नी ज़ेह्नी दबाव) में मुब्तला रहने की वजह से रफ़्ता रफ़्ता ज़ेह्नी मरीज़ बन गए थे और ऊल फ़ूल बकते रहते थे, यहां तक कि مَعَاذَاللہ अपने हाथों अपनी जान लेने और ख़ुदकुशी के बारे में सोचने लगे थे। मुझे इन की ह़ालत पर बड़ा तरस आता मगर मैं एक बे बस औ़रत क्या कर सकती थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं पहले ही से दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिर्कत करती थी, वहां मैं ने भाईजान की सिह़ह़त याबी के लिये गिड़-गिड़ा कर दुआ़ मांगनी शुरूअ़ कर दी। कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि मेरे भाई को **अल्लाह** शाफ़ी عَزَّوَجَلَّ ने शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब वोह अम्मी और अब्बू की इ़ज़्ज़त और इन का एह़तिराम करने के बाइ़ष इन की आंखों के तारे बन चुके हैं। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स.195)

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल — है फ़ैज़ाने ग़ौषो रज़ा मदनी माह़ोल
अगर सुन्नतें सीखने का है जज़्बा — तुम आ जाओ देगा सिखा मदनी माह़ोल
बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर — के अच्छों के पास आ के पा मदनी माह़ोल
संवर जाएगी आख़िरत اِنْ شَآءَاللہ — तुम अपनाए रखो सदा मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ स. 604)

www.dawateislami.net

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आप ने ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के विसाले बा कमाल के बारे में पढ़ा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस्लाम पर ज़िन्दा रखे ईमान पर मौत अ़ता फ़रमाए। बहुत सारे दुन्या में कुफ़्र पर ज़िन्दा रहेंगे कुफ़्र पर मरेंगे। बहुत से लोग इस्लाम पर ज़िन्दा रहेंगे इस्लाम पर मरेंगे। बहुत कुफ़्र पर ज़िन्दा रहेंगे मगर मरने से पहले इस्लाम क़बूल कर के जाएंगे। जी हां ! दा'वते इस्लामी का एक मदनी क़ाफ़िला केन्या गया और वहां एक ग़ैर मुस्लिम जो कि हॉस्पिटल (**Hospital**) में था इस्लामी भाइयों ने जा कर इनफ़िरादी कोशिश की तो उस ने इस्लाम क़बूल कर लिया और **इस्लाम क़बूल करने के तक़रीबन 45 मिनट बा'द उस का इन्तिक़ाल हो गया**। सारी ज़िन्दगी कुफ़्र पर रहा मगर मौत से क़ब्ल इस्लाम क़बूल कर के दुन्या से रुख़्सत हुवा। और बहुत सारे बद नसीब ऐसे भी होंगे जो इस्लाम पर ज़िन्दा रहेंगे कुफ़्र पर मरेंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ातूने जन्नत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के सदक़े हमारा ईमान सलामत रखे।

हज़रते सय्यिदुना ह़बीब अ़जमी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی बयान किया करते थे कि जिस का ख़ातिमा لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पर होगा वोह दाख़िले जन्नत होगा फिर रोते हुए कहते थे : मेरे लिये कौन ज़मानत देता है कि मेरा ख़ातिमा لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ पर होगा ?

(تَنْبِیْہُ الْمُغْتَرِّیْن، الباب الثالث فی جملۃ اخری من الاخلاق، شدۃ خوفھم من سوء الخاتمۃ، ص۱۳۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारा ईमान सलामत रखे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

www.dawateislami.net

*मुसलमां है **अ़त्तार** तेरी अ़ता से*

हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही !

(वसाइले बख़्शिश अज़ अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ स. 78)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माह़ोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं आप भी इस मदनी माह़ोल से हरदम वाबस्ता रहिये । हफ़्तावार इजतिमाअ़ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के अपने यहां की ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा । हर इस्लामी बहन अपना येह मदनी ज़ेह्न बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है ।"** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये अपने मह़ारिम को, जिन की उ़म्र 22 साल या इस से ज़ियादा है **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करवाना है । اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है" के बाईस हुरूफ़ की निस्बत से दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 मदनी फूल

﴾1﴿..... फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم : "जो शख़्स मेरी उम्मत तक कोई इस्लामी बात पहुंचाए ताकि उस से सुन्नत क़ाइम की जाए या उस से बद मज़्हबी दूर की जाए तो वोह जन्नती है।" (حِلْیَۃُ الاولیاء، ج ۱۰، ص ۴۵، رقم: ۱۴۴۶۶)

﴾2﴿..... **सरकारे** मदीना صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ و الہٖ وسلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को तरो ताज़ा रखे जो मेरी ह़दीष को सुने, याद रखे और दूसरों तक पहुंचाए।" (سُنَنُ التِّرمِذِی ج ۴، ص ۲۹۸، الحدیث: ۲۶۶۵)

﴾3﴿..... **ह़ज़रते** सय्यिदुना इदरीस عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामे मुबारक की एक ह़िक्मत येह भी है कि कुतुबे इलाहिय्या की कषरते दर्स व तदरीस के बाइ़ष आप عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का नाम इदरीस हुवा। (تفسیرِ کبیر، ج ۷، ص ۵۵۰، تفسیرُ الحسنات ج ۴، ص ۴۸)

﴾4﴿.... **हुज़ूरे ग़ौषे पाक** رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : دَرَسْتُ الْعِلْمَ حَتّٰی صِرْتُ قُطْبًا या'नी मैं ने इ़ल्म का दर्स लिया यहां तक कि मक़ामे क़ुत़्बिय्यत पर फ़ाइज़ हो गया। (قصیدۂ غوثیہ)

﴾5﴿..... **फ़ैज़ाने सुन्नत** से दर्स देना भी दा'वते इस्लामी का एक मदनी काम है। घर, मस्जिद, दुकान, स्कूल, कॉलेज, चौक वग़ैरा में वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना दर्स के ज़रीए ख़ूब ख़ूब सुन्नतों के मदनी फूल लुटाइये और ढेरों षवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

﴾6﴿.....**फ़ैज़ाने सुन्नत** से रोज़ाना कम अज़् कम दो दर्स देने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये। (इन दो में एक ''घर दर्स'' ज़रूर हो)

﴾7﴿....पारह 28 सूरतुत्तह़रीम की छटी आयत में इरशाद होता है :

يٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं।*

अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाने का एक ज़रीआ़ **फ़ैज़ाने सुन्नत** का दर्स भी है।

(दर्स के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान या मदनी मुज़ाकरे की एक केसिट या **V.C.D** भी घर वालों को सुनाइये)

﴾8﴿..... ज़िम्मेदार घड़ी का वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना चौक दर्स का एहतिमाम करें। मषलन रात 9 बजे **मदीना चौक** (साढ़े नव बजे) **बग़दादी चौक** में वग़ैरा। छुट्टी वाले दिन एक से ज़ियादा मक़ामात पर चौक दर्स का एहतिमाम कीजिये। (मगर हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ न हों मषलन आप की वजह से मुसलमानों का रास्ता न रुके वरना गुनहगार होंगे)

﴾9﴿.... दर्स के लिये वोह नमाज़ मुन्तख़ब कीजिये जिस में ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई शरीक हो सकें।

www.dawateislami.net

﴾10﴿.... दर्स वाली नमाज़ उसी मस्जिद की पहली सफ़ में तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त अदा फ़रमाए।

﴾11﴿.... मेह़राब से हट कर (सह़्न वग़ैरा में) कोई ऐसी जगह दर्स के लिये मख़्सूस कर लीजिये जहां दीगर नमाज़ियों और तिलावत करने वालों को दुश्वारी न हो।

﴾12﴿.... ज़ैली मुशावरत के निगरान को चाहिये कि अपनी मस्जिद में दो ख़ैर ख़्वाह मुक़र्रर करे जो दर्स (बयान) के मौक़अ़ पर जाने वालों को नर्मी से रोकें और सब को क़रीब क़रीब बिठाएं।

﴾13﴿.... **पर्दे में पर्दा** किये दो ज़ानू बैठ कर दर्स दीजिये। अगर सुनने वाले ज़ियादा हों तो खड़े हो कर या माईक पर देने में भी ह़रज नहीं जब कि किसी एक भी नमाज़ी या तिलावत करने वाले वग़ैरा को तशवीश न हो।

﴾14﴿..... आवाज़ न तो ज़ियादा बुलन्द हो और न ही बिल्कुल आहिस्ता, ह़त्तल इमकान इतनी आवाज़ से दर्स दीजिये कि सिर्फ़ ह़ाज़िरीन सुन सकें। इस बात की हमेशा एह़तियात़ फ़रमाए कि दर्स व बयान की आवाज़ से किसी सोए हुए या किसी नमाज़ी या मशग़ूले तिलावत वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो।

﴾15﴿.... दर्स हमेशा ठहर ठहर कर और धीमे अन्दाज़ में दीजिये।

﴾16﴿.... जो कुछ दर्स देना है पहले उस का कम अज़ कम एक बार मुत़ालआ़ कर लीजिये ताकि ग़लतियां न हों।

﴾17﴿.... फ़ैज़ाने सुन्नत के मुअ़र्रब अल्फ़ाज़ ए'राब के मुत़ाबिक़ ही अदा कीजिये इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी की आ़दत बनेगी।

www.dawateislami.net

《18》.... **हम्दो सलात,** दुरूदो सलाम के दोनों सीगे़, आयते दुरूद और इख़्तितामी आयात वग़ैरा किसी सुन्नी आ़लिम या क़ारी को ज़रूर सुना दीजिये। इसी त़रह़ अ़रबी दुआ़एं वग़ैरा जब तक उ़-लमाए अहले सुन्नत को न सुना लें अकेले में भी न पढ़ा करें।

《19》.... **फ़ैज़ाने सुन्नत** के इ़लावा दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले मदनी रसाइल से भी दर्स दे सकते हैं।(1)

《20》.... **दर्स** मअ़ इख़्तितामी दुआ़ सात मिनट के अन्दर अन्दर मुकम्मल कर लीजिये।

《21》..... हर मुबल्लिग़ को चाहिये कि वोह **दर्स का त़रीक़ा,** बा'द की **तरग़ीब** और **इख़्तितामी दुआ़** ज़बानी याद कर ले।

《22》.... दर्स के त़रीक़े में इस्लामी बहनें ह़स्बे ज़रूरत तरमीम कर लें।

तकब्बुर से बचने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "जो शख़्स तकब्बुर, ख़ियानत और दैन (या'नी क़र्ज़ वग़ैरा) से बरी हो कर मरेगा वोह जन्नत में दाख़िल होगा।"

(سنن الترمذی، کتاب السیر، باب ماجاء فی الغلول، الحدیث: ۱۵۷۸، ج۳، ص۲۰۸)

---

(1) ..... अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल के इ़लावा किसी और किताब से दर्स की इजाज़त नहीं। **मर्कज़ी मजलिसे शूरा**

www.dawateislami.net

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामिन	सफ़हा नम्बर	मज़ामि	सफ़हा नम्बर
किताब को पढ़ने की 11 निय्यतें	5	इस्लामी बहनों के लिये सीरते सालिहाते उम्मत	35
इजमाली फ़ेहरिस्त	6	सीरते सालिहात	35
अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	7	घरेलू काम-काज करने के 11 फ़वाइद	37
पहले इसे पढ़िये	9	इ़बादत हो तो ऐसी ...... !	39
(1) ख़ातूने जन्नत की शानो अ़ज़मत	13	बीबी फ़ातिमा के जनाज़े का भी पर्दा	41
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	13	70 दिन पुरानी लाश	41
फ़िरिश्ते की बिशारत बराए ख़ातूने जन्नत	13	ख़ातूने जन्नत का विसाले बा कमाल	43
सय्यिदा फ़ातिमा का मुख़्तसर तआ़रुफ़	17	मन्क़बते ख़ातूने जन्नत	43
अलक़ाबात	18	(2) ख़ातूने जन्नत की करामात	47
फ़ातिमा की वजहे तसमिया	19	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	47
2 अलक़ाबात की वजहे तसमिया	21	शाही दा'वत	47
(1) ज़हरा (या'नी जन्नत की कली)	21	करामत ह़क़ है	52
(2) ताहिरा व ज़ाकिया	21	करामत की ता'रीफ़	53
फ़ज़ाइले बतूल ब ज़बाने रसूल	22	कुरआन से करामात का षुबूत	53
(1) जो कुछ तेरी ख़ुशी है ख़ुदा को वोही अ़ज़ीज़	23	अफ़ज़लुल औलिया	57
(2) हम को है वोह पसन्द जिसे आए तू पसन्द	23	''फ़ातिमा'' के 5 हुरूफ़ की निस्बत से खाना	59
(3) जिगर गोशए रसूल	23	खिलाने के फ़ज़ाइल पर मब्नी 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा	
तस्वीरे मुस्तफ़ा	26	सायए अ़र्श	61
सय्यिदा फ़ातिमा रोईं फिर हंस पड़ी	27	शिकमे मादर से निदा	61
10 फ़ज़ाइले फ़ातिमा	29	ख़ातूने जन्नत की करामत	63
तस्बीहे़ फ़ातिमा की फ़ज़ीलत	33	ग़ौषे जली मादरज़ाद बा करामत वली	63

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़हा नम्बर
ब वक़्ते विलादत फ़ज़ा मुनव्वर	64	खाना पकाते वक़्त भी तिलावत	92
निस्वानी अ़वारिज़ से मुबर्रा	65	ख़ातूने जन्नत की दुआ़एं	93
बरकत वाली सीनी	66	दुआ़ के 3 फ़वाइद	95
अपने दिल की निगरानी करते रहो	68	दुआ़ में 5 सआ़दतें	95
जब दरियाए दिजला इस्तिक़्बाल के लिये बढ़ा	69	"या रब्ब" के चार हुरूफ़ की निस्बत से	96
दिल का सुराख़	71	4 मदनी फूल	
(3) ख़ातूने जन्नत का ज़ौक़े इबादत	75	न जाने कौन सा गुनाह हो गया है ?	97
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	75	नमाज़ न पढ़ना तो गोया कोई ख़ता ही नहीं !!!	97
सय्यिदा फ़ातिमा का ज़ौक़े नमाज़	76	क़बूलिय्यते दुआ़ में जल्दी न करे !	98
नमाज़ की बरकतें	77	पड़ोसियों की ख़ैर ख़्वाही	101
बे नमाज़ी का दर्दनाक अन्जाम	79	पड़ोसियों के हुक़ूक़	102
"मुस्तफ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से तर्के	80	10 चीज़ें ज़ुल्म से हैं	103
नमाज़ की वईदों पर मुश्तमिल 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा		पड़ोसी का हक़ क्या है ?	104
शदीद ज़ख़्मी हालत में नमाज़	82	कितने घर पड़ोस में दाख़िल हैं ?	105
बीमारी व कुल्फ़त के बा वुजूद मशग़ूले इबादत	82	**(4) ख़ातूने जन्नत का इश्क़े रसूल**	113
मसरूफ़िय्यत में भी ज़िक्रे रबूबिय्यत	83	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	113
शिकमे मादर में ही 18 पारे याद कर लिये	84	हम शक्ले मुस्तफ़ा	114
क़ुरआने पाक पढ़ने का षवाब	84	क़ुदरती मुशाबहत	116
बेहतरीन शख़्स	86	बहरूपिया बच गया !	117
क़ुरआन शफ़ाअ़त कर के जन्नत में ले जाएगा	86	औरतों को मर्दानी वज़्अ़ बनाना ह़राम है	117
अल्लाह तआ़ला क़ियामत तक अज्र बढ़ाता रहेगा	87	कफ़न फाड़ कर उठ बैठी	119
दा'वते इस्लामी के जामिआ़त व मदारिस की ता'दाद	88	सय्यिदा फ़ातिमा के चलने का अन्दाज़	121
नई दुल्हन इबादत में मगन	89	औरत का मेक-अप करना कैसा ?	122

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़हा नम्बर
लिबास के बा वुजूद नंगी	123	आक़ा शहज़ादी को नमाज़ के लिये बेदार करते	150
सय्यिदा फ़ातिमा का अन्दाज़े गुफ़्तगू	124	सदाए मदीना	151
आवाज़ का पर्दा	125	मैं नमाज़ नहीं पढ़ती थी	151
औरत पीर से बात चीत करे या न ?	126	(5) ख़ातूने जन्नत का ईषार व सख़ावत	157
पीर और मुरीदनी की फ़ोन पर बात चीत	126	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	157
इस्लामी बहनें ना'तें पढ़े या नहीं ?	127	साइलीन की हाजत रवाई	159
इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें	128	"हुसैन" के चार हुरूफ़ की निस्बत से ज़िक्र	160
औरत के राग की आवाज़	129	कर्दा हिकायत के 4 मदनी फूल	
बरामदे से एक दूसरी को पुकारना कैसा ?	130	पहला मदनी फूल ..... नज़्र :	161
बच्चों को डांटने की आवाज़	130	नज़्र किसे कहते हैं?	161
सदाक़ते सय्यिदा ज़हरा	131	नज़्र के बारे में अहम मा'लूमात	161
सच की बरकतें	132	मन्नत के बारे में फ़रमाने रब्बुल इज़्ज़त	163
झूट की नुहूसतें	134	मन्नत पूरी करने वालों की मद्ह सराई	164
बाबा जान की मशक़्क़त को देख कर रोना	137	सहाबए किराम का मन्नत मानना	165
औरत का तन्हा सफ़र करना कैसा ?	142	कौन सी मन्नत मानी जाए ?	166
ख़ातूने जन्नत की हुज़ूर से महब्बत	143	हज़रते ज़ैनब बिन्ते जह्श की नज़्र	167
ऊंटनी का बच्चादान	143	नज़्र के तीन हुरूफ़ की निस्बत से नज़्र के	169
बारगाहे मुस्तफ़ा में महबूबिय्यत	145	मुतअ़ल्लिक़ 3 अहादीषे मुबारका	
जिगर गोशए रसूल	147	बहारे शरीअ़त का मुतालआ कीजिये !	173
सफ़रे मुस्तफ़ा की इब्तिदा व इन्तिहा	147	दूसरा मदनी फूल..... सख़ावत :	173
आमदे मुस्तफ़ा पर अन्दाज़े इस्तिक़्बाल	148	दीने इस्लाम की इस्लाह किस पर मुन्हसिर है	174
अमीरे अहले सुन्नत और इत्तिबाए सुन्नत	148	सख़ावत किसे कहते हैं?	175
"बेटी" के चार हुरूफ़ की निस्बत से	149		
4 अहादीषे मुबारका			

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर
थेलियां भर भर कर तक़्सीम फ़रमा दीं	175	ईषार करने वाली मां	204
बेहतरीन सख़ावत	176	अपना खाना कुत्ते पर ईषार कर दिया !	205
जूदो करम ईमान का हिस्सा	176	ईषार का षवाब मुफ़्त लूटने के नुस्ख़े	206
अनोखा अन्दाज़े सख़ावत	177	खिलाने पिलाने का अ़ज़ीमुश्शान षवाब	207
सख़ावत ईमान के लिये बाइषे तक़विय्यत	178	रह़मते इलाही को वाजिब करने वाला अ़मल !	208
इब्राहीम बिन अदहम की सख़ावत	179	ज़रा ग़ौर कीजिये !	208
सख़ी का खाना दवा है !	180	बेटी की इस्लाह़ का राज़	211
मेरे आक़ा की सख़ावत	181	(6) ख़ातूने जन्नत का निकाह़ व जहेज़	217
यारे ग़ार का माली ईषार	184	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	218
कन्जूसी बात़िन का रोग	186	बरकाते दुरूदो सलाम	217
तीसरा और चौथा मदनी फूल : ईषार और खाना खिलाना	187	सय्यिदा फ़ात़िमा का निकाह़	219
ईषार की ता'रीफ़	187	अबू बक्र व उ़मर की सय्यिदुना अ़ली को तरग़ीब	220
ईषार का षवाब बे ह़िसाब जन्नत	187	अस्लाफ़े किराम का मुबारक शिआ़र	222
ईषार व सख़ावते फ़ात़िमा	189	सय्यिदुना अ़ली की बाहगाहे रिसालत में ह़ाज़िरी	223
साइल की अ़र्ज़ और सय्यिदतुना फ़ात़िमा का सख़ावत भरा जवाब	192	शाने मुस्त़फ़ा व अ़ज़्मते मुर्तज़ा	225
उ़मर बिन ख़त्ताब का ईषार	194	आस्मान पर निकाह़ और फ़िरिश्तों की बारात	226
सलमान फ़ारसी का ईषार	195	ख़ुत़्बए निकाह़	230
अबू अ़ली दक़्क़ाक़ का जज़्बए ईषार	196	सय्यिदए काइनात का जहेज़	232
ईषार की आ'ला मिषाल	197	ख़ातूने जन्नत की जहेज़ की मन्ज़ूम तफ़सील	233
ईषार की मदनी बहार	199	जहेज़ कैसा और कितना हो ?	235
आयते मुबारका की तफ़्सीर	201	बिन्ते अ़त्तार का जहेज़	236
अस्लाफ़े उम्मत आईनए कुरआनो सुन्नत थे	202	सय्यिदा फ़ात़िमा की रुख़्सती	238
राबिआ़ अ़दविय्या का ईषार	203	दा'वते त़आ़म	240

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर
शादी बियाह की इस्लामी रस्में	244	सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम की अवलाद	263
शहज़ादए अ़त्तार مدظلہ العالی की शादी	247	सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का इन्तिक़ाले पुर मलाल	263
तक़रीबे निकाह़	247	अ़ली व फ़ातिमा कभी नाराज़ न हुए	264
मकान पर सजावट	248	मैं ने मदनी बुर्क़अ़ कैसे अपनाया ?	266
पुर तकल्लुफ़ जहेज़ लेने से इन्कार	249	**(7) ख़ातूने जन्नत और उमूरे ख़ानादारी**	271
इजतिमाए ज़िक्रो ना'त	249	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	271
रस्मे रुख़्सती	250	अज़्दवाजी ज़िन्दगी	272
धूम धाम से वलीमा करने का मुत़ालबा	250	घरेलू कामों की तक़्सीम	272
दा'वते वलीमा	252	घर के काम काज करने के फ़वाइद	274
शादी की पहली रात भी इ़बादत	253	घर में काम वाली रख सकते हैं या नहीं ?	275
इ़बादत हो तो ऐसी हो !	254	ख़ालिक़ की ना फ़रमानी में किसी की इत़ाअ़त जाइज़ नही	277
ख़ातूने जन्नत की अवलादे पाक	255	जहन्नम में औ़रतों की कषरत	279
﴾1﴿ सय्यिदुना इमामे ह़सन की विलादते बा सआ़दत	255	घर ख़ुशियों का गहवारा कैसे बने ?	281
सय्यिदुना इमामे ह़सन की अज़्वाज व अवलाद	257	या रब्बे करीम ! हमें मुत्तक़ी बना के उनीस हुरूफ़ की निस्बत से घर में मदनी माहोल बनाने के 19 मदनी फूल	281
सय्यिदुना इमामे ह़सन की शहादत	258		
﴾2﴿ सय्यिदुना इमामे हुसैन की विलादते बा सआ़दत	259		
सय्यिदुना इमामे हुसैन की अज़्वाज व अवलाद	259	ख़ादिम के लिये दरख़्वास्त	285
सय्यिदुना इमामे हुसैन की शहादत	260	तर्बिय्यत व ता'लीम का ख़ज़ाना	290
﴾3,4﴿ सय्यिदुना मोह़सिन व सय्यिदतुना रुक़य्या	261	ख़ातूने जन्नत और घरेलू काम काज	291
﴾5﴿ सय्यिदतुना ज़ैनब का ज़िक्रे ख़ैर	261	घर को ख़ुशियों का गहवारा बनाने और आख़िरत संवारने के लिये "अ़त्तार" की त़रफ़ से "बिन्ते अ़त्तार" के लिये 12 मदनी फूल	292
सय्यिदा ज़ैनब का निकाह़	261		
सय्यिदा ज़ैनब की अवलाद	262		
﴾6﴿ सय्यिदा उम्मे कुलषूम	262		
सय्यिदतुना उम्मे कुलषूम का निकाह़	262	हुक़ूक़े ज़ौजैन	294

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़्हा नम्बर
"हुक़ूक़े शोहर" के आठ हुरूफ़ की निस्बत से	294	ग़ैरत मन्द शोहर	333
शोहर के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ 8 फ़रामीने मुस्तफ़ा		पर्दा इ़ज़्ज़त है बे इ़ज़्ज़ती नहीं	335
बीवी के हुक़ूक़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीषे मुबारका	298	किस किस से पर्दा है ?	337
बीवी के ज़िम्मे शोहर के हुक़ूक़	299	औ़रत के लिये फ़ोन वुसूल करने का त़रीक़ा	338
दुन्यवी मुश्किलात पर सब्र की तलक़ीन	301	घर से निकलते वक़्त की एह़तियात़	340
तशरीह़ात व फ़वाइद	303	बे पर्दगी सबबे ग़ज़बे इलाही	341
सब्र की ह़क़ीक़त	307	पर्दे की अहम्मिय्यत	342
अन्दाज़े अमीरे अहले सुन्नत	307	मैं फ़ेशनेबल थी !	346
छोटे भाई की इनफ़िरादी कोशिश	309	(9) ख़ातूने जन्नत के फ़ाक़े	349
(8) ख़ातूने जन्नत का पर्दे का एहतिमाम	313	दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	349
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	313	ख़ातूने जन्नत का आ़लमे ग़ुर्बत	350
मुनादी की निदा बराए सय्यिदा फ़ात़िमा	314	"फ़ात़िमा" के 5 हुरूफ़ की निस्बत से इस	353
बा ह़या से ह़या	316	वाक़िए़ से ह़ासिल होने वाले 5 मदनी फूल	
ह़याए उ़षमानी	317	काशनए फ़ात़िमा में फ़ाक़ा कशी का आ़लम	356
जन्नत में भी पर्दा	320	जन्नत पाने में सब्क़त	358
बीबी फ़ात़िमा के कफ़न का भी पर्दा	321	ग़ुर्बत पर सब्र	359
उम्मते मुस्लिमा की तनज़्ज़ुली का एक सबब	323	अहले बैत के तीन रोज़े	360
बे पर्दगी की होलनाक सज़ा	325	फ़ाक़ा कशिये फ़ात़िमा और दुआ़ए मुस्तफ़ा	363
कंघी के बाल भी छुपाइये !	325	एक वस्वसा और इस का जवाब	365
ना जाइज़ फ़ेशन करने वालियों के अ़ज़ाब का मुशाहदा	326	तीन दिन का फ़ाक़ा	367
औ़रतों के ना जाइज़ फ़ैशन	328	भूक के 10 फ़वाइद	368
बे ग़ैरती की इन्तिहा	330	भूक का सिला	368
बहारे शरीअ़त का मुत़ालआ़ फ़रमाइये	332	जन्नत व दोज़ख़ के दरवाज़े	369

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़हा नम्बर
बदन की इस्लाह़	370	हुक़ूक़ुल इ़बाद की मुआ़फ़ी का त़रीक़ा	420
मेरे मसाइल ह़ल हो गए	372	मुफ़्लिस कौन ?	420
इस्लामी बहनों में मदनी इन्क़िलाब	373	हुक़ूक़ुल इ़बाद के ह़वाले से "फ़िक्रे मदीना"	422
(10) ख़ातूने जन्नत का ज़ोह्द	379	ज़रा सा काग़ज़ फटने पर मा'ज़िरत	424
हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुश्किल कुशाई फ़रमाना	379	फ़िराक़े रसूल पर बे चैनी व इज़्तिराब	425
		विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत का ग़म व अलम	428
अल्लाह मोअ़्ती है हुज़ूर क़ासिम हैं !	382	नौह़ा और बे सब्री में फ़र्क़	428
ज़ोह्द की ता'रीफ़	384	विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की क़ल्बी कैफ़िय्यत	429
ज़ोह्द व फ़क्र की फ़ज़ीलत	384	मय्यित पर रोना कैसा ?	431
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब बन्दे	385	नौह़ा की ता'रीफ़	431
रूहुल्लाह का पसन्दीदा नाम	385	नौह़ा करने का अ़ज़ाब	432
हुज़ूर की ख़ातूने जन्नत को ज़ोह्द की ता'लीम	386	बच्चे की मौत पर सब्र करना	434
मुज़य्यन घर में दाख़िल होना नबी के शायाने शान नहीं	389	जन्नत में घर	434
		बे पर्दगी से तौबा	435
कंगन सदक़ा कर दिये	391	**(12) ख़ातूने जन्नत का विसाले मुबारक**	441
सीधा रास्ता मिल गया	396	मोतियों का ताज	441
(11) विसाले रसूल पर ख़ातूने जन्नत की कैफ़िय्यत	401	वफ़ाते सय्यिदा की ख़बर	442
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	401	ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब	443
नबी की ग़ैबी ख़बर	402	गमे मुस्तफ़ा का ग़लबा	446
बेटी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रामैने मुस्तफ़ा	403	ख़ातूने जन्नत की वसिय्यतें	451
राज़ छुपाने के मुतअ़ल्लिक़ 2 अह़ादीषे मुबारका	405	वसिय्यत किसे कहते हैं ?	452
मह़बूबे रब्बे ज़ुल जलाल का ज़ाहिरी विसाल	407	वसिय्यत की अक़्साम	452

www.dawateislami.net

मज़ामिन	सफ़हा नम्बर	मज़ामिन	सफ़हा नम्बर
वसिय्यत बाइषे मग़फ़िरत	453	"मुल्क" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सूरए	465
ख़ातूने जन्नत को किस ने ग़ुस्ल दिया?	454	मुल्क के 3 फ़ज़ाइल	
सय्यिदा ज़हरा का जनाज़ा	457	बेदारी तक हिफ़ाज़त	466
"यासीन शरीफ़ पढ़ो" के बारह हुरूफ़ की	459	नजात दिलाने वाली	467
निस्बत से सूरए यासीन के 12 फ़ज़ाइल		मा'मूले रसूल	467
क़ुरआन का दिल	459	दुआए अ़त्तार	469
10 क़ुरआन का षवाब	459	"वाहिद" के चार हुरूफ़ की निस्बत से कलिमए	469
दुन्या व आख़िरत की भलाई	460	तय्यिबा के 4 फ़ज़ाइल	
शहीद की मौत	460	(1) .... ख़ुश नसीब कौन ?	469
तमाम हाजात पूरी हों	461	(2) .... अफ़्ज़ल ज़िक्रो दुआ	470
साबिक़ा गुनाह मुआफ़	461	(3) .... आस्मानों के दरवाज़े खुल जाते हैं	470
नज़्अ़ में आसानी	462	(4) .... तजदीदे ईमान	471
मग़फ़िरत का इन्आ़म	462	ज़ेहनी मरीज़ तन्दुरुस्त हो गया !	471
दिल नर्म होगा !	463	दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत के 22 मदनी फूल	475
हर हर्फ़ के बदले मग़फ़िरत	463	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	479
अ़ज़ीम सआदत	464	माख़ज़ो मराजेअ़	487
बरकाते यासीन	464	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब की फ़ेहरिस्त	493

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे मुअ़ज़्ज़म है : जब क़ियामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा : ऐ अहले मजम्अ़ ! अपनी आंखें बन्द कर लो ताकि ह़ज़रते फ़ात़िमा बिन्ते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) पुल सिरात़ से गुज़रें । (الجامع الصغیر مع فیض القدیر، حرف الهمزة، ج ۱، ص ۵۴۹، الحدیث: ۸۲۲)

www.dawateislami.net

مأخذ و مراجع

نام کتاب	مؤلف /مصنِّف	مطبوعات
قرانِ مجید	کلام باری تعالٰی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
ترجمہ کنز الایمان	اعلٰی حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
تَفْسِیْرِ رُوْحُ الْبَیَان	امام اسماعیل حقی بروسوی متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
تَفْسِیْرِ خَازِن	امام علامہ علی بن محمد خازن متوفّٰی ۷۴۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
اَلدُّرُ الْمَنْثُوْر	امام جلال الدین سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
تفسیر بغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی متوفّٰی ۵۱۶ھ	پشاور ۱۴۳۱ھ
تفسیرِ نعیمی	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ مرکز الاولیاء لاہور
تفسیرِ خَزَائِنُ الْعِرْفَان	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
تفسیرِ نورُ الْعِرفان	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
صَحِیْحُ الْبُخَارِی	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
صَحِیْح مُسْلِم	امام مسلم بن حجاج نیشاپوری متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
سُنَنُ التِّرْمِذِی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
سُنَن اِبْنِ ماجۃ	امام محمد بن یزید قزوینی ابن ماجہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
سُنَنِ اَبِیْ دَاوٗد	امام ابو داود سلیمان بن اشعث متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
صَحِیْحُ ابْنِ حِبَّان	امام حافظ محمد بن حبان متوفّٰی ۳۵۴ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
اَلْمُصَنَّف لِاِبْنِ اَبِیْ شَیْبَۃ	حافظ عبد اللہ محمد بن ابی شیبۃ عبسی متوفّٰی ۲۳۵ھ	مدینۃ الاولیاء ملتان شریف
سُنَنُ الدَّارِمِی	امام عبد اللہ بن عبد الرحمٰن متوفّٰی ۲۵۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
مَجْمَعُ الزَّوَائِد	حافظ نور الدین علی بن ابی بکر ہیثمی متوفّٰی ۸۰۷ھ	المکتبۃ الشاملۃ
مُسْنَد اَحْمَد	امام احمد بن حنبل متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلْمُسْتَدْرَك لِلْحَاکِم	امام محمد بن عبد اللہ حاکم متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ

www.dawateislami.net

فِرْدَوْسُ الْاَخْبَار	ابوشجاع شیرویہ بن شہردار دیلمی متوفّٰی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت
کَنْزُ الْعُمَّال	علامہ علی متقی بن حسام الدین ہندی متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
مَکَارِمُ الْاَخْلَاق	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
جَامِعُ الْاَحَادِیْث	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	المکتبۃ الشاملۃ
کَشْفُ الْخِفَاء	شیخ اسماعیل بن محمد عجلونی متوفّٰی ۱۱۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیْر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالفکر عمان ۱۴۲۰ھ
اَلتَّرْغِیْب وَالتَّرْہِیْب	امام زکی الدین منذری متوفّٰی ۶۵۶ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
شُعَبُ الْاِیْمَان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
شَرْحُ السُّنَّۃ	امام ابومحمد حسین بن مسعود بغوی متوفّٰی ۵۱۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ
اَلْجَمْعُ بَیْنَ الصَّحِیْحَیْن	حافظ محمد بن فتوح الحمیدی متوفّٰی ۴۸۸ھ	المکتبۃ الشاملۃ
اَلْاَدَبُ الْمُفْرَد	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۰ھ
مُسْنَدِ اَبِیْ یَعْلٰی	امام ابویعلی احمد بن علی موصلی متوفّٰی ۳۰۷ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۲ھ
مِشْکٰوۃُ الْمَصَابِیْح	علامہ ولی الدین تبریزی متوفّٰی ۷۴۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
جَمْعُ الْجَوَامِع	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
دَلَائِلُ النُّبُوَّۃ	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفّٰی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
اَلْکَامِلُ فِیْ ضُعَفَاءِ الرِّجَال	امام ابواحمد عبداللہ بن عدی جرجانی متوفّٰی ۳۶۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
اَلْجَامِعُ الصَّغِیْر	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
تَیْسِیْر شَرْح جامع صغیر	حافظ زین الدین عبدالرءوف مناوی متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	مکتبۃ الامام شافعی الریاض ۱۴۰۸ھ
فَیْضُ الْقَدِیْر	حافظ زین الدین عبدالرءوف مناوی متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
نُزھۃُ القاری شرح صحیح البخاری	فقیہ اعظم ہند مفتی محمد شریف الحق امجدی متوفّٰی ۱۴۲۰ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ

www.dawateislami.net

شرح المسلم للنووی	امام حافظ محی الدین ابوزکریا یحییٰ بن شرف نووی ۶۷۶ھ	باب المدینہ کراچی
مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيح مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
اَشِعَّةُ اللَّمْعَات	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۳ھ
مراٰۃ المناجیح	مولانا مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
اُسْدُ الْغَابَةِ فِی مَعْرِفَةِ الصَّحَابَة	علی بن محمد ابن الاثیر متوفّٰی ۶۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۹ھ
الاصابة فی تمییز الصحابة	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفّٰی ۸۵۲ھ	المکتبۃ التوفیقیۃ مصر
المتجر الرابح فی ثواب العمل الصالح	شرف الدین عبد المؤمن دمیاطی متوفّٰی ۷۰۵ھ	دار خضر بیروت ۱۴۲۲ھ
اَلرِّسَالَةُ الْقُشَيْرِيَّة	امام ابو القاسم عبد الکریم ہوازن قشیری متوفّٰی ۴۶۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۶ھ
اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع	امام محمد بن عبد الرحمٰن سخاوی شافعی متوفّٰی ۹۰۲ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۹۵ھ
جَذْبُ الْقُلُوْب	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	شبیر برادرز لاہور ۱۴۱۹ھ
اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر	شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر ہیتمی متوفّٰی ۹۷۴ھ	دار الحدیث القاہرۃ ۱۴۲۳ھ
مُكَاشَفَةُ الْقُلُوْب	ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	کوئٹہ
انساب الاشراف	حافظ احمد بن یحییٰ بلاذری متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار المعارف مصر
تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر علی بن احمد خطیب بغدادی متوفّٰی ۴۶۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مَدَارِجُ النُّبُوَّت	شیخ عبد الحق محدث دہلوی متوفّٰی ۱۰۵۲ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۹ھ
اَلْوَفَا بِاَحْوَالِ الْمُصْطَفٰے	امام عبد الرحمٰن بن علی جوزی متوفّٰی ۵۹۷ھ	حامد اینڈ کمپنی مرکز الاولیاء لاہور
جامعُ الْمُعْجِزات	شیخ محمد واعظ اصفہانی	مصر
بَرِيْقَة مَحْمُوْدِيَّه	ابو سعید محمد بن مصطفےٰ المفتی الخادمی متوفّٰی ۱۱۷۶ھ	المکتبۃ الشاملۃ
سُبُلُ الْهُدٰى وَالرَّشَاد	محمد بن یوسف صالحی شامی متوفّٰی ۹۴۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
مِنْهَاجُ الْعَابِدِيْن	ابو حامد امام محمد بن محمد غزالی متوفّٰی ۵۰۵ھ	دار البشائر الاسلامیۃ بیروت
اَلطَّبَقَاتُ الْكُبْرٰى	امام عبد الوہاب شعرانی متوفّٰی ۹۷۳ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۷ھ
تمهيد الفرش	امام جلال الدین عبد الرحمٰن سیوطی شافعی متوفّٰی ۹۱۱ھ	مکتبہ مشکاۃ الاسلامیۃ

www.dawateislami.net

الزھد وقصر الامل	شیخ اسعد محمد سعید الصاغرجی	دار الغزالی دمشق ۱۴۱۷ھ
قُرَّةُ الْعُيُوْنِ وَمُفَرِّحُ الْقَلْبِ الْمَحْزُوْن	امام ابواللیث نصر بن محمد سمرقندی متوفی ۳۷۵ھ	دار الاحیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
اَلرَّوْضُ الْفَائِق	مبلغِ اسلام شیخ شعیب حرِیفیش متوفی ۸۱۰ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت ۱۴۱۶ھ
قُوْتُ الْقُلُوْب	شیخ ابوطالب محمد بن علی کی متوفی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
احیاء علوم الدین	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۹ھ
لباب الاحیاء	امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دار البیروتی دمشق ۱۴۲۴ھ
اتحاف السادة المتقین	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
خطباتِ مُحَرَّم	مفتی جلال الدین احمد امجدی متوفی ۱۴۲۲ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
اَوراقِ غم	سید محمد احمد قادری متوفی ۱۳۸۰ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۹ھ
بَهْجَةُ الْاَسْرَار	ابوالحسن نور الدین علی شطنوفی متوفی ۷۱۳ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور ۱۴۲۹ھ
تَذْكِرَةُ الْاَوْلِيَاء	فرید الدین عطّار متوفی ۶۲۶/۶۰۶ھ	کتب خانہ حاجی نیاز احمد مدینۃ الاولیاء ملتان
مَشْعَلَةُ الْاِرْشَادِ فِیْ حُقُوْقِ الْاَوْلَاد	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
اَلْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَة	علامہ ابوبکر بن علی حدّاد متوفی ۸۰۰ھ	باب المدینہ کراچی
دُرِّ مُخْتَار	علامہ علاء الدین حصکفی متوفی ۱۰۸۸ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۳ھ
رَدُّ الْمُحْتَار	محمد امین ابن عابدین شامی متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
تَبْيِيْنُ الْحَقَائِق	امام فخر الدین عثمان بن علی زیلعی حنفی متوفی ۷۴۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
اَلْفَتَاوَی الْهِنْدِيَّة	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
فتاوی رضویہ	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۶ھ
احکامِ شریعت	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	احمد رضا بریلوی کتب خانہ کراچی ۱۴۳۰ھ
بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی امجد علی اعظمی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
مَثْنوِی مولانا رُوم	مولانا جلال الدین رومی متوفی ۶۷۲ھ	خدیجہ پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۳۰ھ
اَحْسَنُ الْوِعَاء	رئیس المتکلمین مولانا نقی علی خان متوفی ۱۲۹۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

گُلِسْتَانِ سَعْدِی	شیخ مصلح الدین سعدی شیرازی متوفی ۶۹۱ھ	مکتبہ دانیال مرکز الاولیاء لاہور
جَآءَ الْحَق	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	قادری پبلشرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۴ھ
سفینۂ نوح	مفتی محمد شفیع اوکاڑوی متوفّٰی ۱۴۰۴ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
مَسَائِلُ الْقُرْآن	علامہ عبد المصطفٰی اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
فضائلِ دُعا	اعلیٰحضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
عاشق اکبر	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
مدینے کی مچھلی	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
پُر اَسرار بھکاری	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
خاموش شہزادہ	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
بیاناتِ عطاریہ	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۱ھ
152 رحمت بھری حکایات	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ تراجم کتب)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
ضیائے صدقات	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ تخریج)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
تربیت اولاد	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
سیرت رسول عربی	نور بخش توکلی حنفی نقشبندی متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاہور
سیرت سیّدُنا ابو درداء	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ امیرِ اہلسنّت)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
قبر کا امتحان	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
بہشت کی کنجیاں	علامہ عبد المصطفٰی اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
تعارف امیر اہلسنّت	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ امیرِ اہلسنّت)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
اسلامی زندگی	مفتی احمد یار خان نعیمی متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
نیک بننے اور بنانے کے طریقے	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
اسلامی بہنوں کی نماز	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
پردے کے بارے میں سوال جواب	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ

www.dawateislami.net

امہات المؤمنین	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ تخریج)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
کراماتِ صحابہ	علامہ عبدالمصطفٰی اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
جنّتی زیور	علامہ عبدالمصطفٰی اعظمی متوفّٰی ۱۴۰۶ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
خوفِ خدا	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
فیضانِ سنّت جلد اوّل	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
غیبت کی تباہ کاریاں	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
نیکی کی دعوت	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
نماز کے احکام	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
مدنی پنج سُورہ	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
رسائلِ عطّاریہ	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
مُردے کی لاش	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطّار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
تکبُّر	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ اصلاحی کتب)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
سینگوں والی دلہن	المدینۃ العلمیۃ (شعبہ امیر اہلسنّت)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۷ھ
حدائقِ بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء لاہور
ذَوقِ نعت	شہنشاہِ سُخَن مولانا حَسَن رضا خان متوفّٰی ۱۳۲۶ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۲۸ھ
سامانِ بخشش	مفتیِ اعظم ہند نوری متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
دِیوانِ سالِک	حکیمُ الاُمّت مفتی احمد یار خان متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
وَسائلِ بَخشِش	امیرِ اہلسنّت مولانا محمد الیاس عطار قادری	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
کافی کی نعت	علامہ کفایت علی کافی شہید متوفّٰی ۱۸۷۴ھ	مرکز الاولیاء لاہور ۱۴۱۶ھ

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه

(1) करन्सी नोट के शरई़ अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) षुबूते हिलाल के त़रीक़े (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब

(इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

(रद्दिल कह़ति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के ह़ुक़ूक़

(अल ह़ुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल (अह़सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़हू ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़सनिल विआ़अ)

(कुल सफ़ह़ात : 326)

www.dawateislami.net

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74)

(13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77)

(14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62)

(15) इक़ा–मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60)

(16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46)

(17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70)

(18) अज़्ज़म–ज़–मतुल क़–मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93)

(19,20,21) जद्दिल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार

(अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इमतिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

www.dawateislami.net

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़्हात : 96)

(34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़्हात : 50)

(35) तह्क़ीक़ात (कुल सफ़्हात : 142)

(36) अर-बईने ह्-नफ़िय्यह (कुल सफ़्हात : 112)

(37) अत्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्हात : 24)

(38) त़लाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़्हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व ह़िकायात (कुल सफ़्हात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच ह़िस्से) (कुल सफ़्हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़्हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात ह़िस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़्हात : 24)

(51) ग़ौषे पाक رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़ालात (कुल सफ़्हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़्हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़्हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़्हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)

(57) तरबिय्यते अवलाद (कुल सफ़्हात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़्हात : 62)

(59) अह़ादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़्हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अह़ादीष (कुल सफ़्हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़्हात : 57)

www.dawateislami.net

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल

(अल मुत्जरुर्राबेह़ फ़ी षवाबिल अ़-मलिस्सालेह़) (कुल सफ़ह़ात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़ह़ात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़ह़ात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़ह़ात : 102)

(66) बेटे को नसीह़त (अय्युहल वलद)(कुल सफ़ह़ात : 64)

(67) अद्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बह़रुद्दुमूअ़) (कुल सफ़ह़ात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (क़ुर्रतुल उ़यून) (कुल सफ़ह़ात : 136)

(70) उ़यूनुल ह़िकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़ह़ात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़ह़ात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़ह़ात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़ह़ात : 175)

(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़ह़ात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़ह़ात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़ह़ात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन (कुल सफ़ह़ात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़ह़ात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (ह़िस्सा : 1 से 6)

www.dawateislami.net

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हि़स्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़ह़ात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़ह़ात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़ह़ात : 59)

(87) सहा़बए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इ़श्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم (कुल सफ़ह़ात : 274)

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अ़त्तार के नाम (कुल सफ़ह़ात : 49)

(89) मुक़द्दस तह़रीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़ह़ात : 48)

(90) इस्लाह़ का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हि़स्सए दुवुम) (कुल सफ़ह़ात : 32)

(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 33)

(92) दा'वते इस्लामी की जैलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़ह़ात : 24)

(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और इन का इ़लाज (कुल सफ़ह़ात : 48)

(94) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ सिवुम (सुन्नते निकाह़)(कुल सफ़ह़ात : 86)

(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हि़स्से) (कुल सफ़ह़ात : 275)

(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हि़कमत (कुल सफ़ह़ात : 48)

(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़ह़ात :48)

(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़ह़ात : 48)

(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़ह़ात : 55)

(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़ह़ात : 220)

(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़ह़ात : 33)

(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़ह़ात : 33)

(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़ह़ात : 32)

(104) तज़किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ दुवुम (कुल सफ़ह़ात : 48)

www.dawateislami.net

(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्ह़ात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त मह़ब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ अव्वल (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्ह़ात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त़ चहारूम (कुल सफ़्ह़ात : 49)
(111) चल मदीना की सआ़दत मिल गई (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(114) बे क़ुसूर की मदद (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(115) अ़त्तारी जिन्न का ग़ुस्ले मय्यित (कुल सफ़्ह़ात : 24)
(116) नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(117) आंखो का तारा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(124) ख़ुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(125) नाकाम आ़शिक़ (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(126) नादान आ़शिक़ (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़्ह़ात : 32)
(130) ख़ौफ़नाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़्ह़ात : 32)

www.dawateislami.net

(131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(132) सास बहू में सुल्ह़ का राज़ (कुल सफ़ह़ात : 32)
(133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़ह़ात : 24)
(134) फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़ह़ात : 101)
(135) ह़ैरत अंगेज़ ह़ादिषा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(136) मॉडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)
(137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़ह़ात : 32)
(138) सलातो सलाम की आ़शिक़ा (कुल सफ़ह़ात : 33)
(139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़ह़ात : 32)
(140) चमकती आंखों वाले बुज़ुर्ग (कुल सफ़ह़ात : 32)
(141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़ह़ात : 32)
(142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़ह़ात : 32)

मजलिसे तराजुमे कुतुब की त़रफ़ से पेश कर्दा कुतुब

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مدظلہ العالی के इन रसाइल के अ़-रबी तराजुम शाएअ़ हो चुके हैं :

(1) बादशाहों की हड्डियां (इ़ज़ामुल मलूक)
(2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
(3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
(4) श-ज-रए आ़लिया क़ादिय्यह र-ज़विय्यह अ़त्तारिय्यह

इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं

(1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مدظلہ العالی)
(2) ग़फ़्लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी مدظلہ العالی)
(3) अबू जह्ल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू

www.dawateislami.net

बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مدّظِلّہُ العالی)

(4) एह्तिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी مدّظِلّہُ العالی)

(5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़।

﴾इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के कई रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं﴿

(1) अह़कामे नमाज़

(2) फ़ैज़ाने रमज़ान

(3) फ़ैज़ाने बिस्मिल्लाह

(4) पेट जो क़ुफ़्ले मदीना

(5) आदाबे त़आम

(6) बयानाते अ़त्तारिय्या

(7) जिन्नात जो बादशाह

(8) सुब्ह़े बहारां

(9) ज़ल्ज़लो इन इनजा अस्बाब

(10) आक़ा जो महीनो

(11) अब्लक़ घोड़े सुवार

(12) पुल सिरात़ जी दहशत

(13) ज़ख़्मी नांग

(14) कफ़न जी वापसी

(15) बरेली कान मदीना

(16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 म–दनी गुल

(17) शजरए अ़त्तारिय्या

(18) 40 रूह़ानी इलाज

www.dawateislami.net

﴾अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ़ हो चुके हैं﴿

(1) मूवी इन टीवी

(2) उ़श्र जा अह़काम (हारीन जा लाइ)

(3) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी

(4) आदाबे मुर्शिदे कामिल

(5) इन्फ़िरादी कोशिश

(6) ख़ौफ़े ख़ुदा عزوجل

(7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब

(8) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला

दिखावे के लिये ज़ेवरात पहनना कैसा ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 397 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" सफ़ह़ा 270 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دامت برکاتہم العالیہ फ़रमाते हैं : औ़रत को बत़ौरे फ़ख़्र व तकब्बुर दिखावा करने के लिये ज़ेवर पहनना बाइ़से अ़ज़ाब है। हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़तशम, दाफ़ेए रंजो अलम, साह़िबे जूदो करम, शाफ़ेए उ़मम صلی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : तुम में से जो औ़रत सोने के ज़ेवर पहने जिसे ज़ाहिर करे उसे इस के सबब अ़ज़ाब दिया जाएगा। (سنن ابی داود، ج٤، ص٦٢١، الحدیث:٤٢٣٧)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। إن شاء الله عزوجل इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आमात**" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

MC 1286

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,
अहमदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

Web : www.dawateislami.net / E-mail:maktabaahmedabad@gmail.com